

Sample



Mindsutra Software Technologies

Sarvanand Astrological Research Center

www.mindsutra.com

www.saarcastro.org

mindsutra@gmail.com

Contact - 09818193410, 09350247058



श्रीगणेशाय नमः

गणानां त्वां गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् ।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ॥

नवग्रहस्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काशपेयं महाद्युतिम् ।	तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदारणवसम्भवम् ।	नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।	कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम् ॥
प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।	सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥
देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसंनिभम् ।	बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।	सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।	छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।	सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ।	रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः ।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति ।
नरनारीनृपाणां च भवेददुःस्वप्ननाशम् ।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ॥
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्निसमुद्रवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो वृते न संशयः ॥

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

जो जपापुष्प के समान अरुणिम आभावाले, महान तेज से संपन्न, अंधकार के विनाशक, सभी पापों को दूर करने वाले तथा महर्षि कश्यप के पुत्र हैं, उन सूर्य को मैं प्रणाम करता हूँ। जो दधि, शंख तथा हिम के समान आभा वाले, क्षीर समुद्र से प्रादुर्भूत, भगवान शंकर के शिरोभूषण तथा अमृतस्वरूप हैं, उन चंद्रमा को मैं नमस्कार करता हूँ। जो पृथ्वी देवी से उद्भूत, विद्युत् की कान्ति के समान प्रभावाले, कुमारावस्था वाले तथा हाथ में शक्ति लिए हुए हैं, उन मंगल को मैं प्रणाम करता हूँ। उ प्रियंगु लता की कली के समान गहरे हरित वर्ण वाले, अतुलनीय सौन्दर्य वाले तथा सौम्य गुण से संपन्न हैं, उन चंद्रमा के पुत्र बुध को मैं प्रणाम करता हूँ। जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, स्वर्णिम आभा वाले हैं, ज्ञान से संपन्न हैं तथा लोकों के स्व हैं, उन बृहस्पति जी को मैं नमस्कार करता हूँ। जो हिम, कुन्दपुष्प तथा कमलनाल के तन्तु के समान श्वेत आभा वाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के उपदेष्टा तथा महर्षि भृगु के पुत्र हैं, उन शुक्र को मैं प्रणाम करता हूँ। जो नीले कज्जल के समान आभा वाले, सूर्य के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता तथा सूर्य पत्नी छाया तथा मार्तण्ड से उत्पन्न हैं, उन शनैश्चर को मैं नमस्कार करता हूँ। जो आधे शरीर वाले हैं, महान पराक्रम से संपन्न हैं, सूर्य तथा चंद्र को ग्रसने वाले हैं तथा सिंहिका के ग से उत्पन्न हैं, उन राहु को मैं प्रणाम करता हूँ। पलाश पुष्प के समान जिनकी आभा है, जो रुद्र स्वभाव वाले और रुद्र के पुत्र हैं, भयंकर हैं, तारकादि ग्रहों में प्रधान हैं, उन केतु को मैं प्रणाम करता हूँ। भगवान वेदव्यास जी के मुख से प्रकट इस स्तुति का जो दिन में अथवा रात में एकाग्रचित्त होकर पाठ करता है, उसके समस्त विघ्न शान्त हो जाते हैं, स्त्रीपुरुष और राजाओं के दुःस्वप्नों का नाश हो जाता है। पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य और आरोग्य प्राप्त होता है तथा उनके पुष्टि की वृत्ति होती है।

श्रीगणेशाय नमः

गणानां त्वां गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् ।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ॥

यह स्तुति हमारी शक्ति और सच्चे आत्म आनन्द को जानने और उसका अनुभव करने में हमारी सहायता करती है तथा इससे सार्वभौमिक एकता, मधुरता और खुशहाली में प्रगति होगी ।

नवग्रहस्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काशपेयं महाद्युतिम् ।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥

अर्थ— जो गुडहल के फूल के समान लाल है, जिसका जन्म कश्यप परिवार में हुआ है, जो बहुत उज्ज्वल है तथा अंधकार का शत्रु है और जो सभी पापों का नाश करता है, मैं उस दिवाकर को प्रणाम करता हूँ ।

सार— नव ग्रह केवल भौतिक अर्थों में ही ग्रह या नक्षत्र नहीं हैं, वे केवल नौ में नहीं हैं, बल्कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड के भौतिक अस्तित्व में उपस्थित सभी ग्रहों व नक्षत्रों में अंतर्निहित शक्ति हैं । सूर्य यहां सिर्फ पौधों द्वारा किए जाने वाले प्रकाशसंश्लेषण के लिए भौतिक उर्जा या गर्मी का स्रोत मात्र का प्रतिनिधि नहीं है, अपितु यह संपूर्ण ब्रह्माण्ड के लिए चेतना का प्रतीक है । जैसेकि हम चेतना में जागते हैं, तो हम कम लड़खड़ाते हैं और कम गलतियां व पाप करते हैं तथा चेतना में नहीं उठते हैं, तो अधिक लड़खड़ाते हैं और अधिक गलतियां व पाप करते हैं (सभी पाप कार्य संपूर्ण स्वास्थ्य के बिगड़ने का कारण होते हैं) । अतः यहां सूर्य का उल्लेख सभी पापों का नाश करने के लिए किया गया है । सूर्य उज्ज्वल है और इसलिए यह अंधेरे का शत्रु है, ना केवल भौतिक अर्थों में बल्कि अज्ञानता के अंधकार का शत्रुहाने के संदर्भ में भी ।

यह स्तुति नींद, जड़त्व और निष्क्रियता पर विजय प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगी । यह अवसाद और हताशा पर विजय प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगी ।

दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदारणवसम्भवम् ।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥

अर्थ— मैं उस चंद्रमा को प्रणाम करता हूँ, जो दही, शंख और ओस की बूंदों के समान सुन्दर और दीप्तिमान है, जिसका जन्म समुद्र मंथन से हुआ है, जो शशक का प्रतीक है तथा जो भगवान शिव के मुकुट/मस्तक की शोभा बढ़ाता है ।

सार— चंद्रमा की सुन्दरता का वर्णन करने का वास्तविक उद्देश्य उस सिद्धान्त की ओर संकेत करने से है, जो सार्वभौमिक अथवा ब्रह्माण्ड के मस्तिष्क के समान है । ब्रह्माण्डीय मन को पौधों का पालन-पोषण करने वाला कहा जाता है । इससे लगता है कि चंद्रमा से उपचारात्मक गुण पौधों में हस्तांतरित होते हैं । मन संपूर्ण संसार में आरोग्यसाधक के रूप में सुविख्यात है ।

जब हम चंद्रमा के सिद्धान्त का व्यक्तिगत स्तर पर विचार करते हैं, तो केंद्रिय तंत्रिका प्रणाली से संबंधित तीन विशेषताएं दिखाई देती हैं— समुद्र के दूध से जन्म होना, शशक के समान होना तथा शिव के मस्तक की शोभा बढ़ाना । मन का जन्म अच्छी तरह से फैले हुए श्वेत तंत्रिका प्रणाली से, बुद्धि के साथ होना तथा मन जब वास्तव में स्वच्छ होता है, तो शिव के मुकुट की अथवा व्यक्तिगत रूप में स्वयं की सुन्दरता को बढ़ाता है ।

यह स्तुति कमजोर और कोमल मन को दृढ़ बनाती है तथा व्यक्ति को कठिन परिस्थितियों से लड़ने और उन पर विजय प्राप्त करने में शक्ति प्रदान करती है ।

**नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥**

अर्थ— मे उस स्थिर शनि को प्रणाम करता हूँ, जो नीले काजल के समान आभा वाले हैं, जो सूर्य के पुत्र हैं, यम के बड़े भाई हैं, तथा जिनका जन्म सूर्य और उनकी पत्नि छाया से हुआ है।

सार— यह स्तुति शनिदेव को समर्पित है, जो कि स्थिरता के देवता प्रतीत होते हैं। यदि अनजाने में अभिव्यक्त किया जाता है, तो यह प्रगति को धीमा कर सकता है, यदि उचित रूप से अभिव्यक्त किया जाता है, तो यह असामान्य और अव्यवस्थित घटनाओं को रोक सकता है। 'यम का बड़ा भाई' होना यह दर्शाता है, कि यम जीवन और मृत्यु के नियमन के लिए जिस सिद्धान्त अथवा देवत्व का प्रतिनिधित्व करते हैं, उसके समायोजन में स्थिरता महत्वपूर्ण स्थान रखता है। 'सूर्य का पुत्र' होना यह दर्शाता है, कि इसमें ज्ञान और अज्ञानता का प्रकाश व अंधकार की शक्ति है,। यह विकास की सीमा, जैविक क्षमता, शरीर में नकारात्मक उर्जा तंत्र का प्रतिनिधित्व कर सकता है।

**अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥**

अर्थ— मे उस शक्तिमान और साहसी राहु को प्रणाम करता हूँ, जो अर्ध शरीर वाला है, जो सूर्य और चंद्रमा तक को भी पीड़ित कर सकता है तथा जिसका जन्म सिंहिका के गर्भ से हुआ है।

सार— यह स्तुति राहु को समर्पित है। राहु अंतरिक्ष और समय में स्थित एक बिन्दु है, जब चंद्रमा धरती द्वारा सूर्य के परिक्रमा पथ को काटते हुए उत्तर की ओर चला जाता है।

यह ब्रह्माण्ड आश्चर्यों से भरा हुआ है। इस ब्रह्माण्ड के सृजन और विकास में अनेक समूहों और देवताओं का योगदान है। जो इस जगत में नकारात्मक और बुरा प्रतीत होता है, वह भी इसी सृजन का ही एक भाग है। इसलिए सार्वभौमिक कल्याण के लिए यह स्तुति राहु को समर्पित है।

पौराणिक कथाओं में राहु को विप्रचिती और सिंहिका का पुत्र कहा गया है। ये दो कक्षों के मिलन बिन्दु का प्रतीक जान पड़ता है, जिससे राहु उत्पन्न होता है, ताकि वे मानसिक अंधेरों के लिए उत्तरदायी भौतिक बलों का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। अतः व्यक्तिगत दृष्टि कोण से राहु उस स्थान और समय का प्रतिनिधित्व करता है, जब व्यक्ति मानसिक अंधकारों, भ्रम, कमजोर स्मरण शक्ति से पीड़ित होता है, तथा जब वह किसी भूत के अधीन होने का काल्पनिक चित्र बना सकता है।

हालांकि, निद्रा, विस्मृति का उचित सीमा तक होना स्वास्थ्यवर्द्धक होता है। अतः राहु को शुभ फलदायक कहा जाता है, सिवाय जन्म कुण्डली में स्थित कुछ परिस्थितियों और नक्षत्रों को छोड़कर।

**पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥**

अर्थ— जो पलाश के फूलों के समान लाल है, जो तारों और ग्रहों का मस्तक है और जो रौद्र रूप वाला भयावह है, मैउस केतु को प्रणाम करता हूँ।

सार— यह स्तुति केतु को समर्पित है। केतु वह बिन्दु है, जब चंद्रमा धरती द्वारा सूर्य के परिक्रमा पथ को काटते हुए दक्षिण की ओर चला जाता है।

केतु व्यक्ति के स्वभाव में अथवा ब्रह्माण्ड में हिंसा के सिद्धान्त को दर्शाता है। 'रुद्र' शब्द विनाश का प्रतीक है। सार्वभौमिक एवं साथ ही व्यक्तिगत जीवन में अधिकांश लोगों को विनाश और हिंसा से खतरा होता है। हालांकि, ब्रह्माण्डीय घटनाओं से विनाश और हिंसा को पृथक नहीं किया जा सकता है और जब यह उचित रूप में होता है, तो यह जीवन के आवश्यक और स्वास्थ्यवर्द्धक निर्माण में सहायक होता है। शरीर रचना, शारीरिक क्रिया विज्ञान और गर्भविज्ञान की पुस्तकों में विनाश की अनेक प्रक्रियाओं का वर्णन किया गया

**धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम् ॥**

अर्थ— जिसका जन्म धरती के गर्भ से हुआ है, बिजली के चमकने जैसे उज्ज्वल, और जिसकी शक्तिशाली भुजाएं हैं, मैं उस युवा मंगल को प्रणाम करता हूँ।

सार— भारतीय ज्योतिष के अनुसार, मंगल अग्नि के ब्रह्माण्डीय सिद्धान्त का प्रतिनिधित्व करता है तथा शौर्य, उद्यमशीलता, गतिशीलता, प्रलय, भयानक आग, महामारी, दंगे, चक्रवात और युद्ध का कारक माना जाता है। यह स्तुतिअग्नि सिद्धान्त को विनियमित करने के लिए अभिप्रेरित करता है तथा इसे रचनात्मक दिशा में श्रृंखलाबद्ध करता है। यह एक राजा के सिद्धान्त के समान है।

संभवतः यह स्तुति उन सभी स्थिति में सहायता करता है, जो उपापचय को कम करे तथा शरीर को मंदगति, आलस्यपूर्ण और कमजोर बनाए। यह उर्जा प्रदान करके शरीर के सभी अंगों को सक्रिय कर सकता है। इसके अतिरिक्त, संभवतः यह शारीरिक प्रणाली के उत्तेजना, क्रोध और अत्यधिक सक्रियता को नियंत्रित करता है।

**प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥**

अर्थ— लालिमा युक्त श्याम वर्ण के दिखने वाले और अशोक के वृक्ष की कली के समान अद्वितीय सुन्दर शांत प्रकृति के बुध को मैं प्रणाम करता हूँ।

यह स्तुति स्पष्ट रूप से बुद्धिमत्ता और संयम से संबंधित है। धूसर बिन्दू मस्तिष्क की बुद्धि को दर्शाता है, जो कि असम्य और बर्बर भावना व स्वभाव पर नियंत्रण रखता है। अतः यह संयम और अनुग्रह का शासकीय सिद्धान्त है।

**देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसंनिभम् ।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥**

अर्थ— जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, जो सुनहरे वर्ण के हैं तथा जो त्रिलोक के बुद्धि के स्वामी हैं, उन बुद्धिमान बृहस्पति को मैं प्रणाम करता हूँ।

सार— यह स्तुति स्पष्ट रूप से बुद्धिमान व्यक्ति को समर्पित है, जिसका मस्तिष्क के सभी केन्द्रों पर शासन है और इसप्रकार से वह चेतना के सभी तीन स्तरों स्वप्न, नींद और जागरण पर भी शासन करता है। सुनहरा वर्ण उस श्रेष्ठतम प्रकाश का सूचक लगता है, जो प्रत्येक गतिविधि पर शासन करता है। यह केंद्रिय तंत्रिका प्रणाली में जालीदार प्रणाली का प्रतिनिधित्व भी करता है, जो कि मस्तिष्क में सभी केन्द्रों की गतिविधि को सुनिश्चित करता है।

**हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥**

अर्थ— जो बेला के फूल और बर्फ के समान दीप्तिमान हैं, जो असुरों के सर्वश्रेष्ठ गुरु हैं तथा जो सभी शास्त्रों के प्रवक्ता हैं, मैं उस शुक्र को प्रणाम करता हूँ।

सार— यह स्तुति उस शुक्र को समर्पित है, जो भावनाओं एवं अन्तर्निहित प्रकृति के व्यवस्थित प्रशासन के लिए उत्तरदायी सिद्धान्त का सूचक प्रतीत होता है। ब्रह्माण्ड के हित के लिए इस सिद्धान्त के द्वारा यौन शक्ति और भौतिकशक्ति, जो कि दुराचारी हो सकती हैं, उन पर प्रत्यक्ष रूप से शासन किया जाता है। संरचनात्मक रूप से यह मस्तिष्क में संपूर्ण अंग तंत्र के संचालन का प्रतिनिधित्व करता है।

यह स्तुति जीवन और ब्रह्माण्ड के स्थायीकरण, स्फूर्ति, पर्याप्तता, उत्साह और प्रेम का प्रतिफल प्रतीत होता है।

है।

अतः व्यक्तिगत जीवन और स्वभाव में हिंसा को नियंत्रित करने वाले केतु की स्तुति कहीं अधिक उचित है।

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति॥

अर्थ— अब यह स्तुति समाप्त होती है। जो भी व्यक्ति महर्षि व्यास द्वारा रचित इस स्तुति को दिन अथवा रात्रि के समय एकाग्रचित्त और शांतचित्त होकर पढ़ता या सुनता है, वह सभी प्रकार की आपदाओं से मुक्त हो जाता है।

सार— नवग्रहों और नक्षत्रों की स्तुति वास्तविक रूप में व्यक्ति को सच्चे आत्म का ज्ञान करवाता है तथा अब तक अनुपलब्ध उन उर्जा या शक्तियों को प्राप्त करने में सहायता करता है, जो कि विभिन्न रूपों में देवताओं के प्रतीक मानी जाती हैं।

नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्॥

अर्थ— नर, नारी और शासक को अतुलनीय समृद्धि, स्वास्थ्य और शक्ति की प्राप्ति होती है तथा उनके बुरे स्वप्नों व विचारों का नाश होता है।

सार— सभी ग्रहों और नक्षत्रों की स्तुति से सुख-समृद्धि, स्वास्थ्य व शक्ति प्राप्त होती है। विनाशक गुणों के कारण सभी प्रकार की दरिद्रता, बुरे स्वप्न और बुरे विचार लुप्त हो जाते हैं।

ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्रिसमुद्रवाः।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः॥

अर्थ— जैसा कि व्यास ऋषि ने कहा है जो कि निःसन्देह, अचूक और सत्य है, कि ग्रहों और नक्षत्रों के अशुभ प्रभाव के कारण उत्पन्न चोर, अग्नि आदि की समस्याएं निरस्त हो जाती हैं।

सार— इस प्रकार महर्षि व्यास इस सत्य की घोषणा करते हैं, कि इन स्तुतियों का जाप व अध्ययन करने से सभी ग्रहों के प्रकोप और आपदाओं से मुक्ति मिलती है।

श्री महर्षि व्यास द्वारा रचित नवग्रह स्तोत्र समाप्त।

ज्योतिष सारिणी

जन्म दिन	: 18 अक्टूबर 1985 (शुक्रवार)	सांपातिक काल	: 19:24:21 hrs
ज्योतिषिय वार	: शुक्रवार	सूर्योदय	: 05:56:30AM
जन्म समय	: 17:30:00	सूर्यास्त	: 05:20:48PM
जन्म स्थान	: Ballia , INDIA	अयनांश	: N.C.Lahiri (023:39:31)
रेखांश	: 084:10:00E	विक्रम संवत	: 2042
अक्षांश	: 025:45:00N	शक संवत	: 1907
समयक्षेत्र	: -05:30:00 hrs	संवत्सर	: क्रोधन
समय संशोधन	: 00:00:00 hrs	संवत्सर अधिपति	: भग
जी. एम. टी. समय	: 12:00:00 hrs	तत्कालीन दशा	: सूर्य : शुक्र : मंगल
स्थानीय समय संस्कार	: 00:06:40 hrs	दशा भोग्यकाल	: केतु : 6 व. 4 मा. 4 दि.
स्थानीय समय	: 17:36:40 hrs	भयात	: 05: 10: 04 घटी
इष्टकाल	: 28: 54: 24 घटी	भभोग	: 56: 28: 43 घटी

अवकहड़ा चक्र

लग्न	: मेष
लग्नाधिपति	: मंगल
राशि (चन्द्रमा)	: धनु
राशिपति	: गुरु
नक्षत्र	: मूला
नक्षत्रपति	: केतु
नक्षत्र चरण	: 1
पाया	: रजत
ऋतु	: शरद
मास	: अश्विन
पक्ष	: शुक्ल
तिथि	: पंचमी
तिथि श्रेणी	: पूर्णा
तिथि पति	: गुरु
करण	: बल्लव
करण श्रेणी	: चर
करणपति	: ब्रह्मा
गण	: राक्षस
वर्ण	: क्षत्रिय
योनि	: श्वान (पु०)
सूर्य सिद्धान्त योग	: शोभन
रज्जु	: पद
वश्य	: चतुश्पद

तत्व	: वायु
तत्वाधिपति	: शनि
विहग	: कुक्कुट
नाडी	: आदि
नाडी पद	: आदि
वेध	: अश्लेषा
आद्याक्षर	: ये

घात चक्र

राशि (सूर्य)	: मीन
मास	: श्रावण
तिथि	: 3,8,13
वार	: शुक्रवार
नक्षत्र	: भरणी
प्रहर	: 3
लग्न	: धनु
सूर्य सिद्धान्त योग	: वैधृति
करण	: तैत्तिल

पाश्चात्य ज्योतिषीय सारिणी

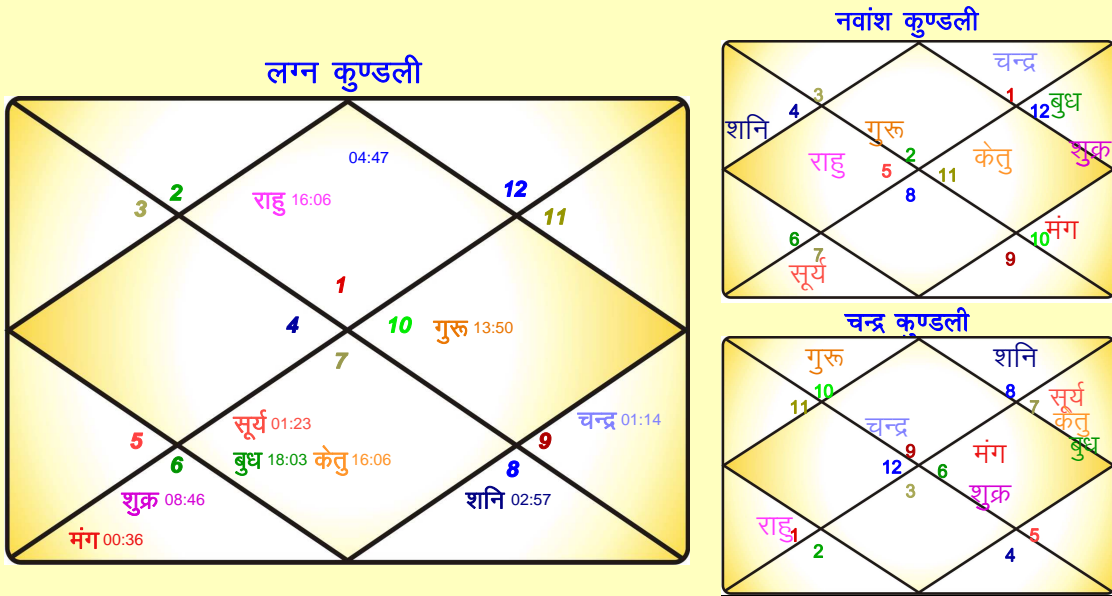
सूर्य राशि	: तुला
देकानेट	: 3
फेस	: VI
चन्द्र राशि (पाश्चात्य)	: धनु
लग्न (पाश्चात्य)	: मेष
सूर्य का अवधिपति	: मंगल
चन्द्रमा का अवधिपति	: शनि
अवधि बदलाव	: (बुध, गुरु), (गुरु, बुध)

जन्म दिन का ग्रह : शुक्र

जन्म समय का ग्रह : राहु

ग्रह स्थिति

ग्रह	राशि	राशि	डिग्री	नक्षत्र - चरन	न0 पति	सप्तकारक	विशेष	विशेष
AC	लग्न	मेघ	मंगल	04:47:10	अश्विनी.2	केतु
☉	सूर्य	तुला	शुक्र	01:23:54	चित्रा.3	मंगल	अपत्या	नीचस्थ शुभ ग्रह के साथ
☾	चन्द्रमा	धनु	गुरु	01:14:54	मूला.1	केतु	ज्ञाति	मित्र के भाव में ---
♂	मंगल	कन्या	बुध	00:36:34	उत्तरफाल्गुनी.2	सूर्य	दारा	तटस्थ भाव में शुभ ग्रह के साथ
♃	बुध	तुला	शुक्र	18:03:35	स्वाति.4	राहु	आत्म	मित्र के भाव में ग्रसित
♄	गुरु	मकर	शनि	13:50:34	श्रवण.2	चन्द्रमा	अमात्य	तटस्थ भाव में ---
♅	शुक्र	कन्या	बुध	08:46:07	उत्तरफाल्गुनी.4	सूर्य	भ्रात्रि	नीचस्थ दुष्ट ग्रह के साथ
♆	शनि	वृश्चिक	मंगल	02:57:44	विशाखा.4	गुरु	मात्रि	तटस्थ भाव में ---
♁	राहु व	मेघ	मंगल	16:06:36	भरणी.1	शुक्र	...	शत्रु के भाव में ---
♂	केतु व	तुला	शुक्र	16:06:36	स्वाति.3	राहु	...	मित्र के भाव में शुभ ग्रह के साथ
♁	हर्षल	वृश्चिक	मंगल	21:37:12	ज्येष्ठा.2	बुध	...	दुष्ट ग्रह के साथ
♃	नेपच्यून	धनु	गुरु	07:32:48	मूला.3	केतु	...	शुभ ग्रह के साथ
♆	प्लूटो	तुला	शुक्र	10:38:09	स्वाति.2	राहु	...	शुभ ग्रह के साथ



ग्रह से ग्रह और ग्रह से लग्न के बीच की दूरी

	लग्न	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्षल	नेपच्यून	प्लूटो
लग्न	---	177	236	146	193	279	154	208	11	191	227	243	186
सूर्य	183	---	60	329	17	102	337	32	195	15	50	66	9
चन्द्रमा	124	300	---	269	317	43	278	332	135	315	350	6	309
मंगल	214	31	91	---	47	133	8	62	226	46	81	97	40
बुध	167	343	43	313	---	86	321	15	178	358	34	49	353
गुरु	81	258	317	227	274	---	235	289	92	272	308	324	267
शुक्र	206	23	82	352	39	125	---	54	217	37	73	89	32
शनि	152	328	28	298	345	71	306	---	163	343	19	35	338
राहु	349	165	225	134	182	268	143	197	---	180	216	231	175
केतु	169	345	45	314	2	88	323	17	180	---	36	51	355
हर्षल	133	310	10	279	326	52	287	341	144	324	---	16	319
नेपच्यून	117	294	354	263	311	36	271	325	129	309	344	---	303
प्लूटो	174	351	51	320	7	93	328	22	185	5	41	57	---

0,1,359 कन्जक्शंन

59,60,61,299,300,301 सेक्सटाइल

89,90,91,269,270,271

स्कवायर

119,120,121,239,240,241 ट्राइन

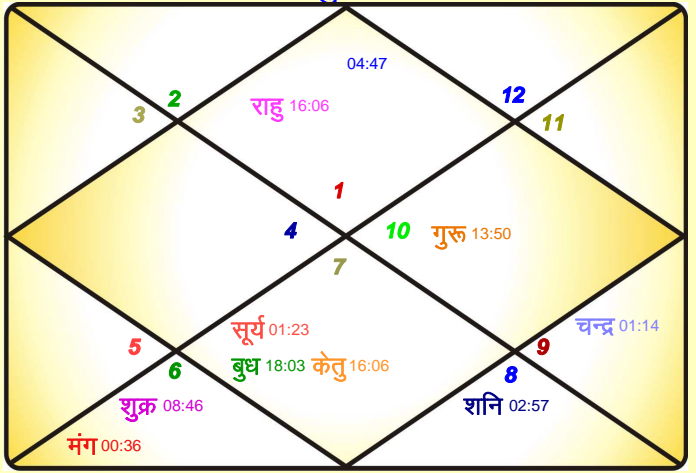
149,150,151,209,210,211 क्वीनकक्सं

179,180,181 अपोजीसन

ग्रह स्थिति

लग्न	मेष	04:47:10	अश्विनी (२)
सूर्य	तुला	01:23:54	चित्रा (३)
चन्द्रमा	धनु	01:14:54	मूल (१)
मंगल	कन्या	00:36:34	उत्तराफाल्गुनी (२)
बुध	तुला	18:03:35	स्वाती (४)
गुरु	मकर	13:50:34	श्रवण (२)
शुक्र	कन्या	08:46:07	उत्तराफाल्गुनी (४)
शनि	वृश्चिक	02:57:44	विशाखा (४)
राहु व	मेष	16:06:36	भरणी (१)
केतु व	तुला	16:06:36	स्वाती (३)
हर्षल	वृश्चिक	21:37:12	ज्येष्ठा (२)
नेपच्यून	धनु	07:32:48	मूल (३)
प्लूटो	तुला	10:38:09	स्वाती (२)

लग्न कुण्डली

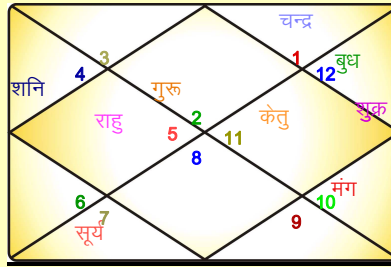


विंशोत्तरी दशा

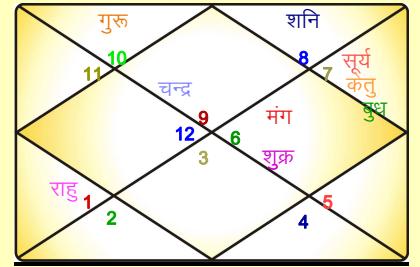
गेय दशा : केतु (6 व. 4 मा. 4 दि.)

दशा	अवधि	से — तक
केतु दशा	6 व. 4 मा. 4 दि.	18:10:1985 --- 21:02:1992
शुक्र दशा	20 व. 0 मा. 0 दि.	21:02:1992 --- 21:02:2012
सूर्य दशा	6 व. 0 मा. 0 दि.	21:02:2012 --- 21:02:2018
चन्द्रमा दशा	10 व. 0 मा. 0 दि.	21:02:2018 --- 21:02:2028
मंगल दशा	7 व. 0 मा. 0 दि.	21:02:2028 --- 21:02:2035
राहु दशा	18 व. 0 मा. 0 दि.	21:02:2035 --- 21:02:2053
गुरु दशा	16 व. 0 मा. 0 दि.	21:02:2053 --- 21:02:2069
शनि दशा	19 व. 0 मा. 0 दि.	21:02:2069 --- 21:02:2088
बुध दशा	17 व. 0 मा. 0 दि.	21:02:2088 --- 21:02:2105

नवांश कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



सूर्य दशा	
21:02:2012 — 21:02:2018	
अन्तर्दशा	आरम्भ
सूर्य	21:02:2012
चन्द्रमा	10:06:2012
मंगल	10:12:2012
राहु	17:04:2013
गुरु	11:03:2014
शनि	28:12:2014
बुध	10:12:2015
केतु	16:10:2016
शुक्र	21:02:2017

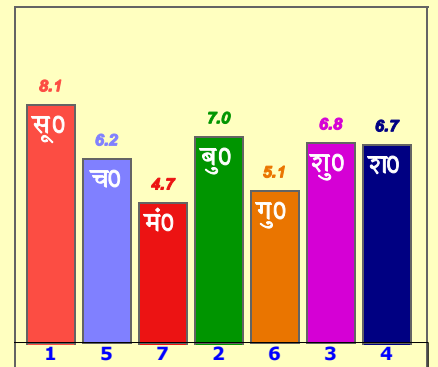
शुक्र अन्तर	
21:02:2017—21:02:2018	
प्रत्यन्तर्दशा	आरम्भ
शुक्र	21:02:2017
सूर्य	23:04:2017
चन्द्रमा	11:05:2017
मंगल	11:06:2017
राहु	02:07:2017
गुरु	26:08:2017
शनि	13:10:2017
बुध	10:12:2017
केतु	31:01:2018

सर्वाष्टक वर्ग

राशि	मे०	ब०	मि०	क०	सि०	क०	त०	ब०	ध०	म०	क०	मी०	
भाव	I	II	III	IV	V	VI	VII/VIII	IX	X	XI	XII		
शनि	3	4	4	5	4	3	2	3	1	4	4	2	39
गुरु	6	3	5	6	5	2	8	3	3	7	4	4	56
मंगल	3	2	4	4	4	3	3	2	4	1	6	3	39
सूर्य	2	5	6	5	4	6	3	3	3	2	5	4	48
शुक्र	3	5	4	5	7	4	3	5	4	4	5	3	52
बुध	3	5	5	6	4	7	4	4	5	3	4	4	54
चन्द्रमा	4	5	4	5	3	3	4	3	5	6	4	3	49
योग	24	29	32	36	31	28	27	23	25	27	32	23	337
लग्न	3	4	3	4	3	7	4	6	2	6	5	2	49
राहु	4	3	3	4	6	3	3	3	3	4	3	5	44

भाव	भाव मध्य	भाव विस्तार (आरम्भ—अन्त)
I	मेष	004:47:10
II	वृष	001:47:54
III	मिथुन	028:48:38
IV	कर्क	025:49:22
V	सिंह	028:48:38
VI	कन्या	001:47:54
VII	तुला	004:47:10
VIII	वृश्चिक	001:47:54
IX	धनु	028:48:38
X	मकर	025:49:22
XI	कुम्भ	028:48:38
XII	मीन	001:47:54

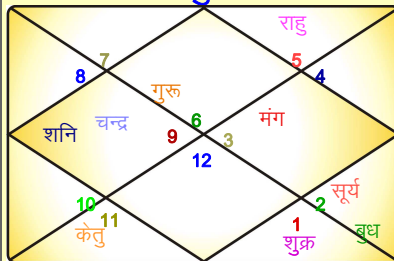
षडबल



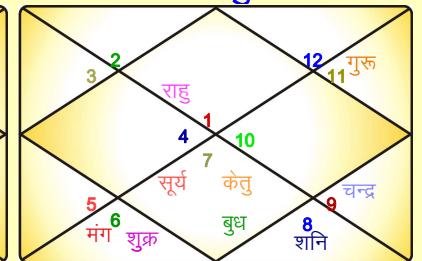
गोचर शनि (शनि साढ़ेसाती)

प्रथम ढैया	वृश्चिक	12:12:2043-23:06:2044	ताम्र
	वृश्चिक	30:08:2044-08:12:2046	
द्वितीय ढैया	धन	08:12:2046-06:03:2049	स्वर्ण
	धन	10:07:2049-04:12:2049	
तृतीय ढैया	मकर	06:03:2049-10:07:2049	रूपया
	मकर	04:12:2049-25:02:2052	
कंटक शनि	मीन	14:05:2054-02:09:2054	ताम्र
	मीन	05:02:2055-07:04:2057	
अष्टम शनि	कर्क	24:08:2063-06:02:2064	ताम्र
	कर्क	09:05:2064-13:10:2065	

गोचर कुण्डली

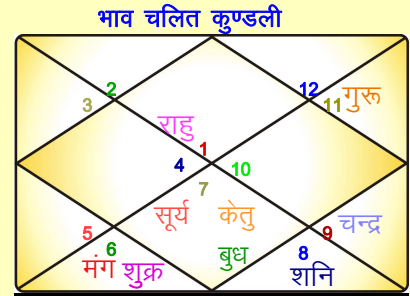
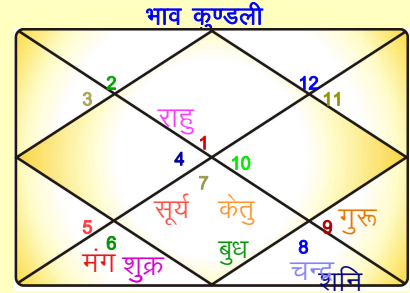
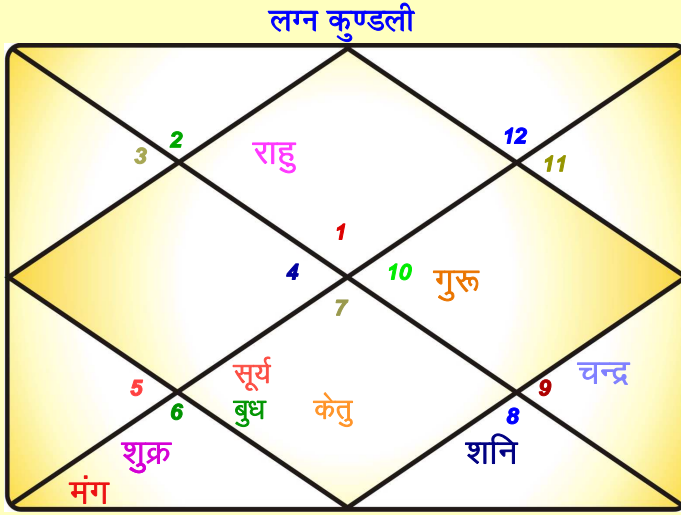


भाव चलित कुण्डली



भाव स्फूट और कुण्डली

भाव संख्या	भाव मध्य		भाव विस्तार (आरम्भ—अन्त)			
I	मेष	004:47:10	मीन	18:17:32	मेष	18:17:32
II	वृष	001:47:54	मेष	18:17:32	वृष	15:18:16
III	मिथुन	028:48:38	वृष	15:18:16	मिथुन	12:19:00
IV	कर्क	025:49:22	मिथुन	12:19:00	कर्क	12:19:00
V	सिंह	028:48:38	कर्क	12:19:00	सिंह	15:18:16
VI	कन्या	001:47:54	सिंह	15:18:16	कन्या	18:17:32
VII	तुला	004:47:10	कन्या	18:17:32	तुला	18:17:32
VIII	वृश्चिक	001:47:54	तुला	18:17:32	वृश्चिक	15:18:16
IX	धनु	028:48:38	वृश्चिक	15:18:16	धनु	12:19:00
X	मकर	025:49:22	धनु	12:19:00	मकर	12:19:00
XI	कुम्भ	028:48:38	मकर	12:19:00	कुम्भ	15:18:16
XII	मीन	001:47:54	कुम्भ	15:18:16	मीन	18:17:32



ग्रह से भाव (भाव मध्य) के बीच की दूरी

	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्षल	नेपच्यून	प्लूटो
लग्न	177	236	146	193	279	154	208	11	191	227	243	186
दूसरा भाव	150	209	119	166	252	127	181	344	164	200	216	159
तीसरा भाव	123	182	92	139	225	100	154	317	137	173	189	132
नादिर	96	155	65	112	198	73	127	290	110	146	162	105
पौंचवा भाव	63	122	32	79	165	40	94	257	77	113	129	72
छठवा भाव	30	89	359	46	132	7	61	224	44	80	96	39
सातवा भाव	357	56	326	13	99	334	28	191	11	47	63	6
आठवा भाव	330	29	299	346	72	307	1	164	344	20	36	339
नवा भाव	303	2	272	319	45	280	334	137	317	353	9	312
एम सी	276	335	245	292	18	253	307	110	290	326	342	285
ग्यारहवा भाव	243	302	212	259	345	220	274	77	257	293	309	252
बारहवा भाव	210	269	179	226	312	187	241	44	224	260	276	219

0,1,359 0,9,३५६ कन्जक्शँन 59,60,61,299,300,301 सेक्सटाइल 89,90,91,269,270,271 स्कवायर
119,120,121,239,240,241 ट्राइन 149,150,151,209,210,211 क्वीनकक्सं 179,180,181 अपोजीसन

ग्रह मैत्रि चक्र

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉	सूर्य	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
☾	चन्द्रमा	मित्र	सम	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु
♂	मंगल	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु
♃	बुध	मित्र	शत्रु	सम	सम	मित्र	सम	सम
♄	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र
♅	शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र
♆	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
♁	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र
♂	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	मित्र	सम

तत्कालिक मैत्री

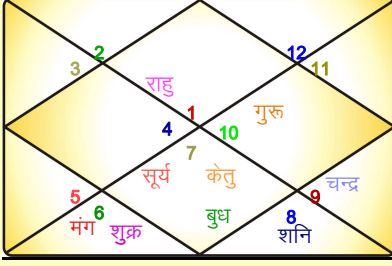
ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉	सूर्य	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
☾	चन्द्रमा	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
♂	मंगल	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
♃	बुध	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
♄	गुरु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
♅	शुक्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
♆	शनि	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
♁	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
♂	केतु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु

पंचांश मैत्री

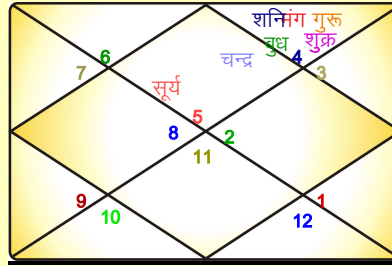
ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉	सूर्य	अधिमित्र	अधिमित्र	शत्रु	अधिमित्र	सम	सम	अधिशत्रु
☾	चन्द्रमा	अधिमित्र	मित्र	अधिमित्र	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	सम
♂	मंगल	अधिमित्र	अधिमित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र	अधिशत्रु
♃	बुध	सम	सम	मित्र	मित्र	अधिमित्र	मित्र	शत्रु
♄	गुरु	अधिमित्र	अधिमित्र	सम	सम	अधिशत्रु	मित्र	अधिमित्र
♅	शुक्र	सम	सम	शत्रु	अधिमित्र	शत्रु	अधिमित्र	सम
♆	शनि	सम	सम	सम	अधिमित्र	मित्र	अधिमित्र	सम
♁	राहु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	शत्रु	अधिमित्र	सम	सम
♂	केतु	अधिशत्रु	सम	अधिमित्र	शत्रु	मित्र	अधिमित्र	अधिमित्र	शत्रु

षोडश वर्ग

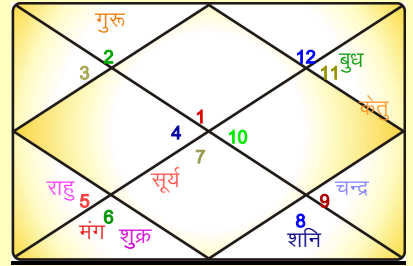
लग्न (जन्म) कुण्डली



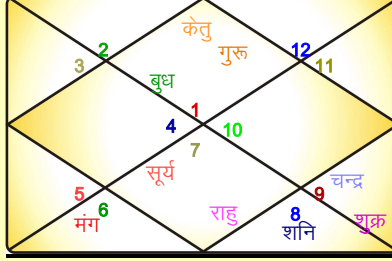
होरा कुण्डली



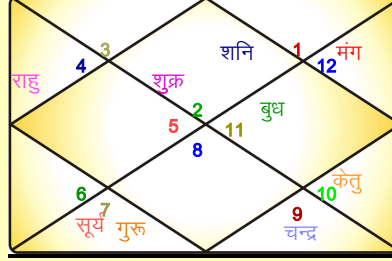
द्रेष्काण कुण्डली



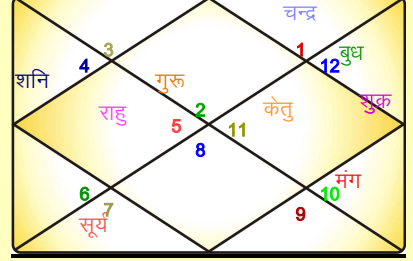
चतुर्थांश कुण्डली



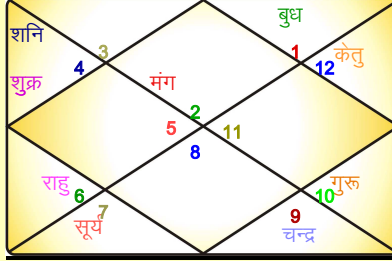
सप्तमांश कुण्डली



नवांश कुण्डली

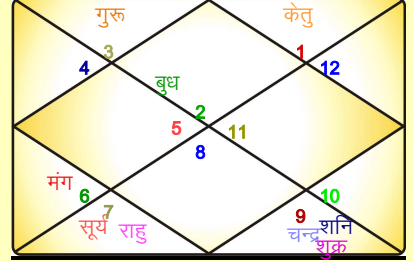


दशमांश कुण्डली

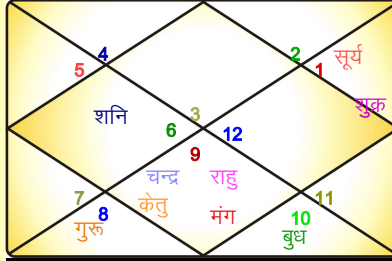


- D1 मुख्य कुण्डली, सभी मुद्दों के लिए
- D2 धन दौलत के लिए
- D3 सहोदरों का जीवन और स्वास्थ्य
- D4 भाग्य और रिहायशी मकान
- D7 संतान और उनकी संतान
- D9 जीवनसाथी और उनका स्वास्थ्य
- D10 कारोबार और किसी भी कार्य में सफलता
- D12 माता-पिता का जीवन और स्वास्थ्य
- D16 वाहन से संबंधित बातें
- D20 आध्यात्मिक रुझान
- D24 शिक्षा, ज्ञान और समझ
- D27 ताकत और दुर्बलता
- D30 दरिद्रता, कठिनाईयों और दुर्गति
- D40 शुभ-अशुभ घटनाएँ
- D45 सभी मुद्दों के लिए
- D60 सभी मुद्दों के लिए

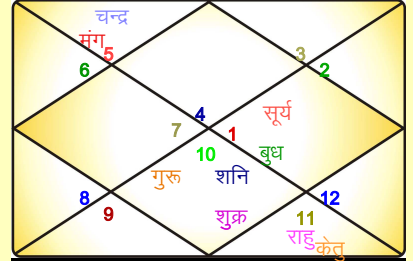
द्वादशांश कुण्डली



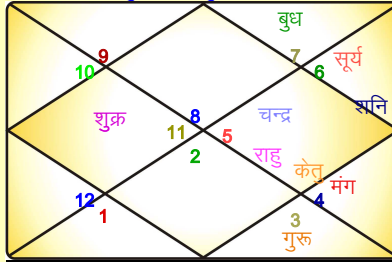
षोडशांश कुण्डली



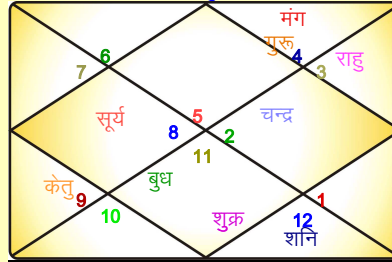
विशांश कुण्डली



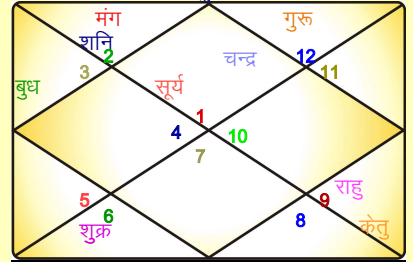
चतुर्विंशांश कुण्डली



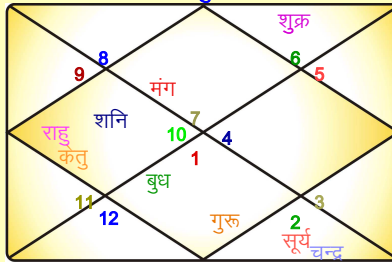
सप्तविंशांश कुण्डली



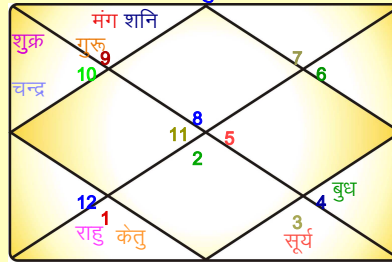
त्रिंशांश कुण्डली



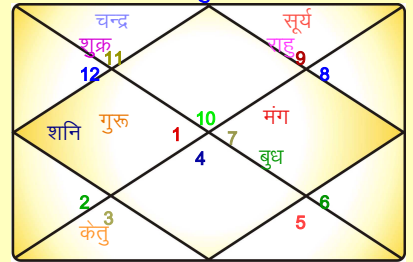
खवेदांश कुण्डली



अक्षवेदांश कुण्डली



षष्ठांश कुण्डली



ग्रहों का षड्बल

बल का नाम	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	02.87	09.42	10.87	48.98	02.95	06.08	55.68
सप्त वर्ग बल	90.00	112.50	71.25	127.50	80.63	112.50	90.00
युग्म अयुग्म बल	30.00	00.00	00.00	15.00	00.00	30.00	00.00
केन्द्रादी बल	60.00	15.00	15.00	60.00	60.00	15.00	30.00
द्रेक्कन बल	15.00	00.00	15.00	15.00	00.00	00.00	00.00
स्थान बल	197.87	136.92	112.12	266.48	143.57	163.58	175.68
वांछित स्थान बल	165	133	96	165	165	133	96
वांछित अंश	119.92	102.94	116.79	161.50	87.01	122.99	183.00
दिग बल	31.86	08.19	21.60	04.42	33.02	35.68	50.61
वांछित दिग बल	35	50	30	35	35	50	30
वांछित अंश	91.02	16.38	71.99	12.64	94.34	71.37	168.69
नतोन्नत बल	30.75	29.25	29.25	30.75	00.00	30.75	29.25
पक्ष बल	40.05	19.95	40.05	40.05	19.95	19.95	40.05
त्रिभाग बल	00.00	60.00	00.00	00.00	60.00	00.00	00.00
वर्ष बल	15.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
मास बल	00.00	00.00	00.00	00.00	30.00	00.00	00.00
दिन बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	45.00	00.00
होरा बल	60.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
अयन बल	17.41	58.68	32.36	48.72	06.56	28.32	53.81
युद्ध बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
काल बल	163.21	167.88	101.66	119.52	116.51	124.02	123.11
वांछित काल बल	112	100	67	112	112	100	67
वांछित अंश	145.73	167.88	151.73	106.72	104.03	124.02	183.75
चेष्टा बल	17.41	19.95	30.00	00.00	15.00	30.00	45.00
वांछित चेष्टा बल	50	30	40	50	50	30	40
वांछित अंश	34.83	66.50	75.00	00.00	30.00	100.00	112.50
नैसर्गिक बल	60.00	51.43	17.14	25.71	34.29	42.86	08.57
द्रिक बल	12.71	-10.93	01.44	02.20	-34.00	10.94	-00.15
कुल षड्बल	483.06	373.44	283.95	418.34	308.39	407.08	402.82
षड्बल (रूप में)	8.05	6.22	4.73	6.97	5.14	6.78	6.71
न्यूनतम वांछनिय	390	360	300	420	390	330	300
वांछनिय अंश	123.86	103.73	94.65	99.61	79.07	123.36	134.27
तुलनात्मक स्थिति	1	5	7	2	6	3	4
इष्ट फल	07.88	13.71	18.06	00.00	06.65	13.50	50.06
कष्ट फल	52.12	46.29	41.94	60.00	53.35	46.50	09.94
दिप्ति बल	100.00	19.95	10.26	35.70	34.15	28.89	10.52

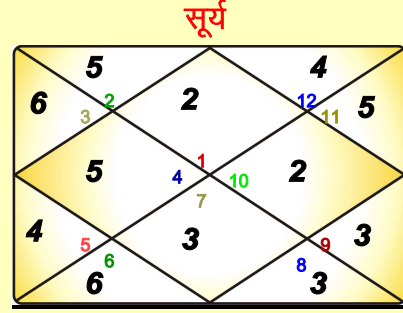
भाव बल

भाव सँख्या	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII
भाव राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
भावाधिपति बल	283.95	407.08	407.08	418.34	373.44	418.34	407.08	283.95	283.95	308.39	402.82	308.39
भाव दिग्बल	30.00	20.00	40.00	60.00	10.00	10.00	00.00	50.00	50.00	00.00	40.00	20.00
भाव द्रिष्टिबल	10.36	-08.24	11.21	-00.65	-03.75	-08.79	17.10	12.28	-04.12	-09.75	-13.89	13.51
भावबल योग	324.31	418.84	458.29	477.70	379.69	419.55	424.18	346.23	329.83	298.64	428.93	341.90
भावबल (रूप में)	5.41	6.98	7.64	7.96	6.33	6.99	7.07	5.77	5.50	4.98	7.15	5.70
तुलनात्मक स्थिति	11	6	2	1	7	5	4	8	10	12	3	9

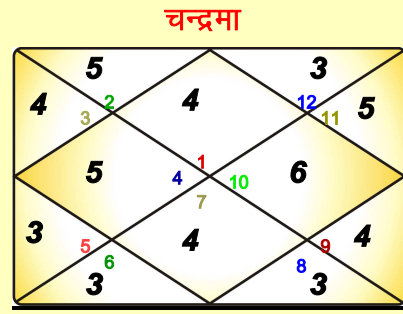
अष्टकवर्ग सिद्धान्त – भिन्नाष्टक वर्ग

आधार – लग्न (जन्म) कुण्डली (परासर) अष्टकवर्ग सिद्धान्त – (परासर)

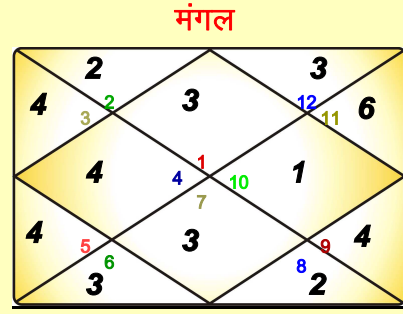
सूर्य													
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	
शुक्र	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	8
बृह0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	0	4
मंगल	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	8
सूर्य	1	1	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	1	1	3
बुध	0	0	1	1	1	1	0	0	1	0	1	1	7
चन्द्रमा	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	4
लग्न	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	6
योग	2	5	6	5	4	6	3	3	3	2	5	4	48



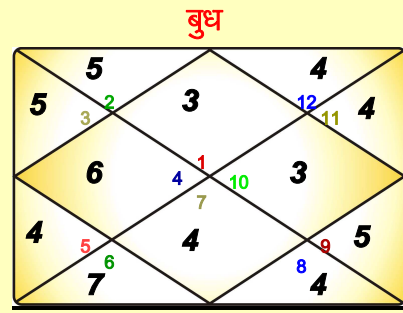
चन्द्रमा													
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	
शुक्र	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	4
बृह0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
मंगल	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	6
शुक्र	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	1	7
बुध	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	0	8
चन्द्रमा	0	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	0	6
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
योग	4	5	4	5	3	3	4	3	4	6	5	3	49



मंगल													
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	
शुक्र	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	7
बृह0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	0	4
मंगल	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	7
सूर्य	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	4
बुध	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	4
चन्द्रमा	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	3
लग्न	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	5
योग	3	2	4	4	4	3	3	2	4	1	6	3	39



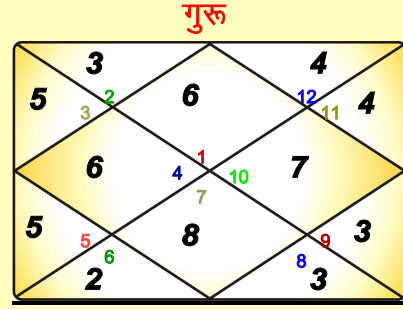
बुध													
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	
शुक्र	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	8
बृह0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
मंगल	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	8
सूर्य	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	1	5
शुक्र	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	8
बुध	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	1	1	8
चन्द्रमा	0	1	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	6
लग्न	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	7
योग	3	5	5	6	4	7	4	4	5	3	4	4	54



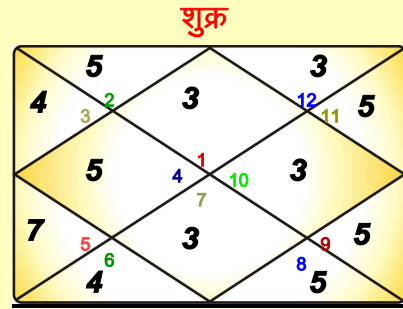
अष्टकवर्ग सिद्धान्त – भिन्नाष्टक वर्ग

आधार – लग्न (जन्म) कुण्डली (परासर) अष्टकवर्ग सिद्धान्त – (परासर)

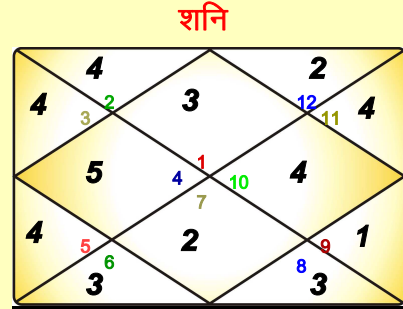
गुरु												
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1
बृह0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	1
मंगल	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1
सूर्य	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	0	0
शुक्र	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0
बृह	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1
भ्रमा	1	0	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0
लग्न	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0
योग	6	3	5	6	5	2	8	3	3	7	4	4
												56



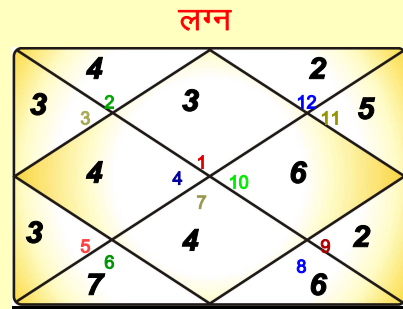
शुक्र												
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII
शुक्र	0	0	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1
बृह0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	0
मंगल	0	1	0	1	1	0	0	1	1	0	1	0
सूर्य	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	0
शुक्र	1	1	1	1	0	1	1	1	1	1	0	0
बृह	0	0	1	0	1	0	0	0	1	0	1	1
भ्रमा	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	1	1
लग्न	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0
योग	3	5	4	5	7	4	3	5	5	3	5	3
												52



शनि												
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII
शुक्र	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1
बृह0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0
मंगल	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0
सूर्य	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0
शुक्र	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0
बृह	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1
भ्रमा	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0
लग्न	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0
योग	3	4	4	5	4	3	2	3	1	4	4	2
												39



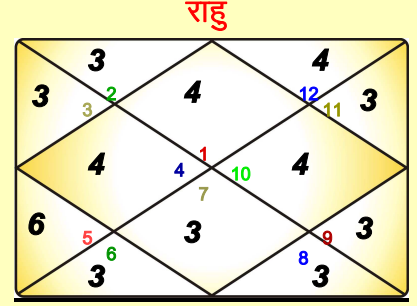
लग्न												
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII
शुक्र	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0
बृह0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0
मंगल	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0
सूर्य	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1
शुक्र	1	1	0	0	0	1	1	1	1	1	0	0
बृह	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1
भ्रमा	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0
योग	3	4	3	4	3	7	4	6	2	6	5	2
												49



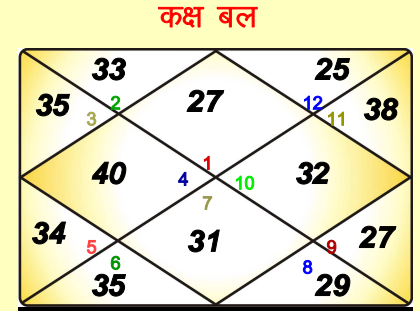
अष्टकवर्ग सिद्धान्त – भिन्नाष्टक वर्ग

आधार – लग्न (जन्म) कुण्डली (परासर) अष्टकवर्ग सिद्धान्त – (परासर)

राहु													
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	
शनि	0	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	6
बृह0	1	0	1	0	1	0	0	0	0	1	0	1	5
मंगल	0	0	0	0	1	0	1	1	0	1	0	0	4
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	0	1	0	7
शुक्र	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	1	4
बुध	1	1	0	0	0	1	0	1	0	1	0	0	5
शुक्र	1	0	1	1	1	1	0	0	1	0	1	0	7
लग्न	0	0	1	1	1	0	0	0	1	0	0	1	5
योग	4	3	3	4	6	3	3	3	3	4	3	4	43



कक्ष बल													
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	
शनि	4	3	4	4	5	7	1	4	2	5	5	4	48
बृह0	3	4	5	3	4	3	5	8	3	3	3	1	45
मंगल	4	4	7	8	2	5	5	4	5	2	4	4	54
सूर्य	4	5	3	6	8	3	3	3	4	4	2	4	49
शुक्र	4	5	3	6	3	3	4	4	4	5	4	2	47
बुध	1	3	5	6	8	3	4	2	5	3	6	7	53
शुक्र	2	6	2	2	2	4	8	2	2	3	6	2	41
लग्न	5	3	6	5	2	7	1	2	2	7	8	1	49
योग	27	33	35	40	34	35	31	29	27	32	38	25	486

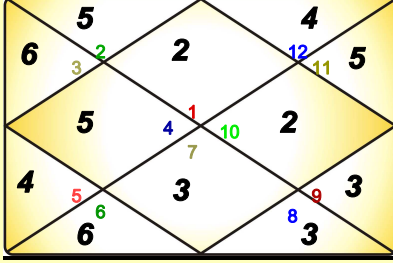


अष्टकवर्ग सिद्धान्त – त्रिकोन एवम् एकाधिपत्य शोधन

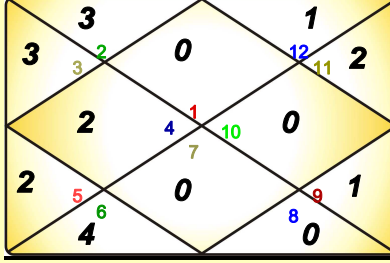
आधार – लग्न (जन्म) कुण्डली (परासर) अष्टकवर्ग सिद्धान्त – (परासर)

सूर्य

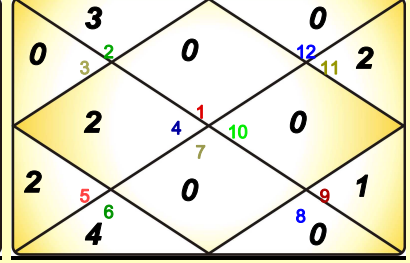
शोधन से पूर्व



त्रिकोन शोधन



एकाधिपत्य शोधन



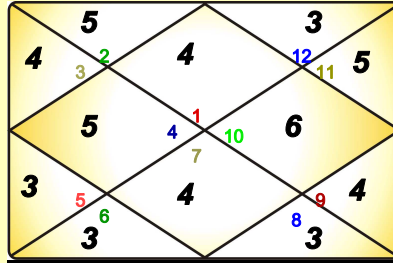
राशि पिण्ड 109

ग्रह पिण्ड 65

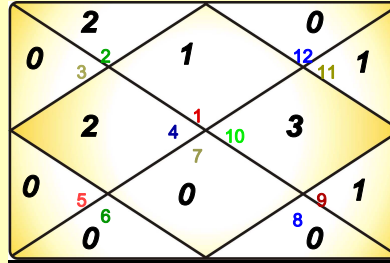
शुद्ध पिण्ड 174

चन्द्रमा

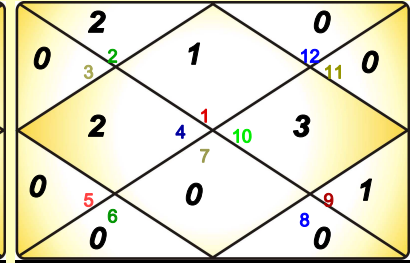
शोधन से पूर्व



त्रिकोन शोधन



एकाधिपत्य शोधन



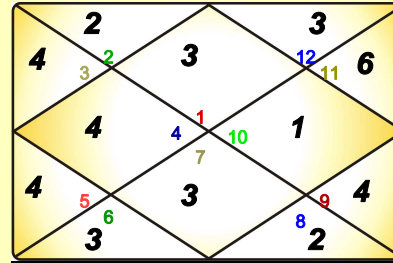
राशि पिण्ड 59

ग्रह पिण्ड 35

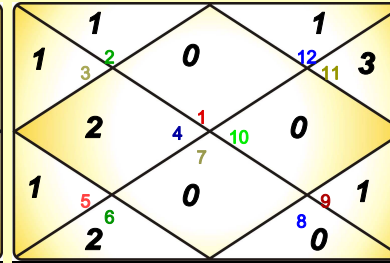
शुद्ध पिण्ड 94

मंगल

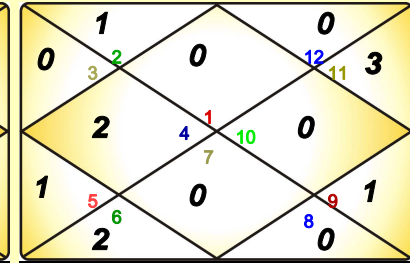
शोधन से पूर्व



त्रिकोन शोधन



एकाधिपत्य शोधन



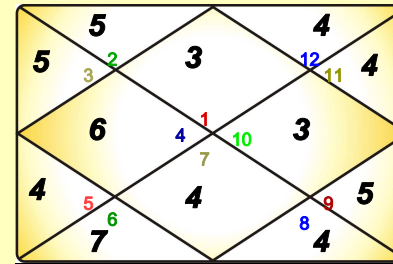
राशि पिण्ड 80

ग्रह पिण्ड 35

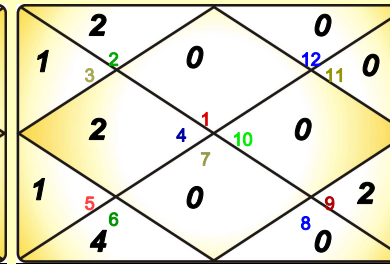
शुद्ध पिण्ड 115

बुध

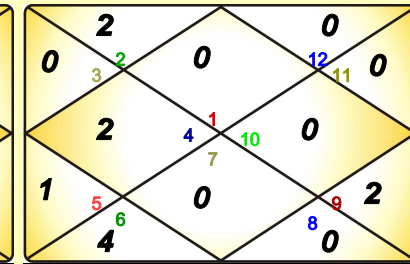
शोधन से पूर्व



त्रिकोन शोधन



एकाधिपत्य शोधन



राशि पिण्ड 76

ग्रह पिण्ड 70

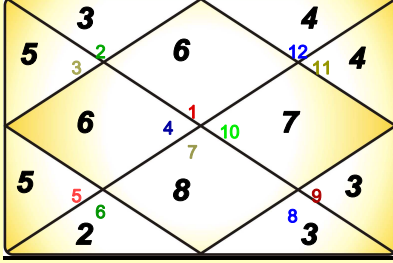
शुद्ध पिण्ड 146

अष्टकवर्ग सिद्धान्त – त्रिकोन एवम् एकाधिपत्य शोधन

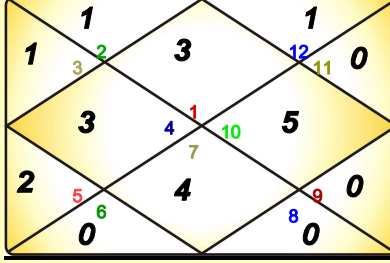
आधार – लग्न (जन्म) कुण्डली (परासर) अष्टकवर्ग सिद्धान्त – (परासर)

गुरु

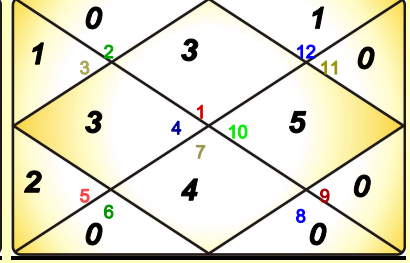
शोधन से पूर्व



त्रिकोन शोधन



एकाधिपत्य शोधन



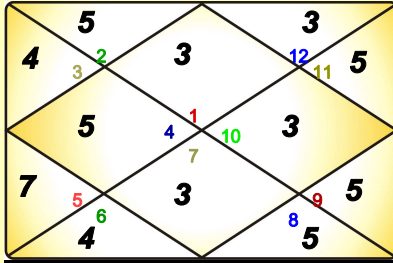
राशि पिण्ड 126

ग्रह पिण्ड 90

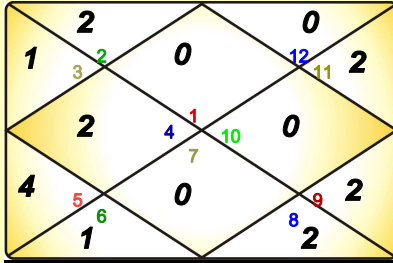
शुद्ध पिण्ड 216

शुक्र

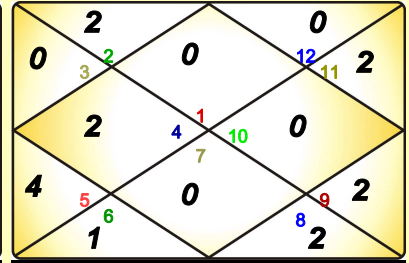
शोधन से पूर्व



त्रिकोन शोधन



एकाधिपत्य शोधन



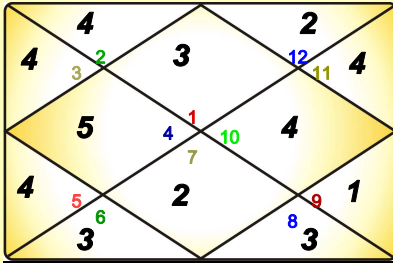
राशि पिण्ड 129

ग्रह पिण्ड 35

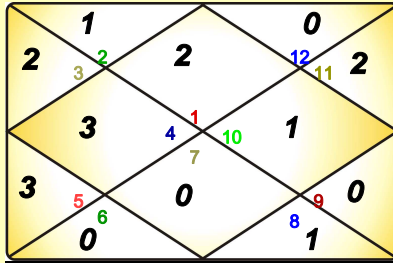
शुद्ध पिण्ड 164

शनि

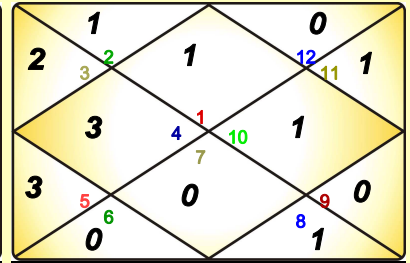
शोधन से पूर्व



त्रिकोन शोधन



एकाधिपत्य शोधन



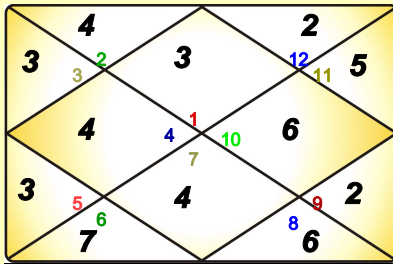
राशि पिण्ड 99

ग्रह पिण्ड 15

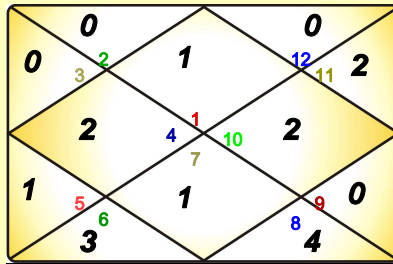
शुद्ध पिण्ड 114

लग्न

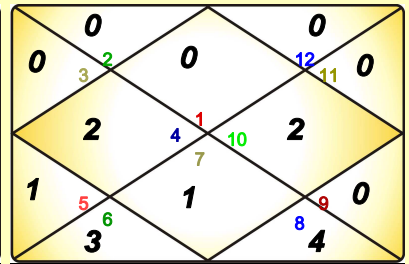
शोधन से पूर्व



त्रिकोन शोधन



एकाधिपत्य शोधन



राशि पिण्ड 82

ग्रह पिण्ड 95

शुद्ध पिण्ड 177

सर्वाष्टक वर्ग से निष्कर्ष

सर्वाष्टक वर्ग

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	
शनि	3	4	4	5	4	3	2	3	1	4	4	2	39
बृहस्पति	6	3	5	6	5	2	8	3	3	7	4	4	56
मंगल	3	2	4	4	4	3	3	2	4	1	6	3	39
सूर्य	2	5	6	5	4	6	3	3	3	2	5	4	48
शुक	3	5	4	5	7	4	3	5	5	3	5	3	52
बुध	3	5	5	6	4	7	4	4	5	3	4	4	54
चन्द्रमा	4	5	4	5	3	3	4	3	4	6	5	3	49
योग	24	29	32	36	31	28	27	23	25	26	33	23	337
लग्न	3	4	3	4	3	7	4	6	2	6	5	2	49
राहु	4	3	3	4	6	3	3	3	3	4	3	4	43

तत्व चक्र

स० व० बिन्दु	पूर्णांक	प्राप्ति	शुभ दिशा
अग्नि त्रिकोन	84.25	80	पूर्व
पृथ्वी त्रिकोन	84.25	83	दक्षिण
वायु त्रिकोन	84.25	92	पश्चिम
जल त्रिकोन	84.25	82	उत्तर

(विशेष- सबसे ज्यादा बिन्दु सबसे शुभ दिशा को इंगित करता है (पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर)। अगर दोनो भागों के बिन्दुओं की संख्या बराबर या आसपास हैं तो शुभ दिशा (उप०, दप०, उप० और दप०) होगी।)

भुवन चक्र

स० व० बिन्दु	पूर्णांक	प्राप्ति	निष्कर्ष
केन्द्र भाव-राशि	112.33	113	मेहनत और लगन
पनफरा भाव-राशि	112.33	116	आर्थिक स्थिति
अपविल्म भाव-राशि	112.33	108	वित्त हानि

दिशा चक्र

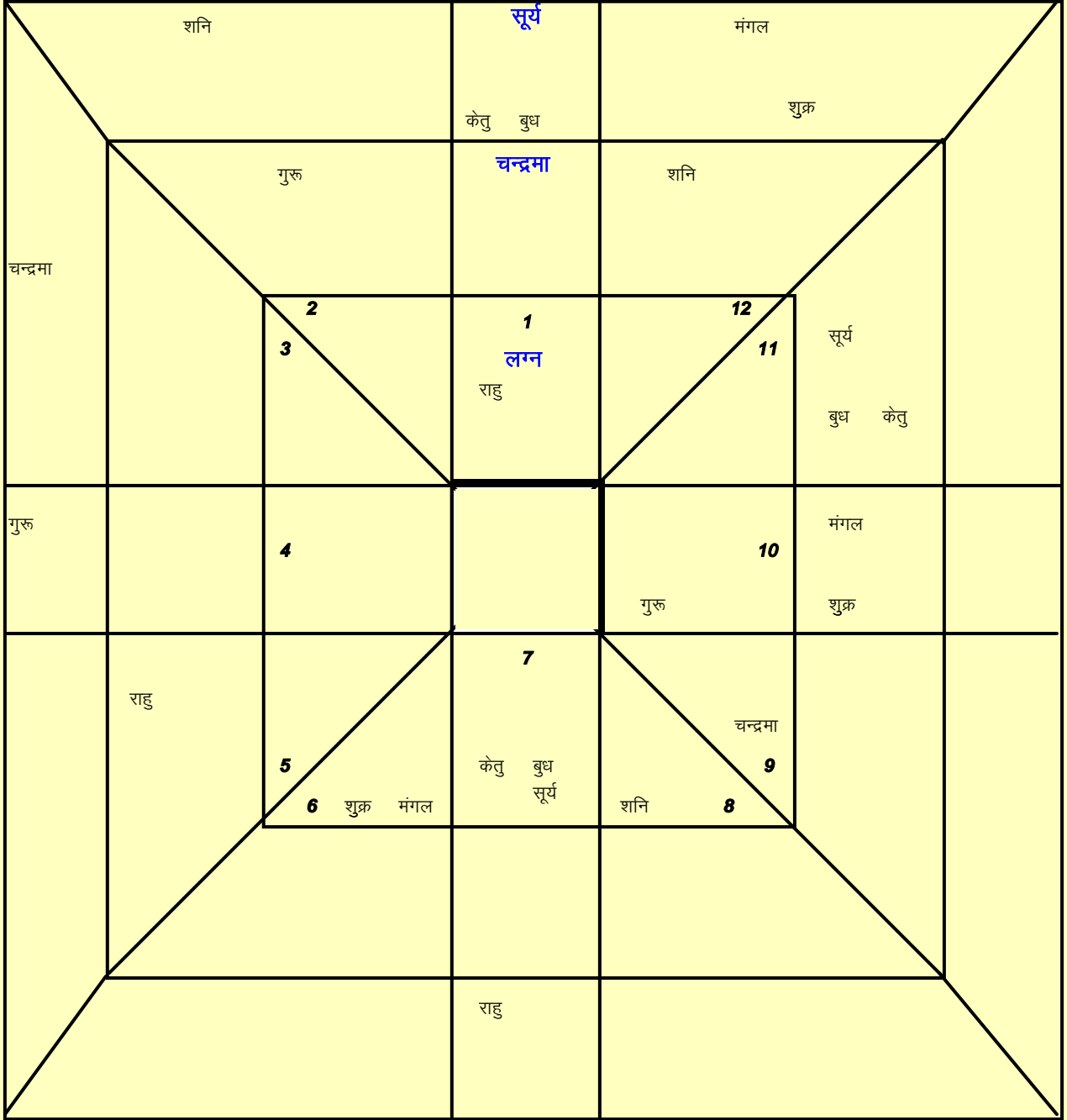
भाग	स० व० बिन्दु	पूर्णांक	प्राप्ति	निष्कर्ष
बन्धुक	भाग्य त्रिकोन	84.25	80	बन्धु -बान्धवो से सहायता
सेवक	कर्म त्रिकोन	84.25	83	नौकरी से अर्जन
पोषक	लाभ त्रिकोन	84.25	92	लाभ और धन
घातक	व्यय त्रिकोन	84.25	82	दुर्भाग्य और हानि

सुदर्शन चक्र

2/14/26/38/50/62/74/86/98/110

1/13/25/37/49/61/73/85/97/109

12/24/36/48/60/72/84/96/108/120



6/18/30/42/54/66/78/90/102/114

7/19/31/43/55/67/79/91/103/115

8/20/32/44/56/68/80/92/104/116

सुदर्शन चक्र शुभ और अशुभ ग्रहों के प्रभाव को दर्शाता है यह (i) लग्न (ii) चन्द्रमा और (iii)सूर्य की स्थिति से इन प्रभावों देखता है। यह जातक की उम्र को भी दर्शाता है कि कब ये प्रभाव जातक पर पड़ेंगे।

यदि केवल शुभ ग्रहों (वृहस्पति, शुक बुध, चन्द्रमा) का प्रभाव है तो पूरा साल खुशीयो से भरा होगा और मांगलिक कार्य होंगे। यदि केवल अशुभ ग्रहों (मंगल, शनि, राहु, केतू, सुर्य) का प्रभाव है तो यह साल अमंगलकारी होगा।

गोचर शनि
(शनि साढ़ेसाती)

द्वादशे जन्मगौ राशौ द्वितीये च शनैश्चर ।
सर्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत् ॥

गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चन्द्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है ।

शनि साढ़ेसाती का पहला चक्र					
साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व-म-दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैया (जन्म चन्द्र से बारहवें)	वृश्चिक वृश्चिक	02:11:2014 21:06:2017	26:01:2017 26:10:2017	2 y.2 m.24 d. 0 y.4 m.5 d.	ताम्र
द्वितीय ढ़ैया (जन्म चन्द्र से पहले)	धनु धनु	17:12:1987 20:06:1990	21:03:1990 15:12:1990	2 y.3 m.3 d. 0 y.5 m.26 d.	स्वर्ण
तृतीय ढ़ैया (जन्म चन्द्र से दूसरे)	मकर मकर	21:03:1990 15:12:1990	20:06:1990 05:03:1993	0 y.3 m.0 d. 2 y.2 m.19 d.	रूपया
कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे)	मीन मीन	02:06:1995 16:02:1996	10:08:1995 17:04:1998	0 y.2 m.8 d. 2 y.1 m.29 d.	ताम्र
अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें)	कर्क कर्क	06:09:2004 26:05:2005	13:01:2005 01:11:2006	0 y.4 m.7 d. 1 y.5 m.7 d.	ताम्र
शनि साढ़ेसाती का दूसरा चक्र					
साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व-म-दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैया (जन्म चन्द्र से बारहवें)	वृश्चिक वृश्चिक	02:11:2014 21:06:2017	26:01:2017 26:10:2017	2 y.2 m.24 d. 0 y.4 m.5 d.	ताम्र
द्वितीय ढ़ैया (जन्म चन्द्र से पहले)	धनु धनु	26:01:2017 26:10:2017	21:06:2017 24:01:2020	0 y.4 m.24 d. 2 y.2 m.29 d.	स्वर्ण
तृतीय ढ़ैया (जन्म चन्द्र से दूसरे)	मकर मकर	24:01:2020 12:07:2022	29:04:2022 17:01:2023	2 y.3 m.4 d. 0 y.6 m.6 d.	रूपया
कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे)	मीन मीन	29:03:2025 20:10:2027	03:06:2027 23:02:2028	2 y.2 m.5 d. 0 y.4 m.4 d.	ताम्र
अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें)	कर्क कर्क	13:07:2034	27:08:2036	2 y.1 m.15 d.	ताम्र
शनि साढ़ेसाती का तीसरा चक्र					
साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व-म-दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैया (जन्म चन्द्र से बारहवें)	वृश्चिक वृश्चिक	12:12:2043 30:08:2044	23:06:2044 08:12:2046	0 y.6 m.11 d. 2 y.3 m.8 d.	ताम्र
द्वितीय ढ़ैया (जन्म चन्द्र से पहले)	धनु धनु	08:12:2046 10:07:2049	06:03:2049 04:12:2049	2 y.2 m.27 d. 0 y.4 m.25 d.	स्वर्ण
तृतीय ढ़ैया (जन्म चन्द्र से दूसरे)	मकर मकर	06:03:2049 04:12:2049	10:07:2049 25:02:2052	0 y.4 m.4 d. 2 y.2 m.22 d.	रूपया
कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे)	मीन मीन	14:05:2054 05:02:2055	02:09:2054 07:04:2057	0 y.3 m.19 d. 2 y.2 m.0 d.	ताम्र
अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें)	कर्क कर्क	24:08:2063 09:05:2064	06:02:2064 13:10:2065	0 y.5 m.14 d. 1 y.5 m.4 d.	ताम्र

विंशोत्तरी दशा

जन्म के समय विंशोत्तरी ग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 0२३:३६:३१) : केतु : 6 व. 4 मा. 4 दि.

क्र० स०	ग्रह दशा	अवधि	से ————— तक
1	केतु महादशा	6 y.4 m.4 d.	18:10:1985 --- 21:02:1992
2	शुक्र महादशा	20 y.0 m.0 d.	21:02:1992 --- 21:02:2012
3	सूर्य महादशा	6 y.0 m.0 d.	21:02:2012 --- 21:02:2018
4	चन्द्रमा महादशा	10 y.0 m.0 d.	21:02:2018 --- 21:02:2028
5	मंगल महादशा	7 y.0 m.0 d.	21:02:2028 --- 21:02:2035
6	राहु महादशा	18 y.0 m.0 d.	21:02:2035 --- 21:02:2053
7	गुरु महादशा	16 y.0 m.0 d.	21:02:2053 --- 21:02:2069
8	शनि महादशा	19 y.0 m.0 d.	21:02:2069 --- 21:02:2088
9	बुध महादशा	17 y.0 m.0 d.	21:02:2088 --- 21:02:2105

विंशोत्तरी अन्तर्दशा

केतु दशा		शुक्र दशा		सूर्य दशा	
अन्तर्दशा	से — तक	अन्तर्दशा	से — तक	अन्तर्दशा	से — तक
केतु		शुक्र	21:02:1992 - 23:06:1995	सूर्य	21:02:2012 - 10:06:2012
शुक्र	18:10:1985 - 19:09:1986	सूर्य	23:06:1995 - 22:06:1996	चन्द्रमा	10:06:2012 - 10:12:2012
सूर्य	19:09:1986 - 25:01:1987	चन्द्रमा	22:06:1996 - 21:02:1998	मंगल	10:12:2012 - 17:04:2013
चन्द्रमा	25:01:1987 - 26:08:1987	मंगल	21:02:1998 - 23:04:1999	राहु	17:04:2013 - 11:03:2014
मंगल	26:08:1987 - 22:01:1988	राहु	23:04:1999 - 23:04:2002	गुरु	11:03:2014 - 28:12:2014
राहु	22:01:1988 - 09:02:1989	गुरु	23:04:2002 - 22:12:2004	शनि	28:12:2014 - 10:12:2015
गुरु	09:02:1989 - 16:01:1990	शनि	22:12:2004 - 21:02:2008	बुध	10:12:2015 - 16:10:2016
शनि	16:01:1990 - 24:02:1991	बुध	21:02:2008 - 22:12:2010	केतु	16:10:2016 - 21:02:2017
बुध	24:02:1991 - 21:02:1992	केतु	22:12:2010 - 21:02:2012	शुक्र	21:02:2017 - 21:02:2018
चन्द्रमा दशा		मंगल दशा		राहु दशा	
अन्तर्दशा	से — तक	अन्तर्दशा	से — तक	अन्तर्दशा	से — तक
चन्द्रमा	21:02:2018 - 22:12:2018	मंगल	21:02:2028 - 20:07:2028	राहु	21:02:2035 - 04:11:2037
मंगल	22:12:2018 - 23:07:2019	राहु	20:07:2028 - 07:08:2029	गुरु	04:11:2037 - 29:03:2040
राहु	23:07:2019 - 22:01:2021	गुरु	07:08:2029 - 14:07:2030	शनि	29:03:2040 - 03:02:2043
गुरु	22:01:2021 - 23:05:2022	शनि	14:07:2030 - 23:08:2031	बुध	03:02:2043 - 23:08:2045
शनि	23:05:2022 - 22:12:2023	बुध	23:08:2031 - 19:08:2032	केतु	23:08:2045 - 10:09:2046
बुध	22:12:2023 - 23:05:2025	केतु	19:08:2032 - 16:01:2033	शुक्र	10:09:2046 - 10:09:2049
केतु	23:05:2025 - 22:12:2025	शुक्र	16:01:2033 - 17:03:2034	सूर्य	10:09:2049 - 04:08:2050
शुक्र	22:12:2025 - 23:08:2027	सूर्य	17:03:2034 - 23:07:2034	चन्द्रमा	04:08:2050 - 03:02:2052
सूर्य	23:08:2027 - 21:02:2028	चन्द्रमा	23:07:2034 - 21:02:2035	मंगल	03:02:2052 - 21:02:2053
गुरु दशा		शनि दशा		बुध दशा	
अन्तर्दशा	से — तक	अन्तर्दशा	से — तक	अन्तर्दशा	से — तक
गुरु	21:02:2053 - 11:04:2055	शनि	21:02:2069 - 24:02:2072	बुध	21:02:2088 - 20:07:2090
शनि	11:04:2055 - 22:10:2057	बुध	24:02:2072 - 04:11:2074	केतु	20:07:2090 - 17:07:2091
बुध	22:10:2057 - 28:01:2060	केतु	04:11:2074 - 13:12:2075	शुक्र	17:07:2091 - 17:05:2094
केतु	28:01:2060 - 03:01:2061	शुक्र	13:12:2075 - 12:02:2079	सूर्य	17:05:2094 - 23:03:2095
शुक्र	03:01:2061 - 04:09:2063	सूर्य	12:02:2079 - 25:01:2080	चन्द्रमा	23:03:2095 - 22:08:2096
सूर्य	04:09:2063 - 22:06:2064	चन्द्रमा	25:01:2080 - 26:08:2081	मंगल	22:08:2096 - 20:08:2097
चन्द्रमा	22:06:2064 - 22:10:2065	मंगल	26:08:2081 - 04:10:2082	राहु	20:08:2097 - 08:03:2100
मंगल	22:10:2065 - 28:09:2066	राहु	04:10:2082 - 10:08:2085	गुरु	08:03:2100 - 14:06:2102
राहु	28:09:2066 - 21:02:2069	गुरु	10:08:2085 - 21:02:2088	शनि	14:06:2102 - 21:02:2105

विंशोत्तरी दशा

सूर्य महादशा (21:02:2012 से 21:02:2018)

सूर्य अन्तर्दशा		चन्द्रमा अन्तर्दशा		मंगल अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
सूर्य	21:02:2012	चन्द्रमा	10:06:2012	मंगल	10:12:2012
चन्द्रमा	27:02:2012	मंगल	25:06:2012	राह	17:12:2012
मंगल	07:03:2012	राह	06:07:2012	गुरु	06:01:2013
राह	13:03:2012	गुरु	02:08:2012	शनि	23:01:2013
गुरु	30:03:2012	शनि	27:08:2012	बुध	12:02:2013
शनि	13:04:2012	बुध	25:09:2012	केतु	02:03:2013
बुध	01:05:2012	केतु	21:10:2012	शुक्र	09:03:2013
केतु	16:05:2012	शुक्र	31:10:2012	सूर्य	31:03:2013
शुक्र	23:05:2012	सूर्य	01:12:2012	चन्द्रमा	06:04:2013

राहु अन्तर्दशा		गुरु अन्तर्दशा		शनि अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
राह	17:04:2013	गुरु	11:03:2014	शनि	28:12:2014
गुरु	05:06:2013	शनि	19:04:2014	बुध	21:02:2015
शनि	19:07:2013	बुध	04:06:2014	केतु	11:04:2015
बुध	09:09:2013	केतु	16:07:2014	शुक्र	02:05:2015
केतु	25:10:2013	शुक्र	02:08:2014	सूर्य	28:06:2015
शुक्र	14:11:2013	सूर्य	20:09:2014	चन्द्रमा	16:07:2015
सूर्य	07:01:2014	चन्द्रमा	04:10:2014	मंगल	14:08:2015
चन्द्रमा	24:01:2014	मंगल	28:10:2014	राह	03:09:2015
मंगल	20:02:2014	राह	15:11:2014	गुरु	25:10:2015

बुध अन्तर्दशा		केतु अन्तर्दशा		शुक्र अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
बुध	10:12:2015	केतु	16:10:2016	शुक्र	21:02:2017
केतु	23:01:2016	शुक्र	24:10:2016	सूर्य	23:04:2017
शुक्र	10:02:2016	सूर्य	14:11:2016	चन्द्रमा	11:05:2017
सूर्य	02:04:2016	चन्द्रमा	20:11:2016	मंगल	11:06:2017
चन्द्रमा	18:04:2016	मंगल	01:12:2016	राह	02:07:2017
मंगल	14:05:2016	राह	08:12:2016	गुरु	26:08:2017
राह	01:06:2016	गुरु	28:12:2016	शनि	13:10:2017
गुरु	17:07:2016	शनि	14:01:2017	बुध	10:12:2017
शनि	28:08:2016	बुध	03:02:2017	केतु	31:01:2018

कुण्डली में उपस्थित रोगों से संबंधित योग

सिर दर्द और माइग्रेन से संबंधित कुण्डली में उपस्थित योग

आपकी कुण्डली में राहु लग्न में स्थित है तथा यह पाप ग्रहों के साथ स्थित है, या उससे दृष्ट है, आपको वात-पित्त के दोष या चिंता आदि से सिर दर्द हो सकता है।

मस्तिष्क विकार से संबंधित कुण्डली में उपस्थित योग

आपकी कुण्डली में दूसरे भाव का स्वामी पापग्रह एवं मंगल के साथ रोग भाव में स्थित है, आप पित्त कोप के कारण अपनी सूध-बुध एवं होशों-हवास खो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में लग्न पर एक से अधिक पापग्रहों की दृष्टि पड़ रही है, आप कुछ आलसी हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में केन्द्र भाव में गुरु स्थित है, आप चंचल चित्त वाले हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में आठवें भाव का स्वामी, चन्द्रमा या शुक के साथ दूसरे, छठे, आठवें, ग्यारहवें या बारहवें भाव में स्थित है, आप पागलपन या मानसिक असंतुलन की बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में पापग्रह राहु लग्न में स्थित है और चन्द्रमा तथा शनि आठवें भाव में स्थित है, आप मूर्च्छाकी बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा या लग्न से चौथे भाव का स्वामी राहु या केतु के नक्षत्र में अशुभ स्थिति में है, आप सीजोफ्रेनिया रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा पापग्रह की राशि या नवांश में स्थित है, आप मानसिक रोग के शिकार हो सकते हैं।

नेत्र (आँखों) से संबंधित विकार से संबंधित कुण्डली में उपस्थित योग

आपकी कुण्डली में दूसरे भाव के स्वामी और लग्न के स्वामी एक साथ छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हैं, आपको आँखों से संबंधित बीमारी हो सकती है।

आपकी कुण्डली में सूर्य तुला राशि में स्थित है, आप आँखों से संबंधित बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में पहले या दूसरे भाव का स्वामी छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है, आप कटरेक्ट बीमारी के शिकार हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में छठे एवं आठवें भाव में पाप ग्रह स्थित हैं, आपकी आँखों में कोई दोष हो सकता है या आपकी दृष्टि कमजोर हो सकती

है।

आपकी कुण्डली में लग्न में राहु तथा सातवें भाव में सूर्य स्थित है, आपकी आंखों में कोई दोष हो सकता है या आपकी दृष्टि कमजोर हो सकती है।

आपकी कुण्डली में मंगल पाप ग्रह की राशि में स्थित है, आपकी आंखों में कोई दोष हो सकता है या आपकी दृष्टि कमजोर हो सकती है।

आपकी कुण्डली में दूसरे भाव का स्वामी एवं लग्न भाव का स्वामी त्रिक भाव में स्थित हैं, किसी चोट या दुर्घटना के कारण आपकी आंखों की दृष्टि प्रभावित हो सकती है।

आपकी कुण्डली में शुक्र छटे या आठवें भाव में स्थित है, आपकी दायीं आंख में कोई समस्या हो सकती है।

कर्ण (कानों) से संबंधित विकार से संबंधित कुण्डली में उपस्थित योग

आपकी कुण्डली में बुध तीसरे भाव के स्वामी या छठे भाव के स्वामी होकर कमजोर तथा अशुभ स्थिति में है, आपको सुनने में कोई परेशानी हो सकती है।

आपकी कुण्डली में छठे भाव के स्वामी एवं बुध पर पाप ग्रहों की दृष्टि पड़ रही है, आपको सुनने में परेशानी हो सकती है या आपको कानों से संबंधित कोई अन्य रोग हो सकता है।

आपकी कुण्डली में तीसरे भाव का स्वामी पापग्रह एवं किसी शुष्क ग्रह जैसे – सूर्य, मंगल या शनि के साथस्थित है, आपके सुनने की शक्ति क्षीण हो सकती है।

आपकी कुण्डली में तीसरे भाव के स्वामी की राशि का स्वामी जिस राशि तथा नवांश में स्थित है, उसका स्वामी केंद्र में स्थित है और वह पाप ग्रहों के साथ स्थित है या उनसे दृष्ट है, आपको कानों से संबंधित कोई समस्या हो सकती है।

मुख (मुँह) से संबंधित विकार से संबंधित कुण्डली में उपस्थित योग

आपकी कुण्डली में बुध छठे भाव का स्वामी है, आपके जीभ पर छाले पड़ सकते हैं।

आपकी कुण्डली में राहु से अक्रांत राशि के स्वामी के साथ दूसरे भाव का स्वामी त्रिक भाव में स्थित है, उसकी महादशा में बुध की अंतर्दशा आपके पर आप जिह्वा रोग से ग्रसित हो सकते हैं या आपकी जीभ कटसकती है।

आपकी कुण्डली में सातवें भाव के स्वामी से दूसरे भाव में केतु स्थित है, आप तुतला सकते हैं।

आपकी कुण्डली में दूसरे भाव का स्वामी त्रिक भाव में स्थित है तथा पाप ग्रह के साथ स्थित है या उससे दृष्ट है, आप मुँह से संबंधित किसी बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में पाप ग्रह दूसरे भाव में स्थित हैं, आप मुँह से संबंधित किसी बीमारी से ग्रसित हो सकते

हैं।

दाँतो से संबंधित विकार से संबंधित कुण्डली में उपस्थित योग

आपकी कुण्डली में मेष, वृष या धनु राशि लग्न में स्थित है और उस पर पाप ग्रहों की दृष्टि पड़ रही है, आपको पायरिया होने की संभावना हो सकती है।

आपकी कुण्डली में पाप ग्रह सातवें भाव में स्थित हैं और उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि नहीं पड़ रही है, आप दाँतों की बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में छठे भाव का स्वामी एवं धन भाव का स्वामी पाप ग्रहों के साथ स्थित है, आपके दाँत जल्द टूट सकते हैं।

आपकी कुण्डली में राहु पांचवें भाव में या लग्न में स्थित है, आपको दाँतों से संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

गले/कण्ठ से संबंधित विकार से संबंधित कुण्डली में उपस्थित योग

आपकी कुण्डली में राहु या केतु केन्द्र या त्रिकोण में स्थित है, आपको गले से संबंधित बीमारी हो सकती है।

साँस से संबंधित विकार से संबंधित कुण्डली में उपस्थित योग

आपकी कुण्डली में सूर्य तथा चन्द्रमा की राशियों के स्वामी नीच स्थिति में या अस्त स्थिति में हैं, आप प्लयूरिसी बीमारी के शिकार हो सकते हैं।

क्षय रोग (टी. बी.) से संबंधित विकार से संबंधित कुण्डली में उपस्थित योग

आपकी कुण्डली में केतु छठे भाव के स्वामी के साथ स्थित है या छठे भाव के स्वामी पर अपनी दृष्टि डाल रहा है, आप क्षय रोग के शिकार हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में लग्न का स्वामी शुक्र के साथ छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है, आप क्षय रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

हृदय से संबंधित विकार से संबंधित कुण्डली में उपस्थित योग

आपकी कुण्डली में छठे भाव का स्वामी पाप ग्रहों के साथ स्थित है और शुभ ग्रह कूर ग्रहों के साथ स्थित है या उनसे दृष्ट है, आपको अचानक दिल में घबराहट या बेचैनी हो सकती है।

है।

आपकी कुण्डली में तीसरे भाव का स्वामी केतु के साथ स्थित है, आप हृदय रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में तीसरे भाव का स्वामी राहु या केतु के साथ स्थित है, आप हृदय रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में शनि आठवें भाव में स्थित है, आप हृदय रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में पांचवें भाव के स्वामी का नवांशपति किसी पाप ग्रह के साथ स्थित हैं या उससे दृष्ट है, आप कठोर स्वभाव वाले हो सकते हैं और आप हृदय से संबंधित बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं।

रक्त (खून)से संबंधित विकार से संबंधित कुण्डली में उपस्थित योग

आपकी कुण्डली में दूसरे भाव का स्वामी चौथे, छठे या आठवें भाव में मंगल के साथ स्थित है या उससे दृष्ट है, आपको रक्त-संबंधित रोग हो सकता है।

आपकी कुण्डली में मंगल या चन्द्रमा नीच राशि में, अस्त या शत्रु राशि में अशुभ स्थिति में है, आप रक्त-संबंधित रोग के शिकार हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा और मंगल किसी त्रिक भाव में स्थित हैं या उसके स्वामी हैं, आप रक्त-चाप रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में गुरु एवं शनि एक साथ स्थित हैं या एक-दूसरे पर अपनी दृष्टि डाल रहे हैं और अशुभस्थिति में हैं, आप निम्न रक्त-चाप से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में छठे, सातवें, लग्न या व्यय भाव में शनि के साथ मंगल स्थित है और उस पर सूर्य की दृष्टि पड़ रही है, आपको रक्त विकार से संबंधित बीमारी जैसे रक्तचाप, रक्तपात या खून की कमी हो सकती है।

मधुमेह (डायबिटीज) से संबंधित कुण्डली में उपस्थित योग

आपकी कुण्डली में गुरु या शुक्र अशुभ या नीच राशि में छठे या आठवें भाव में स्थित है, आप मधुमेह रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में मंगल और गुरु या शुक्र एक साथ छठे भाव या कन्या राशि में अशुभ स्थिति में हैं, आप मधुमेह रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में पांचवें भाव का स्वामी छठे, आठवें या बारहवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है, आपको मधुमेह बीमारी से ग्रसित होने की संभावना हो सकती है।

आपकी कुण्डली में छठे भाव का स्वामी पापग्रह के साथ स्थित है और मंगल छठे भाव में स्थित है, आपके

मूत्र में शक्कर की मात्रा बढ़ सकती है।

आपकी कुण्डली में पांचवें भाव का स्वामी नीच राशि में स्थित है एवं उस नीच राशि का स्वामी छठे भाव में स्थित है, आप मधुमेह रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

उदर (पेट) से संबंधित विकार से संबंधित कुण्डली में उपस्थित योग

आपकी कुण्डली में राहु लग्न में और शनि आठवें भाव में अशुभ स्थिति में है, आप आंतों की बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में छठे भाव का स्वामी बलहीन है, लग्न पर पापग्रह की दृष्टि पड़ रही है एवं आठवें भाव में पापग्रह स्थित है या उस पापग्रह की दृष्टि पड़ रही है, आप किसी ऐसी बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं, जिसमें भोजन करने में परेशानी हो सकती है।

आपकी कुण्डली में राहु या अन्य कोई पाप ग्रह लग्न में स्थित है तथा शनि आठवें भाव में स्थित है, आप उदर रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में बुध सातवें भाव में स्थित है तथा बुध पर पाप ग्रह की दृष्टि पड़ रही है, आप वात-कफजनित बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में राहु या केतु सातवें भाव में स्थित है, आप उदर से संबंधित बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में पाप ग्रह छठे एवं आठवें भाव में स्थित हैं तथा छठे भाव का स्वामी पाप ग्रह के साथ सातवें भाव में स्थित है, आपको उदर से संबंधित किसी समस्या का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली में लग्न में पापग्रह स्थित है और आठवें भाव में शनि स्थित है, आप मन्दाग्नि से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में राहु लग्न में स्थित है और शनि आठवें भाव में स्थित है, आप मन्दाग्नि से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में शुक्र छठे भाव में स्थित है और छठे भाव का स्वामी पापग्रहों के साथ स्थित है या उनसेदृष्ट है, आप अतिसार से पीड़ित हो सकते हैं एवं कमजोरी महसूस कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली में सातवें भाव के स्वामी चंद्रमा या लग्न के स्वामी पर केवल क्रूर ग्रहों की दृष्टि पड़ रही है, आप जिगर से संबंधित किसी समस्या से पीड़ित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में आठवें भाव में शनि तथा लग्न में राहु स्थित है, आप पसलियों में दर्द या गांठ से पीड़ित हो सकते हैं।

पीलिया (किडनी) से संबंधित विकार से संबंधित कुण्डली में उपस्थित योग

आपकी कुण्डली में छठे भाव का स्वामी और चन्द्रमा या चन्द्र-राशि का स्वामी अशुभ स्थिति में है, आप पीलिया रोग के शिकार हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में अशुभ ग्रह छठे, सातवें तथा आठवें भाव में स्थित हैं, आप गुर्दे की बीमारी के शिकार हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में मंगल तथा शुक या बुध छठे या सातवें भाव में अशुभ स्थिति में हैं, आप गुर्दे के रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में छठे भाव के स्वामी या सातवें भाव के स्वामी, आठवें भाव के स्वामी या व्यय भाव के स्वामी के साथ अशुभ स्थिति में हैं, आप गुर्दे की बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में सातवें भाव में अशुभ ग्रह स्थित है तथा सातवें भाव का स्वामी छठे या आठवें भाव में स्थित है, आप गुर्दे से संबंधित रोग के शिकार हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में छठे, सातवें तथा आठवें भाव में पापी ग्रह स्थित है, आपको किडनी से संबंधित बीमारी से ग्रसित होने की संभावना हो सकती है।

रोगों का ज्योतिषिय उपचार

- 1- किसी भी रोग के उपचार हेतु सर्वप्रथम उपयोगी वस्तु होती है, उचित औषधि। औषधि रोग के निदान का प्रत्यक्ष साधन होती है। ज्योतिषशास्त्र में इस उपाय को 'औषधि' कहा जाता है।
- 2- ज्योतिषशास्त्र में दैवीय शक्तियों के नाम, मंत्र आदि का जाप, स्तुति, आह्वान आदि को भी रोगोपचार का एक साधन माना जाता है। यह 'जप' विधि कही जाती है।
- 3- गरीब व जरूरतमंद लोगों को दान देना, धार्मिक संगठनों, मंदिर आदि में दान करना भी रोग उपचार की एक ज्योतिषीय विधि मानी जाती है, जिसे 'दान' कहा जाता है।
- 4- रोग उपचार के लिए योग्य व निपुण ब्राह्मण व व्यक्तियों द्वारा मंत्रोच्चारण कर अग्नि में आहुति देना, पवित्र वस्तुओं को अग्नि में होम कर दैवीय शक्तियों को प्रसन्न करना 'होम' विधि कही जाती है।
- 5- ज्योतिषशास्त्र में व्यक्ति के रोग के अनुरूप उचित रत्न धारण कर रोग से निदान पाने को 'रत्नधारण' विधि कहा जाता है।
- 6- स्नान के जल में औषधीय गुणों वाले पौधों, पत्तों या वस्तुओं आदि को डालकर स्नान करने से रोग से निजात पाया जाता है। इसे 'औषधि-स्नान' विधि कहा जाता है।
- 7- पवित्र नदियों में स्नान करके भी रोगों से मुक्ति पाने का प्रयास किया जाता है। ज्योतिषशास्त्र में इसे 'तीर्थस्नान' विधि कहा जाता है।
- 8- ज्योतिषशास्त्र में व्यक्ति के रोग व ग्रह के अनुसार उपयुक्त ताबीज धारण कर रोग से मुक्ति पाया जा सकता है। मंत्रोच्चारण द्वारा पवित्र किए गए ताबीज को धारण करने को 'यंत्रधारण' विधि कहा जाता है।
- 9- ज्योतिषशास्त्र में व्यक्ति द्वारा अपने ग्रहयोग, रोग व दिवस के अनुसार उपयुक्त रंग का वस्त्र धारण करने से रोगादि से प्राप्त होने वाले कष्ट में कमी आती है। व्यक्ति विशेष के लिए निर्धारित रंग का वस्त्र धारण करने की विधिको 'वस्त्रधारण' विधि कहा जाता है।
- 10- देवी-देवताओं को पुष्प अर्पित कर रोग से निदान पाने के लिए की गई प्रार्थना को 'पुष्पार्चना' कहा जाता है।
- 11- व्यक्ति विशेष के अनुसार अथवा रोग के अनुसार पुष्प धारण कर रोग से मुक्ति पाने को 'पुष्पधारण' विधि कहा जाता है।
- 12- ज्योतिषशास्त्र में रोग उपचार के लिए नवग्रहों की पूजा को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। नवग्रहों को प्रसन्न कर रोग से मुक्ति पाने को 'नवग्रहपूजा' विधि कहा जाता है।
- 13- पवित्र धार्मिक ग्रंथों जैसे रामायण, महाभारत, भगवतगीता आदि का पाठ करने से भी रोगादि से मुक्ति पाई जा सकती है।
- 14- ज्योतिषशास्त्र में रोगोपचार के लिए देवी-देवता के मंत्रों से स्तुति करते हुए साष्टांग प्रणाम करने को 'नमस्कार' कहा जाता है।
- 15- रोग के उपचार हेतु ग्रहों से संबंधित देवता की पूजा, अर्चना व अराधना भी उपयोगी माना जाता है। इस विधि को 'ग्रह अधिदेवता भजन' कहा जाता है।
- 16- रोगोपचार के लिए मंदिरों आदि का दर्शन करना क्षेत्र दर्शन कहलाता

है।

17- रोग के उपचार हेतु धार्मिक बलिदान भी उपयोगी होता है। इस विधि को 'बलिकर्म' कहा जाता है।

18- पवित्र व धार्मिक लोगों की सतसंगत कर शारीरिक व मानसिक कष्टों की शांति हेतु प्रयास करना 'सतसंगम' कहलाता है।

19- रोगी व्यक्तियों की सेवा करने से भी रोग पीड़ा में शांति मिलती है। इस विधि को 'रोगी परिचारन' कहा जाता है।

रोगों से संबंधित योग विविध उपाय

सिर दर्द और माइग्रेन के कारण और विविध उपाय



सिर दर्द और माइग्रेन से संबंधित कुण्डली में उपस्थित योग

आपकी कुण्डली में राहु लग्न में स्थित है तथा यह पाप ग्रहो के साथ स्थित है, या उससे दृष्ट है, आपको वात-पित्त के दोष या चिंता आदि से सिर दर्द हो सकता है।

सिर दर्द और माइग्रेन के लिए रत्न और उपरत्न का सुझाव

- (1). अजीब वस्तुओं या विषयों से संबंधित सपने बार-बार आने पर आपको 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा और 9 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (2). यदि आप वातोन्माद/मूर्छा (हिस्टीरिया) रोग से पीड़ित हैं, तो आपको 7 या 9 रत्ती का मोती, 14 या 18 रत्ती का लाल मूंगा और 12 या 16 रत्ती का चंद्र रत्न धारण करना चाहिए।
- (3). मिर्गी से पीड़ित होने पर आपको उपचार हेतु पन्ना, मोती और मूंगा एक साथ धारण करना चाहिए।
- (4). अत्यधिक तनावग्रस्त होने के कारण मानसिक असंतुलन की स्थिति उत्पन्न होने पर आपको 4 या 8 रत्ती का पन्ना और 16 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न धारण करना चाहिए।
- (5). यदि आप आनुवांशिक मानसिक असंतुलन से पीड़ित हैं, तो आपको 24 या 30 रत्ती का चंद्र रत्न और 12 या 14 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (6). मणिक्य, मोती तथा पन्ना पहनें।
- (7). अनिद्रा से छुटकारा पाने के लिए आपको पन्ना, पुखराज और मोती धारण करना चाहिए।
- (8). शिराप्रदाह से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण

करना चाहिए।

- (9). स्मरण शक्ति कमजोर होने पर आपको 5 या 7 रत्ती का पन्ना, 4 या 6 रत्ती का लहसुनिया और 12 18 रत्ती का चंद्र रत्न अथवा 7 या 9 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (10). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए पन्ना, चंद्ररत्न, लाल मूंगा और पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (11). अनिद्रा से निजात पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का चंद्ररत्न धारण करना चाहिए।
- (12). यदि आप शराब पीने के आदी हैं, तो आपको इससे छुटकारा पाने के लिए 14 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न और 9 या 14 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए।
- (13). सिरदर्द से बचने के लिए आपको 4 या 5 रत्ती का माणिक अथवा 20 या 24 का माणिक का उपरत्न धारण करना चाहिए।
- (14). मानसिक विकार से बचने के लिए आपको 16 या 24 रत्ती का चंद्र रत्न और 6 या 8 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (15). मिरगी/वातोन्माद से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा और मोती धारण करना चाहिए।
- (16). यदि आपको मिरगी का दौरा पड़ता है, तो आपको इससे बचने के लिए 18 या 14 रत्ती का चंद्र रत्न, 10 या 14 रत्ती का सफेद मोती और 1 या 2 रत्ती का हीरा अथवा 4 या 5 रत्ती का जरकन धारण करना चाहिए।
- (17). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का पीला पुखराज और 5 या 6 रत्ती का चंद्ररत्न धारण करना चाहिए।
- (18). अनिद्रा से निजात पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का पन्ना, अनामिका में 5 रत्ती का पीला पुखराज और तर्जनी में 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (19). अनिद्रा से निजात पाने के लिए 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।
- (20). आलस्य या उदासीनता से संबंधित रोग से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का मोती और 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (21). यदि आप पागलपन में बेहोशी (हिस्टीरीकल इन्सैनिटी) से पीड़ित हैं, तो आपको 20 या 25 रत्ती का चंद्र रत्न और 1 या 2 रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।
- (22). मिरगी/लकवा से पीड़ित होने पर आपको साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (23). मिर्गी से बचने के लिए पन्ना, 6 रत्ती का चंद्ररत्न और 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना

चाहिए।

- (24). भूलने की बीमारी से निजात पाने के लिए आपको 5 रत्ती का लाल मूंगा और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।
- (25). अनिद्रा से निजात पाने के लिए 10 या 12 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (26). नवरत्न का पेंडल गले में पहनना भी लाभदायक होगा।
- (27). नीलम या पुखराज चांदी अथवा तांबे की अंगूठी में पहनें।
- (28). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए पन्ना, नीलम, और सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (29). स्थायी सिरदर्द से छुटकारा पाने के लिए आप पन्ना और मोती धारण कर सकते/सकती हैं।
- (30). श्लैष्मिक ज्वर से बचने के लिए 5 रत्ती का लाल मूंगा और 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (31). यदि आप विषाद रोग से ग्रसित हैं, तो आपको 5 या 8 रत्ती का नीलम और 5 या 7 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (32). मिर्गी से बचने के लिए 5 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का नीलम और 5 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (33). मिर्गी से बचने के लिए पन्ना और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

सिर दर्द और माइग्रेन के लिए टोटके

- 1 – सिर दर्द होने पर सूर्योदय अथवा सूर्यास्त के समय एक गुड़ की डली ले कर किसी चौराहे पर जा कर खड़े हो जाना चाहिए तथा दक्षिण दिशा में मुंह कर के गुड़ की डली को अपने दांतों से दो टुकड़े कर लेने चाहिए। गुड़ की डली के दोनों टुकड़े हाथ में ले कर उत्तर दिशा में 'अपने पीछे' डाल कर घर आ जाना चाहिए। यह क्रिया प्रातः बासी मुख ही करें। 3 घंटे के अंदर दर्द दूर हो जाएगा। प्रायः इसे दोहराने की आवश्यकता नहीं पड़ती। फिर भी अगर ठीक न हो, तो दुबारा करें। ईश्वर पर भरोसा कर उपाय करने से लाभ होगा।
- 2 – शनिवार एवं मंगलवार के दिन हनुमान जी के पैरों पर लगे सिंदूर का तिलक लगाते रहने से सिर दर्दकी परेशानी खत्म हो जाती है।
- 3 – यदि सिर दर्द, या आधासीसी की शिकायत रहती हो, तो सोने वाले बिस्तर की उत्तर-पश्चिम दिशा में, गद्दे के नीचे, एक सफेद रुमाल सदा रखा करें। नहाने के पानी में नीबू की कुछ बूंदें डाल कर नहाया करें। सिर पूर्व दिशा में कर के सोएं। साथ ही 5 रत्ती का बढ़िया मोती कनिष्ठा में पहनें।
- 4 – दोनो कोहनियों के ऊपर वाले भाग को किसी नर्म रस्सी या बारीक कपड़े या कतरन या रिबन से

कसकर बांधे। ऐसा करने से 5-10 मिनट में ही सिर का दर्द ठीक हो जाता है।

तनाव तथा मानसिक अशांति दूर करने हेतु, सोते वक्त पूर्व की तरफ सिरहाना रखना चाहिए। 5 रत्ती का चंद्रमणि, चांदी में जड़वा कर, सोमवार को चांद निकलने के बाद, चंद्रमसे नमः कहते हुए, दाहिने हाथ की अनामिका में तथा एक अष्ट धातु की अंगूठी बीच की अंगुली में धारण करनी चाहिए। प्रतिदिन हनुमान जी का चालीसा पढ़ें। अपने शयन कक्ष में 200 ग्राम वजन की फिटकरी लटकाएं। चंद्रमणि को धारण करने से पूर्व कच्चे दूध से धोयें फिर गंगा जल से धोकर रख लें इसमें श्रद्धा परम आवश्यक है।

मानसिक अशांति की समस्या किसी पूर्व पाप का परिणाम होती है। इसे दूर करने के लिए यह उपाय बहुत लाभकारी है। प्रतिदिन हनुमान जी की पूजा और उनका स्मरण करें। हनुमान चालीसा का अवश्य पाठ करें। शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से उपाय शुरू करें। सोते वक्त एक छोटा सा चाकू सिरहाने के नीचे रखें, जिस कमरे में सोते हों, कपूर की ज्योति जलाएं, जिससे समस्या का समाधान हो जाता है। पूर्व जन्म के पाप नष्ट होने लगते हैं और स्थितियां अनुकूल होने लगती हैं तथा मानसिक अशांति दूर होती है।

मंगलवार को लाल रंग का मूंगा ले कर आएं। उसको चांदी की अंगूठी में पहनें। इसे मंगलवार को पहनना है तथा पहनते समय हनुमान जी की मूर्ति के चरणों में लगा कर कहें : श्री राम दूताय हनुमान नमः या श्री हनुमते नमः कह कर उसे पहन लें। एक माह के भीतर ही आलस्य दूर भाग जाएगा। इसे शुक्ल पक्ष के मंगलवार को पहनना चाहिए।

कई बार आलस्य के कारण काम में मन नहीं लगता, तो निम्न लिखित उपाय करें :

अगर नींद न आती हो, तो निम्न मंत्र का पाठ अवश्य करें। बिस्तर पर लेटने के बाद शरीर को एकदम ढीला छोड़ दें और 108 तक गिनती गिने। फिर उसके बाद इस मंत्र का जाप करें : कुंभकर्णाय नमः, तो जल्दी ही नींद आ जाएगी। किसी प्रकार की कोई गोली खाने की जरूरत नहीं होगी।

कुछ व्यक्तियों को सिर के आधे भाग में तेज दर्द हो जाता है तथा बहुत डॉक्टरों इलाज कराने पर भी फर्क नहीं पड़ता। ऐसे व्यक्तियों को दर्द होने पर सूर्योदय अथवा सूर्यास्त के समय एक गुड़ की डली ले कर किसी चौराहे पर जा कर खड़े हो जाना चाहिए तथा दक्षिण दिशा में मुंह कर के गुड़ की डली को अपने दांतों से दो टुकड़े कर लेने चाहिए। गुड़ की डली के दोनों टुकड़े हाथ में ले कर उत्तर दिशा में 'अपने पीछे' डाल कर घर आ जाना चाहिए। ईश्वर पर भरोसा कर उपाय करने से लाभ होगा।

अधकपारी के दर्द से पीड़ित व्यक्ति, सूर्योदय से पहले, शनिवार के दिन, 50 ग्राम गुड़ की डली ले कर चौराहे पर जाए। दक्षिण दिशा की ओर मुख कर दांतों से उस डली के 2 टुकड़े करें। मुंह का टुकड़ा वहीं उगल दें तथा हाथ का टुकड़ा भी वहीं फेंक वापिस आ जाएं और पीछे मुड़ कर न देखें। यह क्रिया प्रातः बासी मुख ही करें। 3 घंटे के अंदर दर्द दूर हो जाएगा। प्रायः इसे दोहराने की आवश्यकता नहीं पड़ती। फिर भी अगर ठीक न हो, तो दुबारा करें।

मिरगी के रोगी को चाहिए कि अपने हाथ से भोज पत्र पर, अनार की कलम और लाल चंदन से, ऊपर लिखे अनुसार 15 का यंत्र बनाएं। शुद्ध हींग की कुछ मात्रा यंत्र के ऊपर रख दें। फिर यंत्र को हींग सहित किसी तावीज में रख कर अपने गले में डाल लें। गले में डालने हेतु लाल रंग का रेशमी धागा काममें लें।

सूर्य निकलने से पहले कोई स्त्री या पुरुष, किसी चौराहे पर जाकर, दक्षिण की तरफ मुख करके, गुड़ को मुख से लगाकर, वहाँ फेंक कर आये, तो भयंकर से भयंकर सिरदर्द ठीक हो जाता

है।

शनिवार एवं मंगलवार के दिन हनुमान जी के पैरों पर लगे सिंदूर का तिलक लगाते रहने से सिर दर्द की परेशानी खत्म हो जाती है।

यदि सिर दर्द, या आधासीसी की शिकायत रहती हो, तो सोने वाले बिस्तर की उत्तर-पश्चिम दिशा में, गद्दे के नीचे, एक सफेद रुमाल सदा रखा करें। नहाने के पानी में नीबू की कुछ बूंदें डाल कर नहाया करें। सिर पूर्व दिशा में कर के सोएं। साथ ही 5 रत्ती का बढ़िया मोती कनिष्ठा में पहनें।

मानसिक तनाव दूर करने के लिए, सोमवार को गायत्री यंत्र तथा गीता यंत्र को अपने घर में स्थापित करें तथा नित्य श्रद्धा-भक्ति पूर्वक यंत्रों के दर्शन करें। मोती की माला गले में धारण करें और निम्न मंत्र का एक माला जप नित्य करें।

मंत्र : ओम नमो भगवते वासुदेवाय

मानसिक तनाव दूर करने के लिए, घर के सभी सदस्यों को रात्रि में सोते समय पूर्व या दक्षिण की तरफ सिरहाना रखना चाहिए। शयन कक्ष में सोने से पहले कपूर का दीया या उसका एक छोटा सा टुकड़ा जलाएं।

मानसिक तनाव दूर करने के लिए, प्रतिदिन हनुमान जी का पूजन और स्मरण करें, प्रत्येक शनिवार को शनिको तेल चढ़ाएं। अपनी पहनी हुई एक जोड़ी चप्पल किसी गरीब को, शनिवार के दिन, दान कर दें। पांच रत्ती का मोती धारण करें, लाभ प्राप्त होगा।

प्रतिदिन हनुमान जी की पूजा और उनका स्मरण करें। हनुमान चालीसा का पाठ करें। शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से उपाय शुरू करें। सोते वक्त एक छोटा सा चाकू सिरहाने के नीचे रखें। जिस कमरे में सोते हों, उसमें कपूर का दीया जलाएं। समस्या का समाधान होगा, पूर्व जन्म के पाप नष्ट होंगे, स्थितियां अनुकूल होंगी तथा मानसिक अशांति दूर होगी।

यदि परिवार में कोई भी सदस्य मानसिक तनाव से ग्रस्त हो, तो उसे पलंग पर मृग चर्म बिछा कर सोना चाहिए। धीरे-धीरे तनाव दूर होने लगेगा। साथ ही रात्रि में बुरे स्वप्न आते हों, तो एक बर्तन में पानी सिरहाने रख कर सोना चाहिए। सुबह उस पानी को गुलाब, या किसी अन्य कांटे वाले पौधे में डाल दें। मन ही मन 11 बार माधव-माधव का जप करें तो दुःस्वप्न निष्फल हो जाएगा।

मानसिक परेशानियां दूर करने के लिए, प्रतिदिन हनुमान जी का पूजन और स्मरण करें। प्रत्येक शनिवार को शनि को तेल चढ़ाएं और अपनी पहनी हुई एक जोड़ी चप्पल किसी गरीब को, शनिवार के दिन, एक बार दान कर दें। पांच रत्ती का मोती धारण करें, ऐसा करने से आपको लाभ प्राप्त होगा।

मानसिक तनाव, थकान दूर करने के लिए, बिना किसी दवा के, निम्न टोटके द्वारा, उपर्युक्त समस्या का निवारण करें। प्रातः उठ कर, सूर्य की ओर देखते हुए, अपने दोनों हाथ ऊपर उठा कर, निम्न मंत्र का ग्यारह बार जप करें :

हीं हीं हीं उफ।

इससे पूरे दिन तनाव मुक्त रहेंगे। साथ ही रोग दूर भाग

जाएंगे।

यदि किसी व्यक्ति को ऐसा महसूस हो कि आलस्य प्रमाद के कारण उसे वांछित सफलता नहीं मिल रही है, अथवा उसका मन काम में नहीं लग रहा है, तो उसे कटेरी की जड़ शहद में पीस लेनी चाहिए तथा मात्र इसको सूंघने से आलस्य प्रमाद से राहत महसूस होगी।

कई बार आलस्य के कारण काम में मन नहीं लगता तो निम्न लिखित उपाय करें मंगलवार को लाल रंग का मूंगा लेकर आएं। उसको चांदी की अंगूठी में पहनें। इसे मंगलवार को पहनना है तथा पहनते समय हनुमानजी की मूर्ति के चरणों में लगा कर कहें 'श्री राम दूताय हनुमान नमः, या श्री हनुमते नमः' कह कर पहन लें। एक माह के अन्दर ही आलस्य दूर भाग जायेगा। इसे शुक्ल पक्ष के मंगलवार को पहनना चाहिए।

जिस समय किसी रोगी को मिर्गी का दौरा पड़ा हुआ है, उस समय कोई रज-स्वला(मासिक धर्म वाली) स्त्री उसकी तेल से मालिश करें, तो रोगी का मिर्गी का रोग दूर हो जाता है।

अमावस्या को प्रातः मेंहदी का दीपक पानी मिला कर बनाएं। तेल का चौमुंहा दीपक बना कर 7 उड़द के दाने, कुछ सिन्दूर, 2 बूंद दही डाल कर 1 नींबू की दो फांके शिवजी या भैरों जी के चित्र का पूजन कर, जला दें। महामृत्युंजय मंत्र की एक माला या बटुक भैरव स्तोत्र का पाठ कर रोग-शोक दूर करने के लिए भगवान से प्रार्थना कर, घर के दक्षिण की ओर दूर सूखे कुएं में नींबू सहित डाल दें। पीछे मुड़कर नहीं देखें। उस दिन एक ब्राह्मण -ब्राह्मणी को भोजन करा कर वस्त्रादि का दान भी कर दें। कुछ दिन तक पक्षियों, पशुओं और रोगियों की सेवा तथा दान-पुण्य भी करते रहें। इससे घर की बीमारी, भूत बाधा, मानसिक अशांति निश्चय ही दूर होती है।

सिर दर्द और माइग्रेन के लिए रुद्राक्ष का सुझाव

एक मुखी रुद्राक्ष सूर्य के द्वारा शासित होता है तथा अस्थमा, टी बी, लकवा, घात, दिल से संबंधित बीमारियां, मानसिक रोग, आंखों से संबंधित परेशानियां, हड्डियों में दर्द एवं सिर-दर्द आदि जैसे रोगों को दूर करने के लिए उपाय के तौर पर धारण किया जाता है।

मस्तिष्क विकार के कारण और विविध उपाय



मस्तिष्क विकार से संबंधित कुण्डली में उपस्थित योग

Page-34

आपकी कुण्डली में दूसरे भाव का स्वामी पापग्रह एवं मंगल के साथ रोग भाव में स्थित है, आप पित्त कोप के कारण अपनी सूध-बुध एवं होशों-हवास खो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में लग्न पर एक से अधिक पापग्रहों की दृष्टि पड़ रही है, आप कुछ आलसी हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में केन्द्र भाव में गुरु स्थित है, आप चंचल चित्त वाले हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में आठवें भाव का स्वामी, चन्द्रमा या शुक्र के साथ दूसरे, छठे, आठवें, ग्यारहवें या बारहवें भाव में स्थित है, आप पागलपन या मानसिक असंतुलन की बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में पापग्रह राहु लग्न में स्थित है और चन्द्रमा तथा शनि आठवें भाव में स्थित है, आप मूर्च्छाकी बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा या लग्न से चौथे भाव का स्वामी राहु या केतु के नक्षत्र में अशुभ स्थिति में है, आप सीजोफ्रेनिया रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा पापग्रह की राशि या नवांश में स्थित है, आप मानसिक रोग के शिकार हो सकते हैं।

मस्तिष्क विकार के लिए रत्न और उपरत्न का सुझाव

- (1). अजीब वस्तुओं या विषयों से संबंधित सपने बार-बार आने पर आपको 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा और 9 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (2). यदि आप वातोन्माद/मूर्छा (हिस्टीरिया) रोग से पीड़ित हैं, तो आपको 7 या 9 रत्ती का मोती, 14 या 18 रत्ती का लाल मूंगा और 12 या 16 रत्ती का चंद्र रत्न धारण करना चाहिए।
- (3). मिर्गी से पीड़ित होने पर आपको उपचार हेतु पन्ना, मोती और मूंगा एक साथ धारण करना चाहिए।
- (4). अत्यधिक तनावग्रस्त होने के कारण मानसिक असंतुलन की स्थिति उत्पन्न होने पर आपको 4 या 8 रत्ती का पन्ना और 16 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न धारण करना चाहिए।
- (5). यदि आप आनुवांशिक मानसिक असंतुलन से पीड़ित हैं, तो आपको 24 या 30 रत्ती का चंद्र रत्न और 12 या 14 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (6). मणिक्य, मोती तथा पन्ना पहनें।
- (7). अनिद्रा से छुटकारा पाने के लिए आपको पन्ना, पुखराज और मोती धारण करना चाहिए।
- (8). शिराप्रदाह से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना

चाहिए।

- (9). स्मरण शक्ति कमजोर होने पर आपको 5 या 7 रत्ती का पन्ना, 4 या 6 रत्ती का लहसुनिया और 12 18 रत्ती का चंद्र रत्न अथवा 7 या 9 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (10). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए पन्ना, चंद्ररत्न, लाल मूंगा और पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (11). अनिद्रा से निजात पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का चंद्ररत्न धारण करना चाहिए।
- (12). यदि आप शराब पीने के आदी हैं, तो आपको इससे छुटकारा पाने के लिए 14 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न और 9 या 14 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए।
- (13). सिरदर्द से बचने के लिए आपको 4 या 5 रत्ती का माणिक अथवा 20 या 24 का माणिक का उपरत्न धारण करना चाहिए।
- (14). मानसिक विकार से बचने के लिए आपको 16 या 24 रत्ती का चंद्र रत्न और 6 या 8 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (15). मिरगी/वातोन्माद से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा और मोती धारण करना चाहिए।
- (16). यदि आपको मिरगी का दौरा पड़ता है, तो आपको इससे बचने के लिए 18 या 14 रत्ती का चंद्र रत्न, 10 या 14 रत्ती का सफेद मोती और 1 या 2 रत्ती का हीरा अथवा 4 या 5 रत्ती का जरकन धारण करना चाहिए।
- (17). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का पीला पुखराज और 5 या 6 रत्ती का चंद्ररत्न धारण करना चाहिए।
- (18). अनिद्रा से निजात पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का पन्ना, अनामिका में 5 रत्ती का पीला पुखराज और तर्जनी में 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (19). अनिद्रा से निजात पाने के लिए 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।
- (20). आलस्य या उदासीनता से संबंधित रोग से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का मोती और 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (21). यदि आप पागलपन में बेहोशी (हिस्टीरीकल इन्सैनिटी) से पीड़ित हैं, तो आपको 20 या 25 रत्ती का चंद्र रत्न और 1 या 2 रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।
- (22). मिरगी/लकवा से पीड़ित होने पर आपको साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (23). मिर्गी से बचने के लिए पन्ना, 6 रत्ती का चंद्ररत्न और 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना

चाहिए।

- (24). भूलने की बीमारी से निजात पाने के लिए आपको 5 रत्ती का लाल मूंगा और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।
 - (25). अनिद्रा से निजात पाने के लिए 10 या 12 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।
 - (26). नवरत्न का पेंडल गले में पहनना भी लाभदायक होगा।
 - (27). नीलम या पुखराज चांदी अथवा तांबे की अंगूठी में पहनें।
 - (28). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए पन्ना, नीलम, और सफेद मोती धारण करना चाहिए।
 - (29). स्थायी सिरदर्द से छुटकारा पाने के लिए आप पन्ना और मोती धारण कर सकते/सकती हैं।
 - (30). श्लैष्मिक ज्वर से बचने के लिए 5 रत्ती का लाल मूंगा और 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
 - (31). यदि आप विषाद रोग से ग्रसित हैं, तो आपको 5 या 8 रत्ती का नीलम और 5 या 7 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
 - (32). मिर्गी से बचने के लिए 5 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का नीलम और 5 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।
 - (33). मिर्गी से बचने के लिए पन्ना और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (1). मस्तिष्क विकार – मूनस्टोन, पीला पुखराज तथा पन्ना धारण करने से मानसिक शांति मिलती है। लालमूंगा धारण करना भी लाभदायक होता है।
 - (2). स्मृति दोष – मोती या माणिक्य गले में धारण करें। एक हाथ में 6 रत्ती का पन्ना तथा दूसरे में 9 रत्ती का मूंगा चांदी की अंगूठी में पहनें। चांदी, सोना, तांबा मिश्रित धातु का कड़ा पहनना भी लाभदायक होगा।
 - (3). मस्तिष्क के ट्यूमर से निजात पाने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 6 रत्ती का सफेद मोती और 4 रत्ती का नीलम या लाजावर्द धारण करना चाहिए, अथवा पन्ना, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 6 रत्ती का चंद्ररत्न या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।
 - (4). परागज-ज्वर (हे-फीवर) से बचने के लिए आपको 9 या 16 रत्ती का गोमेद और 5 या 7 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।
 - (5). यदि आप रोगभ्रम/चिन्तोन्माद (हॉइपोकांड्रिया) से ग्रसित हैं, तो आपको 7 या 8 रत्ती का नीलम और 5 या 7 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
 - (6). मिरगी – 1 – 6 रत्ती मोती या 5 रत्ती पन्ना या 12 रत्ती सफेद मोती धारण

करें।

2 – पन्ना और मूनस्टोन धारण करें। लग्न के स्वामी का रत्न धारण करना शुभ फलदायक होगा।

(7). प्रमस्तिष्कीय रक्तस्राव – 1 – लग्न के स्वामी का रत्न धारण करें।

2 – 7-8 रत्ती का लाल मूंगा तथा मूनस्टोन या सफेद मोती चांदी में धारण करें।

3 – एक त्रिकोण पेण्डेण्ट में लग्न के स्वामी का रत्न, मूंगा तथा पुखराज जड़वायें, जिसमें माणिक्य बीच में हो, इस प्रकार का पेण्डेण्ट धारण करने से इस रोग का प्रभाव कम हो सकता है।

(8). मस्तिष्कावरण शोथ से बचने के लिए आपको लाल मूंगा, पुखराज, पन्ना और माणिक धारण करना चाहिए।

(9). मस्तिष्क में तंत्रिकाओं के गड़बड़ी से सिरदर्द होने पर आपको 5 या 6 रत्ती का पीला पुखराज और 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(10). पागलपन या विक्षिप्तता से ग्रसित होने पर इसके उपचार हेतु आपको पन्ना, लाल मूंगा, मोती धारण करना चाहिए। इससे रोग का प्रभाव कम होगा।

(11). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए आपको 10 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(12). मस्तिष्क में गांठ, सूजन और फोड़ा होने पर आपको उसके उपचार हेतु पन्ना, पुखराज और मूंगा धारण करना चाहिए।

(13). यदि आप प्रमस्तिष्क घनास्त्रता रोग से पीड़ित हैं, तो आपको 3 रत्ती का माणिक अथवा 18 या 24 रत्ती का माणिक का उपरत्न, 10 या 12 रत्ती का मोती तथा 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(14). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 3 रत्ती का माणिक और 4 रत्ती नीलम धारण करना चाहिए। गर्मी के महीनों में रात के समय लाल मूंगा और माणिक धारण नहीं करना चाहिए।

(15). पागलपन – 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का पीला पुखराज एवं 4 रत्ती का मोती धारण करें।

(16). कमजोर स्मरण शक्ति या भूलने की बीमारी से बचने के लिए आपको 7 या 9 रत्ती का लाल मूंगा और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(17). मस्तिष्क ज्वर – लाल मूंगा, पीला पुखराज तथा पन्ना धारण करना लाभदायक साबित होगा।

(18). मस्तिष्क संबंधित रोग – 1 – लग्न के स्वामी, सूर्य एवं चन्द्रमा को उनसे संबंधित रत्न धारण करा कर बलशाली बनायें।

2 – लग्न के स्वामी, सूर्य एवं चंद्रमा का कवच पाठ करें तथा इनसे संबंधित यंत्र धारण करें।

3 – एक ही अंगूठी अथवा पेण्डेंट में लाल मूंगा तथा पन्ना धारण करें।

4 – लाल मूंगा एवं पीला पुखराज या पन्ना एवं चन्द्रकान्त एक साथ मिलाकर धारण करें।

5 – पन्ना एवं चन्द्रकान्त एक साथ धारण करें।

6 – मूंगा एवं मोती धारण करें, लाभदायक फल प्राप्त होगा।

7 – लाल मूंगा एवं पन्ना एक साथ धारण करना लाभदायक सिद्ध होता

है।

(19). मस्तिष्कीय रक्तस्राव होने पर आपको मंगल के लिए लाल मूंगा, बुध के लिए पन्ना, और चंद्रमा के लिए मोती धारण करना चाहिए। साथ ही उचित औषधि लेने पर आपको शीघ्र उत्तम परिणाम प्राप्त होगा।

(20). मस्तिष्क संबंधी रोगों से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का पन्ना, 14 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न तथा 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(21). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(22). मूर्च्छा – 5 रत्ती पन्ना, 4 रत्ती नीलम एवं 5 रत्ती मोती धारण करें।

(23). अनिद्रा – फिरोजा, जिरकॉन, श्वेत ओपल तथा मोती धारण करना लाभदायक होता है। बारहवें भाव के स्वामी का रत्न धारण करना भी शुभ फलदायक होगा। पीला पुखराज भी धारण किया जा सकता है।

मस्तिष्क विकार के लिए टोटके

ब्राह्मणों के साथ शत्रुता रखने के कारण व्यक्ति सिर के रोग से ग्रसित होता है। उपाय के तौर पर व्यक्तिको पवित्र धागा – जनेउ धारण करना चाहिए।

अवसाद – 1 – जातक रात में अपने सिरहाने में कच्चे दूध में एक मुट्ठी जौ डालकर रखे तथा प्रातः उठतेही उसे कहीं जल में प्रवाहित कर दे। आस-पास जल नहीं होने की स्थिति में उसे किसी वृक्ष की जड़ में डाल दे।

2 – सोने से पहले जातक के पास तांबे के कुछ सिक्के रख दें। सुबह जल्दी उठकर इसे किसी विरान जगह पर दबा दें, जिससे कि कोई देख न पाये।

3 – इस बीमारी से पीड़ित जातक अपने जन्म नक्षत्र के दिन चिड़चिड़ा का पौधा जड़सहित उखाड़कर लाये तथा उसका तना काट दे। उस पौधे को जमीन में इस तरह से दबा दें कि उसका जड़वाला भाग उपर की ओर हो और तना नीचे।

4 – जातक अपने जन्म नक्षत्र के दिन या किसी भी रविवार से एक दिन पहले एक जटावाला नारियल तथा अपनी लम्बाई के बारबर एक कच्चा सूत ले। सूत को नारियल पर घड़ी की सूइयों के विपरीत दिशा में लपेट कर अपने पास रख ले। रोगी अपने जन्म नक्षत्र के दिन कहीं बहते पानी में इसे छोड़ दे तथा यह महसूस करे कि उसका सारा कष्ट पानी में बहकर जा रहा है।

5 – सीता अनुप्रास की निम्नलिखित पंक्तियों का पाठ करने से मानसिक शांति प्राप्त होती है तथा एकाग्रतामें बढ़ोतरी होती है। खाली वक्त हो या किसी काम में व्यस्त हों, मन ही मन पाठ करना काफी लाभदायक होता है।

सुन्दर संजीवनी सुधा शांति सद्भाव सुकृत संसार सुमन।

सम सरल सुगम सुमधुर सुमनोहर सुखद समुन्नत

सर्वशरण ॥

शाश्वत शुभ सत्य सनातन सत्ता सरस सुधर सद्गुण पावन ।
संकट शंका संदेह सनी संशय सनिश्चरी शक्ति शमन ॥
सर्वोपरि सर्वान्तरयामिनी सर्वेश्वरेश्वरी सुधि सुलगन ।
संस्थिति संहार सृष्टि सागर संतरण सेतु सम्बल साधन ॥
सनकादिक सुरगुरु सविता शुक शीश शेखर शंकर संकर्षण ।
शारदा सरस्वति सावित्री शैलजा शची श्रुति सार सृजन ॥
श्री सृष्टि सूतिका स्वयं श्रेय स्वामिनी स्वतंत्र सीता सुचरण ।
समरसाद्वैत सच्चिदानन्द धन में है, सर्वप्रथम सुनमन् ॥

तनाव तथा मानसिक अशांति दूर करने हेतु – 1 – सोते वक्त पूर्व की तरफ सिरहाना रखना चाहिए । 5 रत्ती का चंद्रमणि, चांदी में जड़वा कर, सोमवार को चांद निकलने के बाद, चंद्रमसे नमः कहते हुए, दाहिने हाथ की अनामिका में तथा एक अष्ट धातु की अंगूठी बीच की अंगुली में धारण करनी चाहिए । प्रतिदिन हनुमान जी का चालीसा पढ़ें । अपने शयन कक्ष में 200 ग्राम वजन की फिटकरी लटकाएं । चंद्रमणि को धारण करने से पूर्व कच्चे दूध से धोयें फिर गंगा जल से धोकर रख लें इसमें श्रद्धा परम आवश्यक है ।

2 – मानसिक अशांति की समस्या किसी पूर्व पाप का परिणाम होती है । इसे दूर करने के लिए यह उपाय बहुत लाभकारी है । प्रतिदिन हनुमान जी की पूजा और उनका स्मरण करें । हनुमान चालीसा का अवश्य पाठकरें । शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से उपाय शुरू करें । सोते वक्त एक छोटा सा चाकू सिरहाने के नीचे रखें, जिस कमरे में सोते हों, कपूर की ज्योति जलाएं, जिससे समस्या का समाधान हो जाता है । पूर्व जन्म के पाप नष्ट होने लगते हैं और स्थितियां अनुकूल होने लगती हैं तथा मानसिक अशांति दूर होती है ।

3 – कुंडली में चंद्रमा पाप पीड़ित या अशुभ होने पर पारिवारिक अशांति, धन की कमी तथा कार्य संचालन में परेशानी देता है । इससे बचाव के लिए रविवार की रात को सोते समय, चांदी या स्टील के गिलास में थोड़ा कच्चा दूध डाल कर उसे सिरहाने रख कर सो जाएं । सोमवार की सुबह इस दूध को कीकर (बबूल) के पेड़ पर चढ़ाएं ।

सावधानी : गिलास को किसी बर्तन से ना ढकें ।

4 – सोमवार को गायत्री यंत्र तथा गीता यंत्र को अपने घर में स्थापित करें तथा नित्य श्रद्धा-भक्ति पूर्वक यंत्रों के दर्शन करें । मोती की माला गले में धारण करें और निम्न मंत्र का एक माला जप नित्य करें ।
मंत्र : ओम नमो भगवते वासुदेवाय

5 – घर के सभी सदस्यों को रात्रि में सोते समय पूर्व या दक्षिण की तरफ सिरहाना रखना चाहिए । शयन कक्ष में सोने से पहले कपूर का दीया या उसका एक छोटा सा टुकड़ा जलाएं ।

6 – प्रतिदिन हनुमान जी का पूजन और स्मरण करें, प्रत्येक शनिवार को शनि को तेल चढ़ाएं । अपनी पहनी हुई एक जोड़ी चप्पल किसी गरीब को, शनिवार के दिन, दान कर दें । पांच रत्ती का मोती धारण करें, लाभ प्राप्त होगा ।

7 – प्रतिदिन हनुमान जी की पूजा और उनका स्मरण करें । हनुमान चालीसा का पाठ करें । शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से उपाय शुरू करें । सोते वक्त एक छोटा सा चाकू सिरहाने के नीचे रखें । जिस कमरे में सोते हों, उसमें कपूर का दीया जलाएं । समस्या का समाधान होगा, पूर्व जन्म के पाप नष्ट होंगे, स्थितियां अनुकूल होंगी तथा मानसिक अशांति दूर

होगी।

8 – यदि परिवार में कोई भी सदस्य मानसिक तनाव से ग्रस्त हो, तो उसे पलंग पर मुग चर्म बिछा कर सोना चाहिए। धीरे-धीरे तनाव दूर होने लगेगा। साथ ही रात्रि में बुरे स्वप्न आते हों, तो एक बर्तन में पानीसिरहाने रख कर सोना चाहिए। सुबह उस पानी को गुलाब, या किसी अन्य कांटे वाले पौधे में डाल दें। मन ही मन 11 बार माधव-माधव का जप करें तो दुःस्वप्न निष्फल हो जाएगा।

9 – प्रातः उठ कर, सूर्य की ओर देखते हुए, अपने दोनों हाथ ऊपर उठा कर निम्न मंत्र का ग्यारह बार जप करें :
ओम घृणिः सूर्याय नमः इससे पूरे दिन तनाव मुक्त रहेंगे साथ ही रोग दूर भाग जाएंगे।

10 – दीपावली की संध्या को अशोक वृक्ष के नीचे दीपक जलाएं। उसकी श्रद्धा से पूजा करें। फिर उसी वृक्ष की 3 कोमल पत्तियां घर ले आएं। धो कर, साफ कर, उन्हें प्रातः काल चबा लें, हर प्रकार की चिंता दूर होगी।

11 – कच्चा दूध चीनी मिलाकर जामुन के वृक्ष की जड़ में अर्पित करें। यह प्रयोग शुक्ल पक्ष के शनिवार से शुरू करें। चांदी के गिलास में जल पिया करें। साथ ही हर अमावस्या की शाम को मंदिर में मीठी खीरअर्पित करें। शीघ्र ही लाभ प्राप्त होगा।

12 – सोते समय पूर्व की तरफ सिरहाना रखें। सवा पांच रत्ती का पन्ना चांदी की अंगूठी में जड़वा कर शुभ मुहूर्त में अनामिका में धारण करें। अपने काम-काज की जगह पर दो किलो फिटकिरी किसी चीनी मिट्टी की प्लेट में खुली रखें। विशेष उपाय के तौर पर तीन किलो नमक एक लाल मटकी में अच्छी तरह सहेज कर अपने शयन कक्ष में रखने से सभी समस्याओं से मुक्ति मिलेगी।

13 – यदि अपने भविष्य के लिए चिंता में हैं, तो एक प्याला दूध अपने नहाने वाली बाल्टी में डाल कर नहाएं।

14 – सदैव पूर्व या दक्षिण दिशा की ओर सिर रख कर ही सोना चाहिए। दक्षिण दिशा की ओर सिर कर के सोने वाले व्यक्ति में चुम्बकीय बल रेखाएं पैर से सिर की ओर जाती हैं, जो अधिक से अधिक रक्त खींचकर सिर की ओर लायेंगी, जिससे व्यक्ति विभिन्न रोंगो से मुक्त रहता है और अच्छी निद्रा प्राप्त करता है।

आलस्य दूर करने के लिए – मंगलवार को लाल रंग का मूंगा ले कर आएं। उसको चांदी की अंगूठी में पहनें। इसे मंगलवार को पहनना है तथा पहनते समय हनुमान जी की मूर्ति के चरणों में लगा कर कहें : श्री राम दूताय हनुमान नमः, या श्री हनुमत्ते नमः कह कर उसे पहन लें। एक माह के भीतर ही आलस्य दूरभाग जाएगा। इसे शुक्ल पक्ष के मंगलवार को पहनना चाहिए।

मंद बुद्धि वाले बच्चों की समस्या दूर करने के लिए – शरीर से बलिष्ठ और हृष्टपुष्ट होने पर भी कई बार बच्चे मंद बुद्धि के होते हैं ; बात को काफी देर के बाद समझते हैं, तो ऐसा करें : किसी दिन, रात के लगभग 12 बजे बच्चे के थोड़े से बाल चुटिया के स्थान से काट लें। उन्हें अपने पास रख लें, अगले दिन भी ऐसी ही क्रिया करें और ऐसा लगातार पांच दिन करें, फिर रविवार को इन बालों को जला कर बाहर फेंक दें तथा अच्छी तरह पैरो से रगड़ दें। बच्चा धीरे-धीरे कुशल बुद्धि का हो जाएगा तथा काम करने लगेगा। यदि हो सके, तो इस क्रिया को चौराहे पर करें, तो ठीक

रहेगा।

नींद न आना – 1 – अगर नींद न आती हो, तो निम्न मंत्र का पाठ अवश्य करें। बिस्तर पर लेटने के बाद शरीर को एकदम ढीला छोड़ दें और 108 तक गिनती गिने। फिर उसके बाद इस मंत्र का जाप करें : कुंभकर्णाय नमः, तो जल्दी ही नींद आ जाएगी। किसी प्रकार की कोई गोली खाने की जरूरत नहीं होगी।

2 – कभी कोई बच्चा, या बड़ा व्यक्ति भी, सोते समय चौंक कर उठ जाता है, यदि उनके सिरहाने में एक फिटकरी का टुकड़ा रख दें, तो इस समस्या से मुक्ति मिल जाएगी। यह कई बार आजमाया हुआ प्रयोग है।

मिरगी का रोग रोकने के लिए – मिरगी के रोगी को चाहिए कि अपने हाथ से भोज पत्र पर, अनार की कलम और लाल चंदन से, ऊपर लिखे अनुसार 15 का यंत्र बनाएं। शुद्ध हींग की कुछ मात्रा यंत्र के ऊपर रख दें। फिर यंत्र को हींग सहित किसी तावीज़ में रख कर अपने गले में डाल लें। गले में डालने हेतु लाल रंग का रेशमी धागा काम में लें।

जब दिल को अशांति और दिमागी परेशानी हो तो चांदी का बेजोड़ छल्ला उल्टे हाथ की छोटी उंगली में धारण करें।

मस्तिष्क की सक्रियता को बढ़ाने के लिए सुलेमानी लाल हकीक धारण करना ठीक रहता है।

मस्तिष्क विकार के लिए लाल किताब के उपाय

मिरगी – 1 – सूर्यदेव की श्रद्धापूर्वक पूजा करें।

2 – काली या दुर्गा की आराधना एवं जप करें।

3 – अपने कमरे में हरे या नीले रंग के पर्दे एवं चादर का उपयोग करें।

पागलपन – 1 – रोगी के कमरे में हरे रंग के पर्दे एवं चादर का प्रयोग करें।

2 – रोगी को लाल रंग से बचा कर रखें।

3 – ब्राह्मणों को जनेउ दान करें।

मूर्च्छा – दुर्गा या काली की आराधना करें एवं उनके मंत्रों का जाप करें।

मस्तिष्क विकार के लिए रुद्राक्ष का सुझाव

एक मुखी रुद्राक्ष की पूजा-पाठ करें तथा पंचमुखी एवं द्वादशमुखी रुद्राक्ष धारण करें।

तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करने वाला व्यक्ति काफी बुद्धिमान होता है तथा उसकी यादाश्त बहुत तेज होती है।

जो व्यक्ति डिप्रेशन, खून में खराबी, प्लेग, पाचन संबंधित समस्या, रक्तचाप, कमजोरी या अल्सर आदि से ग्रसित होते हैं, उनके लिए तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभदायक होता

है।

तीन मुखी रुद्राक्ष हमेशा गले में धारण करना चाहिए। इससे हमारे ज्ञान एवं आध्यात्मिक शक्ति में बढ़ोतरी होती है।

जो व्यक्ति मानसिक विकार, लकवा, पीलिया, रक्त-संचार से संबंधित समस्या, बुखार एवं खांसी से ग्रसित होते हैं, उनके लिए चार मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभदायक साबित होता है।

बीस मुखी रुद्राक्ष धारण करने वाले व्यक्ति को उत्तम शिक्षा एवं मानसिक शांति प्राप्त होती है।

नेत्र (आँखों) से संबंधित विकार के कारण और विविध उपाय



नेत्र (आँखों) से संबंधित विकार से संबंधित कुण्डली में उपस्थित योग

आपकी कुण्डली में दूसरे भाव के स्वामी और लग्न के स्वामी एक साथ छटे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हैं, आपको आँखों से संबंधित बीमारी हो सकती है।

आपकी कुण्डली में सूर्य तुला राशि में स्थित है, आप आँखों से संबंधित बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में पहले या दूसरे भाव का स्वामी छटे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है, आप कटरेक्ट बीमारी के शिकार हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में छटे एवं आठवें भाव में पाप ग्रह स्थित हैं, आपकी आँखों में कोई दोष हो सकता है या आपकी दृष्टि कमजोर हो सकती है।

आपकी कुण्डली में लग्न में राहु तथा सातवें भाव में सूर्य स्थित है, आपकी आँखों में कोई दोष हो सकता है या आपकी दृष्टि कमजोर हो सकती है।

आपकी कुण्डली में मंगल पाप ग्रह की राशि में स्थित है, आपकी आँखों में कोई दोष हो सकता है या आपकी दृष्टि कमजोर हो सकती है।

आपकी कुण्डली में दूसरे भाव का स्वामी एवं लग्न भाव का स्वामी त्रिक भाव में स्थित हैं, किसी चोट या

दुर्घटना के कारण आपकी आंखों की दृष्टि प्रभावित हो सकती है।

आपकी कुंडली में शुक छठे या आठवें भाव में स्थित है, आपकी दायीं आंख में कोई समस्या हो सकती है।

नेत्र (आँखों) से संबंधित विकार के लिए रत्न और उपरत्न का सुझाव

- (1). अजीब वस्तुओं या विषयों से संबंधित सपने बार-बार आने पर आपको 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा और 9 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (2). यदि आप वातोन्माद/मूर्छा (हिस्टीरिया) रोग से पीड़ित हैं, तो आपको 7 या 9 रत्ती का मोती, 14 या 18 रत्ती का लाल मूंगा और 12 या 16 रत्ती का चंद्र रत्न धारण करना चाहिए।
- (3). मिर्गी से पीड़ित होने पर आपको उपचार हेतु पन्ना, मोती और मूंगा एक साथ धारण करना चाहिए।
- (4). अत्यधिक तनावग्रस्त होने के कारण मानसिक असंतुलन की स्थिति उत्पन्न होने पर आपको 4 या 8 रत्ती का पन्ना और 16 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न धारण करना चाहिए।
- (5). यदि आप आनुवांशिक मानसिक असंतुलन से पीड़ित हैं, तो आपको 24 या 30 रत्ती का चंद्र रत्न और 12 या 14 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (6). मणिक्य, मोती तथा पन्ना पहनें।
- (7). अनिद्रा से छुटकारा पाने के लिए आपको पन्ना, पुखराज और मोती धारण करना चाहिए।
- (8). शिराप्रदाह से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (9). स्मरण शक्ति कमजोर होने पर आपको 5 या 7 रत्ती का पन्ना, 4 या 6 रत्ती का लहसुनिया और 12 या 18 रत्ती का चंद्र रत्न अथवा 7 या 9 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (10). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए पन्ना, चंद्ररत्न, लाल मूंगा और पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (11). अनिद्रा से निजात पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का चंद्ररत्न धारण करना चाहिए।
- (12). यदि आप शराब पीने के आदी हैं, तो आपको इससे छुटकारा पाने के लिए 14 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न और 9 या 14 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए।
- (13). सिरदर्द से बचने के लिए आपको 4 या 5 रत्ती का माणिक अथवा 20 या 24 का माणिक का उपरत्न धारण करना चाहिए।
- (14). मानसिक विकार से बचने के लिए आपको 16 या 24 रत्ती का चंद्र रत्न और 6 या 8 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना

चाहिए।

- (15). मिरगी/वातोन्माद से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा और मोती धारण करना चाहिए।
- (16). यदि आपको मिरगी का दौरा पड़ता है, तो आपको इससे बचने के लिए 18 या 14 रत्ती का चंद्र रत्न, 10 या 14 रत्ती का सफेद मोती और 1 या 2 रत्ती का हीरा अथवा 4 या 5 रत्ती का जरकन धारण करना चाहिए।
- (17). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का पीला पुखराज और 5 या 6 रत्ती का चंद्ररत्न धारण करना चाहिए।
- (18). अनिद्रा से निजात पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का पन्ना, अनामिका में 5 रत्ती का पीला पुखराज और तर्जनी में 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (19). अनिद्रा से निजात पाने के लिए 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।
- (20). आलस्य या उदासीनता से संबंधित रोग से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का मोती और 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (21). यदि आप पागलपन में बेहोशी (हिस्टीरीकल इन्सैनिटी) से पीड़ित हैं, तो आपको 20 या 25 रत्ती का चंद्र रत्न और 1 या 2 रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।
- (22). मिरगी/लकवा से पीड़ित होने पर आपको साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (23). मिर्गी से बचने के लिए पन्ना, 6 रत्ती का चंद्ररत्न और 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (24). भूलने की बीमारी से निजात पाने के लिए आपको 5 रत्ती का लाल मूंगा और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।
- (25). अनिद्रा से निजात पाने के लिए 10 या 12 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (26). नवरत्न का पेंडल गले में पहनना भी लाभदायक होगा।
- (27). नीलम या पुखराज चांदी अथवा तांबे की अंगूठी में पहनें।
- (28). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए पन्ना, नीलम, और सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (29). स्थायी सिरदर्द से छुटकारा पाने के लिए आप पन्ना और मोती धारण कर सकते/सकती हैं।
- (30). श्लैष्मिक ज्वर से बचने के लिए 5 रत्ती का लाल मूंगा और 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (31). यदि आप विषाद रोग से ग्रसित हैं, तो आपको 5 या 8 रत्ती का नीलम और 5 या 7 रत्ती का मोती

धारण करना चाहिए।

(32). मिर्गी से बचने के लिए 5 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का नीलम और 5 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(33). मिर्गी से बचने के लिए पन्ना और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(1). मस्तिष्क विकार – मूनस्टोन, पीला पुखराज तथा पन्ना धारण करने से मानसिक शांति मिलती है। लालमूंगा धारण करना भी लाभदायक होता है।

(2). स्मृति दोष – मोती या माणिक्य गले में धारण करें। एक हाथ में 6 रत्ती का पन्ना तथा दूसरे में 9 रत्ती का मूंगा चांदी की अंगूठी में पहनें। चांदी, सोना, तांबा मिश्रित धातु का कड़ा पहनना भी लाभदायक होगा।

(3). मस्तिष्क के ट्यूमर से निजात पाने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 6 रत्ती का सफेद मोती और 4 रत्ती का नीलम या लाजावर्द धारण करना चाहिए, अथवा पन्ना, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 6 रत्ती का चंद्ररत्न या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(4). परागज-ज्वर (हे-फीवर) से बचने के लिए आपको 9 या 16 रत्ती का गोमेद और 5 या 7 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(5). यदि आप रोगभ्रम/चिन्तोन्माद (हॉइपोकांड्रिया) से ग्रसित हैं, तो आपको 7 या 8 रत्ती का नीलम और 5 या 7 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(6). मिरगी – 1 – 6 रत्ती मोती या 5 रत्ती पन्ना या 12 रत्ती सफेद मोती धारण करें।
2 – पन्ना और मूनस्टोन धारण करें। लग्न के स्वामी का रत्न धारण करना शुभ फलदायक होगा।

(7). प्रमस्तिष्कीय रक्तस्राव – 1 – लग्न के स्वामी का रत्न धारण करें।
2 – 7-8 रत्ती का लाल मूंगा तथा मूनस्टोन या सफेद मोती चांदी में धारण करें।
3 – एक त्रिकोण पेण्डेण्ट में लग्न के स्वामी का रत्न, मूंगा तथा पुखराज जड़वायें, जिसमें माणिक्य बीच में हो, इस प्रकार का पेण्डेण्ट धारण करने से इस रोग का प्रभाव कम हो सकता है।

(8). मस्तिष्कावरण शोथ से बचने के लिए आपको लाल मूंगा, पुखराज, पन्ना और माणिक्य धारण करना चाहिए।

(9). मस्तिष्क में तंत्रिकाओं के गड़बड़ी से सिरदर्द होने पर आपको 5 या 6 रत्ती का पीला पुखराज और 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(10). पागलपन या विक्षिप्तता से ग्रसित होने पर इसके उपचार हेतु आपको पन्ना, लाल मूंगा, मोती धारण करना चाहिए। इससे रोग का प्रभाव कम होगा।

(11). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए आपको 10 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(12). मस्तिष्क में गांठ, सूजन और फोड़ा होने पर आपको उसके उपचार हेतु पन्ना, पुखराज और मूंगा

धारण करना चाहिए।

(13). यदि आप प्रमस्तिष्क घनास्त्रता रोग से पीड़ित हैं, तो आपको 3 रत्ती का माणिक अथवा 18 या 24 रत्ती का माणिक का उपरत्न, 10 या 12 रत्ती का मोती तथा 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(14). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 3 रत्ती का माणिक और 4 रत्ती नीलम धारण करना चाहिए। गर्मी के महीनों में रात के समय लाल मूंगा और माणिक धारण नहीं करना चाहिए।

(15). पागलपन – 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का पीला पुखराज एवं 4 रत्ती का मोती धारण करें।

(16). कमजोर स्मरण शक्ति या भूलने की बीमारी से बचने के लिए आपको 7 या 9 रत्ती का लाल मूंगा और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(17). मस्तिष्क ज्वर – लाल मूंगा, पीला पुखराज तथा पन्ना धारण करना लाभदायक साबित होगा।

(18). मस्तिष्क संबंधित रोग – 1 – लग्न के स्वामी, सूर्य एवं चंद्रमा को उनसे संबंधित रत्न धारण करा कर बलशाली बनायें।

2 – लग्न के स्वामी, सूर्य एवं चंद्रमा का कवच पाठ करें तथा इनसे संबंधित यंत्र धारण करें।

3 – एक ही अंगूठी अथवा पेण्डेंट में लाल मूंगा तथा पन्ना धारण करें।

4 – लाल मूंगा एवं पीला पुखराज या पन्ना एवं चन्द्रकान्त एक साथ मिलाकर धारण करें।

5 – पन्ना एवं चन्द्रकान्त एक साथ धारण करें।

6 – मूंगा एवं मोती धारण करें, लाभदायक फल प्राप्त होगा।

7 – लाल मूंगा एवं पन्ना एक साथ धारण करना लाभदायक सिद्ध होता है।

(19). मस्तिष्कीय रक्तस्राव होने पर आपको मंगल के लिए लाल मूंगा, बुध के लिए पन्ना, और चंद्रमा के लिए मोती धारण करना चाहिए। साथ ही उचित औषधि लेने पर आपको शीघ्र उत्तम परिणाम प्राप्त होगा।

(20). मस्तिष्क संबंधी रोगों से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का पन्ना, 14 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न तथा 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(21). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(22). मूर्च्छा – 5 रत्ती पन्ना, 4 रत्ती नीलम एवं 5 रत्ती मोती धारण करें।

(23). अनिद्रा – फिरोजा, जिरकॉन, श्वेत ओपल तथा मोती धारण करना लाभदायक होता है। बारहवें भाव के स्वामी का रत्न धारण करना भी शुभ फलदायक होगा। पीला पुखराज भी धारण किया जा सकता है।

(1). मोतियाबिंद से छुटकारा पाने के लिए 3 या 4 रत्ती का माणिक और 5 या 6 रत्ती का पन्ना और 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती एक साथ धारण करना चाहिए। यदि संभव हो तो आधा रत्ती का हीरा बाएं हाथ में धारण करना चाहिए।

(2). 10 या 12 रत्ती का माणिक्य अनामिका अंगुली में शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन धारण करें।

- (3). दूर दृष्टि दोष को दूर करने के लिए पन्ना, माणिक और सफेद मोती धारण करना चाहिए। यदि संभव हो तो आधा रत्ती का हीरा बाएं हाथ में धारण किया जा सकता है। माणिक के स्थान पर लाल मूंगा धारण किया जा सकता है।
- (4). यदि जन्म के बाद नेत्र हानि होती है अथवा दृष्टिहीनता का उपचार संभव है, तो दृष्टिहीनता अथवा कमजोर दृष्टि से बचने के लिए आप माणिक और मोती धारण कर सकते हैं।
- (5). मोतियाबिन्द – पन्ना को आंखों की ज्योति में वृद्धि करने में सहायक माना जाता है और मोती को खोई नेत्र ज्योति प्राप्त करने में सहायक। रोग के उपचार के दौरान माणिक्य धारण करें। गर्मियों में माणिक्य के स्थान पर लाल मूंगा पहनें। मूंगा, मोती तथा पन्ना 3–3 रत्ती प्रत्येक के हिसाब से एक साथ अंगूठी में जड़वाकर या पेण्डेण्ट में धारण करें, लाभ होगा।
- (6). निकट दृष्टि से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का माणिक और 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए। माणिक के स्थान पर लाल मूंगा धारण किया जा सकता है।
- (7). आंख आने से मुक्ति पाने के लिए मध्यमिका उंगली में 4 या 5 रत्ती का चंद्ररत्न अथवा कनिष्ठा में 3 या 4 रत्ती का नीलम धारण करना चाहिए।
- (8). यदि आप आंखों की बीमारी से पीड़ित हैं, तो आपको एक्वामेरीन एवं पैरीडौट रत्न धारण करना चाहिए। इससे आपको जल्द स्वस्थ होने में मदद मिलेगी।
- (9). नेत्र संबंधी रोगों से बचने के लिए आपको 3 या 5 रत्ती का माणिक और 7 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (10). नेत्रशोथ – इस रोग के प्रभाव को कम करने के लिए पन्ना धारण करें। इसके अलावा मूनस्टोन, ओपल, जिरकॉन धारण करने से भी नेत्र रोगों में काफी लाभ होता है।
- (11). आंख आना/नेत्रश्लेष्मलाशोथ से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा एवं लाल वस्त्र धारण चाहिए।
- (12). अंधापन – सफेद मोती, मूनस्टोन तथा मूंगा धारण करना लाभदायक होगा।
- (13). वर्णाधता – लाल माणिक्य अथवा मूंगे के साथ मोती धारण करना वर्णाधता में बहुत लाभदायक होता है।
- (14). कमजोर दृष्टि अथवा नेत्र से संबंधित रोगों से बचाव के लिए आपको 10 अथवा 14 रत्ती का मूंगा और 9 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (15). वृद्धावस्था का दूर दृष्टि दोष से निजात पाने के लिए पन्ना, माणिक, सफेद मोती और लाल मूंगा संयुक्त रूप से धारण करना चाहिए। लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना सर्वाधिक उपयोगी होगा।
- (16). रतौंधी से छुटकारा पाने के लिए लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना

चाहिए।

(17). वर्णान्धता से निजात पाने के लिए पन्ना, लाल मूंगा, सफेद मोती व हीरा धारण करना चाहिए।

(18). दृष्टिवैषम्यता को दूर करने के लिए लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना उपयोगी होगा।

नेत्र (आँखों) से संबंधित विकार के लिए टोटके

आँखों की बीमारी में सूर्य उपासना, सूर्य नमन लाभकारी पाये गये हैं, अतः इस रोग में व्यक्ति को प्रातःकाल उठ कर सूर्यमुखी का फूल सूँघना चाहिए तथा शुद्ध गुलाब जल आँखों में डालना चाहिए।

मूंग, चावल, दूध, घी का दान करना चाहिए तथा अंबिका रक्षा कणु हवन कराना चाहिए। गायों की आँखों को हानि पहुंचाने के कारण व्यक्ति रतौंधी के रोग से ग्रसित होता है। उपाय के तौर पर भगवान कृष्ण की मूर्ति दान करनी चाहिए।

चक्षुष्मती विद्या का पाठ करें। जो व्यक्ति इसका प्रतिदिन पाठ करता है, उसे आँखों की बीमारी नहीं होती है तथा उसके परिवार में भी कोई अन्धा नहीं होता है।

एक दिन उपवास करके 400 तोले रांगा दान करना चाहिए। अकृतज्ञता, पराई औरतो पर गंदी नजर रखना एवं दूसरों की आँखों को हानि पहुंचाने आदि के कारण व्यक्ति आँखों के रोग से ग्रसित होता है।

आँखों की बीमारी में सूर्य उपासना, सूर्य नमन लाभकारी पाये गये हैं, अतः इस रोग में व्यक्ति को प्रातःकाल उठ कर सूर्यमुखी का फूल सूँघना चाहिए तथा शुद्ध गुलाब जल आँखों में डालना चाहिए।

रात्रि में मोती शंख में जल भर कर रख दें तथा प्रातः इस जल में कुछ बूंदें गुलाब जल की मिला दें। इस जल को यदि बालों में लगाया जाए, तो धीरे-धीरे सफेद बाल काले होने लगते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि बाल स्थायी रूप से काले रहते हैं। यही जल यदि भौहों, या दाढ़ी पर लगाया जाए, तो वहां के बाल भी काले हो जाते हैं। शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रयोग शुरू करना चाहिए।

आँखों में यदि काला मोतिया हो जाए तो ताम्बे के पात्र में जल लेकर उसमें ताम्बे का सिक्का व गुड़ डालकर प्रतिदिन सूर्य को अर्घ्य दें। यह उपाय शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार से शुरू कर चौदह रविवार करें। अर्घ्य देते समय रोग से मुक्ति की प्रार्थना करते रहें। इसके अतिरिक्त पांच प्रकार के फल लाल कपड़े में बांधकर किसी भी मन्दिर में दें। यह उपाय निष्ठापूर्वक करें, लाभ होगा।

नेत्र (आँखों) से संबंधित विकार के लिए लाल किताब के उपाय

नेत्ररोग के प्रभाव को कम करने के लिए मूंग की खीर, सोना एवं घी दान करना चाहिए।

रोज सूर्याष्टक का पाठ करें और चाक्षुषोपनिषद् पढ़ें।

नेत्ररोग के प्रभाव को कम करने के लिए मूंग की खीर, सोना एवं घी दान करना

चाहिए।

रविवार को ब्रह्मचर्य का पालन करें।

आदित्यहृदयस्तोत्र का पाठ करें। रविवार को तेल, नमक एवं अदरक का सेवन न करें।

रविवार का व्रत करें और उस दिन नमक न खायें। सुबह शाम सूर्य को नमस्कार करें तथा सूर्य से संबंधितवस्तुओं का दान करें।

लाल चन्दन, लाल फूल डालकर सूर्य को जल चढ़ायें।

सूर्योदय से एक घंटा पहले उठें, मुंह में जल भरकर शीतल जल से आंख में 20 बार छींटा दें। आपको एकमहीने में लाभ होगा। तीन-चार महीने में आंख समान्य हो जायेगा।

नेत्र (आँखों) से संबंधित विकार के लिए रुद्राक्ष का सुझाव

नौ मुखी रुद्राक्ष – जो व्यक्ति बुखार, आंखों से संबंधित समस्या, किसी तरह के चर्म रोग, फेफड़े के रोग एवं तेज बदन दर्द जैसी समस्याओं से ग्रसित हैं, उनके लिए नौ मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभदायक होता है।

एक मुखी रुद्राक्ष सूर्य के द्वारा शासित होता है तथा अस्थमा, टी बी, लकवा, घात, दिल से संबंधित बीमारियां, मानसिक रोग, आंखों से संबंधित परेशानियां, हड्डियों में दर्द एवं सिर-दर्द आदि जैसे रोगों को दूर करने के लिए उपाय के तौर पर धारण किया जाता है।

नेत्र (आँखों) से संबंधित विकार के लिए आर्युवेदिक उपचार

चार बादाम रात में पानी में भिंगोकर और सुबह चार काली मिर्च के साथ पीसकर मिश्री के साथ सेवन करें या चबाकर खायें और उपर से दूध पी लें। ऐसा करने से दृष्टि कमजोर नहीं होगी।

सौंफ एवं धनिया बराबर-बराबर लेकर उसे कूट-छानकर उसमें बराबर भाग खांड मिलाकर एक तोला सुबह और एक तोला शाम को प्रयोग करें। इससे आंखों की रोशनी तुरंत बढ़ती है।

इमली के बीज को पत्थर पर चंदन की तरह घीसें। फिर इस लेप को गुहेरी पर लगायें। इसे लगाने से ठंडक मिलती है तथा कुछ ही घंटों में गुहेरी ठीक हो जाती है। और आगे भी भविष्य में यह बीमारी कभी नहीं होती है।

दो रत्ती फिटकरी बारीक पीसकर तीस ग्राम गुलाबजल में मिला लें। इस लोशन को ड्रॉप से दो-दो बूंद दिन में दो-तीन बार आंखों में डालें। इससे आंखों का दर्द एवं लाली दूर हो जाती है तथा कीच या गीड़ आना ठीक हो जाता है। आंखों में दर्द के लिए यह बहुत ही फायदेमंद साबित होता है। अगर गुलाबजल नहीं मिले तो उसकी जगह डिस्ट्रिल वाटर या उबला हुआ पानी ठंडा करके उपयोग में लाया जा सकता

है।

जब यह लगे की आंख दुखने वाली है, तो उसी समय जिस आंख में परेशानी हो उस तरफ के कान में रुई डाल लें। अगर दोनों आंखों का दुखना महसूस हो, तो दोनों कानों में रुई डाल लें। दो-तीन घंटों में पूरी तरह से आराम मिल जायेगा।

स्वस्थ आंखों में शुद्ध मधु का एक बूंद सप्ताह में एक-दो बार डालने से दृष्टि कभी कमजोर नहीं होती, बल्कि उम्र के साथ तेज होती जाती है।

करेले का रस और तिल तेल 4:1 अनुपात में लेकर मिला लें और पूरी तरह पानी सूख जाने तक गरम करें। फिर उसका सिर पर मालिश करें। ऐसा करने से आंखों की रोशनी बढ़ती है।

सुपाड़ी को पानी के साथ पत्थर पर घिसकर लगाने से आंखों की सूजन दूर हो जाती है।

रुई को खीरे या आलू के रस में भिंगोकर आंखों में चारों तरफ लगाने से आंखों के चारों तरफ का कालापन दूर हो जाता है।

बादाम, सौंफ तथा मिश्री तीनों को बराबर-बराबर मात्रा में लेकर पीसकर इसका बारीक चूर्ण तैयार कर लें और इसे किसी कांच के बर्तन में रख लें। रोजाना रात में सोते समय 10 ग्राम चूर्ण 250 ग्राम दूध के साथ लगातार चालीस दिनों तक सेवन करने से दृष्टि तेज हो जाती है और चश्मे की जरूरत नहीं पड़ती है। बच्चों की दृष्टि तेज होने के लिए इससे आधी मात्रा में दें। ज्यादा लाभ प्राप्त करने के लिए इस दवा का सेवन करने के बाद दो घंटे तक पानी न पीयें। इससे आंखों की रोशनी के साथ-साथ यादाश्त भी बढ़ती है।

नींबू के रस को एक बूंद, महीने में एक बार आंखों में डालने से भविष्य में कभी भी आंखे नहीं दुखतीं।

आंवले के काढ़े से आंखों को धोने से भी आंखों के रोग में राहत मिलती है।

बार-बार गुहेरी निकलना बन्द करने के लिए – तीन ग्राम त्रिफला का चूर्ण सुबह-शाम गाय के दूध के साथ दो सप्ताह तक सेवन करने से बार-बार गुहेरी निकलना बंद हो जाता है।

पका हुआ केला थोड़े-से दही और पानी के साथ मिला लें और हर दिन दो बार लें। नेत्र रोग में लाभ होता है।

आक की जड़ को जलाकर पानी में मिला लें। फिर उसको आंखों के पपोटों के किनारे पर लगायें। इससे सुलाफ रोग में आराम मिलता है।

टमाटर के रस में थोड़े पुदीने के पत्ते, नमक और थोड़ा सा नींबू का रस मिलाकर पीयें। आंखों के चारों तरफ का कालापन ठीक हो जाता है। कटे हुए नींबू को घड़ी की दिशा में आंखों के नीचे 5 मिनट तक रगड़ें। फिर कुछ देर बाद धो लें। धीरे-धीरे धब्बे दूर हो जाते हैं।

बबूल के नरम पत्तों का रस निकाल कर आंखों में डालने से आंखों की पीड़ा दूर होती है।

दिन में कई बार आंखों को साफ एवं ताजे पानी से धोयें। अधिक गर्म या अधिक ठंडी वस्तुओं का सेवन न

करें तथा पौष्टिक खाना खाने से आंखों की रोशनी बढ़ती है।

मोतियाबिंद की शुरुआती अवस्था में रोजाना सुबह शुद्ध मक्खियों का शहद या कमल का शहद एक बूंद आंखों में तीन-चार सप्ताह तक डालने से मोतियाबिंद में लाभ होता है।

शुद्ध शहद के साथ निर्मली पीसकर आंखों में काजल की तरह लगाने से मोतियाबिंद ठीक हो जाता है।

एक बड़ा चम्मच शहद के साथ छोटी इलायची के बीज मिला लें और हर रोज खायें। ऐसा करने से आंखोंकी रोशनी बढ़ती है।

चंदन को घीसकर आंखों में लगातार लगाने से मोतियाबिंद होने की संभावना कम होती है।

इमली के फूलों की पोटली बनाकर अपनी आंखों पर बांधें, इससे सूजन दूर हो जाती है।

सुबह, दोपहर, शाम आंखों पर ठंडे जल के छींटे मारें, आंखों को लाभ होगा।

रोजाना सफेद चिरमिटी का रस और कागजी नींबू का रस आंखों में लगाने से मोतियाबिंद की बीमारी ठीकहो जाती है।

सेंधा नमक लें और उसमें उससे दुगनी मात्रा में मिश्री मिलाकर पीस लें। फिर उसे काजल की तरह आंखोंमें लगायें। इससे मोतियाबिंद ठीक हो जाता है।

हल्दी को बारीक पीसकर शीशी में रख लें। फिर उसे रात को सोते समय अपनी आंखों में डालें। इससे फूला रोग में राहत मिलती है।

टमाटर दांतों से काट कर खाने से रतौंधी की शिकायत जल्द ही खत्म हो जाती है।

बथुआ का साग खाने से रतौंधी ठीक हो जाती है।

रोज एक गिलास चौलाई के पत्तों के रस का सेवन करने से मोतियाबिंद ठीक हो जाता है।

हल्दी की गांठ को पानी के साथ पत्थर पर घिस कर आंखों में लगाने से लाभ प्राप्त होता है।

पत्थर पर आलू घिसकर काजल की तरह आंखों में आंजन करने से लाभ प्राप्त होता है।

गाजर का रस रतौंधी में लाभदायक होता है।

कर्ण (कानों) से संबंधित विकार के कारण और विविध उपाय



कर्ण (कानों) से संबंधित विकार से संबंधित कुण्डली में उपस्थित योग

आपकी कुण्डली में बुध तीसरे भाव के स्वामी या छठे भाव के स्वामी होकर कमजोर तथा अशुभ स्थिति में है, आपको सुनने में कोई परेशानी हो सकती है।

आपकी कुण्डली में छठे भाव के स्वामी एवं बुध पर पाप ग्रहों की दृष्टि पड़ रही है, आपको सुनने में परेशानी हो सकती है या आपको कानों से संबंधित कोई अन्य रोग हो सकता है।

आपकी कुण्डली में तीसरे भाव का स्वामी पापग्रह एवं किसी शुष्क ग्रह जैसे – सूर्य, मंगल या शनि के साथ स्थित है, आपके सुनने की शक्ति क्षीण हो सकती है।

आपकी कुण्डली में तीसरे भाव के स्वामी की राशि का स्वामी जिस राशि तथा नवांश में स्थित है, उसका स्वामी केंद्र में स्थित है और वह पाप ग्रहों के साथ स्थित है या उनसे दृष्ट है, आपको कानों से संबंधित कोई समस्या हो सकती है।

कर्ण (कानों) से संबंधित विकार के लिए रत्न और उपरत्न का सुझाव

- (1). अजीब वस्तुओं या विषयों से संबंधित सपने बार-बार आने पर आपको 14 या 16 रत्नी का लाल मूंगा और 9 या 10 रत्नी का मोती धारण करना चाहिए।
- (2). यदि आप वातोन्माद/मूर्छा (हिस्टीरिया) रोग से पीड़ित हैं, तो आपको 7 या 9 रत्नी का मोती, 14 या 18 रत्नी का लाल मूंगा और 12 या 16 रत्नी का चंद्र रत्न धारण करना चाहिए।
- (3). मिर्गी से पीड़ित होने पर आपको उपचार हेतु पन्ना, मोती और मूंगा एक साथ धारण करना चाहिए।
- (4). अत्यधिक तनावग्रस्त होने के कारण मानसिक असंतुलन की स्थिति उत्पन्न होने पर आपको 4 या 8 रत्नी का पन्ना और 16 या 20 रत्नी का चंद्र रत्न धारण करना चाहिए।
- (5). यदि आप आनुवांशिक मानसिक असंतुलन से पीड़ित हैं, तो आपको 24 या 30 रत्नी का चंद्र रत्न और 12 या 14 रत्नी का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (6). मणिक्य, मोती तथा पन्ना पहनें।

- (7). अनिद्रा से छुटकारा पाने के लिए आपको पन्ना, पुखराज और मोती धारण करना चाहिए।
- (8). शिराप्रदाह से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (9). स्मरण शक्ति कमजोर होने पर आपको 5 या 7 रत्ती का पन्ना, 4 या 6 रत्ती का लहसुनिया और 12 या 18 रत्ती का चंद्र रत्न अथवा 7 या 9 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (10). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए पन्ना, चंद्ररत्न, लाल मूंगा और पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (11). अनिद्रा से निजात पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का चंद्ररत्न धारण करना चाहिए।
- (12). यदि आप शराब पीने के आदी हैं, तो आपको इससे छुटकारा पाने के लिए 14 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न और 9 या 14 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए।
- (13). सिरदर्द से बचने के लिए आपको 4 या 5 रत्ती का माणिक अथवा 20 या 24 का माणिक का उपरत्न धारण करना चाहिए।
- (14). मानसिक विकार से बचने के लिए आपको 16 या 24 रत्ती का चंद्र रत्न और 6 या 8 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (15). मिरगी/वातोन्माद से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा और मोती धारण करना चाहिए।
- (16). यदि आपको मिरगी का दौरा पड़ता है, तो आपको इससे बचने के लिए 18 या 14 रत्ती का चंद्र रत्न, 10 या 14 रत्ती का सफेद मोती और 1 या 2 रत्ती का हीरा अथवा 4 या 5 रत्ती का जरकन धारण करना चाहिए।
- (17). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का पीला पुखराज और 5 या 6 रत्ती का चंद्ररत्न धारण करना चाहिए।
- (18). अनिद्रा से निजात पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का पन्ना, अनामिका में 5 रत्ती का पीला पुखराज और तर्जनी में 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (19). अनिद्रा से निजात पाने के लिए 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।
- (20). आलस्य या उदासीनता से संबंधित रोग से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का मोती और 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (21). यदि आप पागलपन में बेहोशी (हिस्टिरीकल इन्सैनिटी) से पीड़ित हैं, तो आपको 20 या 25 रत्ती का चंद्र रत्न और 1 या 2 रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।

चाहिए।

(22). मिरगी/लकवा से पीड़ित होने पर आपको साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(23). मिर्गी से बचने के लिए पन्ना, 6 रत्ती का चंद्ररत्न और 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(24). भूलने की बीमारी से निजात पाने के लिए आपको 5 रत्ती का लाल मूंगा और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(25). अनिद्रा से निजात पाने के लिए 10 या 12 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(26). नवरत्न का पेंडल गले में पहनना भी लाभदायक होगा।

(27). नीलम या पुखराज चांदी अथवा तांबे की अंगूठी में पहनें।

(28). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए पन्ना, नीलम, और सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(29). स्थायी सिरदर्द से छुटकारा पाने के लिए आप पन्ना और मोती धारण कर सकते/सकती हैं।

(30). श्लैष्मिक ज्वर से बचने के लिए 5 रत्ती का लाल मूंगा और 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(31). यदि आप विषाद रोग से ग्रसित हैं, तो आपको 5 या 8 रत्ती का नीलम और 5 या 7 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।

(32). मिर्गी से बचने के लिए 5 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का नीलम और 5 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(33). मिर्गी से बचने के लिए पन्ना और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(1). मस्तिष्क विकार – मूनस्टोन, पीला पुखराज तथा पन्ना धारण करने से मानसिक शांति मिलती है। लालमूंगा धारण करना भी लाभदायक होता है।

(2). स्मृति दोष – मोती या माणिक्य गले में धारण करें। एक हाथ में 6 रत्ती का पन्ना तथा दूसरे में 9 रत्ती का मूंगा चांदी की अंगूठी में पहनें। चांदी, सोना, तांबा मिश्रित धातु का कड़ा पहनना भी लाभदायक होगा।

(3). मस्तिष्क के ट्यूमर से निजात पाने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 6 रत्ती का सफेद मोती और 4 रत्ती का नीलम या लाजावर्द धारण करना चाहिए, अथवा पन्ना, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 6 रत्ती का चंद्ररत्न या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(4). परागज-ज्वर (हे-फीवर) से बचने के लिए आपको 9 या 16 रत्ती का गोमेद और 5 या 7 रत्ती का पन्ना धारण करना

चाहिए।

(5). यदि आप रोगभ्रम/चिन्तोन्माद (हॉइपोकांड्रिया) से ग्रसित हैं, तो आपको 7 या 8 रत्ती का नीलम और 5 या 7 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(6). मिरगी – 1 – 6 रत्ती मोती या 5 रत्ती पन्ना या 12 रत्ती सफेद मोती धारण करें।
2 – पन्ना और मूनस्टोन धारण करें। लग्न के स्वामी का रत्न धारण करना शुभ फलदायक होगा।

(7). प्रमस्तिष्कीय रक्तस्राव – 1 – लग्न के स्वामी का रत्न धारण करें।
2 – 7-8 रत्ती का लाल मूंगा तथा मूनस्टोन या सफेद मोती चांदी में धारण करें।
3 – एक त्रिकोण पेण्डेण्ट में लग्न के स्वामी का रत्न, मूंगा तथा पुखराज जड़वायें, जिसमें माणिक्य बीच में हो, इस प्रकार का पेण्डेण्ट धारण करने से इस रोग का प्रभाव कम हो सकता है।

(8). मस्तिष्कावरण शोथ से बचने के लिए आपको लाल मूंगा, पुखराज, पन्ना और माणिक धारण करना चाहिए।

(9). मस्तिष्क में तंत्रिकाओं के गड़बड़ी से सिरदर्द होने पर आपको 5 या 6 रत्ती का पीला पुखराज और 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(10). पागलपन या विक्षिप्तता से ग्रसित होने पर इसके उपचार हेतु आपको पन्ना, लाल मूंगा, मोती धारण करना चाहिए। इससे रोग का प्रभाव कम होगा।

(11). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए आपको 10 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(12). मस्तिष्क में गांठ, सूजन और फोड़ा होने पर आपको उसके उपचार हेतु पन्ना, पुखराज और मूंगा धारण करना चाहिए।

(13). यदि आप प्रमस्तिष्क घनास्त्रता रोग से पीड़ित हैं, तो आपको 3 रत्ती का माणिक अथवा 18 या 24 रत्ती का माणिक का उपरत्न, 10 या 12 रत्ती का मोती तथा 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(14). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 3 रत्ती का माणिक और 4 रत्ती नीलम धारण करना चाहिए। गर्मी के महीनों में रात के समय लाल मूंगा और माणिक धारण नहीं करना चाहिए।

(15). पागलपन – 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का पीला पुखराज एवं 4 रत्ती का मोती धारण करें।

(16). कमजोर स्मरण शक्ति या भूलने की बीमारी से बचने के लिए आपको 7 या 9 रत्ती का लाल मूंगा और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(17). मस्तिष्क ज्वर – लाल मूंगा, पीला पुखराज तथा पन्ना धारण करना लाभदायक साबित होगा।

(18). मस्तिष्क संबंधित रोग – 1 – लग्न के स्वामी, सूर्य एवं चन्द्रमा को उनसे संबंधित रत्न धारण करा कर बलशाली बनायें।

2 – लग्न के स्वामी, सूर्य एवं चंद्रमा का कवच पाठ करें तथा इनसे संबंधित यंत्र धारण करें।

- 3 – एक ही अंगूठी अथवा पेण्डेंट में लाल मूंगा तथा पन्ना धारण करें।
- 4 – लाल मूंगा एवं पीला पुखराज या पन्ना एवं चन्द्रकान्त एक साथ मिलाकर धारण करें।
- 5 – पन्ना एवं चन्द्रकान्त एक साथ धारण करें।
- 6 – मूंगा एवं मोती धारण करें, लाभदायक फल प्राप्त होगा।
- 7 – लाल मूंगा एवं पन्ना एक साथ धारण करना लाभदायक सिद्ध होता है।

(19). मस्तिष्कीय रक्तस्राव होने पर आपको मंगल के लिए लाल मूंगा, बुध के लिए पन्ना, और चंद्रमा के लिए मोती धारण करना चाहिए। साथ ही उचित औषधि लेने पर आपको शीघ्र उत्तम परिणाम प्राप्त होगा।

(20). मस्तिष्क संबंधी रोगों से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का पन्ना, 14 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न तथा 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(21). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(22). मूर्च्छा – 5 रत्ती पन्ना, 4 रत्ती नीलम एवं 5 रत्ती मोती धारण करें।

(23). अनिद्रा – फिरोजा, जिरकॉन, श्वेत ओपल तथा मोती धारण करना लाभदायक होता है। बारहवें भाव के स्वामी का रत्न धारण करना भी शुभ फलदायक होगा। पीला पुखराज भी धारण किया जा सकता है।

(1). मोतियाबिंद से छुटकारा पाने के लिए 3 या 4 रत्ती का माणिक और 5 या 6 रत्ती का पन्ना और 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती एक साथ धारण करना चाहिए। यदि संभव हो तो आधा रत्ती का हीरा बाएं हाथ में धारण करना चाहिए।

(2). 10 या 12 रत्ती का माणिक्य अनामिका अंगुली में शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन धारण करें।

(3). दूर दृष्टि दोष को दूर करने के लिए पन्ना, माणिक और सफेद मोती धारण करना चाहिए। यदि संभव हो तो आधा रत्ती का हीरा बाएं हाथ में धारण किया जा सकता है। माणिक के स्थान पर लाल मूंगा धारण किया जा सकता है।

(4). यदि जन्म के बाद नेत्र हानि होती है अथवा दृष्टिहीनता का उपचार संभव है, तो दृष्टिहीनता अथवा कमजोर दृष्टि से बचने के लिए आप माणिक और मोती धारण कर सकते हैं।

(5). मोतियाबिन्द – पन्ना को आंखों की ज्योति में वृद्धि करने में सहायक माना जाता है और मोती को खोई नेत्र ज्योति प्राप्त करने में सहायक। रोग के उपचार के दौरान माणिक्य धारण करें। गर्मियों में माणिक्य के स्थान पर लाल मूंगा पहनें। मूंगा, मोती तथा पन्ना 3–3 रत्ती प्रत्येक के हिसाब से एक साथ अंगूठी में जड़वाकर या पेण्डेंट में धारण करें, लाभ होगा।

(6). निकट दृष्टि से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का माणिक और 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए। माणिक के स्थान पर लाल मूंगा धारण किया जा सकता है।

(7). आंख आने से मुक्ति पाने के लिए मध्यमिका उंगली में 4 या 5 रत्ती का चंद्ररत्न अथवा कनिष्ठा में 3 या 4 रत्ती का नीलम धारण करना

चाहिए।

- (8). यदि आप आंखों की बीमारी से पीड़ित हैं, तो आपको एक्वामेरीन एवं पैरीडोट रत्न धारण करना चाहिए। इससे आपको जल्द स्वस्थ होने में मदद मिलेगी।
- (9). नेत्र संबंधी रोगों से बचने के लिए आपको 3 या 5 रत्ती का माणिक और 7 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (10). नेत्रशोथ – इस रोग के प्रभाव को कम करने के लिए पन्ना धारण करें। इसके अलावा मूनस्टोन, ओपल, जिरकॉन धारण करने से भी नेत्र रोगों में काफी लाभ होता है।
- (11). आंख आना/नेत्रश्लेष्मलाशोथ से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा एवं लाल वस्त्र धारण चाहिए।
- (12). अंधापन – सफेद मोती, मूनस्टोन तथा मूंगा धारण करना लाभदायक होगा।
- (13). वर्णाधता – लाल माणिक्य अथवा मूंगे के साथ मोती धारण करना वर्णाधता में बहुत लाभदायक होता है।
- (14). कमजोर दृष्टि अथवा नेत्र से संबंधित रोगों से बचाव के लिए आपको 10 अथवा 14 रत्ती का मूंगा और 9 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (15). वृद्धावस्था का दूर दृष्टि दोष से निजात पाने के लिए पन्ना, माणिक, सफेद मोती और लाल मूंगा संयुक्त रूप से धारण करना चाहिए। लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना सर्वाधिक उपयोगी होगा।
- (16). रतौंधी से छुटकारा पाने के लिए लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (17). वर्णान्धता से निजात पाने के लिए पन्ना, लाल मूंगा, सफेद मोती व हीरा धारण करना चाहिए।
- (18). दृष्टिवैषम्यता को दूर करने के लिए लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना उपयोगी होगा।
- (1). बहरापन से बचने के लिए आपको 9 रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पन्ना, नीलम, पुखराज धारण करना चाहिए।

कर्ण (कानों) से संबंधित विकार के लिए टोटके

सोना, अन्न, जमीन एवं कम्बल आदि का दान करना चाहिए तथा सूर्य के वैदिक मंत्रों का जाप करना चाहिए।

सर्दी के मौसम में कान के दर्द की संभावना अधिक रहती है। कान में दर्द अथवा सुनने में परेशानी हो, या कान में फुंसी हो, तो लहसुन को साफ कर के उसका रस कान में टपकाने से शीघ्र आराम होता है।

कर्ण (कानों) से संबंधित विकार के लिए आर्युवेदिक उपचार

नीम की 25 ग्राम पत्तियों का रस निकालें। उसमें नमक मिलायें और उसे धीमी आंच पर गरम करके गुनगुना गरम कर कान में डालें। उसके दूसरे दिन भी ऐसा करें। जल्द ही आराम मिलेगा।

प्याज का रस निकालें तथा उसे गुनगुना होने तक गर्म करें। इसे कान में दो बूंद डालें, कान बहना बंद होजायेगा।

लहसुन की दो कली को छिलकर दो चम्मच सरसों के तेल में डालकर हल्की-हल्की आंच पर गर्म होने के लिए रख दें। जब लहसुन जलकर काला पड़ जाये तो तेल को उतारकर कपड़े से छान लें। फिर तेल थोड़ा ठंडा हो जाये तो दो-चार बूंद गुनगुना तेल कान में डालें। इससे कान का दर्द ठीक हो जायेगा।

लौंग और नीम की दो पत्तियां सरसों के तेल में भून लें। इस तेल को कान में डालने से कान का दर्द ठीक हो जाता है।

सर्दी के मौसम में कान के दर्द की संभावना अधिक रहती है। कान में दर्द अथवा सुनने में परेशानी हो, या कान में फुंसी हो, तो लहसुन को साफ कर के उसका रस कान में टपकाने से शीघ्र आराम होता है।

मेथी के बीजों को दूध में पीसकर, छानकर उसे हल्का गुनगुना करके कान में डालने से कान बहना बंद होजाता है।

शंख में पानी भरकर रात-भर रहने दें। सुबह में उठकर उसे पी लें तथा साथ ही शंख की ध्वनि खूब सुनें। कान से संबंधित समस्याओं में लाभ प्राप्त होगा।

आक का पीला पत्ता, जिसमें छेद न हो, उसे लेकर आग पर गर्म करें और उसका रस कान में निचोड़ें। इससे लाभ प्राप्त होगा।

आड़ू की गुठलियों का तेल कान में डालते रहने से भी बहरापन ठीक हो जाता है।

अदरक का रस निकाल कर छान लें। उसे गुनगुना गर्म करके कान में चार-चार बूंद डालें। इससे कान का दर्द ठीक हो जाता है।

तुलसी के पत्तों का रस निकालकर गरम करें। जब सहने योग्य हो जाये तब दो बूंद कान में डाल दें। कान दर्द से राहत मिलेगी।

एक बड़े चम्मच सरसों के तेल में लहसुन की छिली हुई चार कलियां डालकर अच्छी तरह से पका लें। फिर तेल को दो-दो बूंद कान में डालने से कान का दर्द ठीक हो जाता है।

चुकन्दर के पत्तों का रस हल्का गरम करके दो-दो बूंद दोनों कानों में डालने से कान के दर्द में लाभ प्राप्त होता है।

सरसों के तेल की 2 बूंद दोनों कानों में डालें एवं गरम कपड़े से थोड़ा सेंक दें। इससे कान दर्द में आराम मिलता है।

कान में दर्द होने पर शुद्ध घी तथा कपूर बराबर-बराबर मात्रा में लेकर गर्म करें और गुनगुना रहते हुए

तीन-चार बूंद कान में डालकर कर रुई लगा दें। इससे कान की पीड़ा में बहुत जल्द आराम मिलता है।

प्याज का रस निकालकर गरम करें और दो-दो बूंद दोनों कानों में डालने से कान के दर्द में लाभ होता है।

तुलसी के पौधे का रस गुनगुना गर्म करके कान में डालने से कान का दर्द ठीक हो जाता है।

लहसुन को तेल में गरम करके फिर उस तेल को ठंडा करें। जब तेल गुनगुना रह जाये, तो उसे कान में डालने से कान की पीड़ा ठीक हो जाती है।

गेंदा या हुरहुरिया के पत्ते का रस कान में एक या दो बूंद डालने से कान का दर्द ठीक हो जाता है।

प्याज का रस हल्का गरम करके कान में डालने से बहरापन दूर हो जाता है।

तुलसी के पौधे का रस गुनगुना गर्म करके कान में डालने से कान का दर्द ठीक हो जाता है।

कड़वे बादाम का तेल कान में डालने से बहरापन ठीक हो जाता है।

असली हींग को औरत के दूध में घिसकर कानों में डालने से बहरापन में फायदा होता है।

नीम की पत्तियों के काढ़े से पिचकारी द्वारा कान को धोयें तथा दो बूंद नीम का तेल हल्का गर्म करके कान में डालें। इससे कान के कीड़े मर जायेंगे।

प्याज का रस निकालकर थोड़ा सा गर्म कर लें। इसे दो-तीन बूंद कान में डालें। कान का दर्द ठीक हो जायेगा।

मुख (मुँह) से संबंधित विकार के कारण और विविध उपाय



मुख (मुँह) से संबंधित विकार से संबंधित कुण्डली में उपस्थित योग

आपकी कुण्डली में बुध छटे भाव का स्वामी है, आपके जीभ पर छाले पड़ सकते

हैं।

आपकी कुंडली में राहु से अक्रांत राशि के स्वामी के साथ दूसरे भाव का स्वामी त्रिक भाव में स्थित है, उसकी महादशा में बुध की अंतर्दशा आप पर आप जिह्वा रोग से ग्रसित हो सकते हैं या आपकी जीभ कटसकती है।

आपकी कुंडली में सातवें भाव के स्वामी से दूसरे भाव में केतु स्थित है, आप तुतला सकते हैं।

आपकी कुंडली में दूसरे भाव का स्वामी त्रिक भाव में स्थित है तथा पाप ग्रह के साथ स्थित है या उससे दृष्ट है, आप मुंह से संबंधित किसी बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में पाप ग्रह दूसरे भाव में स्थित हैं, आप मुंह से संबंधित किसी बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं।

मुख (मुँह) से संबंधित विकार के लिए रत्न और उपरत्न का सुझाव

- (1). अजीब वस्तुओं या विषयों से संबंधित सपने बार-बार आने पर आपको 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा और 9 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (2). यदि आप वातोन्माद/मूर्छा (हिस्टीरिया) रोग से पीड़ित हैं, तो आपको 7 या 9 रत्ती का मोती, 14 या 18 रत्ती का लाल मूंगा और 12 या 16 रत्ती का चंद्र रत्न धारण करना चाहिए।
- (3). मिर्गी से पीड़ित होने पर आपको उपचार हेतु पन्ना, मोती और मूंगा एक साथ धारण करना चाहिए।
- (4). अत्यधिक तनावग्रस्त होने के कारण मानसिक असंतुलन की स्थिति उत्पन्न होने पर आपको 4 या 8 रत्ती का पन्ना और 16 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न धारण करना चाहिए।
- (5). यदि आप आनुवांशिक मानसिक असंतुलन से पीड़ित हैं, तो आपको 24 या 30 रत्ती का चंद्र रत्न और 12 या 14 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (6). मणिक्य, मोती तथा पन्ना पहनें।
- (7). अनिद्रा से छुटकारा पाने के लिए आपको पन्ना, पुखराज और मोती धारण करना चाहिए।
- (8). शिराप्रदाह से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (9). स्मरण शक्ति कमजोर होने पर आपको 5 या 7 रत्ती का पन्ना, 4 या 6 रत्ती का लहसुनिया और 12 या 18 रत्ती का चंद्र रत्न अथवा 7 या 9 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (10). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए पन्ना, चंद्ररत्न, लाल मूंगा और पीला पुखराज धारण करना

चाहिए।

- (11). अनिद्रा से निजात पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का चंद्ररत्न धारण करना चाहिए।
- (12). यदि आप शराब पीने के आदी हैं, तो आपको इससे छुटकारा पाने के लिए 14 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न और 9 या 14 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए।
- (13). सिरदर्द से बचने के लिए आपको 4 या 5 रत्ती का माणिक अथवा 20 या 24 का माणिक का उपरत्न धारण करना चाहिए।
- (14). मानसिक विकार से बचने के लिए आपको 16 या 24 रत्ती का चंद्र रत्न और 6 या 8 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (15). मिरगी/वातोन्माद से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा और मोती धारण करना चाहिए।
- (16). यदि आपको मिरगी का दौरा पड़ता है, तो आपको इससे बचने के लिए 18 या 14 रत्ती का चंद्र रत्न, 10 या 14 रत्ती का सफेद मोती और 1 या 2 रत्ती का हीरा अथवा 4 या 5 रत्ती का जरकन धारण करना चाहिए।
- (17). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का पीला पुखराज और 5 या 6 रत्ती का चंद्ररत्न धारण करना चाहिए।
- (18). अनिद्रा से निजात पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का पन्ना, अनामिका में 5 रत्ती का पीला पुखराज और तर्जनी में 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (19). अनिद्रा से निजात पाने के लिए 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।
- (20). आलस्य या उदासीनता से संबंधित रोग से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का मोती और 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (21). यदि आप पागलपन में बेहोशी (हिस्टीरीकल इन्सैनिटी) से पीड़ित हैं, तो आपको 20 या 25 रत्ती का चंद्र रत्न और 1 या 2 रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।
- (22). मिरगी/लकवा से पीड़ित होने पर आपको साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (23). मिर्गी से बचने के लिए पन्ना, 6 रत्ती का चंद्ररत्न और 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (24). भूलने की बीमारी से निजात पाने के लिए आपको 5 रत्ती का लाल मूंगा और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।
- (25). अनिद्रा से निजात पाने के लिए 10 या 12 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (26). नवरत्न का पेंडल गले में पहनना भी लाभदायक

होगा।

(27). नीलम या पुखराज चांदी अथवा तांबे की अंगूठी में पहनें।

(28). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए पन्ना, नीलम, और सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(29). स्थायी सिरदर्द से छुटकारा पाने के लिए आप पन्ना और मोती धारण कर सकते/सकती हैं।

(30). श्लैष्मिक ज्वर से बचने के लिए 5 रत्ती का लाल मूंगा और 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(31). यदि आप विषाद रोग से ग्रसित हैं, तो आपको 5 या 8 रत्ती का नीलम और 5 या 7 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।

(32). मिर्गी से बचने के लिए 5 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का नीलम और 5 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(33). मिर्गी से बचने के लिए पन्ना और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(1). मस्तिष्क विकार – मूनस्टोन, पीला पुखराज तथा पन्ना धारण करने से मानसिक शांति मिलती है। लालमूंगा धारण करना भी लाभदायक होता है।

(2). स्मृति दोष – मोती या माणिक्य गले में धारण करें। एक हाथ में 6 रत्ती का पन्ना तथा दूसरे में 9 रत्ती का मूंगा चांदी की अंगूठी में पहनें। चांदी, सोना, तांबा मिश्रित धातु का कड़ा पहनना भी लाभदायक होगा।

(3). मस्तिष्क के ट्यूमर से निजात पाने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 6 रत्ती का सफेद मोती और 4 रत्ती का नीलम या लाजावर्द धारण करना चाहिए, अथवा पन्ना, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 6 रत्ती का चंद्ररत्न या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(4). परागज-ज्वर (हे-फीवर) से बचने के लिए आपको 9 या 16 रत्ती का गोमेद और 5 या 7 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(5). यदि आप रोगभ्रम/चिन्तोन्माद (हॉइपोकांड्रिया) से ग्रसित हैं, तो आपको 7 या 8 रत्ती का नीलम और 5 या 7 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(6). मिरगी – 1 – 6 रत्ती मोती या 5 रत्ती पन्ना या 12 रत्ती सफेद मोती धारण करें।
2 – पन्ना और मूनस्टोन धारण करें। लग्न के स्वामी का रत्न धारण करना शुभ फलदायक होगा।

(7). प्रमस्तिष्कीय रक्तस्राव – 1 – लग्न के स्वामी का रत्न धारण करें।
2 – 7-8 रत्ती का लाल मूंगा तथा मूनस्टोन या सफेद मोती चांदी में धारण करें।
3 – एक त्रिकोण पेण्डेण्ट में लग्न के स्वामी का रत्न, मूंगा तथा पुखराज जड़वायें, जिसमें माणिक्य बीच में हो, इस प्रकार का पेण्डेण्ट धारण करने से इस रोग का प्रभाव कम हो सकता

है।

- (8). मस्तिष्कावरण शोथ से बचने के लिए आपको लाल मूंगा, पुखराज, पन्ना और माणिक धारण करना चाहिए।
- (9). मस्तिष्क में तंत्रिकाओं के गड़बड़ी से सिरदर्द होने पर आपको 5 या 6 रत्ती का पीला पुखराज और 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (10). पागलपन या विक्षिप्तता से ग्रसित होने पर इसके उपचार हेतु आपको पन्ना, लाल मूंगा, मोती धारण करना चाहिए। इससे रोग का प्रभाव कम होगा।
- (11). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए आपको 10 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (12). मस्तिष्क में गांठ, सूजन और फोड़ा होने पर आपको उसके उपचार हेतु पन्ना, पुखराज और मूंगा धारण करना चाहिए।
- (13). यदि आप प्रमस्तिष्क घनास्त्रता रोग से पीड़ित हैं, तो आपको 3 रत्ती का माणिक अथवा 18 या 24 रत्ती का माणिक का उपरत्न, 10 या 12 रत्ती का मोती तथा 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (14). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 3 रत्ती का माणिक और 4 रत्ती नीलम धारण करना चाहिए। गर्मी के महीनों में रात के समय लाल मूंगा और माणिक धारण नहीं करना चाहिए।
- (15). पागलपन – 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का पीला पुखराज एवं 4 रत्ती का मोती धारण करें।
- (16). कमजोर स्मरण शक्ति या भूलने की बीमारी से बचने के लिए आपको 7 या 9 रत्ती का लाल मूंगा और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।
- (17). मस्तिष्क ज्वर – लाल मूंगा, पीला पुखराज तथा पन्ना धारण करना लाभदायक साबित होगा।
- (18). मस्तिष्क संबंधित रोग – 1 – लग्न के स्वामी, सूर्य एवं चन्द्रमा को उनसे संबंधित रत्न धारण करा कर बलशाली बनायें।
2 – लग्न के स्वामी, सूर्य एवं चंद्रमा का कवच पाठ करें तथा इनसे संबंधित यंत्र धारण करें।
3 – एक ही अंगूठी अथवा पेण्डेंट में लाल मूंगा तथा पन्ना धारण करें।
4 – लाल मूंगा एवं पीला पुखराज या पन्ना एवं चन्द्रकान्त एक साथ मिलाकर धारण करें।
5 – पन्ना एवं चन्द्रकान्त एक साथ धारण करें।
6 – मूंगा एवं मोती धारण करें, लाभदायक फल प्राप्त होगा।
7 – लाल मूंगा एवं पन्ना एक साथ धारण करना लाभदायक सिद्ध होता है।
- (19). मस्तिष्कीय रक्तस्राव होने पर आपको मंगल के लिए लाल मूंगा, बुध के लिए पन्ना, और चंद्रमा के लिए मोती धारण करना चाहिए। साथ ही उचित औषधि लेने पर आपको शीघ्र उत्तम परिणाम प्राप्त होगा।
- (20). मस्तिष्क संबंधी रोगों से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का पन्ना, 14 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न तथा 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना

चाहिए।

(21). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(22). मूर्च्छा – 5 रत्ती पन्ना, 4 रत्ती नीलम एवं 5 रत्ती मोती धारण करें।

(23). अनिद्रा – फिरोजा, जिरकॉन, श्वेत ओपल तथा मोती धारण करना लाभदायक होता है। बारहवें भाव के स्वामी का रत्न धारण करना भी शुभ फलदायक होगा। पीला पुखराज भी धारण किया जा सकता है।

(1). मोतियाबिंद से छुटकारा पाने के लिए 3 या 4 रत्ती का माणिक और 5 या 6 रत्ती का पन्ना और 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती एक साथ धारण करना चाहिए। यदि संभव हो तो आधा रत्ती का हीरा बाएं हाथ में धारण करना चाहिए।

(2). 10 या 12 रत्ती का माणिक्य अनामिका अंगुली में शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन धारण करें।

(3). दूर दृष्टि दोष को दूर करने के लिए पन्ना, माणिक और सफेद मोती धारण करना चाहिए। यदि संभव हो तो आधा रत्ती का हीरा बाएं हाथ में धारण किया जा सकता है। माणिक के स्थान पर लाल मूंगा धारण किया जा सकता है।

(4). यदि जन्म के बाद नेत्र हानि होती है अथवा दृष्टिहीनता का उपचार संभव है, तो दृष्टिहीनता अथवा कमजोर दृष्टि से बचने के लिए आप माणिक और मोती धारण कर सकते हैं।

(5). मोतियाबिन्द – पन्ना को आंखों की ज्योति में वृद्धि करने में सहायक माना जाता है और मोती को खोई नेत्र ज्योति प्राप्त करने में सहायक। रोग के उपचार के दौरान माणिक्य धारण करें। गर्मियों में माणिक्य के स्थान पर लाल मूंगा पहनें। मूंगा, मोती तथा पन्ना 3–3 रत्ती प्रत्येक के हिसाब से एक साथ अंगूठी में जड़वाकर या पेण्डेण्ट में धारण करें, लाभ होगा।

(6). निकट दृष्टि से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का माणिक और 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए। माणिक के स्थान पर लाल मूंगा धारण किया जा सकता है।

(7). आंख आने से मुक्ति पाने के लिए मध्यमिका उंगली में 4 या 5 रत्ती का चंद्ररत्न अथवा कनिष्ठा में 3 या 4 रत्ती का नीलम धारण करना चाहिए।

(8). यदि आप आंखों की बीमारी से पीड़ित हैं, तो आपको एक्वामेरीन एवं पैरीडौट रत्न धारण करना चाहिए। इससे आपको जल्द स्वस्थ होने में मदद मिलेगी।

(9). नेत्र संबंधी रोगों से बचने के लिए आपको 3 या 5 रत्ती का माणिक और 7 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।

(10). नेत्रशोथ – इस रोग के प्रभाव को कम करने के लिए पन्ना धारण करें। इसके अलावा मूनस्टोन, ओपल, जिरकॉन धारण करने से भी नेत्र रोगों में काफी लाभ होता है।

(11). आंख आना/नेत्रश्लेष्मलाशोथ से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा एवं लाल वस्त्र धारण

चाहिए।

- (12). अंधापन – सफेद मोती, मूनस्टोन तथा मूंगा धारण करना लाभदायक होगा।
- (13). वर्णाधता – लाल माणिक्य अथवा मूंगे के साथ मोती धारण करना वर्णाधता में बहुत लाभदायक होता है।
- (14). कमजोर दृष्टि अथवा नेत्र से संबंधित रोगों से बचाव के लिए आपको 10 अथवा 14 रत्ती का मूंगा और 9 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (15). वृद्धावस्था का दूर दृष्टि दोष से निजात पाने के लिए पन्ना, माणिक, सफेद मोती और लाल मूंगा संयुक्त रूप से धारण करना चाहिए। लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना सर्वाधिक उपयोगी होगा।
- (16). रतौंधी से छुटकारा पाने के लिए लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (17). वर्णान्धता से निजात पाने के लिए पन्ना, लाल मूंगा, सफेद मोती व हीरा धारण करना चाहिए।
- (18). दृष्टिवैषम्यता को दूर करने के लिए लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना उपयोगी होगा।
- (1). बहरापन से बचने के लिए आपको 9 रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पन्ना, नीलम, पुखराज धारण करना चाहिए।
- (1). स्फटिक, मोती तथा मूनस्टोन धारण करें। लाल कपड़ा या लाल धागा अवश्य पहनें। तांबे की अंगूठी में मूंगा पहनने से मुख (मुँह) से संबंधित विकार का प्रभाव कम हो जाता है।
- (2). मुंहासे/फुंसी से छुटकारा पाने के लिए आपको 7 या 9 रत्ती का सफेद मूंगा मध्यमिका में धारण करना चाहिए।
- (3). चांदी की अंगूठी में 8 या 10 रत्ती का सफेद मूंगा अथवा 4 से 10 रत्ती का मोती मध्यमा अंगुली में पहनें, साथ ही छोटी अंगुली में लाजवर्त पहनें। यदि मूंगा अनुकूल न आये तो केवल चांदी की अंगूठी ही धारण करें। इससे मुख (मुँह) से संबंधित विकार का प्रभाव कम हो जाता है।
- (4). दांतों में कीड़े या दर्द होने पर – सफेद या लाल मूंगा पहनना लाभदायक होगा।
- (5). यदि आप मुंहासे से ग्रसित हैं, तो आपको ऐमेथीस्ट रत्न धारण करना चाहिए। इससे आपको जल्द स्वस्थ होने में मदद मिलेगी।
- (6). मूनस्टोन तथा पीला गोमेद धारण करना लाभकारी होगा। पुखराज तथा मोती पहनना भी शुभ फलदायक है। इससे मुख (मुँह) से संबंधित विकार का प्रभाव कम हो जाता है।

मुख (मुँह) से संबंधित विकार के लिए आयुर्वेदिक उपचार

तुलसी की पत्तियों को पीसकर उसमें नींबू डालकर लेप बना लें। इस लेप को चेहरे पर लगाकर मलें।

इससे त्वचा के सारे दाग, धब्बे एवं झाइयों के दाग दूर हो जाते हैं।

खाना खाने के बाद तुरंत दांत साफ करने और कुल्ले कर लेने से मुंह का दुर्गंध दूर होता है।

मुंह में कुछ देर तक सरसों का तेल रखकर कुल्ली करने से जबड़ा मजबूत होता है। आवाज तेज एवं गम्भीर हो जाती है, चेहरा पुष्ट हो जाता है तथा छः रसों में से हर एक रस को अनुभव करने की शक्ति बढ़ जाती है। इसे करने से कंठ नहीं सूखता है तथा होंठ भी नहीं फटते हैं। दांत की जड़ें मजबूत हो जाती है, दांतों में दर्द नहीं होता, खट्टे पदार्थ सेवन करने पर भी उसके दुष्प्रभाव दांतों पर नहीं पड़ते हैं।

जामुन के हरे पत्ते और तुलसी के हरे पत्ते मुंह में रखकर पान की तरह चबाने से मुंह की बीमारियों में लाभ मिलता है।

थोड़ी सी चिरोंजी को दूध में भिंगोकर उसे महीन पीसकर इसका लेप तैयार कर लें। इस लेप को शाम में चेहरे पर लगायें। जब सूख जाये, तो चेहरे को धो लें। इससे चेहरे की त्वचा पर चमक आती है।

नीम की छाल को अंदर की तरफ से घीसकर लेप तैयार कर लें। इस लेप को चेहरे पर लगायें। इसे लगाने से मुंहासे बँट जाते हैं।

नींबू का रस और गुलाबजल बराबर-बराबर मात्रा में मिलाकर चेहरे पर लगायें। आधे घंटे बाद चेहरे को धो लें। इस तरह के प्रयोग को दस-पन्द्रह दिनों तक करने से मुंहासे एवं मुंह के दाग ठीक हो जाते हैं या केवल नींबू के छिलको को मुंह पर नहाने से पहले धीरे-धीरे मलें और कुछ देर बाद गुनगुने पानी से धो लें। ऐसा कुछ दिनों तक करने से मुंहासे ठीक हो जाते हैं।

पीपल, देवदारु और सोंठ का चूर्ण गरम पानी के साथ लेने से हिचकी ठीक हो जाती है।

मिश्री और कपूर को बारीक पीसकर आठ भाग मिश्री और एक भाग कपूर एक साथ मिला लें। इस मिश्रण को मुंह तथा जीभ के छाले में लगायें या भुरकाएं। इससे मुंह के छाले तथा मुंहपाक ठीक हो जाते हैं। बच्चों के लिए यह दवा बहुत ही लाभकारी सिद्ध होता है।

नींबू को काटकर उसकी एक फांक में दो चुटकी काला नमक एवं काली मिर्च पीसी हुई भर लें। फिर उसे धीमी आंच पर तवे पर रखकर गर्म करें। इसको चूसने से मुंह का बिगड़ा हुआ स्वाद ठीक हो जाता है। पेट की गड़बड़ी एवं बदहजमी भी ठीक हो जाती है और भूख खुलकर लगती है।

यदि पाचन विकार के कारण मुंह से दुर्गंध आती है तो भोजन के बाद दोनों समय आधा चम्मच सौंफ चबानेसे दुर्गंध दूर हो जाती है। इससे मुंह की बीमारी और सूखी खांसी भी ठीक होती है।

जायफल को गाय के कच्चे दूध में पत्थर पर घीसकर लेप तैयार कर लें। इस लेप को मुंह पर अच्छी तरहसे लगाकर थोड़ी देर सूखने दें। फिर हाथ से धीरे-धीरे रगड़कर इसे छुड़ा लें और गुनगुने पानी से धो लें। रोजाना दिन में दो बार यह प्रयोग करने से मुंहासे निकलने बंद हो जाते हैं और दाग-धब्बे भी मिट जाते हैं तथा चेहरे पर निखार आ जाती है।

रोजाना अरहर की कोमल पत्तियों को थोड़ी देर चबाने से मुंह के छाले ठीक हो जाते हैं।

खीरा, ककड़ी और नींबू का रस बराबर-बराबर मात्रा में मिलाकर नहाने से पहले चेहरे पर लगाकर इसे

हल्के हाथों से मलें। इससे चेहरे पर निखार आता है।

खीरा या ककड़ी का रस निकाल लें। इस रस से आंखों के नीचे हल्के-हल्के हाथों से लगाकर मलें। 20-25 मिनट बाद इसे पानी से धो दें। इससे आंखों के नीचे का कालापन दूर होता है।

टमाटर के रस में ताजा पानी मिलाकर कुल्ला करने से मुंह, जुबान एवं गालों के छाले दूर हो जाते हैं।

इलायची एवं सौंफ चबाने से मुंह की दुर्गंध ठीक हो जाती है।

चूने के पानी में शुद्ध शहद मिलाकर लेप तैयार कर लें। इस लेप को चेहरे पर लगाकर मलें तथा कुछ देर के बाद धो दें। इससे चेहरे पर चमक आती है।

नारियल और मिश्री बराबर-बराबर मिलाकर लेने से हिचकी ठीक हो जाती है।

मुलहठी या छोटी इलायची चबाने से मुंह की दुर्गंध दूर हो जाती है।

सुबह में दातून करें अगर नीम का दातून हो तो ज्यादा ठीक रहेगा। इसके मुलायम कूचे को मुंहासे पर फेरने से मुंहासे ठीक हो जाते हैं और फिर कभी मुंहासे नहीं निकलते हैं।

तुलसी की दो-चार पत्तियां प्रतिदिन सुबह-शाम चबाकर खायें और उपर से दो घूंट पानी पी लें। इससे मुंह के दुर्गंध दूर होते हैं तथा मुंह के छाले ठीक हो जाते हैं।

गाजर तीन भाग, टमाटर दो भाग, चुकन्दर एक भाग का रस निकालकर पन्द्रह-बीस दिनों तक रोजाना सेवन करें। इससे चेहरे की झुर्रियां, छाया, दाग, मुंहासे ठीक हो जाते हैं और चेहरे पर चमक आती है।

दो बार कपड़े से छना हुआ दस ग्राम नींबू का रस, दस ग्राम ग्लिसरीन और दस ग्राम गुलाबजल तीनों को बराबर-बराबर मात्रा में मिलाकर रख लें। इस लोशन को रोजाना रात में सोने से पहले चेहरे पर हल्के-हल्के हाथों से लगायें। इससे चेहरा कोमल और सुंदर होता है। चेहरे के दाग, कील, झाड़ियां एवं मुंहासे दूर होते हैं तथा चेहरे की रंगत में निखार आती है।

चमेली के पत्ते और फूल पानी में डालकर उसे उबालें। पानी को ठण्डा कर उससे बच्चे को कुल्ला करायें। इससे मुख के छाले दूर हो जाते हैं।

हरा पोदीना, सूखा धनिया और मिश्री बराबर-बराबर भाग में लेकर चबायें और लार बाहर निकालते रहें। इससे मुंह के छाले बहुत जल्दी ठीक हो जाते हैं।

सुबह में सूर्योदय के समय किसी बगीचे में जाकर छोटे-छोटे पौधों पर से ओस की बूंदों से किसी स्वच्छ कपड़े को भिंगों लें। ओस से इस भीगे कपड़े से चेहरे को धीरे-धीरे मलें। ऐसा करने से चेहरे पर चमक आ जायेगी।

छोटी हरड़ को बारीक पीस लें। इसे मुंह तथा जीभ के छालों पर लगा लें। इससे मुंह के छाले ठीक हो जाते हैं और मुखपाक भी ठीक हो जाता है। किसी और चीज से छाले ठीक हो या न हो, इसे लगाने से छाने निश्चित रूप से ठीक हो जाते हैं। दिन में दो-तीन बार इसे

लगायें।

मुंह की दुर्गंध को दूर करने के लिए खाने के बाद लौंग चूसना चाहिए।

चमेली के पत्तों को चबाकर थूकते रहने से मुंह के छाले में लाभ प्राप्त होता है।

दही और पानी मिलाकर गरारे करने से जीभ की जलन ठीक हो जाती है।

जैतून का तेल रोजाना चेहरे पर लगाने से मुहासे एवं फुंसियां ठीक हो जाती हैं तथा दाग-धब्बे के निशान भी मिट जाते हैं।

दो ग्राम भुना हुआ सुहागा का बारीक चूर्ण बनाकर पन्द्रह ग्राम ग्लिसरीन में मिलाकर रख लें। दिन में दो-तीन बार मुंह तथा जीभ के छालों पर इसे लगाये। बहुत जल्दी सुधार होगा।

आम के सूखे पत्ते का धुंआ पीने से हिचकी रुक जाती है।

मुंह का स्वाद खराब होने पर एक लौंग मुंह में रखकर चूसना चाहिए। इससे मुंह कीटाणु भी समाप्त हो जाते हैं।

एक गिलास पानी में एक नींबू का रस मिलाकर दो सप्ताह तक सुबह-सुबह रोजाना कुल्ला करने से मुंह की दुर्गंध दूर हो जाती है।

पिसी हुई मसूर की दाल में जरा सी हल्दी और जैतून का तेल मिलाकर उबटन तैयार कर लें। इस उबटनको चेहरे तथा पूरे शरीर पर लगायें। फिर कुछ देर बाद स्नान कर लें। चेहरा तथा पूरे शरीर की त्वचा में निखार आ जायेगा।

हरा धनिया चबाने से मुंह के छाले ठीक हो जाते हैं।

तुलसी के पत्तों में मुख की दुर्गंध को दूर रने की अद्भुत शक्ति होती है।

टमाटर के रस में पानी मिलाकर कुल्ली करने से मुंह, होंठ, और जीभ पर पड़े छाले ठीक हो जाते हैं।

खाना खाने के बाद सौंफ खाने से मुंह का दुर्गंध दूर होता है।

जायफल को तोड़कर पानी में उबालकर ठण्डा कर लें। उस पानी से कुल्ला करने से छालों में लाभ मिलता है।

अरहर के कोमल पत्ते चबाने से जीभ का फटना तथा मुंह के छाले ठीक हो जाते है।

मेंहदी को पानी में भिंगोकर उस पानी से कुल्ला करने से मुंह के छाले दूर हो जाते हैं।

हरसिंगार की जड़ चबाने से हर तरह के तालु रोग ठीक होते हैं।

दिन में तीन-चार बार देसी घी मुंह में लगाने से मुंह के छाले जल्दी ठीक हो जाते

हैं।

शहद में नींबू निचोड़ लें। इस लेप को अपने चेहरे पर लगाकर हल्के हाथों से मलें। फिर धो दें। इससे चेहरे की त्वचा में चमक आती है।

मुंह से आने वाले दुर्गंध को दूर करने के लिए तुलसी के दो-तीन पत्ते चबा लें।

होंठ के रोग में तरबूजे का छिलका जलाकर लगाने से ठीक हो जाता है।

जिन लोगों को बार-बार मुंह में छाले हो रहे हों, उन्हें टमाटर का सेवन ज्यादा करना चाहिए।

इलायची एवं सौंफ चबाने से मुंह की दुर्गंध दूर होती है।

शहद में नमक और सिरका मिलाकर लेप तैयार कर लें। इस लेप को चेहरे पर लगाने से झाड़ियां ठीक हो जाती हैं।

स्नान करते समय पानी में नींबू निचोड़कर स्नान करने से या स्नान करने से पहले नींबू का रस शरीर पर लगाने से या नींबू काटकर शरीर पर मलने से शरीर की त्वचा का रंग साफ हो जाता है।

दाँतो से संबंधित विकार के कारण और विविध उपाय



दाँतो से संबंधित विकार से संबंधित कुण्डली में उपस्थित योग

आपकी कुंडली में मेष, वृष या धनु राशि लग्न में स्थित है और उस पर पाप ग्रहों की दृष्टि पड़ रही है, आपको पायरिया होने की संभावना हो सकती है।

आपकी कुंडली में पाप ग्रह सातवें भाव में स्थित हैं और उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि नहीं पड़ रही है, आप दांतों की बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुंडली में छठे भाव का स्वामी एवं धन भाव का स्वामी पाप ग्रहों के साथ स्थित है, आपके दांत जल्द टूट सकते

हैं।

आपकी कुंडली में राहु पांचवें भाव में या लग्न में स्थित है, आपको दांतों से संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

दाँतो से संबंधित विकार के लिए रत्न और उपरत्न का सुझाव

- (1). अजीब वस्तुओं या विषयों से संबंधित सपने बार-बार आने पर आपको 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा और 9 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (2). यदि आप वातोन्माद/मूर्छा (हिस्टीरिया) रोग से पीड़ित हैं, तो आपको 7 या 9 रत्ती का मोती, 14 या 18 रत्ती का लाल मूंगा और 12 या 16 रत्ती का चंद्र रत्न धारण करना चाहिए।
- (3). मिर्गी से पीड़ित होने पर आपको उपचार हेतु पन्ना, मोती और मूंगा एक साथ धारण करना चाहिए।
- (4). अत्यधिक तनावग्रस्त होने के कारण मानसिक असंतुलन की स्थिति उत्पन्न होने पर आपको 4 या 8 रत्ती का पन्ना और 16 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न धारण करना चाहिए।
- (5). यदि आप आनुवांशिक मानसिक असंतुलन से पीड़ित हैं, तो आपको 24 या 30 रत्ती का चंद्र रत्न और 12 या 14 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (6). मणिक्य, मोती तथा पन्ना पहनें।
- (7). अनिद्रा से छुटकारा पाने के लिए आपको पन्ना, पुखराज और मोती धारण करना चाहिए।
- (8). शिराप्रदाह से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (9). स्मरण शक्ति कमजोर होने पर आपको 5 या 7 रत्ती का पन्ना, 4 या 6 रत्ती का लहसुनिया और 12 या 18 रत्ती का चंद्र रत्न अथवा 7 या 9 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (10). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए पन्ना, चंद्ररत्न, लाल मूंगा और पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (11). अनिद्रा से निजात पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का चंद्ररत्न धारण करना चाहिए।
- (12). यदि आप शराब पीने के आदी हैं, तो आपको इससे छुटकारा पाने के लिए 14 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न और 9 या 14 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए।
- (13). सिरदर्द से बचने के लिए आपको 4 या 5 रत्ती का माणिक अथवा 20 या 24 का माणिक का उपरत्न धारण करना चाहिए।
- (14). मानसिक विकार से बचने के लिए आपको 16 या 24 रत्ती का चंद्र रत्न और 6 या 8 रत्ती का पीला

पुखराज धारण करना चाहिए।

- (15). मिरगी/वातोन्माद से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा और मोती धारण करना चाहिए।
- (16). यदि आपको मिरगी का दौरा पड़ता है, तो आपको इससे बचने के लिए 18 या 14 रत्ती का चंद्र रत्न, 10 या 14 रत्ती का सफेद मोती और 1 या 2 रत्ती का हीरा अथवा 4 या 5 रत्ती का जरकन धारण करना चाहिए।
- (17). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का पीला पुखराज और 5 या 6 रत्ती का चंद्ररत्न धारण करना चाहिए।
- (18). अनिद्रा से निजात पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का पन्ना, अनामिका में 5 रत्ती का पीला पुखराज और तर्जनी में 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (19). अनिद्रा से निजात पाने के लिए 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।
- (20). आलस्य या उदासीनता से संबंधित रोग से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का मोती और 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (21). यदि आप पागलपन में बेहोशी (हिस्टीरीकल इन्सैनिटी) से पीड़ित हैं, तो आपको 20 या 25 रत्ती का चंद्र रत्न और 1 या 2 रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।
- (22). मिरगी/लकवा से पीड़ित होने पर आपको साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (23). मिर्गी से बचने के लिए पन्ना, 6 रत्ती का चंद्ररत्न और 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (24). भूलने की बीमारी से निजात पाने के लिए आपको 5 रत्ती का लाल मूंगा और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।
- (25). अनिद्रा से निजात पाने के लिए 10 या 12 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (26). नवरत्न का पेंडल गले में पहनना भी लाभदायक होगा।
- (27). नीलम या पुखराज चांदी अथवा तांबे की अंगूठी में पहनें।
- (28). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए पन्ना, नीलम, और सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (29). स्थायी सिरदर्द से छुटकारा पाने के लिए आप पन्ना और मोती धारण कर सकते/सकती हैं।
- (30). श्लैष्मिक ज्वर से बचने के लिए 5 रत्ती का लाल मूंगा और 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (31). यदि आप विषाद रोग से ग्रसित हैं, तो आपको 5 या 8 रत्ती का नीलम और 5 या 7 रत्ती का मोती

धारण करना चाहिए।

(32). मिर्गी से बचने के लिए 5 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का नीलम और 5 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(33). मिर्गी से बचने के लिए पन्ना और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(1). मस्तिष्क विकार – मूनस्टोन, पीला पुखराज तथा पन्ना धारण करने से मानसिक शांति मिलती है। लालमूंगा धारण करना भी लाभदायक होता है।

(2). स्मृति दोष – मोती या माणिक्य गले में धारण करें। एक हाथ में 6 रत्ती का पन्ना तथा दूसरे में 9 रत्ती का मूंगा चांदी की अंगूठी में पहनें। चांदी, सोना, तांबा मिश्रित धातु का कड़ा पहनना भी लाभदायक होगा।

(3). मस्तिष्क के ट्यूमर से निजात पाने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 6 रत्ती का सफेद मोती और 4 रत्ती का नीलम या लाजावर्द धारण करना चाहिए, अथवा पन्ना, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 6 रत्ती का चंद्ररत्न या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(4). परागज-ज्वर (हे-फीवर) से बचने के लिए आपको 9 या 16 रत्ती का गोमेद और 5 या 7 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(5). यदि आप रोगभ्रम/चिन्तोन्माद (हॉइपोकांड्रिया) से ग्रसित हैं, तो आपको 7 या 8 रत्ती का नीलम और 5 या 7 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(6). मिरगी – 1 – 6 रत्ती मोती या 5 रत्ती पन्ना या 12 रत्ती सफेद मोती धारण करें।
2 – पन्ना और मूनस्टोन धारण करें। लग्न के स्वामी का रत्न धारण करना शुभ फलदायक होगा।

(7). प्रमस्तिष्कीय रक्तस्राव – 1 – लग्न के स्वामी का रत्न धारण करें।
2 – 7-8 रत्ती का लाल मूंगा तथा मूनस्टोन या सफेद मोती चांदी में धारण करें।
3 – एक त्रिकोण पेण्डेण्ट में लग्न के स्वामी का रत्न, मूंगा तथा पुखराज जड़वायें, जिसमें माणिक्य बीच में हो, इस प्रकार का पेण्डेण्ट धारण करने से इस रोग का प्रभाव कम हो सकता है।

(8). मस्तिष्कावरण शोथ से बचने के लिए आपको लाल मूंगा, पुखराज, पन्ना और माणिक्य धारण करना चाहिए।

(9). मस्तिष्क में तंत्रिकाओं के गड़बड़ी से सिरदर्द होने पर आपको 5 या 6 रत्ती का पीला पुखराज और 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(10). पागलपन या विक्षिप्तता से ग्रसित होने पर इसके उपचार हेतु आपको पन्ना, लाल मूंगा, मोती धारण करना चाहिए। इससे रोग का प्रभाव कम होगा।

(11). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए आपको 10 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(12). मस्तिष्क में गांठ, सूजन और फोड़ा होने पर आपको उसके उपचार हेतु पन्ना, पुखराज और मूंगा

धारण करना चाहिए।

(13). यदि आप प्रमस्तिष्क घनास्त्रता रोग से पीड़ित हैं, तो आपको 3 रत्ती का माणिक अथवा 18 या 24 रत्ती का माणिक का उपरत्न, 10 या 12 रत्ती का मोती तथा 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(14). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 3 रत्ती का माणिक और 4 रत्ती नीलम धारण करना चाहिए। गर्मी के महीनों में रात के समय लाल मूंगा और माणिक धारण नहीं करना चाहिए।

(15). पागलपन – 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का पीला पुखराज एवं 4 रत्ती का मोती धारण करें।

(16). कमजोर स्मरण शक्ति या भूलने की बीमारी से बचने के लिए आपको 7 या 9 रत्ती का लाल मूंगा और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(17). मस्तिष्क ज्वर – लाल मूंगा, पीला पुखराज तथा पन्ना धारण करना लाभदायक साबित होगा।

(18). मस्तिष्क संबंधित रोग – 1 – लग्न के स्वामी, सूर्य एवं चंद्रमा को उनसे संबंधित रत्न धारण करा कर बलशाली बनायें।

2 – लग्न के स्वामी, सूर्य एवं चंद्रमा का कवच पाठ करें तथा इनसे संबंधित यंत्र धारण करें।

3 – एक ही अंगूठी अथवा पेण्डेंट में लाल मूंगा तथा पन्ना धारण करें।

4 – लाल मूंगा एवं पीला पुखराज या पन्ना एवं चन्द्रकान्त एक साथ मिलाकर धारण करें।

5 – पन्ना एवं चन्द्रकान्त एक साथ धारण करें।

6 – मूंगा एवं मोती धारण करें, लाभदायक फल प्राप्त होगा।

7 – लाल मूंगा एवं पन्ना एक साथ धारण करना लाभदायक सिद्ध होता है।

(19). मस्तिष्कीय रक्तस्राव होने पर आपको मंगल के लिए लाल मूंगा, बुध के लिए पन्ना, और चंद्रमा के लिए मोती धारण करना चाहिए। साथ ही उचित औषधि लेने पर आपको शीघ्र उत्तम परिणाम प्राप्त होगा।

(20). मस्तिष्क संबंधी रोगों से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का पन्ना, 14 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न तथा 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(21). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(22). मूर्च्छा – 5 रत्ती पन्ना, 4 रत्ती नीलम एवं 5 रत्ती मोती धारण करें।

(23). अनिद्रा – फिरोजा, जिरकॉन, श्वेत ओपल तथा मोती धारण करना लाभदायक होता है। बारहवें भाव के स्वामी का रत्न धारण करना भी शुभ फलदायक होगा। पीला पुखराज भी धारण किया जा सकता है।

(1). मोतियाबिंद से छुटकारा पाने के लिए 3 या 4 रत्ती का माणिक और 5 या 6 रत्ती का पन्ना और 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती एक साथ धारण करना चाहिए। यदि संभव हो तो आधा रत्ती का हीरा बाएं हाथ में धारण करना चाहिए।

(2). 10 या 12 रत्ती का माणिक्य अनामिका अंगुली में शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन धारण करें।

- (3). दूर दृष्टि दोष को दूर करने के लिए पन्ना, माणिक और सफेद मोती धारण करना चाहिए। यदि संभव हो तो आधा रत्ती का हीरा बाएं हाथ में धारण किया जा सकता है। माणिक के स्थान पर लाल मूंगा धारण किया जा सकता है।
- (4). यदि जन्म के बाद नेत्र हानि होती है अथवा दृष्टिहीनता का उपचार संभव है, तो दृष्टिहीनता अथवा कमजोर दृष्टि से बचने के लिए आप माणिक और मोती धारण कर सकते हैं।
- (5). मोतियाबिन्द – पन्ना को आंखों की ज्योति में वृद्धि करने में सहायक माना जाता है और मोती को खोई नेत्र ज्योति प्राप्त करने में सहायक। रोग के उपचार के दौरान माणिक्य धारण करें। गर्मियों में माणिक्य के स्थान पर लाल मूंगा पहनें। मूंगा, मोती तथा पन्ना 3–3 रत्ती प्रत्येक के हिसाब से एक साथ अंगूठी में जड़वाकर या पेण्डेण्ट में धारण करें, लाभ होगा।
- (6). निकट दृष्टि से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का माणिक और 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए। माणिक के स्थान पर लाल मूंगा धारण किया जा सकता है।
- (7). आंख आने से मुक्ति पाने के लिए मध्यमिका उंगली में 4 या 5 रत्ती का चंद्ररत्न अथवा कनिष्ठा में 3 या 4 रत्ती का नीलम धारण करना चाहिए।
- (8). यदि आप आंखों की बीमारी से पीड़ित हैं, तो आपको एक्वामेरीन एवं पैरीडौट रत्न धारण करना चाहिए। इससे आपको जल्द स्वस्थ होने में मदद मिलेगी।
- (9). नेत्र संबंधी रोगों से बचने के लिए आपको 3 या 5 रत्ती का माणिक और 7 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (10). नेत्रशोथ – इस रोग के प्रभाव को कम करने के लिए पन्ना धारण करें। इसके अलावा मूनस्टोन, ओपल, जिरकॉन धारण करने से भी नेत्र रोगों में काफी लाभ होता है।
- (11). आंख आना/नेत्रश्लेष्मलाशोथ से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा एवं लाल वस्त्र धारण चाहिए।
- (12). अंधापन – सफेद मोती, मूनस्टोन तथा मूंगा धारण करना लाभदायक होगा।
- (13). वर्णाधता – लाल माणिक्य अथवा मूंगे के साथ मोती धारण करना वर्णाधता में बहुत लाभदायक होता है।
- (14). कमजोर दृष्टि अथवा नेत्र से संबंधित रोगों से बचाव के लिए आपको 10 अथवा 14 रत्ती का मूंगा और 9 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (15). वृद्धावस्था का दूर दृष्टि दोष से निजात पाने के लिए पन्ना, माणिक, सफेद मोती और लाल मूंगा संयुक्त रूप से धारण करना चाहिए। लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना सर्वाधिक उपयोगी होगा।
- (16). रतौंधी से छुटकारा पाने के लिए लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना

चाहिए।

(17). वर्णान्धता से निजात पाने के लिए पन्ना, लाल मूंगा, सफेद मोती व हीरा धारण करना चाहिए।

(18). दृष्टिवैषम्यता को दूर करने के लिए लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना उपयोगी होगा।

(1). बहरापन से बचने के लिए आपको 9 रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पन्ना, नीलम, पुखराज धारण करना चाहिए।

(1). स्फटिक, मोती तथा मूनस्टोन धारण करें। लाल कपड़ा या लाल धागा अवश्य पहनें। तांबे की अंगूठी में मूंगा पहनने से मुख (मुँह) से संबंधित विकार का प्रभाव कम हो जाता है।

(2). मुंहासे/फुंसी से छुटकारा पाने के लिए आपको 7 या 9 रत्ती का सफेद मूंगा मध्यमिका में धारण करना चाहिए।

(3). चांदी की अंगूठी में 8 या 10 रत्ती का सफेद मूंगा अथवा 4 से 10 रत्ती का मोती मध्यमा अंगुली में पहनें, साथ ही छोटी अंगुली में लाजवर्त पहनें। यदि मूंगा अनुकूल न आये तो केवल चांदी की अंगूठी ही धारण करें। इससे मुख (मुँह) से संबंधित विकार का प्रभाव कम हो जाता है।

(4). दांतों में कीड़े या दर्द होने पर – सफेद या लाल मूंगा पहनना लाभदायक होगा।

(5). यदि आप मुंहासे से ग्रसित हैं, तो आपको ऐमेथीस्ट रत्न धारण करना चाहिए। इससे आपको जल्द स्वस्थ होने में मदद मिलेगी।

(6). मूनस्टोन तथा पीला गोमेद धारण करना लाभकारी होगा। पुखराज तथा मोती पहनना भी शुभ फलदायक है। इससे मुख (मुँह) से संबंधित विकार का प्रभाव कम हो जाता है।

(1). मूनस्टोन तथा पीला गोमेद धारण करना लाभकारी होगा। पुखराज तथा मोती पहनना भी दांतों के रोगमें शुभ फलदायक है।

(2). दांतों से संबंधित रोगों से बचने के लिए आपको 4 या 7 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(3). लाल या सफेद मूंगा, पुखराज पहनना भी दांतों के दर्द में लाभकारी साबित होता है।

दाँतो से संबंधित विकार के लिए लाल किताब के उपाय

मल-मूत्र त्याग करते समय रोजाना उपर-नीचे के दांत को भींचकर बैठने से दांत जीवनभर नहीं हिलते हैं। ऐसा करने से दांत मजबूत होता है और जल्दी नहीं टूटता है तथा व्यक्ति दांत की सारी बीमारियों से दूर रहता है। इससे लकवा भी मारने का डर नहीं रहता है।

लोहे का कड़ा पहनें।

दाँतो से संबंधित विकार के लिए आर्युवेदिक उपचार

Page-76

गर्म हींग दांत में लगाने से दांतों के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

सेंधा नमक मैदा की तरह बारीक पीसकर कपड़े से छान लें। ध्यान रहें, वो पाउडर रोड़ादार नहीं होना चाहिए। ऐसा नमक दो ग्राम हथेली पर रखकर उस पर चार गुणा सरसों तेल डालकर दांतों एवं मसूढ़ों परहल्के-हल्के मालिश करने से दांतों का दर्द ठीक हो जाता है।

सरसों के तेल में बारीक पीसा हुआ हल्दी का चूर्ण मिलाकर दांतों पर रोजाना सोने से पहले मलने से पायरिया और दांतों की कई बीमारियां जैसे – दांत एवं मसूड़े दर्द करना, दांतों से खून आना, दांतों में ठंडापानी लगना आदि बीमारियों में एक सप्ताह तक प्रयोग करने से लाभ होने लगता है।

गर्म पानी में फिटकरी डालकर कुल्ला करने से दांतों का दर्द ठीक हो जाता है।

सुबह उठकर नीम की दो-चार पत्तियां चबाकर थूक देने से दांत, जीभ एवं मुंह में कोई बीमारी नहीं होती और मुंह एकदम साफ रहता है।

काली मिर्च का पाउडर और लौंग का तेल दर्द वाले भाग पर लगाने से लाभ होता है।

लौंग के तेल में रुई का टुकड़ा डुबोकर दर्द वाले भाग पर दबायें, लाभ होगा।

एक ग्राम पोटेशियम परमैंगनेट एक गिलास पानी में डालकर दिन में दो-तीन बार कुल्ला करने से पायरियामें राहत मिलती है।

एक कप पानी में आधा चम्मच सेंधा नमक मिलाकर रोजाना सोने से पहले कुल्ला करने से दांत के हर प्रकार की बीमारियों से बचाव होता है।

लौंग को मुंह में रखें या फिर लौंग का तेल दांतों पर मलने से दांतों के दर्द में लाभ मिलता है।

एक छोटा चम्मच नारियल का तेल और लौंग के तीन टुकड़े आंच पर भून लें और भूनी हुई लौंग का पाउडर बनाकर दर्द वाले जगह पर लगायें।

ताजे आंवले का आधा चम्मच रस निकाल कर अंगुलियों से बच्चों के मसूढ़े पर धीरे-धीरे मलें। इससे मसूढ़ेमुलायम होते हैं तथा दांत निकलने में परेशानी नहीं होती है।

छोटे बच्चों को एक चम्मच सेब के रस पिलाने से मसूढ़ों को बहुत आराम मिलता है और उससे दांत निकलने में आसानी होती है।

सेब का प्रतिदिन सेवन करें। सेब मुखशोधक गुणों से भरपूर होता है। इसका रोजाना सेवन करने से दांतों में कोई बीमारी नहीं होती।

बारीक पीसा हुआ सेंधा नमक दांतों पर मलने से दांत मजबूत होते हैं और दांतों में चमक आ जाती है।

कपूर और अरंडी का तेल मिलाकर अंगुली से दांत के मसूढ़ों पर प्रतिदिन सुबह-शाम मलें। ज्यादा ठण्डा या ज्यादा गर्म चीज का सेवन न

करें।

छोटे बच्चों को दही में शहद मिलाकर चटाने से दांत निकलने में आसानी होती है।

मसूर को जलाकर एवं पीसकर छान लें और उससे मंजन करें। दांत साफ हो जाते हैं।

नौ-दस महीने के बच्चों को छाछ पिलाना चाहिए, इससे बिना किसी विशेष तकलीफ के दांत निकलते रहेंगे।

रुई को दालचीनी या लौंग के तेल में भिंगोकर लगाना लाभदायक होता है।

नीम के दातून को सही तरीके से इस्तेमाल करने से दांत मजबूत होते हैं तथा न तो दांतों में कीड़े लगते हैं और न ही दांतों में दर्द होता है। नीम के दातून करने से मुंह के कैंसर तथा मुंह की अन्य बीमारियों से भी बचाव होता है।

जामुन की लकड़ी का रख दांत पर मलने से दांतों से खून आना बंद हो जाता है।

तम्बाकू के पत्तों का चूर्ण दांतों पर मलने से पायरिया ठीक हो जाता है।

रात में सोने से पहले पानी में नमक मिलाकर गरारे करें और सुबह में नीम की दातून से रोजाना दांतों को साफ करें। ऐसा करने से दांतों में कोई बीमारी नहीं होती है।

नीम की जड़ का काढ़ा बनाकर उसमें थोड़ी फिटकरी मिला कर कुल्ला करें। दांत के दर्द में लाभ होता है।

थोड़ी सी लौंग पीसकर उसमें नींबू निचोड़ कर दांतों पर मलने से दांतों का दर्द ठीक होता है।

हल्दी, नमक एवं सरसों का तेल मिलाकर रोजाना मंजन करने से दांत मजबूत होते हैं।

एक चम्मच सरसों के तेल में एक चम्मच आंवले का रस मिलाकर दांतों और मसूढ़ों पर मलने से पायरिया जड़ से खत्म हो जाता है।

एक कप पानी में आधा चम्मच सेंधा नमक मिलाकर रोजाना सोने से पहले कुल्ला करने से दांतों की हर तरह की बीमारियों में फायदा मिलता है।

रोजाना गाजर के रस का सेवन करने से मसूढ़ों और दांतों में बीमारी नहीं होती है।

दालचीनी का तेल लगाने से दांतों के दर्द में आराम मिलता है।

मिट्टी के तेल से गरारे करने से पायरिया दूर हो जाता है।

गले/कण्ठ से संबंधित विकार के कारण और विविध उपाय



गले/कण्ठ से संबंधित विकार से संबंधित कुण्डली में उपस्थित योग

आपकी कुण्डली में राहु या केतु केन्द्र या त्रिकोण में स्थित है, आपको गले से संबंधित बीमारी हो सकती है।

गले/कण्ठ से संबंधित विकार के लिए रत्न और उपरत्न का सुझाव

- (1). अजीब वस्तुओं या विषयों से संबंधित सपने बार-बार आने पर आपको 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा और 9 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (2). यदि आप वातोन्माद/मूर्छा (हिस्टीरिया) रोग से पीड़ित हैं, तो आपको 7 या 9 रत्ती का मोती, 14 या 18 रत्ती का लाल मूंगा और 12 या 16 रत्ती का चंद्र रत्न धारण करना चाहिए।
- (3). मिर्गी से पीड़ित होने पर आपको उपचार हेतु पन्ना, मोती और मूंगा एक साथ धारण करना चाहिए।
- (4). अत्यधिक तनावग्रस्त होने के कारण मानसिक असंतुलन की स्थिति उत्पन्न होने पर आपको 4 या 8 रत्ती का पन्ना और 16 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न धारण करना चाहिए।
- (5). यदि आप आनुवांशिक मानसिक असंतुलन से पीड़ित हैं, तो आपको 24 या 30 रत्ती का चंद्र रत्न और 12 या 14 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (6). मणिक्य, मोती तथा पन्ना पहनें।
- (7). अनिद्रा से छुटकारा पाने के लिए आपको पन्ना, पुखराज और मोती धारण करना चाहिए।
- (8). शिराप्रदाह से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (9). स्मरण शक्ति कमजोर होने पर आपको 5 या 7 रत्ती का पन्ना, 4 या 6 रत्ती का लहसुनिया और 12

18 रत्ती का चंद्र रत्न अथवा 7 या 9 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।

(10). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए पन्ना, चंद्ररत्न, लाल मूंगा और पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(11). अनिद्रा से निजात पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का चंद्ररत्न धारण करना चाहिए।

(12). यदि आप शराब पीने के आदी हैं, तो आपको इससे छुटकारा पाने के लिए 14 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न और 9 या 14 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए।

(13). सिरदर्द से बचने के लिए आपको 4 या 5 रत्ती का माणिक अथवा 20 या 24 का माणिक का उपरत्न धारण करना चाहिए।

(14). मानसिक विकार से बचने के लिए आपको 16 या 24 रत्ती का चंद्र रत्न और 6 या 8 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(15). मिरगी/वातोन्माद से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा और मोती धारण करना चाहिए।

(16). यदि आपको मिरगी का दौरा पड़ता है, तो आपको इससे बचने के लिए 18 या 14 रत्ती का चंद्र रत्न, 10 या 14 रत्ती का सफेद मोती और 1 या 2 रत्ती का हीरा अथवा 4 या 5 रत्ती का जरकन धारण करना चाहिए।

(17). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का पीला पुखराज और 5 या 6 रत्ती का चंद्ररत्न धारण करना चाहिए।

(18). अनिद्रा से निजात पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का पन्ना, अनामिका में 5 रत्ती का पीला पुखराज और तर्जनी में 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(19). अनिद्रा से निजात पाने के लिए 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(20). आलस्य या उदासीनता से संबंधित रोग से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का मोती और 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(21). यदि आप पागलपन में बेहोशी (हिस्ट्रीकल इन्सैनिटी) से पीड़ित हैं, तो आपको 20 या 25 रत्ती का चंद्र रत्न और 1 या 2 रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।

(22). मिरगी/लकवा से पीड़ित होने पर आपको साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(23). मिर्गी से बचने के लिए पन्ना, 6 रत्ती का चंद्ररत्न और 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(24). भूलने की बीमारी से निजात पाने के लिए आपको 5 रत्ती का लाल मूंगा और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना

चाहिए।

- (25). अनिद्रा से निजात पाने के लिए 10 या 12 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (26). नवरत्न का पेंडल गले में पहनना भी लाभदायक होगा।
- (27). नीलम या पुखराज चांदी अथवा तांबे की अंगूठी में पहनें।
- (28). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए पन्ना, नीलम, और सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (29). स्थायी सिरदर्द से छुटकारा पाने के लिए आप पन्ना और मोती धारण कर सकते/सकती हैं।
- (30). श्लैष्मिक ज्वर से बचने के लिए 5 रत्ती का लाल मूंगा और 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (31). यदि आप विषाद रोग से ग्रसित हैं, तो आपको 5 या 8 रत्ती का नीलम और 5 या 7 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (32). मिर्गी से बचने के लिए 5 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का नीलम और 5 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (33). मिर्गी से बचने के लिए पन्ना और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (1). मस्तिष्क विकार – मूनस्टोन, पीला पुखराज तथा पन्ना धारण करने से मानसिक शांति मिलती है। लालमूंगा धारण करना भी लाभदायक होता है।
- (2). स्मृति दोष – मोती या माणिक्य गले में धारण करें। एक हाथ में 6 रत्ती का पन्ना तथा दूसरे में 9 रत्ती का मूंगा चांदी की अंगूठी में पहनें। चांदी, सोना, तांबा मिश्रित धातु का कड़ा पहनना भी लाभदायक होगा।
- (3). मस्तिष्क के ट्यूमर से निजात पाने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 6 रत्ती का सफेद मोती और 4 रत्ती का नीलम या लाजावर्द धारण करना चाहिए, अथवा पन्ना, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 6 रत्ती का चंद्ररत्न या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (4). परागज-ज्वर (हे-फीवर) से बचने के लिए आपको 9 या 16 रत्ती का गोमेद और 5 या 7 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।
- (5). यदि आप रोगभ्रम/चिन्तोन्माद (हॉइपोकांड्रिया) से ग्रसित हैं, तो आपको 7 या 8 रत्ती का नीलम और 5 या 7 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (6). मिरगी – 1 – 6 रत्ती मोती या 5 रत्ती पन्ना या 12 रत्ती सफेद मोती धारण करें।
2 – पन्ना और मूनस्टोन धारण करें। लग्न के स्वामी का रत्न धारण करना शुभ फलदायक होगा।
- (7). प्रमस्तिष्कीय रक्तस्राव – 1 – लग्न के स्वामी का रत्न धारण

करें।

2 – 7-8 रत्ती का लाल मूंगा तथा मूनस्टोन या सफेद मोती चांदी में धारण करें।

3 – एक त्रिकोण पेण्डेण्ट में लग्न के स्वामी का रत्न, मूंगा तथा पुखराज जड़वायें, जिसमें माणिक्य बीच में हो, इस प्रकार का पेण्डेण्ट धारण करने से इस रोग का प्रभाव कम हो सकता है।

(8). मस्तिष्कावरण शोथ से बचने के लिए आपको लाल मूंगा, पुखराज, पन्ना और माणिक धारण करना चाहिए।

(9). मस्तिष्क में तंत्रिकाओं के गड़बड़ी से सिरदर्द होने पर आपको 5 या 6 रत्ती का पीला पुखराज और 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(10). पागलपन या विक्षिप्तता से ग्रसित होने पर इसके उपचार हेतु आपको पन्ना, लाल मूंगा, मोती धारण करना चाहिए। इससे रोग का प्रभाव कम होगा।

(11). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए आपको 10 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(12). मस्तिष्क में गांठ, सूजन और फोड़ा होने पर आपको उसके उपचार हेतु पन्ना, पुखराज और मूंगा धारण करना चाहिए।

(13). यदि आप प्रमस्तिष्क घनास्त्रता रोग से पीड़ित हैं, तो आपको 3 रत्ती का माणिक अथवा 18 या 24 रत्ती का माणिक का उपरत्न, 10 या 12 रत्ती का मोती तथा 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(14). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 3 रत्ती का माणिक और 4 रत्ती नीलम धारण करना चाहिए। गर्मी के महीनों में रात के समय लाल मूंगा और माणिक धारण नहीं करना चाहिए।

(15). पागलपन – 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का पीला पुखराज एवं 4 रत्ती का मोती धारण करें।

(16). कमजोर स्मरण शक्ति या भूलने की बीमारी से बचने के लिए आपको 7 या 9 रत्ती का लाल मूंगा और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(17). मस्तिष्क ज्वर – लाल मूंगा, पीला पुखराज तथा पन्ना धारण करना लाभदायक साबित होगा।

(18). मस्तिष्क संबंधित रोग – 1 – लग्न के स्वामी, सूर्य एवं चंद्रमा को उनसे संबंधित रत्न धारण करा कर बलशाली बनायें।

2 – लग्न के स्वामी, सूर्य एवं चंद्रमा का कवच पाठ करें तथा इनसे संबंधित यंत्र धारण करें।

3 – एक ही अंगूठी अथवा पेण्डेंट में लाल मूंगा तथा पन्ना धारण करें।

4 – लाल मूंगा एवं पीला पुखराज या पन्ना एवं चन्द्रकान्त एक साथ मिलाकर धारण करें।

5 – पन्ना एवं चन्द्रकान्त एक साथ धारण करें।

6 – मूंगा एवं मोती धारण करें, लाभदायक फल प्राप्त होगा।

7 – लाल मूंगा एवं पन्ना एक साथ धारण करना लाभदायक सिद्ध होता है।

(19). मस्तिष्कीय रक्तस्राव होने पर आपको मंगल के लिए लाल मूंगा, बुध के लिए पन्ना, और चंद्रमा के लिए मोती धारण करना चाहिए। साथ ही उचित औषधि लेने पर आपको शीघ्र उत्तम परिणाम प्राप्त

होगा।

(20). मस्तिष्क संबंधी रोगों से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का पन्ना, 14 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न तथा 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(21). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(22). मूर्च्छा – 5 रत्ती पन्ना, 4 रत्ती नीलम एवं 5 रत्ती मोती धारण करें।

(23). अनिद्रा – फिरोजा, जिरकॉन, श्वेत ओपल तथा मोती धारण करना लाभदायक होता है। बारहवें भाव के स्वामी का रत्न धारण करना भी शुभ फलदायक होगा। पीला पुखराज भी धारण किया जा सकता है।

(1). मोतियाबिंद से छुटकारा पाने के लिए 3 या 4 रत्ती का माणिक और 5 या 6 रत्ती का पन्ना और 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती एक साथ धारण करना चाहिए। यदि संभव हो तो आधा रत्ती का हीरा बाएं हाथ में धारण करना चाहिए।

(2). 10 या 12 रत्ती का माणिक्य अनामिका अंगुली में शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन धारण करें।

(3). दूर दृष्टि दोष को दूर करने के लिए पन्ना, माणिक और सफेद मोती धारण करना चाहिए। यदि संभव हो तो आधा रत्ती का हीरा बाएं हाथ में धारण किया जा सकता है। माणिक के स्थान पर लाल मूंगा धारण किया जा सकता है।

(4). यदि जन्म के बाद नेत्र हानि होती है अथवा दृष्टिहीनता का उपचार संभव है, तो दृष्टिहीनता अथवा कमजोर दृष्टि से बचने के लिए आप माणिक और मोती धारण कर सकते हैं।

(5). मोतियाबिन्द – पन्ना को आंखों की ज्योति में वृद्धि करने में सहायक माना जाता है और मोती को खोई नेत्र ज्योति प्राप्त करने में सहायक। रोग के उपचार के दौरान माणिक्य धारण करें। गर्मियों में माणिक्य के स्थान पर लाल मूंगा पहनें। मूंगा, मोती तथा पन्ना 3–3 रत्ती प्रत्येक के हिसाब से एक साथ अंगुठी में जड़वाकर या पेण्डेण्ट में धारण करें, लाभ होगा।

(6). निकट दृष्टि से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का माणिक और 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए। माणिक के स्थान पर लाल मूंगा धारण किया जा सकता है।

(7). आंख आने से मुक्ति पाने के लिए मध्यमिका उंगली में 4 या 5 रत्ती का चंद्ररत्न अथवा कनिष्ठा में 3 या 4 रत्ती का नीलम धारण करना चाहिए।

(8). यदि आप आंखों की बीमारी से पीड़ित हैं, तो आपको एक्वामेरीन एवं पैरीडोट रत्न धारण करना चाहिए। इससे आपको जल्द स्वस्थ होने में मदद मिलेगी।

(9). नेत्र संबंधी रोगों से बचने के लिए आपको 3 या 5 रत्ती का माणिक और 7 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।

(10). नेत्रशोथ – इस रोग के प्रभाव को कम करने के लिए पन्ना धारण करें। इसके अलावा मूनस्टोन,

ओपल, जिरकॉन धारण करने से भी नेत्र रोगों में काफी लाभ होता है।

(11). आंख आना/नेत्रश्लेष्मलाशोथ से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा एवं लाल वस्त्र धारण चाहिए।

(12). अंधापन – सफेद मोती, मूनस्टोन तथा मूंगा धारण करना लाभदायक होगा।

(13). वर्णाधता – लाल माणिक्य अथवा मूंगे के साथ मोती धारण करना वर्णाधता में बहुत लाभदायक होता है।

(14). कमजोर दृष्टि अथवा नेत्र से संबंधित रोगों से बचाव के लिए आपको 10 अथवा 14 रत्ती का मूंगा और 9 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।

(15). वृद्धावस्था का दूर दृष्टि दोष से निजात पाने के लिए पन्ना, माणिक, सफेद मोती और लाल मूंगा संयुक्त रूप से धारण करना चाहिए। लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना सर्वाधिक उपयोगी होगा।

(16). रतौंधी से छुटकारा पाने के लिए लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(17). वर्णान्धता से निजात पाने के लिए पन्ना, लाल मूंगा, सफेद मोती व हीरा धारण करना चाहिए।

(18). दृष्टिवैषम्यता को दूर करने के लिए लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना उपयोगी होगा।

(1). बहरापन से बचने के लिए आपको 9 रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पन्ना, नीलम, पुखराज धारण करना चाहिए।

(1). स्फटिक, मोती तथा मूनस्टोन धारण करें। लाल कपड़ा या लाल धागा अवश्य पहनें। तांबे की अंगूठी में मूंगा पहनने से मुख (मुँह) से संबंधित विकार का प्रभाव कम हो जाता है।

(2). मुंहासे/फुंसी से छुटकारा पाने के लिए आपको 7 या 9 रत्ती का सफेद मूंगा मध्यमिका में धारण करना चाहिए।

(3). चांदी की अंगूठी में 8 या 10 रत्ती का सफेद मूंगा अथवा 4 से 10 रत्ती का मोती मध्यमा अंगुली में पहनें, साथ ही छोटी अंगुली में लाजवर्त पहनें। यदि मूंगा अनुकूल न आये तो केवल चांदी की अंगूठी ही धारण करें। इससे मुख (मुँह) से संबंधित विकार का प्रभाव कम हो जाता है।

(4). दांतों में कीड़े या दर्द होने पर – सफेद या लाल मूंगा पहनना लाभदायक होगा।

(5). यदि आप मुंहासे से ग्रसित हैं, तो आपको ऐमेथीस्ट रत्न धारण करना चाहिए। इससे आपको जल्द स्वस्थ होने में मदद मिलेगी।

(6). मूनस्टोन तथा पीला गोमेद धारण करना लाभकारी होगा। पुखराज तथा मोती पहनना भी शुभ फलदायक है। इससे मुख (मुँह) से संबंधित विकार का प्रभाव कम हो जाता है।

(1). मूनस्टोन तथा पीला गोमेद धारण करना लाभकारी होगा। पुखराज तथा मोती पहनना भी दांतों के रोग में शुभ फलदायक

है।

- (2). दांतों से संबंधित रोगों से बचने के लिए आपको 4 या 7 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।
- (3). लाल या सफेद मूंगा, पुखराज पहनना भी दांतों के दर्द में लाभकारी साबित होता है।
- (1). सोने या चांदी की अंगूठी में पुखराज या सुनैला धारण करें। शुद्ध मूंगा 5 रत्ती का चांदी में मढ़वाकर अनामिका में धारण करें। मूंगा या पुखराज का पैंडल जंजीर में डालकर गले में पहन सकते हैं।
- (2). स्वराघात से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (3). कण्ठशालक रोग से बचने के लिए आपको 5 रत्ती का लाल मूंगा अनामिका में और 5 रत्ती का पीला पुखराज तर्जनी में धारण करना चाहिए।
- (4). गले/कण्ठ से संबंधित विकार से मुक्ति के लिए आभूषण दान करना चाहिए।
- (5). वाणी में अत्यधिक कर्कशता होने पर इससे बचने के लिए आपको 9 या 10 रत्ती का मोती और 3 या 5 रत्ती का माणिक धारण करना चाहिए।
- (6). कंठ में सूजन होने पर आपको 5 रत्ती का लाल मूंगा अनामिका में धारण करना चाहिए।
- (7). यदि आप डिप्थिरिया (कंठ का एक संक्रामक रोग) से पीड़ित हैं, तो आपको 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा और 7 या 12 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए।
- (8). गर्दन में असहनीय दर्द से बचने के लिए आपको 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा और 1 या 2 रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।
- (9). गले से संबंधित रोगों से बचाव के लिए आपको 12 अथवा 16 रत्ती का चंद्ररत्न और आधा रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।
- (10). गंडमाला रोग से बचने के लिए आपको साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (11). गले से संबंधित रोग से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

गले/कण्ठ से संबंधित विकार के लिए लाल किताब के उपाय

गले में टान्सिल या छाला होने पर नीला पानी लें तथा नीली ग्लिसरीन शक्ति लगायें।

यदि आप गले की बीमारी से ग्रसित हैं, तो आप सिंहासन करें।

गले/कण्ठ से संबंधित विकार के लिए आर्युवेदिक उपचार

Page-85

गर्म खाने के पश्चात् ठंडा पानी पीने के कारण गला पकड़ने पर – एक ग्राम मुलहठी के चूर्ण को रात में सोते समय मुंह में रखकर कुछ देर तक चबाते रहें। फिर उसी तरह से मुंह में रखकर सो जायें। सुबह होने तक गला साफ हो जायेगा। मुलहठी के चूर्ण को पान के पत्ते में रखकर खाया जाये तो और भी ज्यादा लाभदायक होता है। इससे गला खुलने के अलावा गले का दर्द और सूजन भी ठीक हो जाता है।

भोजन में फल तथा लौकी एवं तोरी उबालकर खाना टांसिल्स में लाभदायक होता है।

गले में सूजन एवं दर्द की शिकायत हो तो दो चम्मच अजवायन को 500 ग्राम पानी में पन्द्रह मिनट तक उबालकर छान लें। उसमें थोड़ा सा नमक डालकर दिन में दो बार और रात में सोने से पहले गरारे करें। इससे गले की सूजन और दर्द में लाभ होता है। गले में सूजन हो और कफ अधिक मात्रा में निकल रहा हो तो दो ग्राम अजवायन सोने से पहले चबायें और उपर से गर्म पानी पीयें। ऐसा करने से कफ कम बनता है।

शहद और प्याज के रस को हल्का गरम करके धीरे-धीरे पीने से गले की सफाई होती है।

मेथी दाने से तैयार किये हुए काढ़े से बार-बार गरारे करने से कुछ ही दिनों में गले की सूजन और टांसिल ठीक हो जाता है।

सूखा धनिया और मिश्री बराबर-बराबर मात्रा में मिलाकर एक चम्मच दिन में दो-तीन बार चबायें। ऐसा दो-तीन दिनों तक करें। इससे गले के दर्द में आराम मिलता है और मुंह के छाले भी ठीक होते हैं।

टांसिल्स या गलगंड होने पर गाजर का रस रोजाना तीन-चार बजे के करीब एक छोटे गिलास से लगातार दो-तीन महीने तक सेवन करें। इससे इस बीमारी में लाभ होता है।

एक गिलास गर्म पानी में एक छोटी चम्मच शहद मिलाकर गरारा करने से गला साफ हो जाता है।

गाजर और पालक का सौ-सौ ग्राम रस मिलाकर दिन में तीन-चार बार सेवन करें या केवल गाजर का एक कप रस दिन में तीन बार पीने से गले की सफाई हो जाती है।

कबावचीनी या शीतल मिर्च मुंह में रखने से बैठा हुआ गला ठीक हो जाता है।

एक गिलास गर्म पानी कर लें और उसमें आधा चम्मच नमक मिलाकर दिन में तीन-चार बार गरारे करने से गले की खराश, गले में दर्द, गले में कांटे जैसा चुभना इन सारी चीजों में गरारे करने से आराम मिलता है।

सर्दी, जुकाम के कारण यदि गला बैठ गया हो – रात में सोते समय बराबर-बराबर मात्रा में काली मिर्च और बताशे मिलाकर चबाकर सो जायें। इससे सर्दी-जुकाम से गला बैठने की शिकायत दूर हो जाती है।

टांसिल में अगर सूजन आ गया है तो रोजाना दिन में दो-तीन बार एक गिलास गर्म पानी में आधा चम्मच नमक डालकर गरारे करें। इससे टांसिल्स में आराम मिल जाता है।

250 ग्राम दूध में आधा चम्मच हल्दी का चूर्ण डालकर दो-तीन बार उबालकर उसे छान लें। फिर पीने के लायक गर्म रहने पर उसमें चीनी मिलाकर रात में सोते समय दो-तीन दिनों तक इसका सेवन करें।

इससे गले की खराश में बहुत ही फायदा होता है।

गुनगुने पानी में नींबू का रस निचोड़कर गरारे करने से टॉसिलिस ठीक हो जाता है।

मिश्री एवं काली मिर्च चबाने एवं चूसने से बैठा हुआ गला ठीक हो जाता है।

जोर-जोर से उंची आवाज में भाषण या बातचीत करने के कारण – आधा ग्राम कच्चा सुहागा मुंह में रखकर चूसते रहें। सुहागा गल जाने के बाद तुरंत आराम मिलता है। दो-तीन घंटों के बाद गला साफ होजाता है। उपदेशको और गायकों की आवाज ठीक करने के लिए यह अति उत्तम उपाय है।

250 ग्राम पानी में आधा चम्मच फूली फिटकरी डालकर दिन में दो-तीन बार गरारे करें। ऐसा करने से गलेकी सूजन एवं दर्द ठीक हो जाता है। अगर ये संभव नहीं है तो एक गिलास गर्म पानी में आधा चम्मच नमक डालकर गरारे करें, इससे भी लाभ होगा।

एक गिलास गरम पानी में आधी छोटी चम्मच नमक डालकर गरारे करने से गला साफ हो जाता है।

साँस से संबंधित विकार के कारण और विविध उपाय



साँस से संबंधित विकार से संबंधित कुण्डली में उपस्थित योग

आपकी कुण्डली में सूर्य तथा चन्द्रमा की राशियों के स्वामी नीच स्थिति में या अस्त स्थिति में हैं, आप प्लयूरिसी बीमारी के शिकार हो सकते हैं।

साँस से संबंधित विकार के लिए रत्न और उपरत्न का सुझाव

- (1). अजीब वस्तुओं या विषयों से संबंधित सपने बार-बार आने पर आपको 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा और 9 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (2). यदि आप वातोन्माद/मूर्छा (हिस्टीरिया) रोग से पीड़ित हैं, तो आपको 7 या 9 रत्ती का मोती, 14 या 18 रत्ती का लाल मूंगा और 12 या 16 रत्ती का चंद्र रत्न धारण करना

चाहिए।

- (3). मिर्गी से पीड़ित होने पर आपको उपचार हेतु पन्ना, मोती और मूंगा एक साथ धारण करना चाहिए।
- (4). अत्यधिक तनावग्रस्त होने के कारण मानसिक असंतुलन की स्थिति उत्पन्न होने पर आपको 4 या 8 रत्ती का पन्ना और 16 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न धारण करना चाहिए।
- (5). यदि आप आनुवांशिक मानसिक असंतुलन से पीड़ित हैं, तो आपको 24 या 30 रत्ती का चंद्र रत्न और 12 या 14 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (6). मणिक्य, मोती तथा पन्ना पहनें।
- (7). अनिद्रा से छुटकारा पाने के लिए आपको पन्ना, पुखराज और मोती धारण करना चाहिए।
- (8). शिराप्रदाह से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (9). स्मरण शक्ति कमजोर होने पर आपको 5 या 7 रत्ती का पन्ना, 4 या 6 रत्ती का लहसुनिया और 12 या 18 रत्ती का चंद्र रत्न अथवा 7 या 9 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (10). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए पन्ना, चंद्ररत्न, लाल मूंगा और पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (11). अनिद्रा से निजात पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का चंद्ररत्न धारण करना चाहिए।
- (12). यदि आप शराब पीने के आदी हैं, तो आपको इससे छुटकारा पाने के लिए 14 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न और 9 या 14 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए।
- (13). सिरदर्द से बचने के लिए आपको 4 या 5 रत्ती का माणिक अथवा 20 या 24 का माणिक का उपरत्न धारण करना चाहिए।
- (14). मानसिक विकार से बचने के लिए आपको 16 या 24 रत्ती का चंद्र रत्न और 6 या 8 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (15). मिरगी/वातोन्माद से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा और मोती धारण करना चाहिए।
- (16). यदि आपको मिरगी का दौरा पड़ता है, तो आपको इससे बचने के लिए 18 या 14 रत्ती का चंद्र रत्न, 10 या 14 रत्ती का सफेद मोती और 1 या 2 रत्ती का हीरा अथवा 4 या 5 रत्ती का जरकन धारण करना चाहिए।
- (17). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का पीला पुखराज और 5 या 6 रत्ती का चंद्ररत्न धारण करना चाहिए।
- (18). अनिद्रा से निजात पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का पन्ना, अनामिका में 5 रत्ती का पीला

पुखराज और तर्जनी में 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(19). अनिद्रा से निजात पाने के लिए 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(20). आलस्य या उदासीनता से संबंधित रोग से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का मोती और 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(21). यदि आप पागलपन में बेहोशी (हिस्टीरीकल इन्सैनिटी) से पीड़ित हैं, तो आपको 20 या 25 रत्ती का चंद्र रत्न और 1 या 2 रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।

(22). मिरगी/लकवा से पीड़ित होने पर आपको साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(23). मिर्गी से बचने के लिए पन्ना, 6 रत्ती का चंद्ररत्न और 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(24). भूलने की बीमारी से निजात पाने के लिए आपको 5 रत्ती का लाल मूंगा और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(25). अनिद्रा से निजात पाने के लिए 10 या 12 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(26). नवरत्न का पेंडल गले में पहनना भी लाभदायक होगा।

(27). नीलम या पुखराज चांदी अथवा तांबे की अंगूठी में पहनें।

(28). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए पन्ना, नीलम, और सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(29). स्थायी सिरदर्द से छुटकारा पाने के लिए आप पन्ना और मोती धारण कर सकते/सकती हैं।

(30). श्लैष्मिक ज्वर से बचने के लिए 5 रत्ती का लाल मूंगा और 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(31). यदि आप विषाद रोग से ग्रसित हैं, तो आपको 5 या 8 रत्ती का नीलम और 5 या 7 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।

(32). मिर्गी से बचने के लिए 5 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का नीलम और 5 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(33). मिर्गी से बचने के लिए पन्ना और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(1). मस्तिष्क विकार – मूनस्टोन, पीला पुखराज तथा पन्ना धारण करने से मानसिक शांति मिलती है। लालमूंगा धारण करना भी लाभदायक होता है।

(2). स्मृति दोष – मोती या माणिक्य गले में धारण करें। एक हाथ में 6 रत्ती का पन्ना तथा दूसरे में 9 रत्ती का मूंगा चांदी की अंगूठी में पहनें। चांदी, सोना, तांबा मिश्रित धातु का कड़ा पहनना भी लाभदायक

होगा।

(3). मस्तिष्क के ट्यूमर से निजात पाने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 6 रत्ती का सफेद मोती और 4 रत्ती का नीलम या लाजावर्द धारण करना चाहिए, अथवा पन्ना, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 6 रत्ती का चंद्ररत्न या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(4). परागज-ज्वर (हे-फीवर) से बचने के लिए आपको 9 या 16 रत्ती का गोमेद और 5 या 7 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(5). यदि आप रोगभ्रम/चिन्तोन्माद (हॉइपोकांड्रिया) से ग्रसित हैं, तो आपको 7 या 8 रत्ती का नीलम और 5 या 7 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(6). मिरगी – 1 – 6 रत्ती मोती या 5 रत्ती पन्ना या 12 रत्ती सफेद मोती धारण करें।
2 – पन्ना और मूनस्टोन धारण करें। लग्न के स्वामी का रत्न धारण करना शुभ फलदायक होगा।

(7). प्रमस्तिष्कीय रक्तस्राव – 1 – लग्न के स्वामी का रत्न धारण करें।
2 – 7-8 रत्ती का लाल मूंगा तथा मूनस्टोन या सफेद मोती चांदी में धारण करें।
3 – एक त्रिकोण पेण्डेण्ट में लग्न के स्वामी का रत्न, मूंगा तथा पुखराज जड़वायें, जिसमें माणिक्य बीच में हो, इस प्रकार का पेण्डेण्ट धारण करने से इस रोग का प्रभाव कम हो सकता है।

(8). मस्तिष्कावरण शोथ से बचने के लिए आपको लाल मूंगा, पुखराज, पन्ना और माणिक धारण करना चाहिए।

(9). मस्तिष्क में तंत्रिकाओं के गड़बड़ी से सिरदर्द होने पर आपको 5 या 6 रत्ती का पीला पुखराज और 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(10). पागलपन या विकृष्टता से ग्रसित होने पर इसके उपचार हेतु आपको पन्ना, लाल मूंगा, मोती धारण करना चाहिए। इससे रोग का प्रभाव कम होगा।

(11). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए आपको 10 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(12). मस्तिष्क में गांठ, सूजन और फोड़ा होने पर आपको उसके उपचार हेतु पन्ना, पुखराज और मूंगा धारण करना चाहिए।

(13). यदि आप प्रमस्तिष्क घनास्त्रता रोग से पीड़ित हैं, तो आपको 3 रत्ती का माणिक अथवा 18 या 24 रत्ती का माणिक का उपरत्न, 10 या 12 रत्ती का मोती तथा 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(14). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 3 रत्ती का माणिक और 4 रत्ती नीलम धारण करना चाहिए। गर्मी के महीनों में रात के समय लाल मूंगा और माणिक धारण नहीं करना चाहिए।

(15). पागलपन – 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का पीला पुखराज एवं 4 रत्ती का मोती धारण करें।

(16). कमजोर स्मरण शक्ति या भूलने की बीमारी से बचने के लिए आपको 7 या 9 रत्ती का लाल मूंगा

और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(17). मस्तिष्क ज्वर – लाल मूंगा, पीला पुखराज तथा पन्ना धारण करना लाभदायक साबित होगा।

(18). मस्तिष्क संबंधित रोग – 1 – लग्न के स्वामी, सूर्य एवं चन्द्रमा को उनसे संबंधित रत्न धारण करा कर बलशाली बनायें।

2 – लग्न के स्वामी, सूर्य एवं चंद्रमा का कवच पाठ करें तथा इनसे संबंधित यंत्र धारण करें।

3 – एक ही अंगूठी अथवा पेण्डेंट में लाल मूंगा तथा पन्ना धारण करें।

4 – लाल मूंगा एवं पीला पुखराज या पन्ना एवं चन्द्रकान्त एक साथ मिलाकर धारण करें।

5 – पन्ना एवं चन्द्रकान्त एक साथ धारण करें।

6 – मूंगा एवं मोती धारण करें, लाभदायक फल प्राप्त होगा।

7 – लाल मूंगा एवं पन्ना एक साथ धारण करना लाभदायक सिद्ध होता है।

(19). मस्तिष्कीय रक्तस्राव होने पर आपको मंगल के लिए लाल मूंगा, बुध के लिए पन्ना, और चंद्रमा के लिए मोती धारण करना चाहिए। साथ ही उचित औषधि लेने पर आपको शीघ्र उत्तम परिणाम प्राप्त होगा।

(20). मस्तिष्क संबंधी रोगों से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का पन्ना, 14 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न तथा 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(21). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(22). मूर्च्छा – 5 रत्ती पन्ना, 4 रत्ती नीलम एवं 5 रत्ती मोती धारण करें।

(23). अनिद्रा – फिरोजा, जिरकॉन, श्वेत ओपल तथा मोती धारण करना लाभदायक होता है। बारहवें भाव के स्वामी का रत्न धारण करना भी शुभ फलदायक होगा। पीला पुखराज भी धारण किया जा सकता है।

(1). मोतियाबिंद से छुटकारा पाने के लिए 3 या 4 रत्ती का माणिक और 5 या 6 रत्ती का पन्ना और 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती एक साथ धारण करना चाहिए। यदि संभव हो तो आधा रत्ती का हीरा बाएं हाथ में धारण करना चाहिए।

(2). 10 या 12 रत्ती का माणिक्य अनामिका अंगुली में शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन धारण करें।

(3). दूर दृष्टि दोष को दूर करने के लिए पन्ना, माणिक और सफेद मोती धारण करना चाहिए। यदि संभव हो तो आधा रत्ती का हीरा बाएं हाथ में धारण किया जा सकता है। माणिक के स्थान पर लाल मूंगा धारण किया जा सकता है।

(4). यदि जन्म के बाद नेत्र हानि होती है अथवा दृष्टिहीनता का उपचार संभव है, तो दृष्टिहीनता अथवा कमजोर दृष्टि से बचने के लिए आप माणिक और मोती धारण कर सकते हैं।

(5). मोतियाबिन्द – पन्ना को आंखों की ज्योति में वृद्धि करने में सहायक माना जाता है और मोती को खोई नेत्र ज्योति प्राप्त करने में सहायक। रोग के उपचार के दौरान माणिक्य धारण करें। गर्मियों में माणिक्य के स्थान पर लाल मूंगा पहनें। मूंगा, मोती तथा पन्ना 3–3 रत्ती प्रत्येक के हिसाब से एक साथ अंगूठी में जड़वाकर या पेण्डेंट में धारण करें, लाभ

होगा।

(6). निकट दृष्टि से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का माणिक और 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए। माणिक के स्थान पर लाल मूंगा धारण किया जा सकता है।

(7). आंख आने से मुक्ति पाने के लिए मध्यमिका उंगली में 4 या 5 रत्ती का चंद्ररत्न अथवा कनिष्ठा में 3 या 4 रत्ती का नीलम धारण करना चाहिए।

(8). यदि आप आंखों की बीमारी से पीड़ित हैं, तो आपको एक्वामेरीन एवं पैरीडोट रत्न धारण करना चाहिए। इससे आपको जल्द स्वस्थ होने में मदद मिलेगी।

(9). नेत्र संबंधी रोगों से बचने के लिए आपको 3 या 5 रत्ती का माणिक और 7 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।

(10). नेत्रशोथ – इस रोग के प्रभाव को कम करने के लिए पन्ना धारण करें। इसके अलावा मूनस्टोन, ओपल, जिरकॉन धारण करने से भी नेत्र रोगों में काफी लाभ होता है।

(11). आंख आना/नेत्रश्लेष्मलाशोथ से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा एवं लाल वस्त्र धारण चाहिए।

(12). अंधापन – सफेद मोती, मूनस्टोन तथा मूंगा धारण करना लाभदायक होगा।

(13). वर्णाधता – लाल माणिक्य अथवा मूंगे के साथ मोती धारण करना वर्णाधता में बहुत लाभदायक होता है।

(14). कमजोर दृष्टि अथवा नेत्र से संबंधित रोगों से बचाव के लिए आपको 10 अथवा 14 रत्ती का मूंगा और 9 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।

(15). वृद्धावस्था का दूर दृष्टि दोष से निजात पाने के लिए पन्ना, माणिक, सफेद मोती और लाल मूंगा संयुक्त रूप से धारण करना चाहिए। लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना सर्वाधिक उपयोगी होगा।

(16). रतौंधी से छुटकारा पाने के लिए लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(17). वर्णान्धता से निजात पाने के लिए पन्ना, लाल मूंगा, सफेद मोती व हीरा धारण करना चाहिए।

(18). दृष्टिवैषम्यता को दूर करने के लिए लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना उपयोगी होगा।

(1). बहरापन से बचने के लिए आपको 9 रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पन्ना, नीलम, पुखराज धारण करना चाहिए।

(1). स्फटिक, मोती तथा मूनस्टोन धारण करें। लाल कपड़ा या लाल धागा अवश्य पहनें। तांबे की अंगूठी में मूंगा पहनने से मुख (मुँह) से संबंधित विकार का प्रभाव कम हो जाता है।

(2). मुंहासे/फुंसी से छुटकारा पाने के लिए आपको 7 या 9 रत्ती का सफेद मूंगा मध्यमिका में धारण करना

चाहिए।

- (3). चांदी की अंगूठी में 8 या 10 रत्ती का सफेद मूंगा अथवा 4 से 10 रत्ती का मोती मध्यमा अंगुली में पहनें, साथ ही छोटी अंगुली में लाजवर्त पहनें। यदि मूंगा अनुकूल न आये तो केवल चांदी की अंगूठी ही धारण करें। इससे मुख (मुँह) से संबंधित विकार का प्रभाव कम हो जाता है।
- (4). दांतों में कीड़े या दर्द होने पर – सफेद या लाल मूंगा पहनना लाभदायक होगा।
- (5). यदि आप मुँहासे से ग्रसित हैं, तो आपको ऐमेथीस्ट रत्न धारण करना चाहिए। इससे आपको जल्द स्वस्थ होने में मदद मिलेगी।
- (6). मूनस्टोन तथा पीला गोमेद धारण करना लाभकारी होगा। पुखराज तथा मोती पहनना भी शुभ फलदायक है। इससे मुख (मुँह) से संबंधित विकार का प्रभाव कम हो जाता है।
- (1). मूनस्टोन तथा पीला गोमेद धारण करना लाभकारी होगा। पुखराज तथा मोती पहनना भी दांतों के रोगमें शुभ फलदायक है।
- (2). दांतों से संबंधित रोगों से बचने के लिए आपको 4 या 7 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।
- (3). लाल या सफेद मूंगा, पुखराज पहनना भी दांतों के दर्द में लाभकारी साबित होता है।
- (1). सोने या चांदी की अंगूठी में पुखराज या सुनैला धारण करें। शुद्ध मूंगा 5 रत्ती का चांदी में मढ़वाकर अनामिका में धारण करें। मूंगा या पुखराज का पैंडल जंजीर में डालकर गले में पहन सकते हैं।
- (2). स्वराघात से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (3). कण्ठशालक रोग से बचने के लिए आपको 5 रत्ती का लाल मूंगा अनामिका में और 5 रत्ती का पीला पुखराज तर्जनी में धारण करना चाहिए।
- (4). गले/कण्ठ से संबंधित विकार से मुक्ति के लिए आभूषण दान करना चाहिए।
- (5). वाणी में अत्यधिक कर्कशता होने पर इससे बचने के लिए आपको 9 या 10 रत्ती का मोती और 3 या 5 रत्ती का माणिक धारण करना चाहिए।
- (6). कंठ में सूजन होने पर आपको 5 रत्ती का लाल मूंगा अनामिका में धारण करना चाहिए।
- (7). यदि आप डिप्थिरिया (कंठ का एक संक्रामक रोग) से पीड़ित हैं, तो आपको 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा और 7 या 12 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए।
- (8). गर्दन में असहनीय दर्द से बचने के लिए आपको 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा और 1 या 2 रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।
- (9). गले से संबंधित रोगों से बचाव के लिए आपको 12 अथवा 16 रत्ती का चंद्ररत्न और आधा रत्ती का

हीरा धारण करना चाहिए।

(10). गंडमाला रोग से बचने के लिए आपको साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराजधारण करना चाहिए।

(11). गले से संबंधित रोग से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(1). कुकर खांसी – मरकत अथवा पेरीडॉट पहनना लाभदायक होगा।

(2). महिला – अस्थमा रोग से मुक्ति पाने के लिए 10 या 12 रत्ती का सफेद मोती बायें हाथ के दो उंगलियों अनामिका और कनिष्ठा में धारण करना चाहिए।

(3). दमा – नवधातु में काला अथवा लाल अकीक धारण करें। सोने या चांदी में 8–9 रत्ती का लाल मूंगा तथा 3 से 5 रत्ती का गोमेद अष्टधातु में धारण करना लाभदायक होगा।

(4). अस्थमा से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 5 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए। 4 रत्ती का लाल मूंगा दिन के समय में धारण किया जा सकता है, किन्तु इसे सोने जाने से पहले निकाल देना चाहिए। लाल मूंगा को रात के समय निकालने के बाद घोड़े की नाल की अंगूठी मध्यमिका में धारण करना बहुत उपयोगी रहेगा। इससे रात में अच्छी नींद आयेगी।

(5). श्वसन प्रणाली से संबंधित रोगों से बचने के लिए आपको 8 या 9 रत्ती का पीला मोती और 7 या 8 रत्ती का नीलम अथवा 18 या 24 रत्ती का जमुनिया धारण करना चाहिए।

(6). फुफ्फुसआवरणशोथ से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पन्ना और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(7). पुरुष – अस्थमा रोग से मुक्ति पाने के लिए 4 या 5 रत्ती का पन्ना और सफेद मोती तथा 4 रत्ती का नीलम कनिष्ठा में धारण करना चाहिए। नीलम के स्थान पर लाजावर्द धारण किया जा सकता है। सर्दी के मौसम में 4 रत्ती का लाल मूंगा अतिरिक्त रत्न के रूप में धारण किया जा सकता है।

(8). महिला – शीतज्वर से बचने के लिए आपको 4 या 6 रत्ती का नीलम, 4 या 7 रत्ती का पन्ना और 10 या 16 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए।

(9). अस्थमा रोग से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का पीला पुखराज, 14 या 16 रत्ती का चंद्र रत्न और 7 या 9 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।

(10). पुरुष – अस्थमा रोग से मुक्ति पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का पन्ना व 5 रत्ती का चंद्र रत्न और अनामिका में 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(11). इनफ्लूएंजा – लाल मूंगा और पीला पुखराज धारण करना लाभदायक होता है। यदि बार–बार रोग हो रहा है तो काला हकीक, माणिक्य तथा सूर्यकान्त मणि एक साथ लॉकेट में डाल कर गले में धारण करें।

(12). न्यूमोनिया से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला

पुखराज धारण करना चाहिए।

(13). महिला – हिचकी से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा अनामिका में और 5 रत्ती का गोमेद मध्यमिका में धारण करना चाहिए।

(14). अस्थमा से पीड़ित होने पर आपको 6 रत्ती का लाल पन्ना, 5 रत्ती का पुखराज और 6 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए। 7 वर्ष की आयु तक के बच्चे चांदी में जड़ित चंद्र रत्न धारण कर सकते हैं।

(15). शीतला रोग से बचने के लिए आपको लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(16). निमोनिया – इस रोग में लाल मूंगा तथा पीला पुखराज धारण करना शुभ फलदायक होता है।

साँस से संबंधित विकार के लिए लाल किताब के उपाय

कुकर खांसी – बच्चे को लाल कपड़ा पहनाना चाहिये तथा तांबे का छल्ला भी पहनाना शुभ फलदायक होगा। गले में तांबे की चेन धारण करना शुभ फलदायी होगा।

साँस से संबंधित विकार के लिए आर्युवेदिक उपचार

तीन मुनक्के के साथ दो कली लहसुन दिन में दो बार सेवन करने से खांसी में आराम मिलता है। अगर ज्यादा छींक आये, तो भी इससे लाभ होता है।

दस काली मिर्च पीसकर शहद के साथ चाटें। ऐसा सुबह-शाम दोनों समय करने से सूखी खांसी में लाभ होता है।

आठ-दस तुलसी के पत्ते लेकर अच्छी तरह धो लें और एक कप पानी में तुलसी के पत्ते, 1-2 लहसुन कीकली, आधा इंच का टुकड़ा अदरक कूटी हुई तथा 4-5 साबुत काली मिर्च पानी में डालकर उबाल लें। पानी की मात्रा को सूखाकर एक चौथाई कप कर लें। फिर ठण्डा करके इसका सेवन करें। खांसी जल्दी ठीक हो जाती है।

एक तोला अलसी को थोड़ा सा कूटकर 250 ग्राम पानी में उबाल दें। जब पानी की मात्रा आधी रह जाये तो उसमें दो तोला शहद मिलाकर पीयें। इससे खांसी और दमा दोनों में राहत मिलती है।

छः महीने से बारह महीने के आयु वाले छोटे बच्चों को ठंडे मौसम या ठंडी हवा के कारण सर्दी लग जाये, छाती में कफ हो जाये, छाती में दर्द हो और पसली चले तो दस-बारह दाने अजवायन के आधा कप पानीमें डालकर उबालें। जब पानी आधा रह जाये तो इसे कपड़े से छान लें। इस काढ़े को थोड़ा गर्म-गर्म दिन में दो बार और रात में सोने से पहले बच्चे को पिलायें। इससे बहुत लाभ होगा।

तुलसी की सात-आठ हरी पत्तियों को पानी से अच्छी तरह से धोकर बारीक पीसकर शहद के साथ मिलाकर जरूरत के हिसाब से दो-तीन सप्ताह तक सेवन करें। इसका सेवन करने से साइनासाइटिस का एक रोगी केवल 15 दिनों में ठीक हो सकता

है।

पके केले को धीमी आंच पर पकाकर काली मिर्च एवं नमक के साथ खाने से दमा में राहत महसूस होती है।

मुंह में लौंग रखकर चूसने से खांसी आनी कम हो जाती है और कफ में आराम होता है। खांसी, दमा तथा श्वास के रोगों में भी लौंग का सेवन करने से लाभ होता है।

गाय के दूध के साथ जायफल को घीसकर छाती एवं पीठ पर लगाने से जुकाम में राहत महसूस होती है।

पोदीना का पत्ता सर्दी—जुकाम में सूंघने से सर्दी—जुकाम में लाभ प्राप्त होता है।

अनार के छिलके एवं मुलहठी को चूसने से कफ युक्त खांसी में लाभ होता है।

तुलसी के 10 पत्ते, 3 लौंग, 15 काली मिर्च तथा 2 इलायची को कूटकर मिश्री मिलाकर चासनी बनाकर देनेपर सभी प्रकार की खांसी में फायदा होता है।

चाय की पत्ती एवं शक्कर डाल कर उबालें। फिर उसे उतार कर छान लें और उसमें 15—20 बूंद नींबू की रस टपका लें और पीयें। सर्दी—जुकाम में लाभ प्राप्त होता है।

सौंठ, काली मिर्च और हल्दी तीनों का अलग—अलग चूर्ण तैयार कर लें। तीनों में से चार—चार चम्मच चूर्ण लेकर एक साथ मिला लें और एक शीशी में भरकर रख लें। आधा चम्मच चूर्ण गर्म पानी के साथ दिन में दो बार लें। इससे ब्रोंकाइटिस अर्थात् श्वास नली में सूजन एवं दर्द में लाभ होता है।

दो रत्ती भुनी हुई फिटकरी तथा दो रत्ती चीनी दोनों को मिलाकर दिन में दो बार बच्चों को इसे खिलायें तथा बड़ों को इससे दुगना मात्रा में दें। अगर बिना पानी के न ले सकें तो एक—दो घूंट पानी पी लें। इससे पांच दिनों में काली खांसी ठीक हो जाती है।

गुनगुने पानी के साथ जायफल को पत्थर पर घीसकर इस लेप को नाक के उपर कपाल पर लगाने से सिरदर्द और सर्दी में आराम होता है।

काला नमक या बबूल के गोंद का टुकड़ा अथवा मुहलठी का टुकड़ा मुंह में रखकर चूसने से रात को बेचैनकर देने वाली खांसी में आराम मिलता है।

बादाम की गिरी पानी में घिसकर चटाने से बच्चों की खांसी ठीक हो जाती है।

तुलसी के पत्तों का रस, अदरक का रस एवं शहद बराबर—बराबर मात्रा में मिलाकर रख लें। एक या दो छोटे चम्मच से छः—छः घंटे पर सेवन करने से खांसी ठीक हो जाती है।

छाती पर पुराना घी या कपूर मिले हुए सरसों के तेल की मालिश करने से खांसी में राहत मिलती है।

एक ग्राम सेंधा नमक और एक ग्राम चीनी पानी में मिलाकर दिन में दो बार सेवन करने से जुकाम ठीक होजाता

है।

एक चम्मच आजवायन को 250 ग्राम पानी में उबालें। जब चौथाई बच जाये तो उसे छानकर रात में सोते समय गरम-गरम पीकर चादर ओढ़कर सो जायें। दिन में दो बार रोजाना सेवन करने से पांच-सात दिनों में छाती का दर्द ठीक हो जाता है। यह काढ़ा दो चम्मच दिन में लगातार कुछ दिनों तक लेने से पसली चलना भी ठीक हो जाता है।

3 ग्राम काली मिर्च का चूर्ण तथा ताजा 50 ग्राम दही दोनों को मिलाकर सुबह में सेवन करने से सर्दी-जुकाम में लाभ होता है।

तिल के तेल को गरम करके उसमें थोड़ा सा सेंधा नमक मिलाकर छाती पर लेप करने से दमा की बीमारी में लाभ प्राप्त होता है।

एक साल से अधिक उम्र के बच्चों को दमा की बीमारी में रोजाना तुलसी की पांच पत्तियां बारीक पीसकर थोड़ी सी शहद के साथ सुबह-शाम तीन-चार सप्ताह तक चटायें। एक साल से कम उम्र के बच्चों को तुलसी के पत्तों का दो बूंद रस थोड़ी सी शहद में मिलाकर दिन में दो बार चटायें। इससे बच्चों के दमा के साथ-साथ श्वास प्रणाली की अनेक तरह की बीमारियां जड़ से ठीक हो जाती हैं।

लहसुन का रोजाना सेवन करने से पुरानी खांसी, कफ की अधिकता एवं श्वास की बीमारी ठीक हो जाती है।

आधा चम्मच पिसी हुई हल्दी तथा आधा चम्मच नमक मिलाकर रात को सोते समय एक गिलास गुनगुने पानी के साथ पीने से खांसी में आराम होता है।

अगर आपको छींके ज्यादा आती हों तो धनियां की पत्तियां या चंदन सूंघें। इससे आपको बहुत आराम मिलेगा।

एक नींबू का रस, एक चाय की चम्मच से अदरक का रस और इसके बराबर ही शहद गर्म पानी में मिलाकर सेवन करने से दमा में राहत मिलती है।

खाना खाने के बाद हमेशा एक घंटे बाद पानी पीने की आदत डालनी चाहिए, इससे खांसी भी नहीं होती और पाचन-शक्ति भी अच्छी रहती है।

पान के पत्ते में आधा ग्राम कौड़ी की भस्म डालकर चूसते रहने से सूखी खांसी में लाभ होता है।

एक कप में दूध में एक चम्मच हल्दी डालकर पीने से जुकाम ठीक हो जाता है।

घी और सेंधा नमक मिलाकर सीने पर मालिश करने से कष्टदायक पुरानी खांसी ठीक होती है।

आधा चम्मच काली मिर्च का पाउडर थोड़े से शहद में मिलाकर सुबह, दोपहर तथा शाम में सेवन करने से खांसी में लाभ होता है।

3 ग्राम सरसों पीसकर शहद में मिलाकर चाटें। ऐसा दिन में 3-4 बार करने से सूखी खांसी में राहत मिलती

है।

तिल और मिश्री पानी में उबाल कर पीने से सूखी खांसी ठीक हो जाती है।

अनार के छिलके को मुंह में रखकर उसका रस चूसने से खांसी ठीक होती है।

क्षय रोग (टी. बी.) से संबंधित विकार के कारण और विविध उपाय



क्षय रोग (टी. बी.) से संबंधित विकार से संबंधित कुण्डली में उपस्थित योग

आपकी कुण्डली में केतु छठे भाव के स्वामी के साथ स्थित है या छठे भाव के स्वामी पर अपनी दृष्टि डाल रहा है, आप क्षय रोग के शिकार हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में लग्न का स्वामी शुक के साथ छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है, आप क्षय रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

क्षय रोग (टी. बी.) से संबंधित विकार के लिए रत्न और उपरत्न का सुझाव

- (1). अजीब वस्तुओं या विषयों से संबंधित सपने बार-बार आने पर आपको 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा और 9 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (2). यदि आप वातोन्माद/मूर्छा (हिस्टीरिया) रोग से पीड़ित हैं, तो आपको 7 या 9 रत्ती का मोती, 14 या 18 रत्ती का लाल मूंगा और 12 या 16 रत्ती का चंद्र रत्न धारण करना चाहिए।
- (3). मिर्गी से पीड़ित होने पर आपको उपचार हेतु पन्ना, मोती और मूंगा एक साथ धारण करना चाहिए।
- (4). अत्यधिक तनावग्रस्त होने के कारण मानसिक असंतुलन की स्थिति उत्पन्न होने पर आपको 4 या 8 रत्ती का पन्ना और 16 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न धारण करना चाहिए।
- (5). यदि आप आनुवांशिक मानसिक असंतुलन से पीड़ित हैं, तो आपको 24 या 30 रत्ती का चंद्र रत्न और 12 या 14 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना

चाहिए।

- (6). मणिक्य, मोती तथा पन्ना पहनें।
- (7). अनिद्रा से छुटकारा पाने के लिए आपको पन्ना, पुखराज और मोती धारण करना चाहिए।
- (8). शिराप्रदाह से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (9). स्मरण शक्ति कमजोर होने पर आपको 5 या 7 रत्ती का पन्ना, 4 या 6 रत्ती का लहसुनिया और 12 18 रत्ती का चंद्र रत्न अथवा 7 या 9 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (10). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए पन्ना, चंद्ररत्न, लाल मूंगा और पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (11). अनिद्रा से निजात पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का चंद्ररत्न धारण करना चाहिए।
- (12). यदि आप शराब पीने के आदी हैं, तो आपको इससे छुटकारा पाने के लिए 14 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न और 9 या 14 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए।
- (13). सिरदर्द से बचने के लिए आपको 4 या 5 रत्ती का माणिक अथवा 20 या 24 का माणिक का उपरत्न धारण करना चाहिए।
- (14). मानसिक विकार से बचने के लिए आपको 16 या 24 रत्ती का चंद्र रत्न और 6 या 8 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (15). मिरगी/वातोन्माद से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा और मोती धारण करना चाहिए।
- (16). यदि आपको मिरगी का दौरा पड़ता है, तो आपको इससे बचने के लिए 18 या 14 रत्ती का चंद्र रत्न, 10 या 14 रत्ती का सफेद मोती और 1 या 2 रत्ती का हीरा अथवा 4 या 5 रत्ती का जरकन धारण करना चाहिए।
- (17). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का पीला पुखराज और 5 या 6 रत्ती का चंद्ररत्न धारण करना चाहिए।
- (18). अनिद्रा से निजात पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का पन्ना, अनामिका में 5 रत्ती का पीला पुखराज और तर्जनी में 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (19). अनिद्रा से निजात पाने के लिए 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।
- (20). आलस्य या उदासीनता से संबंधित रोग से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का मोती और 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (21). यदि आप पागलपन में बेहोशी (हिस्टीरीकल इन्सैनिटी) से पीड़ित हैं, तो आपको 20 या 25 रत्ती का

चंद्र रत्न और 1 या 2 रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।

(22). मिरगी/लकवा से पीड़ित होने पर आपको साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(23). मिर्गी से बचने के लिए पन्ना, 6 रत्ती का चंद्ररत्न और 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(24). भूलने की बीमारी से निजात पाने के लिए आपको 5 रत्ती का लाल मूंगा और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(25). अनिद्रा से निजात पाने के लिए 10 या 12 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(26). नवरत्न का पेंडल गले में पहनना भी लाभदायक होगा।

(27). नीलम या पुखराज चांदी अथवा तांबे की अंगूठी में पहनें।

(28). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए पन्ना, नीलम, और सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(29). स्थायी सिरदर्द से छुटकारा पाने के लिए आप पन्ना और मोती धारण कर सकते/सकती हैं।

(30). श्लैष्मिक ज्वर से बचने के लिए 5 रत्ती का लाल मूंगा और 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(31). यदि आप विषाद रोग से ग्रसित हैं, तो आपको 5 या 8 रत्ती का नीलम और 5 या 7 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।

(32). मिर्गी से बचने के लिए 5 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का नीलम और 5 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(33). मिर्गी से बचने के लिए पन्ना और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(1). मस्तिष्क विकार – मूनस्टोन, पीला पुखराज तथा पन्ना धारण करने से मानसिक शांति मिलती है। लालमूंगा धारण करना भी लाभदायक होता है।

(2). स्मृति दोष – मोती या माणिक्य गले में धारण करें। एक हाथ में 6 रत्ती का पन्ना तथा दूसरे में 9 रत्ती का मूंगा चांदी की अंगूठी में पहनें। चांदी, सोना, तांबा मिश्रित धातु का कड़ा पहनना भी लाभदायक होगा।

(3). मस्तिष्क के ट्यूमर से निजात पाने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 6 रत्ती का सफेद मोती और 4 रत्ती का नीलम या लाजावर्द धारण करना चाहिए, अथवा पन्ना, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 6 रत्ती का चंद्ररत्न या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(4). परागज-ज्वर (हे-फीवर) से बचने के लिए आपको 9 या 16 रत्ती का गोमेद और 5 या 7 रत्ती का पन्ना धारण करना

चाहिए।

(5). यदि आप रोगभ्रम/चिन्तोन्माद (हॉइपोकांड्रिया) से ग्रसित हैं, तो आपको 7 या 8 रत्ती का नीलम और 5 या 7 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(6). मिरगी – 1 – 6 रत्ती मोती या 5 रत्ती पन्ना या 12 रत्ती सफेद मोती धारण करें।
2 – पन्ना और मूनस्टोन धारण करें। लग्न के स्वामी का रत्न धारण करना शुभ फलदायक होगा।

(7). प्रमस्तिष्कीय रक्तस्राव – 1 – लग्न के स्वामी का रत्न धारण करें।
2 – 7-8 रत्ती का लाल मूंगा तथा मूनस्टोन या सफेद मोती चांदी में धारण करें।
3 – एक त्रिकोण पेण्डेण्ट में लग्न के स्वामी का रत्न, मूंगा तथा पुखराज जड़वायें, जिसमें माणिक्य बीच में हो, इस प्रकार का पेण्डेण्ट धारण करने से इस रोग का प्रभाव कम हो सकता है।

(8). मस्तिष्कावरण शोथ से बचने के लिए आपको लाल मूंगा, पुखराज, पन्ना और माणिक धारण करना चाहिए।

(9). मस्तिष्क में तंत्रिकाओं के गड़बड़ी से सिरदर्द होने पर आपको 5 या 6 रत्ती का पीला पुखराज और 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(10). पागलपन या विक्षिप्तता से ग्रसित होने पर इसके उपचार हेतु आपको पन्ना, लाल मूंगा, मोती धारण करना चाहिए। इससे रोग का प्रभाव कम होगा।

(11). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए आपको 10 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(12). मस्तिष्क में गांठ, सूजन और फोड़ा होने पर आपको उसके उपचार हेतु पन्ना, पुखराज और मूंगा धारण करना चाहिए।

(13). यदि आप प्रमस्तिष्क घनास्त्रता रोग से पीड़ित हैं, तो आपको 3 रत्ती का माणिक अथवा 18 या 24 रत्ती का माणिक का उपरत्न, 10 या 12 रत्ती का मोती तथा 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(14). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 3 रत्ती का माणिक और 4 रत्ती नीलम धारण करना चाहिए। गर्मी के महीनों में रात के समय लाल मूंगा और माणिक धारण नहीं करना चाहिए।

(15). पागलपन – 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का पीला पुखराज एवं 4 रत्ती का मोती धारण करें।

(16). कमजोर स्मरण शक्ति या भूलने की बीमारी से बचने के लिए आपको 7 या 9 रत्ती का लाल मूंगा और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(17). मस्तिष्क ज्वर – लाल मूंगा, पीला पुखराज तथा पन्ना धारण करना लाभदायक साबित होगा।

(18). मस्तिष्क संबंधित रोग – 1 – लग्न के स्वामी, सूर्य एवं चन्द्रमा को उनसे संबंधित रत्न धारण करा कर बलशाली बनायें।

2 – लग्न के स्वामी, सूर्य एवं चंद्रमा का कवच पाठ करें तथा इनसे संबंधित यंत्र धारण करें।

- 3 – एक ही अंगूठी अथवा पेण्डेंट में लाल मूंगा तथा पन्ना धारण करें।
- 4 – लाल मूंगा एवं पीला पुखराज या पन्ना एवं चन्द्रकान्त एक साथ मिलाकर धारण करें।
- 5 – पन्ना एवं चन्द्रकान्त एक साथ धारण करें।
- 6 – मूंगा एवं मोती धारण करें, लाभदायक फल प्राप्त होगा।
- 7 – लाल मूंगा एवं पन्ना एक साथ धारण करना लाभदायक सिद्ध होता है।

(19). मस्तिष्कीय रक्तस्राव होने पर आपको मंगल के लिए लाल मूंगा, बुध के लिए पन्ना, और चंद्रमा के लिए मोती धारण करना चाहिए। साथ ही उचित औषधि लेने पर आपको शीघ्र उत्तम परिणाम प्राप्त होगा।

(20). मस्तिष्क संबंधी रोगों से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का पन्ना, 14 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न तथा 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(21). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(22). मूर्च्छा – 5 रत्ती पन्ना, 4 रत्ती नीलम एवं 5 रत्ती मोती धारण करें।

(23). अनिद्रा – फिरोजा, जिरकॉन, श्वेत ओपल तथा मोती धारण करना लाभदायक होता है। बारहवें भाव के स्वामी का रत्न धारण करना भी शुभ फलदायक होगा। पीला पुखराज भी धारण किया जा सकता है।

(1). मोतियाबिंद से छुटकारा पाने के लिए 3 या 4 रत्ती का माणिक और 5 या 6 रत्ती का पन्ना और 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती एक साथ धारण करना चाहिए। यदि संभव हो तो आधा रत्ती का हीरा बाएं हाथ में धारण करना चाहिए।

(2). 10 या 12 रत्ती का माणिक्य अनामिका अंगुली में शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन धारण करें।

(3). दूर दृष्टि दोष को दूर करने के लिए पन्ना, माणिक और सफेद मोती धारण करना चाहिए। यदि संभव हो तो आधा रत्ती का हीरा बाएं हाथ में धारण किया जा सकता है। माणिक के स्थान पर लाल मूंगा धारण किया जा सकता है।

(4). यदि जन्म के बाद नेत्र हानि होती है अथवा दृष्टिहीनता का उपचार संभव है, तो दृष्टिहीनता अथवा कमजोर दृष्टि से बचने के लिए आप माणिक और मोती धारण कर सकते हैं।

(5). मोतियाबिन्द – पन्ना को आंखों की ज्योति में वृद्धि करने में सहायक माना जाता है और मोती को खोई नेत्र ज्योति प्राप्त करने में सहायक। रोग के उपचार के दौरान माणिक्य धारण करें। गर्मियों में माणिक्य के स्थान पर लाल मूंगा पहनें। मूंगा, मोती तथा पन्ना 3–3 रत्ती प्रत्येक के हिसाब से एक साथ अंगूठी में जड़वाकर या पेण्डेंट में धारण करें, लाभ होगा।

(6). निकट दृष्टि से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का माणिक और 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए। माणिक के स्थान पर लाल मूंगा धारण किया जा सकता है।

(7). आंख आने से मुक्ति पाने के लिए मध्यमिका उंगली में 4 या 5 रत्ती का चंद्ररत्न अथवा कनिष्ठा में 3 या 4 रत्ती का नीलम धारण करना

चाहिए।

(8). यदि आप आंखों की बीमारी से पीड़ित हैं, तो आपको एक्वामेरीन एवं पैरीडोट रत्न धारण करना चाहिए। इससे आपको जल्द स्वस्थ होने में मदद मिलेगी।

(9). नेत्र संबंधी रोगों से बचने के लिए आपको 3 या 5 रत्ती का माणिक और 7 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।

(10). नेत्रशोथ – इस रोग के प्रभाव को कम करने के लिए पन्ना धारण करें। इसके अलावा मूनस्टोन, ओपल, जिरकॉन धारण करने से भी नेत्र रोगों में काफी लाभ होता है।

(11). आंख आना/नेत्रश्लेष्मलाशोथ से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा एवं लाल वस्त्र धारण चाहिए।

(12). अंधापन – सफेद मोती, मूनस्टोन तथा मूंगा धारण करना लाभदायक होगा।

(13). वर्णाधता – लाल माणिक्य अथवा मूंगे के साथ मोती धारण करना वर्णाधता में बहुत लाभदायक होता है।

(14). कमजोर दृष्टि अथवा नेत्र से संबंधित रोगों से बचाव के लिए आपको 10 अथवा 14 रत्ती का मूंगा और 9 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।

(15). वृद्धावस्था का दूर दृष्टि दोष से निजात पाने के लिए पन्ना, माणिक, सफेद मोती और लाल मूंगा संयुक्त रूप से धारण करना चाहिए। लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना सर्वाधिक उपयोगी होगा।

(16). रतौंधी से छुटकारा पाने के लिए लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(17). वर्णान्धता से निजात पाने के लिए पन्ना, लाल मूंगा, सफेद मोती व हीरा धारण करना चाहिए।

(18). दृष्टिवैषम्यता को दूर करने के लिए लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना उपयोगी होगा।

(1). बहरापन से बचने के लिए आपको 9 रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पन्ना, नीलम, पुखराज धारण करना चाहिए।

(1). स्फटिक, मोती तथा मूनस्टोन धारण करें। लाल कपड़ा या लाल धागा अवश्य पहनें। तांबे की अंगूठी में मूंगा पहनने से मुख (मुँह) से संबंधित विकार का प्रभाव कम हो जाता है।

(2). मुंहासे/फुंसी से छुटकारा पाने के लिए आपको 7 या 9 रत्ती का सफेद मूंगा मध्यमिका में धारण करना चाहिए।

(3). चांदी की अंगूठी में 8 या 10 रत्ती का सफेद मूंगा अथवा 4 से 10 रत्ती का मोती मध्यमा अंगुली में पहनें, साथ ही छोटी अंगुली में लाजवर्त पहनें। यदि मूंगा अनुकूल न आये तो केवल चांदी की अंगूठी ही धारण करें। इससे मुख (मुँह) से संबंधित विकार का प्रभाव कम हो जाता है।

(4). दांतों में कीड़े या दर्द होने पर – सफेद या लाल मूंगा पहनना लाभदायक

होगा।

(5). यदि आप मुंहासे से ग्रसित हैं, तो आपको ऐमेथीस्ट रत्न धारण करना चाहिए। इससे आपको जल्द स्वस्थ होने में मदद मिलेगी।

(6). मूनस्टोन तथा पीला गोमेद धारण करना लाभकारी होगा। पुखराज तथा मोती पहनना भी शुभ फलदायक है। इससे मुख (मुँह) से संबंधित विकार का प्रभाव कम हो जाता है।

(1). मूनस्टोन तथा पीला गोमेद धारण करना लाभकारी होगा। पुखराज तथा मोती पहनना भी दांतों के रोगमें शुभ फलदायक है।

(2). दांतों से संबंधित रोगों से बचने के लिए आपको 4 या 7 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(3). लाल या सफेद मूंगा, पुखराज पहनना भी दांतों के दर्द में लाभकारी साबित होता है।

(1). सोने या चांदी की अंगूठी में पुखराज या सुनैला धारण करें। शुद्ध मूंगा 5 रत्ती का चांदी में मढ़वाकर अनामिका में धारण करें। मूंगा या पुखराज का पैंडल जंजीर में डालकर गले में पहन सकते हैं।

(2). स्वराघात से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(3). कण्ठशालक रोग से बचने के लिए आपको 5 रत्ती का लाल मूंगा अनामिका में और 5 रत्ती का पीला पुखराज तर्जनी में धारण करना चाहिए।

(4). गले/कण्ठ से संबंधित विकार से मुक्ति के लिए आभूषण दान करना चाहिए।

(5). वाणी में अत्यधिक कर्कशता होने पर इससे बचने के लिए आपको 9 या 10 रत्ती का मोती और 3 या 5 रत्ती का माणिक धारण करना चाहिए।

(6). कंठ में सूजन होने पर आपको 5 रत्ती का लाल मूंगा अनामिका में धारण करना चाहिए।

(7). यदि आप डिप्थिरिया (कंठ का एक संक्रामक रोग) से पीड़ित हैं, तो आपको 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा और 7 या 12 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए।

(8). गर्दन में असहनीय दर्द से बचने के लिए आपको 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा और 1 या 2 रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।

(9). गले से संबंधित रोगों से बचाव के लिए आपको 12 अथवा 16 रत्ती का चंद्ररत्न और आधा रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।

(10). गंडमाला रोग से बचने के लिए आपको साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराजधारण करना चाहिए।

(11). गले से संबंधित रोग से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा धारण करना

चाहिए।

- (1). कूकर खांसी – मरकत अथवा पेरीडॉट पहनना लाभदायक होगा।
- (2). महिला – अस्थमा रोग से मुक्ति पाने के लिए 10 या 12 रत्ती का सफेद मोती बायें हाथ के दो उंगलियों अनामिका और कनिष्ठा में धारण करना चाहिए।
- (3). दमा – नवधातु में काला अथवा लाल अकीक धारण करें। सोने या चांदी में 8–9 रत्ती का लाल मूंगा तथा 3 से 5 रत्ती का गोमेद अष्टधातु में धारण करना लाभदायक होगा।
- (4). अस्थमा से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 5 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए। 4 रत्ती का लाल मूंगा दिन के समय में धारण किया जा सकता है, किन्तु इसे सोने जाने से पहले निकाल देना चाहिए। लाल मूंगा को रात के समय निकालने के बाद घोड़े की नाल की अंगूठी मध्यमिका में धारण करना बहुत उपयोगी रहेगा। इससे रात में अच्छी नींद आयेगी।
- (5). श्वसन प्रणाली से संबंधित रोगों से बचने के लिए आपको 8 या 9 रत्ती का पीला मोती और 7 या 8 रत्ती का नीलम अथवा 18 या 24 रत्ती का जमुनिया धारण करना चाहिए।
- (6). फुफ्फुसआवरणशोथ से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पन्ना और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (7). पुरुष – अस्थमा रोग से मुक्ति पाने के लिए 4 या 5 रत्ती का पन्ना और सफेद मोती तथा 4 रत्ती का नीलम कनिष्ठा में धारण करना चाहिए। नीलम के स्थान पर लाजावर्द धारण किया जा सकता है। सर्दी के मौसम में 4 रत्ती का लाल मूंगा अतिरिक्त रत्न के रूप में धारण किया जा सकता है।
- (8). महिला – शीतज्वर से बचने के लिए आपको 4 या 6 रत्ती का नीलम, 4 या 7 रत्ती का पन्ना और 10 या 16 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए।
- (9). अस्थमा रोग से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का पीला पुखराज, 14 या 16 रत्ती का चंद्र रत्न और 7 या 9 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (10). पुरुष – अस्थमा रोग से मुक्ति पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का पन्ना व 5 रत्ती का चंद्र रत्न और अनामिका में 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (11). इनफ्लूएंजा – लाल मूंगा और पीला पुखराज धारण करना लाभदायक होता है। यदि बार–बार रोग हो रहा है तो काला हकीक, माणिक्य तथा सूर्यकान्त मणि एक साथ लॉकेट में डाल कर गले में धारण करें।
- (12). न्यूमोनिया से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (13). महिला – हिचकी से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा अनामिका में और 5 रत्ती का गोमेद मध्यमिका में धारण करना

चाहिए।

- (14). अस्थमा से पीड़ित होने पर आपको 6 रत्ती का लाल पन्ना, 5 रत्ती का पुखराज और 6 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए। 7 वर्ष की आयु तक के बच्चे चांदी में जड़ित चंद्र रत्न धारण कर सकते हैं।
- (15). शीतला रोग से बचने के लिए आपको लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (16). निमोनिया – इस रोग में लाल मूंगा तथा पीला पुखराज धारण करना शुभ फलदायक होता है।
 - (1). शीत ज्वर – 7–8 रत्ती का माणिक्य चांदी की अंगूठी में धारण करें। मंगल की शान्ति के लिये तांबे का कड़ा, अंगूठी या कोई अन्य आभूषण धारण करें।
 - (2). क्षय रोग से पीड़ित होने पर आपको 7 या 9 रत्ती का लाल मूंगा तथा 5 रत्ती का पुखराज धारण करना चाहिए।
 - (3). पीला पुखराज, सफेद मोती या लाल मूंगा धारण कर रोग का प्रभाव कम किया जा सकता है।
 - (4). तपेदिक से बचने के लिए 5 रत्ती का पन्ना, साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
 - (5). तपेदिक रोग से बचने के लिए आपको 7 या 8 रत्ती का नीलम और 10 या 16 रत्ती का चंद्र रत्न अथवा 7 या 9 रत्ती का सफेद मोती और 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा तथा 4 या 7 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
 - (6). पार्श्वशूल/फुस्फुस के आवरण में शोथ से बचाव के लिए आपको 3 अथवा 4 रत्ती का माणिक और 5 या 7 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
 - (7). फेफड़े से संबंधित रोग से बचने के लिए आपको 10 या 16 रत्ती का मोती और 5 या 7 रत्ती का पीलापुखराज धारण करना चाहिए।
 - (8). तपेदिक/क्षय रोग से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा, गोमेद और मोती धारण करना चाहिए।
 - (9). क्षय रोग से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
 - (10). क्षय रोग से बचने के लिए आपको कनिष्ठा में 4 रत्ती का नीलम धारण करना चाहिए।
 - (11). लाल मूंगा साढ़े सात रत्ती, पीला पुखराज पांच रत्ती, पन्ना पांच रत्ती का धारण करें।

क्षय रोग (टी. बी.) से संबंधित विकार के लिए लाल किताब के उपाय

यदि आप तपेदिक या अस्थमा बीमारी से पीड़ित हैं, तो आप शीर्षासन, सिद्धासन या भुजंगासन

करें।

इस रोग के उपचार के लिए शिव सहस्र नाम एवं रुद्र सूक्त का जाप करना चाहिए। अग्नि एवं चन्द्रमा के मंत्र से हवन करना लाभदायक होता है।

मंगल यंत्र का नित्य पूजन करें।

वस्त्रों में किसी भी प्रकार से लाल रंग का यथासंभव समावेश रखें।

क्षय रोग (टी. बी.) से संबंधित विकार के लिए रुद्राक्ष का सुझाव

एक मुखी रुद्राक्ष सूर्य के द्वारा शासित होता है तथा अस्थमा, टी बी, लकवा, घात, दिल से संबंधित बीमारियां, मानसिक रोग, आंखों से संबंधित परेशानियां, हड्डियों में दर्द एवं सिर-दर्द आदि जैसे रोगों को दूर करने के लिए उपाय के तौर पर धारण किया जाता है।

सोलह मुखी रुद्राक्ष टी बी, लकवा एवं धन से संबंधित समस्याओं को दूर करने में मददगार होता है।

क्षय रोग (टी. बी.) से संबंधित विकार के लिए आर्युवेदिक उपचार

शाम के समय 250 ग्राम दूध में एक छुहारा भिंगों दें। रात में सोने से पहले छुहारे को इसी दूध में अच्छी तरह उबाल लें। फिर उसकी गुठली को निकालकर छुहारे को अच्छी तरह से चबाकर खा लें और उपर सेचीनी मिलाकर दूध पी लें। टी बी की बीमारी में सुबह-शाम छुहारा दूध के साथ लेने से फेफड़ों में बहुत शक्ति मिलती है।

लहसुन की दो कली छीलकर बारीक पीस लें। इसे 250 ग्राम दूध में डालकर उबालें। जब खीर की तरह गाढ़ा हो जाये तो दूध को उतारकर पीने के लायक ठण्डा कर लें। रोजाना सुबह में या रात में सोते समयदिन में एक बार इसका सेवन करें। महीने दो महीने इसका सेवन करने से फेफड़े का क्षयरोग ठीक हो जाता है।

पीपल के वृक्ष की 10 ग्राम छाल को बकरी के गर्म दूध के साथ पीसकर रोजाना सेवन करने से तपेदिक रोग दूर होता है।

मक्खन, शहद और शक्कर खाना क्षयरोग में बहुत लाभदायक होता है।

आधा ग्राम कोयले की सफेद राख मक्खन, मलाई या दूध के साथ सुबह-शाम खाने से खून की उल्टी तकबंद हो जाती है।

स्वस्थ एवं दुधारु काली गाय का दूध दिन में दस बार 10-10 या 20-20 ग्राम 21 दिनों तक रोजाना सेवनकरें।

हृदय से संबंधित विकार के कारण और विविध उपाय



हृदय से संबंधित विकार से संबंधित कुण्डली में उपस्थित योग

आपकी कुण्डली में छठे भाव का स्वामी पाप ग्रहों के साथ स्थित है और शुभ ग्रह कूर ग्रहों के साथ स्थित है या उनसे दृष्ट है, आपको अचानक दिल में घबराहट या बेचैनी हो सकती है।

आपकी कुण्डली में तीसरे भाव का स्वामी केतु के साथ स्थित है, आप हृदय रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में तीसरे भाव का स्वामी राहु या केतु के साथ स्थित है, आप हृदय रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में शनि आठवें भाव में स्थित है, आप हृदय रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में पांचवें भाव के स्वामी का नवांशपति किसी पाप ग्रह के साथ स्थित हैं या उससे दृष्ट है, आप कठोर स्वभाव वाले हो सकते हैं और आप हृदय से संबंधित बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं।

हृदय से संबंधित विकार के लिए रत्न और उपरत्न का सुझाव

- (1). अजीब वस्तुओं या विषयों से संबंधित सपने बार-बार आने पर आपको 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा और 9 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (2). यदि आप वातोन्याद/मूर्छा (हिस्टीरिया) रोग से पीड़ित हैं, तो आपको 7 या 9 रत्ती का मोती, 14 या 18 रत्ती का लाल मूंगा और 12 या 16 रत्ती का चंद्र रत्न धारण करना चाहिए।
- (3). मिर्गी से पीड़ित होने पर आपको उपचार हेतु पन्ना, मोती और मूंगा एक साथ धारण करना चाहिए।
- (4). अत्यधिक तनावग्रस्त होने के कारण मानसिक असंतुलन की स्थिति उत्पन्न होने पर आपको 4 या 8 रत्ती का पन्ना और 16 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न धारण करना चाहिए।
- (5). यदि आप आनुवांशिक मानसिक असंतुलन से पीड़ित हैं, तो आपको 24 या 30 रत्ती का चंद्र रत्न और 12 या 14 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

चाहिए।

- (6). मणिक्य, मोती तथा पन्ना पहनें।
- (7). अनिद्रा से छुटकारा पाने के लिए आपको पन्ना, पुखराज और मोती धारण करना चाहिए।
- (8). शिराप्रदाह से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (9). स्मरण शक्ति कमजोर होने पर आपको 5 या 7 रत्ती का पन्ना, 4 या 6 रत्ती का लहसुनिया और 12 18 रत्ती का चंद्र रत्न अथवा 7 या 9 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (10). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए पन्ना, चंद्ररत्न, लाल मूंगा और पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (11). अनिद्रा से निजात पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का चंद्ररत्न धारण करना चाहिए।
- (12). यदि आप शराब पीने के आदी हैं, तो आपको इससे छुटकारा पाने के लिए 14 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न और 9 या 14 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए।
- (13). सिरदर्द से बचने के लिए आपको 4 या 5 रत्ती का माणिक अथवा 20 या 24 का माणिक का उपरत्न धारण करना चाहिए।
- (14). मानसिक विकार से बचने के लिए आपको 16 या 24 रत्ती का चंद्र रत्न और 6 या 8 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (15). मिरगी/वातोन्माद से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा और मोती धारण करना चाहिए।
- (16). यदि आपको मिरगी का दौरा पड़ता है, तो आपको इससे बचने के लिए 18 या 14 रत्ती का चंद्र रत्न, 10 या 14 रत्ती का सफेद मोती और 1 या 2 रत्ती का हीरा अथवा 4 या 5 रत्ती का जरकन धारण करना चाहिए।
- (17). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का पीला पुखराज और 5 या 6 रत्ती का चंद्ररत्न धारण करना चाहिए।
- (18). अनिद्रा से निजात पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का पन्ना, अनामिका में 5 रत्ती का पीला पुखराज और तर्जनी में 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (19). अनिद्रा से निजात पाने के लिए 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।
- (20). आलस्य या उदासीनता से संबंधित रोग से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का मोती और 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (21). यदि आप पागलपन में बेहोशी (हिस्टीरीकल इन्सैनिटी) से पीड़ित हैं, तो आपको 20 या 25 रत्ती का

चंद्र रत्न और 1 या 2 रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।

(22). मिरगी/लकवा से पीड़ित होने पर आपको साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(23). मिर्गी से बचने के लिए पन्ना, 6 रत्ती का चंद्ररत्न और 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(24). भूलने की बीमारी से निजात पाने के लिए आपको 5 रत्ती का लाल मूंगा और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(25). अनिद्रा से निजात पाने के लिए 10 या 12 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(26). नवरत्न का पेंडल गले में पहनना भी लाभदायक होगा।

(27). नीलम या पुखराज चांदी अथवा तांबे की अंगूठी में पहनें।

(28). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए पन्ना, नीलम, और सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(29). स्थायी सिरदर्द से छुटकारा पाने के लिए आप पन्ना और मोती धारण कर सकते/सकती हैं।

(30). श्लैष्मिक ज्वर से बचने के लिए 5 रत्ती का लाल मूंगा और 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(31). यदि आप विषाद रोग से ग्रसित हैं, तो आपको 5 या 8 रत्ती का नीलम और 5 या 7 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।

(32). मिर्गी से बचने के लिए 5 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का नीलम और 5 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(33). मिर्गी से बचने के लिए पन्ना और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(1). मस्तिष्क विकार – मूनस्टोन, पीला पुखराज तथा पन्ना धारण करने से मानसिक शांति मिलती है। लालमूंगा धारण करना भी लाभदायक होता है।

(2). स्मृति दोष – मोती या माणिक्य गले में धारण करें। एक हाथ में 6 रत्ती का पन्ना तथा दूसरे में 9 रत्ती का मूंगा चांदी की अंगूठी में पहनें। चांदी, सोना, तांबा मिश्रित धातु का कड़ा पहनना भी लाभदायक होगा।

(3). मस्तिष्क के ट्यूमर से निजात पाने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 6 रत्ती का सफेद मोती और 4 रत्ती का नीलम या लाजावर्द धारण करना चाहिए, अथवा पन्ना, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 6 रत्ती का चंद्ररत्न या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(4). परागज-ज्वर (हे-फीवर) से बचने के लिए आपको 9 या 16 रत्ती का गोमेद और 5 या 7 रत्ती का पन्ना धारण करना

चाहिए।

(5). यदि आप रोगभ्रम/चिन्तोन्माद (हॉइपोकांड्रिया) से ग्रसित हैं, तो आपको 7 या 8 रत्ती का नीलम और 5 या 7 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(6). मिरगी – 1 – 6 रत्ती मोती या 5 रत्ती पन्ना या 12 रत्ती सफेद मोती धारण करें।
2 – पन्ना और मूनस्टोन धारण करें। लग्न के स्वामी का रत्न धारण करना शुभ फलदायक होगा।

(7). प्रमस्तिष्कीय रक्तस्राव – 1 – लग्न के स्वामी का रत्न धारण करें।
2 – 7-8 रत्ती का लाल मूंगा तथा मूनस्टोन या सफेद मोती चांदी में धारण करें।
3 – एक त्रिकोण पेण्डेण्ट में लग्न के स्वामी का रत्न, मूंगा तथा पुखराज जड़वायें, जिसमें माणिक्य बीच में हो, इस प्रकार का पेण्डेण्ट धारण करने से इस रोग का प्रभाव कम हो सकता है।

(8). मस्तिष्कावरण शोथ से बचने के लिए आपको लाल मूंगा, पुखराज, पन्ना और माणिक धारण करना चाहिए।

(9). मस्तिष्क में तंत्रिकाओं के गड़बड़ी से सिरदर्द होने पर आपको 5 या 6 रत्ती का पीला पुखराज और 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(10). पागलपन या विक्षिप्तता से ग्रसित होने पर इसके उपचार हेतु आपको पन्ना, लाल मूंगा, मोती धारण करना चाहिए। इससे रोग का प्रभाव कम होगा।

(11). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए आपको 10 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(12). मस्तिष्क में गांठ, सूजन और फोड़ा होने पर आपको उसके उपचार हेतु पन्ना, पुखराज और मूंगा धारण करना चाहिए।

(13). यदि आप प्रमस्तिष्क घनास्त्रता रोग से पीड़ित हैं, तो आपको 3 रत्ती का माणिक अथवा 18 या 24 रत्ती का माणिक का उपरत्न, 10 या 12 रत्ती का मोती तथा 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(14). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 3 रत्ती का माणिक और 4 रत्ती नीलम धारण करना चाहिए। गर्मी के महीनों में रात के समय लाल मूंगा और माणिक धारण नहीं करना चाहिए।

(15). पागलपन – 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का पीला पुखराज एवं 4 रत्ती का मोती धारण करें।

(16). कमजोर स्मरण शक्ति या भूलने की बीमारी से बचने के लिए आपको 7 या 9 रत्ती का लाल मूंगा और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(17). मस्तिष्क ज्वर – लाल मूंगा, पीला पुखराज तथा पन्ना धारण करना लाभदायक साबित होगा।

(18). मस्तिष्क संबंधित रोग – 1 – लग्न के स्वामी, सूर्य एवं चन्द्रमा को उनसे संबंधित रत्न धारण करा कर बलशाली बनायें।

2 – लग्न के स्वामी, सूर्य एवं चंद्रमा का कवच पाठ करें तथा इनसे संबंधित यंत्र धारण करें।

- 3 – एक ही अंगूठी अथवा पेण्डेंट में लाल मूंगा तथा पन्ना धारण करें।
- 4 – लाल मूंगा एवं पीला पुखराज या पन्ना एवं चन्द्रकान्त एक साथ मिलाकर धारण करें।
- 5 – पन्ना एवं चन्द्रकान्त एक साथ धारण करें।
- 6 – मूंगा एवं मोती धारण करें, लाभदायक फल प्राप्त होगा।
- 7 – लाल मूंगा एवं पन्ना एक साथ धारण करना लाभदायक सिद्ध होता है।

(19). मस्तिष्कीय रक्तस्राव होने पर आपको मंगल के लिए लाल मूंगा, बुध के लिए पन्ना, और चंद्रमा के लिए मोती धारण करना चाहिए। साथ ही उचित औषधि लेने पर आपको शीघ्र उत्तम परिणाम प्राप्त होगा।

(20). मस्तिष्क संबंधी रोगों से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का पन्ना, 14 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न तथा 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(21). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(22). मूर्च्छा – 5 रत्ती पन्ना, 4 रत्ती नीलम एवं 5 रत्ती मोती धारण करें।

(23). अनिद्रा – फिरोजा, जिरकॉन, श्वेत ओपल तथा मोती धारण करना लाभदायक होता है। बारहवें भाव के स्वामी का रत्न धारण करना भी शुभ फलदायक होगा। पीला पुखराज भी धारण किया जा सकता है।

(1). मोतियाबिंद से छुटकारा पाने के लिए 3 या 4 रत्ती का माणिक और 5 या 6 रत्ती का पन्ना और 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती एक साथ धारण करना चाहिए। यदि संभव हो तो आधा रत्ती का हीरा बाएं हाथ में धारण करना चाहिए।

(2). 10 या 12 रत्ती का माणिक्य अनामिका अंगुली में शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन धारण करें।

(3). दूर दृष्टि दोष को दूर करने के लिए पन्ना, माणिक और सफेद मोती धारण करना चाहिए। यदि संभव हो तो आधा रत्ती का हीरा बाएं हाथ में धारण किया जा सकता है। माणिक के स्थान पर लाल मूंगा धारण किया जा सकता है।

(4). यदि जन्म के बाद नेत्र हानि होती है अथवा दृष्टिहीनता का उपचार संभव है, तो दृष्टिहीनता अथवा कमजोर दृष्टि से बचने के लिए आप माणिक और मोती धारण कर सकते हैं।

(5). मोतियाबिन्द – पन्ना को आंखों की ज्योति में वृद्धि करने में सहायक माना जाता है और मोती को खोई नेत्र ज्योति प्राप्त करने में सहायक। रोग के उपचार के दौरान माणिक्य धारण करें। गर्मियों में माणिक्य के स्थान पर लाल मूंगा पहनें। मूंगा, मोती तथा पन्ना 3–3 रत्ती प्रत्येक के हिसाब से एक साथ अंगूठी में जड़वाकर या पेण्डेंट में धारण करें, लाभ होगा।

(6). निकट दृष्टि से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का माणिक और 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए। माणिक के स्थान पर लाल मूंगा धारण किया जा सकता है।

(7). आंख आने से मुक्ति पाने के लिए मध्यमिका उंगली में 4 या 5 रत्ती का चंद्ररत्न अथवा कनिष्ठा में 3 या 4 रत्ती का नीलम धारण करना

चाहिए।

(8). यदि आप आंखों की बीमारी से पीड़ित हैं, तो आपको एक्वामेरीन एवं पैरीडोट रत्न धारण करना चाहिए। इससे आपको जल्द स्वस्थ होने में मदद मिलेगी।

(9). नेत्र संबंधी रोगों से बचने के लिए आपको 3 या 5 रत्ती का माणिक और 7 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।

(10). नेत्रशोथ – इस रोग के प्रभाव को कम करने के लिए पन्ना धारण करें। इसके अलावा मूनस्टोन, ओपल, जिरकॉन धारण करने से भी नेत्र रोगों में काफी लाभ होता है।

(11). आंख आना/नेत्रश्लेष्मलाशोथ से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा एवं लाल वस्त्र धारण चाहिए।

(12). अंधापन – सफेद मोती, मूनस्टोन तथा मूंगा धारण करना लाभदायक होगा।

(13). वर्णाधता – लाल माणिक्य अथवा मूंगे के साथ मोती धारण करना वर्णाधता में बहुत लाभदायक होता है।

(14). कमजोर दृष्टि अथवा नेत्र से संबंधित रोगों से बचाव के लिए आपको 10 अथवा 14 रत्ती का मूंगा और 9 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।

(15). वृद्धावस्था का दूर दृष्टि दोष से निजात पाने के लिए पन्ना, माणिक, सफेद मोती और लाल मूंगा संयुक्त रूप से धारण करना चाहिए। लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना सर्वाधिक उपयोगी होगा।

(16). रतौंधी से छुटकारा पाने के लिए लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(17). वर्णान्धता से निजात पाने के लिए पन्ना, लाल मूंगा, सफेद मोती व हीरा धारण करना चाहिए।

(18). दृष्टिवैषम्यता को दूर करने के लिए लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना उपयोगी होगा।

(1). बहरापन से बचने के लिए आपको 9 रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पन्ना, नीलम, पुखराज धारण करना चाहिए।

(1). स्फटिक, मोती तथा मूनस्टोन धारण करें। लाल कपड़ा या लाल धागा अवश्य पहनें। तांबे की अंगूठी में मूंगा पहनने से मुख (मुँह) से संबंधित विकार का प्रभाव कम हो जाता है।

(2). मुंहासे/फुंसी से छुटकारा पाने के लिए आपको 7 या 9 रत्ती का सफेद मूंगा मध्यमिका में धारण करना चाहिए।

(3). चांदी की अंगूठी में 8 या 10 रत्ती का सफेद मूंगा अथवा 4 से 10 रत्ती का मोती मध्यमा अंगुली में पहनें, साथ ही छोटी अंगुली में लाजवर्त पहनें। यदि मूंगा अनुकूल न आये तो केवल चांदी की अंगूठी ही धारण करें। इससे मुख (मुँह) से संबंधित विकार का प्रभाव कम हो जाता है।

(4). दांतों में कीड़े या दर्द होने पर – सफेद या लाल मूंगा पहनना लाभदायक

होगा।

(5). यदि आप मुंहासे से ग्रसित हैं, तो आपको ऐमेथीस्ट रत्न धारण करना चाहिए। इससे आपको जल्द स्वस्थ होने में मदद मिलेगी।

(6). मूनस्टोन तथा पीला गोमेद धारण करना लाभकारी होगा। पुखराज तथा मोती पहनना भी शुभ फलदायक है। इससे मुख (मुँह) से संबंधित विकार का प्रभाव कम हो जाता है।

(1). मूनस्टोन तथा पीला गोमेद धारण करना लाभकारी होगा। पुखराज तथा मोती पहनना भी दांतों के रोगमें शुभ फलदायक है।

(2). दांतों से संबंधित रोगों से बचने के लिए आपको 4 या 7 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(3). लाल या सफेद मूंगा, पुखराज पहनना भी दांतों के दर्द में लाभकारी साबित होता है।

(1). सोने या चांदी की अंगूठी में पुखराज या सुनैला धारण करें। शुद्ध मूंगा 5 रत्ती का चांदी में मढ़वाकर अनामिका में धारण करें। मूंगा या पुखराज का पैंडल जंजीर में डालकर गले में पहन सकते हैं।

(2). स्वराघात से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(3). कण्ठशालक रोग से बचने के लिए आपको 5 रत्ती का लाल मूंगा अनामिका में और 5 रत्ती का पीला पुखराज तर्जनी में धारण करना चाहिए।

(4). गले/कण्ठ से संबंधित विकार से मुक्ति के लिए आभूषण दान करना चाहिए।

(5). वाणी में अत्यधिक कर्कशता होने पर इससे बचने के लिए आपको 9 या 10 रत्ती का मोती और 3 या 5 रत्ती का माणिक धारण करना चाहिए।

(6). कंठ में सूजन होने पर आपको 5 रत्ती का लाल मूंगा अनामिका में धारण करना चाहिए।

(7). यदि आप डिप्थिरिया (कंठ का एक संक्रामक रोग) से पीड़ित हैं, तो आपको 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा और 7 या 12 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए।

(8). गर्दन में असहनीय दर्द से बचने के लिए आपको 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा और 1 या 2 रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।

(9). गले से संबंधित रोगों से बचाव के लिए आपको 12 अथवा 16 रत्ती का चंद्ररत्न और आधा रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।

(10). गंडमाला रोग से बचने के लिए आपको साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(11). गले से संबंधित रोग से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा धारण करना

चाहिए।

- (1). कूकर खांसी – मरकत अथवा पेरीडॉट पहनना लाभदायक होगा।
- (2). महिला – अस्थमा रोग से मुक्ति पाने के लिए 10 या 12 रत्ती का सफेद मोती बायें हाथ के दो उंगलियों अनामिका और कनिष्ठा में धारण करना चाहिए।
- (3). दमा – नवधातु में काला अथवा लाल अकीक धारण करें। सोने या चांदी में 8–9 रत्ती का लाल मूंगा तथा 3 से 5 रत्ती का गोमेद अष्टधातु में धारण करना लाभदायक होगा।
- (4). अस्थमा से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 5 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए। 4 रत्ती का लाल मूंगा दिन के समय में धारण किया जा सकता है, किन्तु इसे सोने जाने से पहले निकाल देना चाहिए। लाल मूंगा को रात के समय निकालने के बाद घोड़े की नाल की अंगूठी मध्यमिका में धारण करना बहुत उपयोगी रहेगा। इससे रात में अच्छी नींद आयेगी।
- (5). श्वसन प्रणाली से संबंधित रोगों से बचने के लिए आपको 8 या 9 रत्ती का पीला मोती और 7 या 8 रत्ती का नीलम अथवा 18 या 24 रत्ती का जमुनिया धारण करना चाहिए।
- (6). फुफ्फुसआवरणशोथ से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पन्ना और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (7). पुरुष – अस्थमा रोग से मुक्ति पाने के लिए 4 या 5 रत्ती का पन्ना और सफेद मोती तथा 4 रत्ती का नीलम कनिष्ठा में धारण करना चाहिए। नीलम के स्थान पर लाजावर्द धारण किया जा सकता है। सर्दी के मौसम में 4 रत्ती का लाल मूंगा अतिरिक्त रत्न के रूप में धारण किया जा सकता है।
- (8). महिला – शीतज्वर से बचने के लिए आपको 4 या 6 रत्ती का नीलम, 4 या 7 रत्ती का पन्ना और 10 या 16 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए।
- (9). अस्थमा रोग से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का पीला पुखराज, 14 या 16 रत्ती का चंद्र रत्न और 7 या 9 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (10). पुरुष – अस्थमा रोग से मुक्ति पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का पन्ना व 5 रत्ती का चंद्र रत्न और अनामिका में 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (11). इनफ्लूएंजा – लाल मूंगा और पीला पुखराज धारण करना लाभदायक होता है। यदि बार–बार रोग हो रहा है तो काला हकीक, माणिक्य तथा सूर्यकान्त मणि एक साथ लॉकेट में डाल कर गले में धारण करें।
- (12). न्यूमोनिया से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (13). महिला – हिचकी से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा अनामिका में और 5 रत्ती का गोमेद मध्यमिका में धारण करना

चाहिए।

(14). अस्थमा से पीड़ित होने पर आपको 6 रत्ती का लाल पन्ना, 5 रत्ती का पुखराज और 6 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए। 7 वर्ष की आयु तक के बच्चे चांदी में जड़ित चंद्र रत्न धारण कर सकते हैं।

(15). शीतला रोग से बचने के लिए आपको लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(16). निमोनिया – इस रोग में लाल मूंगा तथा पीला पुखराज धारण करना शुभ फलदायक होता है।

(1). शीत ज्वर – 7–8 रत्ती का माणिक्य चांदी की अंगूठी में धारण करें। मंगल की शान्ति के लिये तांबे का कड़ा, अंगूठी या कोई अन्य आभूषण धारण करें।

(2). क्षय रोग से पीड़ित होने पर आपको 7 या 9 रत्ती का लाल मूंगा तथा 5 रत्ती का पुखराज धारण करना चाहिए।

(3). पीला पुखराज, सफेद मोती या लाल मूंगा धारण कर रोग का प्रभाव कम किया जा सकता है।

(4). तपेदिक से बचने के लिए 5 रत्ती का पन्ना, साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(5). तपेदिक रोग से बचने के लिए आपको 7 या 8 रत्ती का नीलम और 10 या 16 रत्ती का चंद्र रत्न अथवा 7 या 9 रत्ती का सफेद मोती और 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा तथा 4 या 7 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(6). पार्श्वशूल/फुस्फुस के आवरण में शोथ से बचाव के लिए आपको 3 अथवा 4 रत्ती का माणिक और 5 या 7 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(7). फेफड़े से संबंधित रोग से बचने के लिए आपको 10 या 16 रत्ती का मोती और 5 या 7 रत्ती का पीलापुखराज धारण करना चाहिए।

(8). तपेदिक/क्षय रोग से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा, गोमेद और मोती धारण करना चाहिए।

(9). क्षय रोग से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(10). क्षय रोग से बचने के लिए आपको कनिष्ठा में 4 रत्ती का नीलम धारण करना चाहिए।

(11). लाल मूंगा साढ़े सात रत्ती, पीला पुखराज पांच रत्ती, पन्ना पांच रत्ती का धारण करें।

(1). तांबे की अंगूठी या माणिक्य रविवार को पुष्य नक्षत्र में सूर्योदय के समय अनामिका अंगुली में धारण करें।

(2). हृदय से संबंधित रोगों से बचने के लिए आपको 9 या 12 रत्ती का मोती और 12 या 14 रत्ती का लालमूंगा धारण करना

चाहिए।

- (3). हृदय रोग का कारक ग्रह राहु है, उसकी शांति के लिए दान, जप, व्रत एवं तांत्रिक टोटके का सहारा लें।
- (4). मूंगा एवं पुखराज धारण करें। यदि फायदा न हो तो मोती और पन्ना धारण करें, निश्चित रूप से लाभहोगा।
- (5). हृदय विकार से पीड़ित होने पर उपचार हेतु आपको पन्ना, मोती, पुखराज और लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (6). पांचवें भाव के स्वामी या चौथे भाव के स्वामी जो भी कारक ग्रह हैं, उन्हें एवं सूर्य को उनका रत्न धारण करके शक्तिशाली बनायें।
- (7). लग्न के स्वामी का रत्न धारण करके स्वामी को शक्तिशाली बनायें।
- (8). यदि आप हृदय की बीमारी से ग्रसित हैं, तो आपको बेरील, हेमेटाईट एवं ओनेक्स रत्न धारण करना चाहिए। इससे आपको स्वस्थ हाने में जल्द मदद मिलेगी।

हृदय से संबंधित विकार के लिए टोटके

जिन लोगों को दिल का दौरा एक-दो बार पहले भी पड़ चुका हो, वे निम्न प्रयोग करें। एक पांचमुखी रुद्राक्ष, एक लाल रंग का हकीक, सात साबुत 'डंठल युक्त' लाल मिर्च को आधा गज लाल कपड़े में रख कर व्यक्ति के उपर से 21 बार उसार लें तथा किसी नदी, या बहते पानी में प्रवाहित कर दें। लाभ प्राप्त होगा।

सूर्य भगवान का प्रतिदिन ध्यान करना, सूर्य पर जल चढ़ाना, आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करना भी हृदय रोग में लाभ देते हैं।

दक्षिण की तरफ पैर करके सोने से हृदय तथा मस्तिष्क की बीमारियां पैदा होती हैं। इसलिए दक्षिण की ओर पैर करके नहीं सोना चाहिए।

हृदय से संबंधित विकार के लिए लाल किताब के उपाय

सूर्याष्टक का पाठ करें, रविवार का व्रत रखें तथा प्रतिदिन सूर्य नमस्कार करें।

आदित्यहृदयस्तोत्र का पाठ करें। पौराणिक या तान्त्रिक मंत्र का प्रतिदिन 108 बार जाप करें।

सूर्य से संबंधित वस्तुओं का दान करें।

पिता का आदर-सम्मान करें तथा रोज सुबह उनके पैर छूकर आशीर्वाद

लें।

हृदय-रोग को दूर करने के लिए अश्वगन्धा एवं त्रिकुट का प्रयोग करें। गेहूं से बने खाद्य पदार्थ, चाय एवं कॉफी आदि का सेवन करें।

हृदय की बीमारी को दूर करने के लिए च्यवनप्राश, लहसुन, तुलसी, भृंगराज, बकरी या गाय का दूध, चीज, चावल का सेवन करें।

यदि आप हृदय की बीमारी से पीड़ित हैं, तो आपको प्रातः काल में राग देवगिरी सुनना चाहिए।

ललिता स्तोत्र/सहस्रनाम का रोजाना पाठ करना लाभदायक होता है। हृदये ललिता देवी का जप करें। इससे हृदय रोग में राहत मिलती है।

रोजाना आदित्य हृदय स्तोत्र का एक पाठ करें।

नृसिंह मंत्र/पाशुपतास्त्रस्तोत्र मंत्र का रोजाना 11 माला का जप करें।

शतचण्डी का पाठ करें।

महामृत्युंजय या मृतसंजीवनी का पाठ करें।

उच्च रक्तचाप होने पर भागवतपुराण का पाठ एवं सूर्यसूक्त का पाठ करना लाभदायक होता है।

श्री दुर्गा जी के सामने शुद्ध घी का दीया जलाकर रुद्राक्ष या स्फटिक के माला द्वारा रोजाना 'ॐ ललितादेवीभ्यां नमः' का पाठ करें।

यदि सूर्य पूर्ण मारकेश ग्रह है, तो शांत करने के लिए संकल्प करके महामृत्युंजय मंत्र का चार लाख अनुष्ठान के द्वारा जप करें।

दो प्रजापत्य व्रत करना लाभदायक होता है।

हृदय से संबंधित विकार के लिए रुद्राक्ष का सुझाव

हृदय रोग में सोमवार के दिन पांचमुखी असली रुद्राक्ष काले डोरे में पहनना चाहिए।

एक मुखी रुद्राक्ष सूर्य के द्वारा शासित होता है तथा अस्थमा, टी बी, लकवा, घात, दिल से संबंधित बीमारियां, मानसिक रोग, आंखों से संबंधित परेशानियां, हड्डियों में दर्द एवं सिर-दर्द आदि जैसे रोगों को दूर करने के लिए उपाय के तौर पर धारण किया जाता है।

बारह मुखी रुद्राक्ष गैस से परेशान व्यक्तियों के लिए अनुकूल होता है तथा साथ ही में दिल, फेफड़े एवं चमड़े से संबंधित परेशानियों में बारह मुखी रुद्राक्ष धारण करना अनुकूल होता है।

जो व्यक्ति दिल, लीवर, किडनी पैर, जंघा, कान, रक्तचाप, तनाव, मधुमेह एवं रीढ़ की हड्डी की समस्या

से ग्रसित होते हैं, उनके लिए पांच मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभदायक होता है।

जो व्यक्ति सिर—दर्द, दायीं आंख में परेशानी या हृदय रोग से ग्रसित होते हैं, उनके लिए एक मुखी रुद्राक्ष धारण करना शुभ फलदायक होता है।

चौदह मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

हृदय से संबंधित विकार के लिए आर्युवेदिक उपचार

मौसम्बी का रोजाना सेवन करने से या नींबू को जरूरत के हिसाब से सेवन करने से हार्ट फेल का भय नहीं होता है। क्योंकि इससे रक्तवाहिनियों में कोलेस्ट्रॉल जमा नहीं होता है।

10 ग्राम अर्जुन की छाल, 10 ग्राम गुड़ और 50 ग्राम दूध लें। अर्जुन की छाल के चूर्ण को दूध में डालकर पकायें तथा गुड़ मिलाकर पीयें। इससे हृदय की सारी बीमारियां एवं विकार दूर हो जाते हैं।

अर्जुन की 12 ग्राम छाल को गाय के 250 ग्राम दूध और उतनी ही मात्रा में पानी मिलाकर उसमें उबाल लें। जब यह आधा रह जाये तो इस दूध में दस ग्राम मिश्री मिला लें। पीने के लायक ठंडा होने पर इसे छानकर पी लें। इससे हृदय से संबंधित सारी बीमारियां दूर होती हैं।

अखरोट की तीन—चार गिरी खाने से हृदय रोग में लाभ होता है।

गुड़ एवं देशी घी एक साथ मिलाकर पीने से हृदय की शक्ति में बढ़ोतरी होती है।

दिल का दौरा पड़ते ही लहसुन की चार कलियों को छीलकर चबाने से हृदय फेल नहीं होगा। दौरा ठीक हो जाने के बाद रोजाना कुछ दिनों तक लहसुन की दो कलियों को छीलकर दूध में उबालकर लें। नंगे पैरघूमने—फिरने से अक्सर रक्तचाप की परेशानी नहीं होती है।

आंवले का मुरब्बा चांदी के वर्क में लपेटकर कुछ दिनों तक सेवन करने से हृदय संबंधित रोग में लाभ होता है।

सूखे आंवले को अच्छी तरह से बारीक पीस लें और उसमें उतनी ही मात्रा में मिश्री पीसकर किसी कांच के बर्तन में रख लें। रोजाना सुबह खाली पेट में दो चम्मच चूर्ण को पानी के साथ सेवन करने से कुछ ही दिनों में हृदय से संबंधित सारी बीमारियां ठीक हो जाती हैं।

तम्बाकू सूंघने से छाती में दर्द की शिकायत में आराम मिलता है।

पारस पीपली की छाल के बीच वाले भाग को पानी में घिसकर छाती पर लगाने से हृदय का दर्द ठीक हो जाता है।

हार्ट अटैक के समय गरम चाय या गरम दूध पीना फायदेमंद रहता है। ध्यान रहे, इस समय ठण्डी चीजों का सेवन करना नुकसानदेह होता है।

पीपल के कोमल पत्तों के दो कपोलों का रस 6—10 ग्राम तक निकाल लें। इसमें शहद मिलाकर पीने से

हृदय का दर्द ठीक होता है एवं हृदय मजबूत बनता है।

लहसुन को दूध में पकाकर सेवन करने से हृदय रोग में लाभ होता है।

मिश्री एवं सूखा आंवला 50–50 ग्राम एक साथ मिलाकर पीस लें। इस चूर्ण को 6 ग्राम दिन में एक बार पानी के साथ लेने से हृदय की धड़कन ठीक रहती है तथा शरीर के अन्य विकार भी दूर होते हैं।

अर्जुन के ताजे छाल को छाया में सूखाकर उसका चूर्ण बनाकर रख लें। 250 ग्राम दूध में 250 ग्राम पानी मिलाकर हल्की आंच पर रख दें। फिर उसमें एक चाय की चम्मच अर्जुन की छाल का चूर्ण डालकर उबालें। जब यह सूखकर आधा रह जाये यानि कि केवल दूध बच जाये तो इसे आंच पर से उतार लें। जब यह पीने के लायक ठंडा हो जाये तो छानकर रोगग्रस्त व्यक्ति को पिलायें। ऐसा करने से हृदय के सारी बीमारियां दूर होती हैं तथा हार्ट अटैक से भी बचाव होता है। देसी गाय के दूध का उपयोग करना ज्यादा फायदेमंद होता है।

अनार के ताजा पत्ते 250 ग्राम पानी में घोंटकर छान लें। इस रस का सुबह–शाम सेवन करने से दिल की धड़कन शांत हो जाती है।

गाजर के मुरब्बे का सेवन करने से दिल की धड़कन में बहुत फायदा होता है।

रक्त (खून)से संबंधित विकार के कारण और विविध उपाय



रक्त (खून)से संबंधित विकार से संबंधित कुण्डली में उपस्थित योग

आपकी कुण्डली में दूसरे भाव का स्वामी चौथे, छठे या आठवें भाव में मंगल के साथ स्थित है या उससे दृष्ट है, आपको रक्त–संबंधित रोग हो सकता है।

आपकी कुण्डली में मंगल या चन्द्रमा नीच राशि में, अस्त या शत्रु राशि में अशुभ स्थिति में है, आप रक्त–संबंधित रोग के शिकार हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा और मंगल किसी त्रिक भाव में स्थित हैं या उसके स्वामी हैं, आप रक्त–चाप रोग से ग्रसित हो सकते

हैं।

आपकी कुण्डली में गुरु एवं शनि एक साथ स्थित हैं या एक-दूसरे पर अपनी दृष्टि डाल रहे हैं और अशुभस्थिति में हैं, आप निम्न रक्त-चाप से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में छठे, सातवें, लग्न या व्यय भाव में शनि के साथ मंगल स्थित है और उस पर सूर्य की दृष्टि पड़ रही है, आपको रक्त विकार से संबंधित बीमारी जैसे रक्तचाप, रक्तपात या खून की कमी हो सकती है।

रक्त (खून)से संबंधित विकार के लिए रत्न और उपरत्न का सुझाव

- (1). अजीब वस्तुओं या विषयों से संबंधित सपने बार-बार आने पर आपको 14 या 16 रत्नी का लाल मूंगा और 9 या 10 रत्नी का मोती धारण करना चाहिए।
- (2). यदि आप वातोन्माद/मूर्छा (हिस्टीरिया) रोग से पीड़ित हैं, तो आपको 7 या 9 रत्नी का मोती, 14 या 18 रत्नी का लाल मूंगा और 12 या 16 रत्नी का चंद्र रत्न धारण करना चाहिए।
- (3). मिर्गी से पीड़ित होने पर आपको उपचार हेतु पन्ना, मोती और मूंगा एक साथ धारण करना चाहिए।
- (4). अत्यधिक तनावग्रस्त होने के कारण मानसिक असंतुलन की स्थिति उत्पन्न होने पर आपको 4 या 8 रत्नी का पन्ना और 16 या 20 रत्नी का चंद्र रत्न धारण करना चाहिए।
- (5). यदि आप आनुवांशिक मानसिक असंतुलन से पीड़ित हैं, तो आपको 24 या 30 रत्नी का चंद्र रत्न और 12 या 14 रत्नी का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (6). मणिक्य, मोती तथा पन्ना पहनें।
- (7). अनिद्रा से छुटकारा पाने के लिए आपको पन्ना, पुखराज और मोती धारण करना चाहिए।
- (8). शिराप्रदाह से बचने के लिए साढ़े सात रत्नी का लाल मूंगा और 5 रत्नी का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (9). स्मरण शक्ति कमजोर होने पर आपको 5 या 7 रत्नी का पन्ना, 4 या 6 रत्नी का लहसुनिया और 12 या 18 रत्नी का चंद्र रत्न अथवा 7 या 9 रत्नी का मोती धारण करना चाहिए।
- (10). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए पन्ना, चंद्ररत्न, लाल मूंगा और पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (11). अनिद्रा से निजात पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्नी का चंद्ररत्न धारण करना चाहिए।
- (12). यदि आप शराब पीने के आदी हैं, तो आपको इससे छुटकारा पाने के लिए 14 या 20 रत्नी का चंद्र रत्न और 9 या 14 रत्नी का गोमेद धारण करना

चाहिए।

- (13). सिरदर्द से बचने के लिए आपको 4 या 5 रत्ती का माणिक अथवा 20 या 24 का माणिक का उपरत्न धारण करना चाहिए।
- (14). मानसिक विकार से बचने के लिए आपको 16 या 24 रत्ती का चंद्र रत्न और 6 या 8 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (15). मिरगी/वातोन्माद से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा और मोती धारण करना चाहिए।
- (16). यदि आपको मिरगी का दौरा पड़ता है, तो आपको इससे बचने के लिए 18 या 14 रत्ती का चंद्र रत्न, 10 या 14 रत्ती का सफेद मोती और 1 या 2 रत्ती का हीरा अथवा 4 या 5 रत्ती का जरकन धारण करना चाहिए।
- (17). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का पीला पुखराज और 5 या 6 रत्ती का चंद्ररत्न धारण करना चाहिए।
- (18). अनिद्रा से निजात पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का पन्ना, अनामिका में 5 रत्ती का पीला पुखराज और तर्जनी में 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (19). अनिद्रा से निजात पाने के लिए 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।
- (20). आलस्य या उदासीनता से संबंधित रोग से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का मोती और 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (21). यदि आप पागलपन में बेहोशी (हिस्टीरीकल इन्सैनिटी) से पीड़ित हैं, तो आपको 20 या 25 रत्ती का चंद्र रत्न और 1 या 2 रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।
- (22). मिरगी/लकवा से पीड़ित होने पर आपको साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (23). मिर्गी से बचने के लिए पन्ना, 6 रत्ती का चंद्ररत्न और 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (24). भूलने की बीमारी से निजात पाने के लिए आपको 5 रत्ती का लाल मूंगा और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।
- (25). अनिद्रा से निजात पाने के लिए 10 या 12 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (26). नवरत्न का पेंडल गले में पहनना भी लाभदायक होगा।
- (27). नीलम या पुखराज चांदी अथवा तांबे की अंगूठी में पहनें।
- (28). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए पन्ना, नीलम, और सफेद मोती धारण करना

चाहिए।

(29). स्थायी सिरदर्द से छुटकारा पाने के लिए आप पन्ना और मोती धारण कर सकते/सकती हैं।

(30). श्लैष्मिक ज्वर से बचने के लिए 5 रत्ती का लाल मूंगा और 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(31). यदि आप विषाद रोग से ग्रसित हैं, तो आपको 5 या 8 रत्ती का नीलम और 5 या 7 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।

(32). मिर्गी से बचने के लिए 5 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का नीलम और 5 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(33). मिर्गी से बचने के लिए पन्ना और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(1). मस्तिष्क विकार – मूनस्टोन, पीला पुखराज तथा पन्ना धारण करने से मानसिक शांति मिलती है। लालमूंगा धारण करना भी लाभदायक होता है।

(2). स्मृति दोष – मोती या माणिक्य गले में धारण करें। एक हाथ में 6 रत्ती का पन्ना तथा दूसरे में 9 रत्ती का मूंगा चांदी की अंगूठी में पहनें। चांदी, सोना, तांबा मिश्रित धातु का कड़ा पहनना भी लाभदायक होगा।

(3). मस्तिष्क के ट्यूमर से निजात पाने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 6 रत्ती का सफेद मोती और 4 रत्ती का नीलम या लाजावर्द धारण करना चाहिए, अथवा पन्ना, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 6 रत्ती का चंद्ररत्न या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(4). परागज-ज्वर (हे-फीवर) से बचने के लिए आपको 9 या 16 रत्ती का गोमेद और 5 या 7 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(5). यदि आप रोगभ्रम/चिन्तोन्माद (हॉइपोकांड्रिया) से ग्रसित हैं, तो आपको 7 या 8 रत्ती का नीलम और 5 या 7 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(6). मिरगी – 1 – 6 रत्ती मोती या 5 रत्ती पन्ना या 12 रत्ती सफेद मोती धारण करें।
2 – पन्ना और मूनस्टोन धारण करें। लग्न के स्वामी का रत्न धारण करना शुभ फलदायक होगा।

(7). प्रमस्तिष्कीय रक्तस्राव – 1 – लग्न के स्वामी का रत्न धारण करें।
2 – 7-8 रत्ती का लाल मूंगा तथा मूनस्टोन या सफेद मोती चांदी में धारण करें।
3 – एक त्रिकोण पेण्डेण्ट में लग्न के स्वामी का रत्न, मूंगा तथा पुखराज जड़वायें, जिसमें माणिक्य बीच में हो, इस प्रकार का पेण्डेण्ट धारण करने से इस रोग का प्रभाव कम हो सकता है।

(8). मस्तिष्कावरण शोथ से बचने के लिए आपको लाल मूंगा, पुखराज, पन्ना और माणिक धारण करना चाहिए।

(9). मस्तिष्क में तंत्रिकाओं के गड़बड़ी से सिरदर्द होने पर आपको 5 या 6 रत्ती का पीला पुखराज और

14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(10). पागलपन या विक्षिप्तता से ग्रसित होने पर इसके उपचार हेतु आपको पन्ना, लाल मूंगा, मोती धारण करना चाहिए। इससे रोग का प्रभाव कम होगा।

(11). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए आपको 10 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(12). मस्तिष्क में गांठ, सूजन और फोड़ा होने पर आपको उसके उपचार हेतु पन्ना, पुखराज और मूंगा धारण करना चाहिए।

(13). यदि आप प्रमस्तिष्क घनास्त्रता रोग से पीड़ित हैं, तो आपको 3 रत्ती का माणिक अथवा 18 या 24 रत्ती का माणिक का उपरत्न, 10 या 12 रत्ती का मोती तथा 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(14). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 3 रत्ती का माणिक और 4 रत्ती नीलम धारण करना चाहिए। गर्मी के महीनों में रात के समय लाल मूंगा और माणिक धारण नहीं करना चाहिए।

(15). पागलपन – 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का पीला पुखराज एवं 4 रत्ती का मोती धारण करें।

(16). कमजोर स्मरण शक्ति या भूलने की बीमारी से बचने के लिए आपको 7 या 9 रत्ती का लाल मूंगा और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(17). मस्तिष्क ज्वर – लाल मूंगा, पीला पुखराज तथा पन्ना धारण करना लाभदायक साबित होगा।

(18). मस्तिष्क संबंधित रोग – 1 – लग्न के स्वामी, सूर्य एवं चंद्रमा को उनसे संबंधित रत्न धारण करा कर बलशाली बनायें।

2 – लग्न के स्वामी, सूर्य एवं चंद्रमा का कवच पाठ करें तथा इनसे संबंधित यंत्र धारण करें।

3 – एक ही अंगूठी अथवा पेण्डेंट में लाल मूंगा तथा पन्ना धारण करें।

4 – लाल मूंगा एवं पीला पुखराज या पन्ना एवं चन्द्रकान्त एक साथ मिलाकर धारण करें।

5 – पन्ना एवं चन्द्रकान्त एक साथ धारण करें।

6 – मूंगा एवं मोती धारण करें, लाभदायक फल प्राप्त होगा।

7 – लाल मूंगा एवं पन्ना एक साथ धारण करना लाभदायक सिद्ध होता है।

(19). मस्तिष्कीय रक्तस्राव होने पर आपको मंगल के लिए लाल मूंगा, बुध के लिए पन्ना, और चंद्रमा के लिए मोती धारण करना चाहिए। साथ ही उचित औषधि लेने पर आपको शीघ्र उत्तम परिणाम प्राप्त होगा।

(20). मस्तिष्क संबंधी रोगों से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का पन्ना, 14 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न तथा 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(21). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(22). मूर्च्छा – 5 रत्ती पन्ना, 4 रत्ती नीलम एवं 5 रत्ती मोती धारण

करें।

(23). अनिद्रा – फिरोजा, जिरकॉन, श्वेत ओपल तथा मोती धारण करना लाभदायक होता है। बारहवें भाव के स्वामी का रत्न धारण करना भी शुभ फलदायक होगा। पीला पुखराज भी धारण किया जा सकता है।

(1). मोतियाबिंद से छुटकारा पाने के लिए 3 या 4 रत्ती का माणिक और 5 या 6 रत्ती का पन्ना और 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती एक साथ धारण करना चाहिए। यदि संभव हो तो आधा रत्ती का हीरा बाएं हाथ में धारण करना चाहिए।

(2). 10 या 12 रत्ती का माणिक्य अनामिका अंगुली में शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन धारण करें।

(3). दूर दृष्टि दोष को दूर करने के लिए पन्ना, माणिक और सफेद मोती धारण करना चाहिए। यदि संभव हो तो आधा रत्ती का हीरा बाएं हाथ में धारण किया जा सकता है। माणिक के स्थान पर लाल मूंगा धारण किया जा सकता है।

(4). यदि जन्म के बाद नेत्र हानि होती है अथवा दृष्टिहीनता का उपचार संभव है, तो दृष्टिहीनता अथवा कमजोर दृष्टि से बचने के लिए आप माणिक और मोती धारण कर सकते हैं।

(5). मोतियाबिन्द – पन्ना को आंखों की ज्योति में वृद्धि करने में सहायक माना जाता है और मोती को खोई नेत्र ज्योति प्राप्त करने में सहायक। रोग के उपचार के दौरान माणिक्य धारण करें। गर्मियों में माणिक्य के स्थान पर लाल मूंगा पहनें। मूंगा, मोती तथा पन्ना 3–3 रत्ती प्रत्येक के हिसाब से एक साथ अंगुठी में जड़वाकर या पेण्डेण्ट में धारण करें, लाभ होगा।

(6). निकट दृष्टि से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का माणिक और 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए। माणिक के स्थान पर लाल मूंगा धारण किया जा सकता है।

(7). आंख आने से मुक्ति पाने के लिए मध्यमिका उंगली में 4 या 5 रत्ती का चंद्ररत्न अथवा कनिष्ठा में 3 या 4 रत्ती का नीलम धारण करना चाहिए।

(8). यदि आप आंखों की बीमारी से पीड़ित हैं, तो आपको एक्वामेरीन एवं पैरीडोट रत्न धारण करना चाहिए। इससे आपको जल्द स्वस्थ होने में मदद मिलेगी।

(9). नेत्र संबंधी रोगों से बचने के लिए आपको 3 या 5 रत्ती का माणिक और 7 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।

(10). नेत्रशोथ – इस रोग के प्रभाव को कम करने के लिए पन्ना धारण करें। इसके अलावा मूनस्टोन, ओपल, जिरकॉन धारण करने से भी नेत्र रोगों में काफी लाभ होता है।

(11). आंख आना/नेत्रश्लेष्मलाशोथ से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा एवं लाल वस्त्र धारण चाहिए।

(12). अंधापन – सफेद मोती, मूनस्टोन तथा मूंगा धारण करना लाभदायक होगा।

(13). वर्णाधता – लाल माणिक्य अथवा मूंगे के साथ मोती धारण करना वर्णाधता में बहुत लाभदायक होता

है।

(14). कमजोर दृष्टि अथवा नेत्र से संबंधित रोगों से बचाव के लिए आपको 10 अथवा 14 रत्ती का मूंगा और 9 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।

(15). वृद्धावस्था का दूर दृष्टि दोष से निजात पाने के लिए पन्ना, माणिक, सफेद मोती और लाल मूंगा संयुक्त रूप से धारण करना चाहिए। लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना सर्वाधिक उपयोगी होगा।

(16). रतौंधी से छुटकारा पाने के लिए लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(17). वर्णान्धता से निजात पाने के लिए पन्ना, लाल मूंगा, सफेद मोती व हीरा धारण करना चाहिए।

(18). दृष्टिवैषम्यता को दूर करने के लिए लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना उपयोगी होगा।

(1). बहरापन से बचने के लिए आपको 9 रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पन्ना, नीलम, पुखराज धारण करना चाहिए।

(1). स्फटिक, मोती तथा मूनस्टोन धारण करें। लाल कपड़ा या लाल धागा अवश्य पहनें। तांबे की अंगूठी में मूंगा पहनने से मुख (मुँह) से संबंधित विकार का प्रभाव कम हो जाता है।

(2). मुंहासे/फुंसी से छुटकारा पाने के लिए आपको 7 या 9 रत्ती का सफेद मूंगा मध्यमिका में धारण करना चाहिए।

(3). चांदी की अंगूठी में 8 या 10 रत्ती का सफेद मूंगा अथवा 4 से 10 रत्ती का मोती मध्यमा अंगुली में पहनें, साथ ही छोटी अंगुली में लाजवर्त पहनें। यदि मूंगा अनुकूल न आये तो केवल चांदी की अंगूठी ही धारण करें। इससे मुख (मुँह) से संबंधित विकार का प्रभाव कम हो जाता है।

(4). दांतों में कीड़े या दर्द होने पर – सफेद या लाल मूंगा पहनना लाभदायक होगा।

(5). यदि आप मुंहासे से ग्रसित हैं, तो आपको ऐमेथीस्ट रत्न धारण करना चाहिए। इससे आपको जल्द स्वस्थ होने में मदद मिलेगी।

(6). मूनस्टोन तथा पीला गोमेद धारण करना लाभकारी होगा। पुखराज तथा मोती पहनना भी शुभ फलदायक है। इससे मुख (मुँह) से संबंधित विकार का प्रभाव कम हो जाता है।

(1). मूनस्टोन तथा पीला गोमेद धारण करना लाभकारी होगा। पुखराज तथा मोती पहनना भी दांतों के रोगों में शुभ फलदायक है।

(2). दांतों से संबंधित रोगों से बचने के लिए आपको 4 या 7 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(3). लाल या सफेद मूंगा, पुखराज पहनना भी दांतों के दर्द में लाभकारी साबित होता है।

(1). सोने या चांदी की अंगूठी में पुखराज या सुनैला धारण करें। शुद्ध मूंगा 5 रत्ती का चांदी में मढ़वाकर अनामिका में धारण करें। मूंगा या पुखराज का पैडल जंजीर में डालकर गले में पहन सकते

हैं।

- (2). स्वराघात से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
 - (3). कण्ठशालक रोग से बचने के लिए आपको 5 रत्ती का लाल मूंगा अनामिका में और 5 रत्ती का पीला पुखराज तर्जनी में धारण करना चाहिए।
 - (4). गले/कण्ठ से संबंधित विकार से मुक्ति के लिए आभूषण दान करना चाहिए।
 - (5). वाणी में अत्यधिक कर्कशता होने पर इससे बचने के लिए आपको 9 या 10 रत्ती का मोती और 3 या 5 रत्ती का माणिक धारण करना चाहिए।
 - (6). कंठ में सूजन होने पर आपको 5 रत्ती का लाल मूंगा अनामिका में धारण करना चाहिए।
 - (7). यदि आप डिप्थिरिया (कंठ का एक संक्रामक रोग) से पीड़ित हैं, तो आपको 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा और 7 या 12 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए।
 - (8). गर्दन में असहनीय दर्द से बचने के लिए आपको 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा और 1 या 2 रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।
 - (9). गले से संबंधित रोगों से बचाव के लिए आपको 12 अथवा 16 रत्ती का चंद्ररत्न और आधा रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।
 - (10). गंडमाला रोग से बचने के लिए आपको साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
 - (11). गले से संबंधित रोग से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (1). कुकर खांसी – मरकत अथवा पेरीडॉट पहनना लाभदायक होगा।
 - (2). महिला – अस्थमा रोग से मुक्ति पाने के लिए 10 या 12 रत्ती का सफेद मोती बायें हाथ के दो उंगलियों अनामिका और कनिष्ठा में धारण करना चाहिए।
 - (3). दमा – नवधातु में काला अथवा लाल अकीक धारण करें। सोने या चांदी में 8–9 रत्ती का लाल मूंगा तथा 3 से 5 रत्ती का गोमेद अष्टधातु में धारण करना लाभदायक होगा।
 - (4). अस्थमा से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 5 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए। 4 रत्ती का लाल मूंगा दिन के समय में धारण किया जा सकता है, किन्तु इसे सोने जाने से पहले निकाल देना चाहिए। लाल मूंगा को रात के समय निकालने के बाद घोड़े की नाल की अंगूठी मध्यमिका में धारण करना बहुत उपयोगी रहेगा। इससे रात में अच्छी नींद आयेगी।
 - (5). श्वसन प्रणाली से संबंधित रोगों से बचने के लिए आपको 8 या 9 रत्ती का पीला मोती और 7 या 8 रत्ती का नीलम अथवा 18 या 24 रत्ती का जमुनिया धारण करना

चाहिए।

- (6). फुफ्फुसआवरणशोथ से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पन्ना और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (7). पुरुष – अस्थमा रोग से मुक्ति पाने के लिए 4 या 5 रत्ती का पन्ना और सफेद मोती तथा 4 रत्ती का नीलम कनिष्ठा में धारण करना चाहिए। नीलम के स्थान पर लाजावर्द धारण किया जा सकता है। सर्दी के मौसम में 4 रत्ती का लाल मूंगा अतिरिक्त रत्न के रूप में धारण किया जा सकता है।
- (8). महिला – शीतज्वर से बचने के लिए आपको 4 या 6 रत्ती का नीलम, 4 या 7 रत्ती का पन्ना और 10 या 16 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए।
- (9). अस्थमा रोग से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का पीला पुखराज, 14 या 16 रत्ती का चंद्र रत्न और 7 या 9 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (10). पुरुष – अस्थमा रोग से मुक्ति पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का पन्ना व 5 रत्ती का चंद्र रत्न और अनामिका में 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (11). इनफ्लूएंजा – लाल मूंगा और पीला पुखराज धारण करना लाभदायक होता है। यदि बार-बार रोग हो रहा है तो काला हकीक, माणिक्य तथा सूर्यकान्त मणि एक साथ लॉकेट में डाल कर गले में धारण करें।
- (12). न्यूमोनिया से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (13). महिला – हिचकी से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा अनामिका में और 5 रत्ती का गोमेद मध्यमिका में धारण करना चाहिए।
- (14). अस्थमा से पीड़ित होने पर आपको 6 रत्ती का लाल पन्ना, 5 रत्ती का पुखराज और 6 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए। 7 वर्ष की आयु तक के बच्चे चांदी में जड़ित चंद्र रत्न धारण कर सकते हैं।
- (15). शीतला रोग से बचने के लिए आपको लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (16). निमोनिया – इस रोग में लाल मूंगा तथा पीला पुखराज धारण करना शुभ फलदायक होता है।
- (1). शीत ज्वर – 7-8 रत्ती का माणिक्य चांदी की अंगूठी में धारण करें। मंगल की शान्ति के लिये तांबे का कड़ा, अंगूठी या कोई अन्य आभूषण धारण करें।
- (2). क्षय रोग से पीड़ित होने पर आपको 7 या 9 रत्ती का लाल मूंगा तथा 5 रत्ती का पुखराज धारण करना चाहिए।
- (3). पीला पुखराज, सफेद मोती या लाल मूंगा धारण कर रोग का प्रभाव कम किया जा सकता है।
- (4). तपेदिक से बचने के लिए 5 रत्ती का पन्ना, साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला

पुखराज धारण करना चाहिए।

(5). तपेदिक रोग से बचने के लिए आपको 7 या 8 रत्ती का नीलम और 10 या 16 रत्ती का चंद्र रत्न अथवा 7 या 9 रत्ती का सफेद मोती और 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा तथा 4 या 7 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(6). पार्श्वशूल/फुस्फुस के आवरण में शोथ से बचाव के लिए आपको 3 अथवा 4 रत्ती का माणिक और 5 या 7 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(7). फेफड़े से संबंधित रोग से बचने के लिए आपको 10 या 16 रत्ती का मोती और 5 या 7 रत्ती का पीलापुखराज धारण करना चाहिए।

(8). तपेदिक/क्षय रोग से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा, गोमेद और मोती धारण करना चाहिए।

(9). क्षय रोग से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(10). क्षय रोग से बचने के लिए आपको कनिष्ठा में 4 रत्ती का नीलम धारण करना चाहिए।

(11). लाल मूंगा साढ़े सात रत्ती, पीला पुखराज पांच रत्ती, पन्ना पांच रत्ती का धारण करें।

(1). तांबे की अंगूठी या माणिक्य रविवार को पुष्य नक्षत्र में सूर्योदय के समय अनामिका अंगुली में धारण करें।

(2). हृदय से संबंधित रोगों से बचने के लिए आपको 9 या 12 रत्ती का मोती और 12 या 14 रत्ती का लालमूंगा धारण करना चाहिए।

(3). हृदय रोग का कारक ग्रह राहु है, उसकी शांति के लिए दान, जप, व्रत एवं तांत्रिक टोटके का सहारा लें।

(4). मूंगा एवं पुखराज धारण करें। यदि फायदा न हो तो मोती और पन्ना धारण करें, निश्चित रूप से लाभहोगा।

(5). हृदय विकार से पीड़ित होने पर उपचार हेतु आपको पन्ना, मोती, पुखराज और लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(6). पांचवें भाव के स्वामी या चौथे भाव के स्वामी जो भी कारक ग्रह हैं, उन्हें एवं सूर्य को उनका रत्न धारण करके शक्तिशाली बनायें।

(7). लग्न के स्वामी का रत्न धारण करके स्वामी को शक्तिशाली बनायें।

(8). यदि आप हृदय की बीमारी से ग्रसित हैं, तो आपको बेरील, हेमेटाईट एवं ओनेक्स रत्न धारण करना चाहिए। इससे आपको स्वस्थ हाने में जल्द मदद

मिलेगी।

- (1). गैंगरीन – लाल धागा, लाल कपड़ा या लाल मूंगा के साथ तांबे या लोहे का छल्ला धारण करें। तांबे के साथ माणिक्य धारण करना भी लाभदायक होगा।
- (2). उच्चरक्तचाप के उपचार हेतु आपको 6 रत्ती का पन्ना मध्यमिका में, 4 रत्ती का पुखराज अनामिका में और 3 रत्ती का नीलम कनिष्ठा में धारण करना चाहिए। गंभीर परिस्थिति में 4 रत्ती का सफेद मोती दाहिने हाथ की तर्जनी में धारण करना चाहिए।
इन चारों रत्नों को संयुक्त रूप से उंगलियों में धारण करना चाहिए।
- (3). शरीर में खून की कमी से ग्रसित होने पर आपको 14 या 18 रत्ती का चंद्र रत्न, 1 या 2 रत्ती का हीरा और 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (4). यदि आपको अचानक रक्तस्राव होने लगता है, तो इससे बचने के लिए आपको 9 या 12 रत्ती का मोती और 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (5). महिला – उच्चरक्तचाप के उपचार हेतु आपको 10 या 12 रत्ती का सफेद मोती बायें हाथ के दो उंगलियों अनामिका और कनिष्ठा में धारण करना चाहिए।
- (6). रक्ताल्पता – कलाई में लोहे का कड़ा पहनें, 5 रत्ती मूंगा तथा 5 से 7 रत्ती का पुखराज सोने या चांदी की अंगूठी में दायें हाथ में धारण करें।
- (7). उच्चरक्तचाप के उपचार हेतु आपको माणिक, पन्ना, रक्तमणि धारण करना चाहिए।
- (8). रक्तचाप की समस्या से छुटकारा पाने के लिए आपको 10 या 16 रत्ती का लाल मूंगा, 4 या 5 रत्ती का पीताम्बरी नीला अथवा जमुनिया धारण करना चाहिए।
- (9). उच्च रक्तचाप – इस रोग से बचाव के लिए लग्नेश का रत्न धारण करें। 8–9 रत्ती का लाल रंग का शुद्ध मूंगा भी धारण कर सकते हैं। मूंगा के अभाव में पन्ना, मोती, मूनस्टोन आदि अलग-अलग अंगूठियां पहनना भी लाभकारी होगा।
- (10). महिलाएं पुखराज और नीलम आदि धारण नहीं कर सकती हैं। अतः केवल सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (11). रक्त विकार से बचने के लिए आपको लाल मूंगा, पुखराज, मोती एक साथ धारण करना चाहिए।
- (12). खून की कमी में साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

रक्त (खून)से संबंधित विकार के लिए लाल किताब के उपाय

तांबे का कड़ा या ताबीज दमा के रोगी या उच्च रक्तचाप वालों के लिए पहनना बहुत लाभदायक सिद्ध होता है।

रक्त (खून)से संबंधित विकार के लिए रुद्राक्ष का सुझाव

जो व्यक्ति डिप्रेशन, खून में खराबी, प्लेग, पाचन संबंधित समस्या, रक्तचाप, कमजोरी या अल्सर आदि से ग्रसित होते हैं, उनके लिए तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभदायक होता है।

जो व्यक्ति मानसिक विकार, लकवा, पीलिया, रक्त-संचार से संबंधित समस्या, बुखार एवं खांसी से ग्रसित होते हैं, उनके लिए चार मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभदायक साबित होता है।

रक्त (खून)से संबंधित विकार के लिए आर्युवेदिक उपचार

रात में तांबे के बर्तन में पानी रख लें और सुबह में इस पानी को पीयें। इससे उच्च रक्तचाप कम होता है तथा इसे नियंत्रण में भी रखता है।

पका हुआ आधा या एक छोटा पपीता खाने से रक्तचाप नियंत्रण में रहता है। ध्यान रहे नाश्ता एक घंटे बाद करें।

आधा कप पानी में आधा नींबू निचोड़ कर दिन में दो-तीन बार लेने से उच्च रक्तचाप में बहुत जल्दी फायदा होता है।

प्याज का रस और शहद बराबर-बराबर मात्रा में मिलाकर रोजाना दो चम्मच सुबह में सेवन करने से उच्च रक्तचाप में जल्दी ही फायदा होता है।

लहसुन की दो-तीन कलियों को छील लें। सुबह में खाली पेट में कलियों के टुकड़े कर इसे चबा लें या पानी के घूंट के साथ निगल लें। कच्चे लहसुन का सेवन करने से रक्त में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा जल्दी से घटाने, रक्तचाप कम करने और ट्यूमर बनने से रोकने में बहुत सहायक होता है।

भोजन करने के बाद रोजाना तीन-चार चिनिया केला खाने से उच्च रक्तचाप में लाभ होता है।

बत्तीस किशमिश 150 ग्राम पानी में बारह घंटों के लिए भिंगों दें। उसके बाद एक-एक किशमिश को आधामिनट तक खूब चबा-चबाकर खायें। इससे निम्न रक्तचाप में लाभ होता है।

चार तुलसी की पत्तियां एवं दो नीम की पत्तियां पानी के साथ घोटकर सवेरे खाली पेट में पांच-सात दिनोंतक सेवन करने से उच्च रक्तचाप में फायदा होता है।

अक्सर फोड़े-फुन्सियां निकलने पर या खून में खराबी होने पर रोजाना सुबह नाश्ते से पहले एवं शाम में 4बजे के आस-पास 125 ग्राम गाजर के रस का सेवन करें। केवल 15-20 दिनों तक सेवन करने से खून की खराबी खत्म हो जाती है तथा खून साफ हो जाता है।

तरबूज का सेवन करने से उच्च रक्तचाप ठीक होता है।

लहसुन की कलियों को चार-पांच दिन घूप में सूखाकर उसे शीशे के बर्तन में भरकर उसमें उपर से शहद भर दें। 15 दिनों के बाद दो-दो कली खाकर एक चम्मच शहद पीने एवं उपर से ठण्डा दूध पीने से रक्त

चाप सामान्य हो जाता है।

शरीर में खून की कमी होने पर कुछ दिनों तक रोजाना 125 ग्राम पालक के रस का सेवन करें। इससे खूनमें वृद्धि होती है तथा चेहरे पर निखार आता है।

ककड़ी नमक के साथ खाने से रक्तचाप में लाभ होता है।

अजवायन और ईसबगोल का रोजाना सेवन करने से रक्तचाप में कमी आती है।

किशमिश को 150 ग्राम पानी में रात में भिगों दें। सुबह में एक-एक किशमिश करके किशमिश को खूब चबा-चबा कर खायें। इसे खाने से निम्न रक्तचाप में बहुत फायदा होता है।

लीची का सेवन करने से उच्च रक्तचाप कम होता है।

खाना खाने के बाद कच्चे लहसुन की एक-दो कली छीलकर पानी के साथ चबा लें या बीज निकाली हुई एक-दो मुनक्का के साथ चबा लें। इससे उच्च रक्तचाप में लाभ होता है।

पेड़ का पका हुआ पपीता सुबह खाली पेट में एक महीने तक खायें। इसे खाने के बाद दो घंटे तक कुछ भी न खायें-पीयें। इससे उच्च रक्तचाप ठीक होता है।

रात की बनी हुई गेहूं की रोटी सुबह में दूध में भिगोकर खाने से उच्च रक्तचाप सामान्य हो जाता है।

प्याज का रस और शहद को बराबर-बराबर मात्रा में मिलाकर रोजाना दो चम्मच दिन में एक बार सेवन करने से उच्च रक्तचाप की बीमारी में फायदा होता है।

छाछ में एक चुटकी हींग मिलाकर दोपहर के भोजन के बाद रोजाना सेवन करने से निम्न रक्तचाप में बहुतलाभ होता है।

गेहूं और चना बराबर-बराबर मात्रा में लेकर आटा पिसवायें और बिना चोकर निकाले आटे की रोटी खायें। एक-दो दिनों में ही उच्च रक्तचाप में फायदा दिखने लगेगा।

गाजर के जूस में शहद मिलाकर पीने से निम्न रक्तचाप ठीक होता है।

मधुमेह (डायबिटीज) के कारण और विविध उपाय



मधुमेह (डायबिटीज) से संबंधित कुण्डली में उपस्थित योग

आपकी कुण्डली में गुरु या शुक्र अशुभ या नीच राशि में छठे या आठवें भाव में स्थित है, आप मधुमेह रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में मंगल और गुरु या शुक्र एक साथ छठे भाव या कन्या राशि में अशुभ स्थिति में हैं, आपमधुमेह रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में पांचवें भाव का स्वामी छठे, आठवें या बारहवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है, आपको मधुमेह बीमारी से ग्रसित होने की संभावना हो सकती है।

आपकी कुण्डली में छठे भाव का स्वामी पापग्रह के साथ स्थित है और मंगल छठे भाव में स्थित है, आपके मूत्र में शक्कर की मात्रा बढ़ सकती है।

आपकी कुण्डली में पांचवें भाव का स्वामी नीच राशि में स्थित है एवं उस नीच राशि का स्वामी छठे भाव में स्थित है, आप मधुमेह रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

मधुमेह (डायबिटीज) के लिए रत्न और उपरत्न का सुझाव

- (1). अजीब वस्तुओं या विषयों से संबंधित सपने बार-बार आने पर आपको 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा और 9 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (2). यदि आप वातोन्माद/मूर्छा (हिस्टीरिया) रोग से पीड़ित हैं, तो आपको 7 या 9 रत्ती का मोती, 14 या 18 रत्ती का लाल मूंगा और 12 या 16 रत्ती का चंद्र रत्न धारण करना चाहिए।
- (3). मिर्गी से पीड़ित होने पर आपको उपचार हेतु पन्ना, मोती और मूंगा एक साथ धारण करना चाहिए।
- (4). अत्यधिक तनावग्रस्त होने के कारण मानसिक असंतुलन की स्थिति उत्पन्न होने पर आपको 4 या 8 रत्ती का पन्ना और 16 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न धारण करना चाहिए।
- (5). यदि आप आनुवांशिक मानसिक असंतुलन से पीड़ित हैं, तो आपको 24 या 30 रत्ती का चंद्र रत्न और 12 या 14 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (6). मणिक्य, मोती तथा पन्ना पहनें।
- (7). अनिद्रा से छुटकारा पाने के लिए आपको पन्ना, पुखराज और मोती धारण करना चाहिए।
- (8). शिराप्रदाह से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (9). स्मरण शक्ति कमजोर होने पर आपको 5 या 7 रत्ती का पन्ना, 4 या 6 रत्ती का लहसुनिया और 12

18 रत्ती का चंद्र रत्न अथवा 7 या 9 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।

(10). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए पन्ना, चंद्ररत्न, लाल मूंगा और पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(11). अनिद्रा से निजात पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का चंद्ररत्न धारण करना चाहिए।

(12). यदि आप शराब पीने के आदी हैं, तो आपको इससे छुटकारा पाने के लिए 14 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न और 9 या 14 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए।

(13). सिरदर्द से बचने के लिए आपको 4 या 5 रत्ती का माणिक अथवा 20 या 24 का माणिक का उपरत्न धारण करना चाहिए।

(14). मानसिक विकार से बचने के लिए आपको 16 या 24 रत्ती का चंद्र रत्न और 6 या 8 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(15). मिरगी/वातोन्माद से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा और मोती धारण करना चाहिए।

(16). यदि आपको मिरगी का दौरा पड़ता है, तो आपको इससे बचने के लिए 18 या 14 रत्ती का चंद्र रत्न, 10 या 14 रत्ती का सफेद मोती और 1 या 2 रत्ती का हीरा अथवा 4 या 5 रत्ती का जरकन धारण करना चाहिए।

(17). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का पीला पुखराज और 5 या 6 रत्ती का चंद्ररत्न धारण करना चाहिए।

(18). अनिद्रा से निजात पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का पन्ना, अनामिका में 5 रत्ती का पीला पुखराज और तर्जनी में 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(19). अनिद्रा से निजात पाने के लिए 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(20). आलस्य या उदासीनता से संबंधित रोग से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का मोती और 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(21). यदि आप पागलपन में बेहोशी (हिस्टिरीकल इन्सैनिटी) से पीड़ित हैं, तो आपको 20 या 25 रत्ती का चंद्र रत्न और 1 या 2 रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।

(22). मिरगी/लकवा से पीड़ित होने पर आपको साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(23). मिर्गी से बचने के लिए पन्ना, 6 रत्ती का चंद्ररत्न और 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(24). भूलने की बीमारी से निजात पाने के लिए आपको 5 रत्ती का लाल मूंगा और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना

चाहिए।

- (25). अनिद्रा से निजात पाने के लिए 10 या 12 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (26). नवरत्न का पेंडल गले में पहनना भी लाभदायक होगा।
- (27). नीलम या पुखराज चांदी अथवा तांबे की अंगूठी में पहनें।
- (28). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए पन्ना, नीलम, और सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (29). स्थायी सिरदर्द से छुटकारा पाने के लिए आप पन्ना और मोती धारण कर सकते/सकती हैं।
- (30). श्लैष्मिक ज्वर से बचने के लिए 5 रत्ती का लाल मूंगा और 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (31). यदि आप विषाद रोग से ग्रसित हैं, तो आपको 5 या 8 रत्ती का नीलम और 5 या 7 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (32). मिर्गी से बचने के लिए 5 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का नीलम और 5 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (33). मिर्गी से बचने के लिए पन्ना और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (1). मस्तिष्क विकार – मूनस्टोन, पीला पुखराज तथा पन्ना धारण करने से मानसिक शांति मिलती है। लालमूंगा धारण करना भी लाभदायक होता है।
- (2). स्मृति दोष – मोती या माणिक्य गले में धारण करें। एक हाथ में 6 रत्ती का पन्ना तथा दूसरे में 9 रत्ती का मूंगा चांदी की अंगूठी में पहनें। चांदी, सोना, तांबा मिश्रित धातु का कड़ा पहनना भी लाभदायक होगा।
- (3). मस्तिष्क के ट्यूमर से निजात पाने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 6 रत्ती का सफेद मोती और 4 रत्ती का नीलम या लाजावर्द धारण करना चाहिए, अथवा पन्ना, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 6 रत्ती का चंद्ररत्न या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (4). परागज-ज्वर (हे-फीवर) से बचने के लिए आपको 9 या 16 रत्ती का गोमेद और 5 या 7 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।
- (5). यदि आप रोगभ्रम/चिन्तोन्माद (हॉइपोकांड्रिया) से ग्रसित हैं, तो आपको 7 या 8 रत्ती का नीलम और 5 या 7 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (6). मिरगी – 1 – 6 रत्ती मोती या 5 रत्ती पन्ना या 12 रत्ती सफेद मोती धारण करें।
2 – पन्ना और मूनस्टोन धारण करें। लग्न के स्वामी का रत्न धारण करना शुभ फलदायक होगा।
- (7). प्रमस्तिष्कीय रक्तस्राव – 1 – लग्न के स्वामी का रत्न धारण

करें।

2 – 7-8 रत्ती का लाल मूंगा तथा मूनस्टोन या सफेद मोती चांदी में धारण करें।

3 – एक त्रिकोण पेण्डेण्ट में लग्न के स्वामी का रत्न, मूंगा तथा पुखराज जड़वायें, जिसमें माणिक्य बीच में हो, इस प्रकार का पेण्डेण्ट धारण करने से इस रोग का प्रभाव कम हो सकता है।

(8). मस्तिष्कावरण शोथ से बचने के लिए आपको लाल मूंगा, पुखराज, पन्ना और माणिक धारण करना चाहिए।

(9). मस्तिष्क में तंत्रिकाओं के गड़बड़ी से सिरदर्द होने पर आपको 5 या 6 रत्ती का पीला पुखराज और 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(10). पागलपन या विक्षिप्तता से ग्रसित होने पर इसके उपचार हेतु आपको पन्ना, लाल मूंगा, मोती धारण करना चाहिए। इससे रोग का प्रभाव कम होगा।

(11). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए आपको 10 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(12). मस्तिष्क में गांठ, सूजन और फोड़ा होने पर आपको उसके उपचार हेतु पन्ना, पुखराज और मूंगा धारण करना चाहिए।

(13). यदि आप प्रमस्तिष्क घनास्त्रता रोग से पीड़ित हैं, तो आपको 3 रत्ती का माणिक अथवा 18 या 24 रत्ती का माणिक का उपरत्न, 10 या 12 रत्ती का मोती तथा 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(14). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 3 रत्ती का माणिक और 4 रत्ती नीलम धारण करना चाहिए। गर्मी के महीनों में रात के समय लाल मूंगा और माणिक धारण नहीं करना चाहिए।

(15). पागलपन – 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का पीला पुखराज एवं 4 रत्ती का मोती धारण करें।

(16). कमजोर स्मरण शक्ति या भूलने की बीमारी से बचने के लिए आपको 7 या 9 रत्ती का लाल मूंगा और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(17). मस्तिष्क ज्वर – लाल मूंगा, पीला पुखराज तथा पन्ना धारण करना लाभदायक साबित होगा।

(18). मस्तिष्क संबंधित रोग – 1 – लग्न के स्वामी, सूर्य एवं चंद्रमा को उनसे संबंधित रत्न धारण करा कर बलशाली बनायें।

2 – लग्न के स्वामी, सूर्य एवं चंद्रमा का कवच पाठ करें तथा इनसे संबंधित यंत्र धारण करें।

3 – एक ही अंगूठी अथवा पेण्डेंट में लाल मूंगा तथा पन्ना धारण करें।

4 – लाल मूंगा एवं पीला पुखराज या पन्ना एवं चन्द्रकान्त एक साथ मिलाकर धारण करें।

5 – पन्ना एवं चन्द्रकान्त एक साथ धारण करें।

6 – मूंगा एवं मोती धारण करें, लाभदायक फल प्राप्त होगा।

7 – लाल मूंगा एवं पन्ना एक साथ धारण करना लाभदायक सिद्ध होता है।

(19). मस्तिष्कीय रक्तस्राव होने पर आपको मंगल के लिए लाल मूंगा, बुध के लिए पन्ना, और चंद्रमा के लिए मोती धारण करना चाहिए। साथ ही उचित औषधि लेने पर आपको शीघ्र उत्तम परिणाम प्राप्त

होगा।

(20). मस्तिष्क संबंधी रोगों से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का पन्ना, 14 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न तथा 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(21). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(22). मूर्च्छा – 5 रत्ती पन्ना, 4 रत्ती नीलम एवं 5 रत्ती मोती धारण करें।

(23). अनिद्रा – फिरोजा, जिरकॉन, श्वेत ओपल तथा मोती धारण करना लाभदायक होता है। बारहवें भाव के स्वामी का रत्न धारण करना भी शुभ फलदायक होगा। पीला पुखराज भी धारण किया जा सकता है।

(1). मोतियाबिंद से छुटकारा पाने के लिए 3 या 4 रत्ती का माणिक और 5 या 6 रत्ती का पन्ना और 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती एक साथ धारण करना चाहिए। यदि संभव हो तो आधा रत्ती का हीरा बाएं हाथ में धारण करना चाहिए।

(2). 10 या 12 रत्ती का माणिक्य अनामिका अंगुली में शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन धारण करें।

(3). दूर दृष्टि दोष को दूर करने के लिए पन्ना, माणिक और सफेद मोती धारण करना चाहिए। यदि संभव हो तो आधा रत्ती का हीरा बाएं हाथ में धारण किया जा सकता है। माणिक के स्थान पर लाल मूंगा धारण किया जा सकता है।

(4). यदि जन्म के बाद नेत्र हानि होती है अथवा दृष्टिहीनता का उपचार संभव है, तो दृष्टिहीनता अथवा कमजोर दृष्टि से बचने के लिए आप माणिक और मोती धारण कर सकते हैं।

(5). मोतियाबिन्द – पन्ना को आंखों की ज्योति में वृद्धि करने में सहायक माना जाता है और मोती को खोई नेत्र ज्योति प्राप्त करने में सहायक। रोग के उपचार के दौरान माणिक्य धारण करें। गर्मियों में माणिक्य के स्थान पर लाल मूंगा पहनें। मूंगा, मोती तथा पन्ना 3–3 रत्ती प्रत्येक के हिसाब से एक साथ अंगुठी में जड़वाकर या पेण्डेण्ट में धारण करें, लाभ होगा।

(6). निकट दृष्टि से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का माणिक और 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए। माणिक के स्थान पर लाल मूंगा धारण किया जा सकता है।

(7). आंख आने से मुक्ति पाने के लिए मध्यमिका उंगली में 4 या 5 रत्ती का चंद्ररत्न अथवा कनिष्ठा में 3 या 4 रत्ती का नीलम धारण करना चाहिए।

(8). यदि आप आंखों की बीमारी से पीड़ित हैं, तो आपको एक्वामेरीन एवं पैरीडोट रत्न धारण करना चाहिए। इससे आपको जल्द स्वस्थ होने में मदद मिलेगी।

(9). नेत्र संबंधी रोगों से बचने के लिए आपको 3 या 5 रत्ती का माणिक और 7 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।

(10). नेत्रशोथ – इस रोग के प्रभाव को कम करने के लिए पन्ना धारण करें। इसके अलावा मूनस्टोन,

ओपल, जिरकॉन धारण करने से भी नेत्र रोगों में काफी लाभ होता है।

(11). आंख आना/नेत्रश्लेष्मलाशोथ से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा एवं लाल वस्त्र धारण चाहिए।

(12). अंधापन – सफेद मोती, मूनस्टोन तथा मूंगा धारण करना लाभदायक होगा।

(13). वर्णाधता – लाल माणिक्य अथवा मूंगे के साथ मोती धारण करना वर्णाधता में बहुत लाभदायक होता है।

(14). कमजोर दृष्टि अथवा नेत्र से संबंधित रोगों से बचाव के लिए आपको 10 अथवा 14 रत्ती का मूंगा और 9 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।

(15). वृद्धावस्था का दूर दृष्टि दोष से निजात पाने के लिए पन्ना, माणिक, सफेद मोती और लाल मूंगा संयुक्त रूप से धारण करना चाहिए। लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना सर्वाधिक उपयोगी होगा।

(16). रतौंधी से छुटकारा पाने के लिए लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(17). वर्णान्धता से निजात पाने के लिए पन्ना, लाल मूंगा, सफेद मोती व हीरा धारण करना चाहिए।

(18). दृष्टिवैषम्यता को दूर करने के लिए लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना उपयोगी होगा।

(1). बहरापन से बचने के लिए आपको 9 रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पन्ना, नीलम, पुखराज धारण करना चाहिए।

(1). स्फटिक, मोती तथा मूनस्टोन धारण करें। लाल कपड़ा या लाल धागा अवश्य पहनें। तांबे की अंगूठी में मूंगा पहनने से मुख (मुँह) से संबंधित विकार का प्रभाव कम हो जाता है।

(2). मुंहासे/फुंसी से छुटकारा पाने के लिए आपको 7 या 9 रत्ती का सफेद मूंगा मध्यमिका में धारण करना चाहिए।

(3). चांदी की अंगूठी में 8 या 10 रत्ती का सफेद मूंगा अथवा 4 से 10 रत्ती का मोती मध्यमा अंगुली में पहनें, साथ ही छोटी अंगुली में लाजवर्त पहनें। यदि मूंगा अनुकूल न आये तो केवल चांदी की अंगूठी ही धारण करें। इससे मुख (मुँह) से संबंधित विकार का प्रभाव कम हो जाता है।

(4). दांतों में कीड़े या दर्द होने पर – सफेद या लाल मूंगा पहनना लाभदायक होगा।

(5). यदि आप मुंहासे से ग्रसित हैं, तो आपको ऐमेथीस्ट रत्न धारण करना चाहिए। इससे आपको जल्द स्वस्थ होने में मदद मिलेगी।

(6). मूनस्टोन तथा पीला गोमेद धारण करना लाभकारी होगा। पुखराज तथा मोती पहनना भी शुभ फलदायक है। इससे मुख (मुँह) से संबंधित विकार का प्रभाव कम हो जाता है।

(1). मूनस्टोन तथा पीला गोमेद धारण करना लाभकारी होगा। पुखराज तथा मोती पहनना भी दांतों के रोग में शुभ फलदायक

है।

- (2). दांतों से संबंधित रोगों से बचने के लिए आपको 4 या 7 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।
- (3). लाल या सफेद मूंगा, पुखराज पहनना भी दांतों के दर्द में लाभकारी साबित होता है।
- (1). सोने या चांदी की अंगूठी में पुखराज या सुनैला धारण करें। शुद्ध मूंगा 5 रत्ती का चांदी में मढ़वाकर अनामिका में धारण करें। मूंगा या पुखराज का पैंडल जंजीर में डालकर गले में पहन सकते हैं।
- (2). स्वराघात से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (3). कण्ठशालक रोग से बचने के लिए आपको 5 रत्ती का लाल मूंगा अनामिका में और 5 रत्ती का पीला पुखराज तर्जनी में धारण करना चाहिए।
- (4). गले/कण्ठ से संबंधित विकार से मुक्ति के लिए आभूषण दान करना चाहिए।
- (5). वाणी में अत्यधिक कर्कशता होने पर इससे बचने के लिए आपको 9 या 10 रत्ती का मोती और 3 या 5 रत्ती का माणिक धारण करना चाहिए।
- (6). कंठ में सूजन होने पर आपको 5 रत्ती का लाल मूंगा अनामिका में धारण करना चाहिए।
- (7). यदि आप डिप्थिरिया (कंठ का एक संक्रामक रोग) से पीड़ित हैं, तो आपको 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा और 7 या 12 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए।
- (8). गर्दन में असहनीय दर्द से बचने के लिए आपको 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा और 1 या 2 रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।
- (9). गले से संबंधित रोगों से बचाव के लिए आपको 12 अथवा 16 रत्ती का चंद्ररत्न और आधा रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।
- (10). गंडमाला रोग से बचने के लिए आपको साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (11). गले से संबंधित रोग से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (1). कुकर खांसी – मरकत अथवा पेरीडॉट पहनना लाभदायक होगा।
- (2). महिला – अस्थमा रोग से मुक्ति पाने के लिए 10 या 12 रत्ती का सफेद मोती बायें हाथ के दो उंगलियों अनामिका और कनिष्ठा में धारण करना चाहिए।
- (3). दमा – नवधातु में काला अथवा लाल अकीक धारण करें। सोने या चांदी में 8–9 रत्ती का लाल मूंगा तथा 3 से 5 रत्ती का गोमेद अष्टधातु में धारण करना लाभदायक

होगा।

- (4). अस्थमा से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 5 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए। 4 रत्ती का लाल मूंगा दिन के समय में धारण किया जा सकता है, किन्तु इसे सोने जाने से पहले निकाल देना चाहिए। लाल मूंगा को रात के समय निकालने के बाद घोड़े की नाल की अंगूठी मध्यमिका में धारण करना बहुत उपयोगी रहेगा। इससे रात में अच्छी नींद आयेगी।
- (5). श्वसन प्रणाली से संबंधित रोगों से बचने के लिए आपको 8 या 9 रत्ती का पीला मोती और 7 या 8 रत्ती का नीलम अथवा 18 या 24 रत्ती का जमुनिया धारण करना चाहिए।
- (6). फुफ्फुस आवरणशोथ से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पन्ना और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (7). पुरुष – अस्थमा रोग से मुक्ति पाने के लिए 4 या 5 रत्ती का पन्ना और सफेद मोती तथा 4 रत्ती का नीलम कनिष्ठा में धारण करना चाहिए। नीलम के स्थान पर लाजावर्द धारण किया जा सकता है। सर्दी के मौसम में 4 रत्ती का लाल मूंगा अतिरिक्त रत्न के रूप में धारण किया जा सकता है।
- (8). महिला – शीतज्वर से बचने के लिए आपको 4 या 6 रत्ती का नीलम, 4 या 7 रत्ती का पन्ना और 10 या 16 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए।
- (9). अस्थमा रोग से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का पीला पुखराज, 14 या 16 रत्ती का चंद्र रत्न और 7 या 9 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (10). पुरुष – अस्थमा रोग से मुक्ति पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का पन्ना व 5 रत्ती का चंद्र रत्न और अनामिका में 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (11). इनफ्लूएंजा – लाल मूंगा और पीला पुखराज धारण करना लाभदायक होता है। यदि बार-बार रोग हो रहा है तो काला हकीक, माणिक्य तथा सूर्यकान्त मणि एक साथ लॉकेट में डाल कर गले में धारण करें।
- (12). न्यूमोनिया से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (13). महिला – हिचकी से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा अनामिका में और 5 रत्ती का गोमेद मध्यमिका में धारण करना चाहिए।
- (14). अस्थमा से पीड़ित होने पर आपको 6 रत्ती का लाल पन्ना, 5 रत्ती का पुखराज और 6 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए। 7 वर्ष की आयु तक के बच्चे चांदी में जड़ित चंद्र रत्न धारण कर सकते हैं।
- (15). शीतला रोग से बचने के लिए आपको लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (16). निमोनिया – इस रोग में लाल मूंगा तथा पीला पुखराज धारण करना शुभ फलदायक होता है।
- (1). शीत ज्वर – 7-8 रत्ती का माणिक्य चांदी की अंगूठी में धारण करें। मंगल की शान्ति के लिये तांबे

का कड़ा, अंगूठी या कोई अन्य आभूषण धारण करें।

(2). क्षय रोग से पीड़ित होने पर आपको 7 या 9 रत्ती का लाल मूंगा तथा 5 रत्ती का पुखराज धारण करना चाहिए।

(3). पीला पुखराज, सफेद मोती या लाल मूंगा धारण कर रोग का प्रभाव कम किया जा सकता है।

(4). तपेदिक से बचने के लिए 5 रत्ती का पन्ना, साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(5). तपेदिक रोग से बचने के लिए आपको 7 या 8 रत्ती का नीलम और 10 या 16 रत्ती का चंद्र रत्न अथवा 7 या 9 रत्ती का सफेद मोती और 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा तथा 4 या 7 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(6). पार्श्वशूल/फुस्फुस के आवरण में शोथ से बचाव के लिए आपको 3 अथवा 4 रत्ती का माणिक और 5 या 7 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(7). फेफड़े से संबंधित रोग से बचने के लिए आपको 10 या 16 रत्ती का मोती और 5 या 7 रत्ती का पीलापुखराज धारण करना चाहिए।

(8). तपेदिक/क्षय रोग से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा, गोमेद और मोती धारण करना चाहिए।

(9). क्षय रोग से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(10). क्षय रोग से बचने के लिए आपको कनिष्ठा में 4 रत्ती का नीलम धारण करना चाहिए।

(11). लाल मूंगा साढ़े सात रत्ती, पीला पुखराज पांच रत्ती, पन्ना पांच रत्ती का धारण करें।

(1). तांबे की अंगूठी या माणिक्य रविवार को पुष्य नक्षत्र में सूर्योदय के समय अनामिका अंगुली में धारण करें।

(2). हृदय से संबंधित रोगों से बचने के लिए आपको 9 या 12 रत्ती का मोती और 12 या 14 रत्ती का लालमूंगा धारण करना चाहिए।

(3). हृदय रोग का कारक ग्रह राहु है, उसकी शांति के लिए दान, जप, व्रत एवं तांत्रिक टोटके का सहारा लें।

(4). मूंगा एवं पुखराज धारण करें। यदि फायदा न हो तो मोती और पन्ना धारण करें, निश्चित रूप से लाभहोगा।

(5). हृदय विकार से पीड़ित होने पर उपचार हेतु आपको पन्ना, मोती, पुखराज और लाल मूंगा धारण करना

चाहिए।

(6). पांचवें भाव के स्वामी या चौथे भाव के स्वामी जो भी कारक ग्रह हैं, उन्हें एवं सूर्य को उनका रत्न धारण करके शक्तिशाली बनायें।

(7). लग्न के स्वामी का रत्न धारण करके स्वामी को शक्तिशाली बनायें।

(8). यदि आप हृदय की बीमारी से ग्रसित हैं, तो आपको बेरील, हेमेटाईट एवं ओनेक्स रत्न धारण करना चाहिए। इससे आपको स्वस्थ हाने में जल्द मदद मिलेगी।

(1). गैंगरीन – लाल धागा, लाल कपड़ा या लाल मूंगा के साथ तांबे या लोहे का छल्ला धारण करें। तांबे के साथ माणिक्य धारण करना भी लाभदायक होगा।

(2). उच्चरक्तचाप के उपचार हेतु आपको 6 रत्ती का पन्ना मध्यमिका में, 4 रत्ती का पुखराज अनामिका में और 3 रत्ती का नीलम कनिष्ठा में धारण करना चाहिए। गंभीर परिस्थिति में 4 रत्ती का सफेद मोती दाहिने हाथ की तर्जनी में धारण करना चाहिए।

इन चारों रत्नों को संयुक्त रूप से उंगलियों में धारण करना चाहिए।

(3). शरीर में खून की कमी से ग्रसित होने पर आपको 14 या 18 रत्ती का चंद्र रत्न, 1 या 2 रत्ती का हीरा और 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(4). यदि आपको अचानक रक्तस्राव होने लगता है, तो इससे बचने के लिए आपको 9 या 12 रत्ती का मोती और 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(5). महिला – उच्चरक्तचाप के उपचार हेतु आपको 10 या 12 रत्ती का सफेद मोती बायें हाथ के दो उंगलियों अनामिका और कनिष्ठा में धारण करना चाहिए।

(6). रक्ताल्पता – कलाई में लोहे का कड़ा पहनें, 5 रत्ती मूंगा तथा 5 से 7 रत्ती का पुखराज सोने या चांदी की अंगूठी में दायें हाथ में धारण करें।

(7). उच्चरक्तचाप के उपचार हेतु आपको माणिक, पन्ना, रक्तमणि धारण करना चाहिए।

(8). रक्तचाप की समस्या से छुटकारा पाने के लिए आपको 10 या 16 रत्ती का लाल मूंगा, 4 या 5 रत्ती का पीताम्बरी नीला अथवा जमुनिया धारण करना चाहिए।

(9). उच्च रक्तचाप – इस रोग से बचाव के लिए लग्नेश का रत्न धारण करें। 8–9 रत्ती का लाल रंग का शुद्ध मूंगा भी धारण कर सकते हैं। मूंगा के अभाव में पन्ना, मोती, मूनस्टोन आदि अलग-अलग अंगूठियां पहनना भी लाभकारी होगा।

(10). महिलाएं पुखराज और नीलम आदि धारण नहीं कर सकती हैं। अतः केवल सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(11). रक्त विकार से बचने के लिए आपको लाल मूंगा, पुखराज, मोती एक साथ धारण करना

चाहिए।

(12). खून की कमी में साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(1). ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मधुमेह रोग का कारक बृहस्पति एवं शुक्र होता है। कुण्डली में इन दोनों मेंसे जो ग्रह शुभ हो उसका रत्न धारण करना चाहिए। यदि कुण्डली में बृहस्पति शुभ स्थिति में स्थित है, तो सोने की अंगुठी में पुखराज धारण करें। पुखराज शुक्ल पक्ष के पहले गुरुवार को तर्जनी अंगुली में धारण करना चाहिए। पुखराज का वजन सवा पांच रत्ती से उपर होना चाहिए। यदि कुण्डली में शुक्र ग्रह शुभ है, तो कम से कम 30 से 100 सेंट का हीरा चांदी में अनामिका उंगली में धारण करना चाहिए। कोई भी रत्न धारण करने से पहले रत्न के स्वामी के मंत्र से रत्न को अभिमंत्रित जरूर करना चाहिए। यदि आपहीरा लेने में असमर्थ हैं, तो शुक्र के मंत्र 'ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः' का तीन माला जप करें। एक साल बाद इसके दसवें हिस्से के बराबर मंत्र से हवन करना चाहिए तथा यथाशक्ति ब्राह्मणों को भोजन कराकर दान-दक्षिणा देना चाहिए।

(2). लग्न के स्वामी का रत्न धारण करें। लाल मूंगा तथा पीला पुखराज धारण करना भी शुभ फलदायक होता है।

(3). मधुमेह रोग से छुटकारा पाने के लिए आपको 14 या 16 रत्ती का चंद्र रत्न और 7 या 9 रत्ती का मोतीतथा 1 या 2 रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।

(4). मधुमेह से मुक्ति पाने के लिए 7 रत्ती का सफेद मूंगा मध्यमिका में तथा 5 रत्ती का पीला पुखराज अनामिका में धारण करना चाहिए।

(5). मधुमेह से ग्रसित होने पर आपको मध्यमिका में लाल मूंगा और अनामिका में पुखराज चांदी की अंगूठी में धारण करना चाहिए।

(6). एक रत्ती हीरा या सफेद मूंगा तथा पुखराज धारण करें। पीताम्बरी, नीला एवं सफेद मूंगे से लाभ होगा।

(7). मधुमेह से मुक्ति पाने के लिए 1 रत्ती का हीरा मध्यमिका में धारण करना चाहिए।

(8). मधुमेह से मुक्ति पाने के लिए 4 रत्ती का पीताम्बरी नीला कनिष्ठा में तथा 9 रत्ती का सफेद मूंगा मध्यमिका में धारण करना चाहिए।

मधुमेह (डायबिटीज) के लिए टोटके

बारह रविवार का व्रत करें। व्रत के दौरान विद्वान ब्राह्मण की सलाह से ही सारे कार्य करें। पहले व्रत वाले रविवार से शुरू करते हुए जब तक व्रत पूरा न हो, तब तक रोजाना सूर्य को अर्घ्य दें। अर्घ्य देते समय सूर्यदेव से अपने दुःखों को दूर करने की प्रार्थना करें। व्रत के बाद सोने या पीतल की मूर्ति लाल कपड़े में रखकर ब्राह्मण को दान कर दें।

आजकल चुम्बकीय चिकित्सा से इस बीमारी का इलाज किया जाता है। रक्त शर्करा को नियंत्रण में लाने के लिए भोजन करने के बाद चुम्बकीय बेल्ट को बांधा जाता

है।

एक नारंगी रंग की कांच की बोतल लें, उसमें एक चौथाई जल भरकर कुछ समय के लिए जहां सूर्य की किरणें पड़ती हो वहां रख दें। फिर इस जल को दवाई के रूप में दिन में तीन बार पीयें। मधुमेह के रोगी को बहुमूत्र की शिकायत होती है, इस जल को पीने से बहुमूत्र की शिकायत में कमी होगी।

एक नारियल के गोले में अपनी अंगुली भर के चौड़ाई का छेद करें। छेद के अंदर गाय का घी एवं बूरा भरें तथा अपने उपर सात बार घुमाकर किसी झाड़ी में जहां चिटियां निकलती हो, वहां गड़ढ़े में दबा दें। ऐसा 21 शुकवार तक करें, लाभदायक फल प्राप्त होगा।

धूमना—फिरना, तैरना साइकिल चलाना मधुमेह के रोगी के लिए बहुल लाभदायक होता है। अपना समय एवंशारीरिक क्षमता के हिसाब से इनका प्रयोग करें।

लाजवन्ती, जौ, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वोषधि, कूट, खिल्ला एवं कंगनी को बराबर—बराबर भागों में लेकर चूर्ण बना लें। स्नान करने से पहले रोजाना पानी में इस चूर्ण को डालकर स्नान करें। अगर इनमें से कोई चीज आसानी से न मिले, तो जो चीज उपलब्ध हो उसी से स्नान करें।

नौकासन, हलासन, योगमुद्रा, धनुरासन, भस्मिका, नाड़ी शोधन एवं प्राणायाम करें।

मधुमेह (डायबिटीज) के लिए लाल किताब के उपाय

शुक के मंत्र से हर शुकवार को ईख के रस की 108 आहुति देते हुए हवन करें। इससे मधुमेह की संभावना खत्म हो जायेगी।

शुक को प्रसन्न करने के लिए लक्ष्मी का मंत्र 'ॐ श्रीं ह्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः' की एक माला का जाप शुक्ल पक्ष के पहले शुकवार से करें। मंत्र के जाप का विचार किसी योग्य ब्राह्मण के द्वारा करवायें। बासमती चावल का खीर बनाकर प्रत्येक शुकवार को खीर की आहुति दें। इससे शुक की अशुभता दूर होगी।

मधुमेह (डायबिटीज) के लिए आर्युवेदिक उपचार

पांच भाग जौ का आटा एवं एक भाग चने का आटा मिलाकर रोटी बनायें तथा चार गुणा सब्जी के साथ सेवन करें। अगर केवल चने के आटे का प्रबंध हो पा रहा हो तो करीब दस दिनों तक इसका सेवन करें। दस दिनों तक इसका सेवन करने से पेशाब में शक्कर आना बंद हो जाता है।

जामुन के चार कोमल एवं हरे पत्ते को बारीक पीस लें। फिर उसमें 50—60 ग्राम पानी मिलाकर उसे छान लें तथा इसे खाली पेट में पीयें। इस तरह से रोजाना दो बार लगातार दो सप्ताह तक सेवन करने से मधुमेह में लाभ मिलता है।

चावल, चपाती कम खायें। करेला, लौकी, मेथी, टिण्डा, परवल एवं चौराई का सेवन अधिक करें।

नींबू, आंवला, मट्ठा, टमाटर, संतरा एवं जामुन का सेवन

करें।

मधुमेह रोग में शहद का सेवन करना लाभदायक होता है। बाकी दूसरी मीठी वस्तुओं का सेवन करना हानिकारक होता है। एक बार में एक तोला से अधिक मधु का सेवन नहीं करना चाहिए।

गुड़ और शहद को बराबर-बराबर मात्रा में मिलकार उस पर नींबू की कुछ बूंदे डालकर खाना मधुमेह के रोग में लाभकारी होता है।

जामुन के चार हरे पत्ते लगभग 60 ग्राम पानी में रगड़कर छान लें एवं रोजाना 10 दिनों तक उसका सेवन करें। इसके बाद हर दो महीने बाद 10 दिनों तक इसका सेवन करें। ऐसा करने से पेशाब में शक्कर जाने की संभावना खत्म हो जाती है।

आठ-दस तुलसी के पत्ते रोजाना चबाने से मधुमेह रोग में फायदा होता है।

चीनी, गुड़, शहद, मिठाई, केक, पेस्ट्री, अचार, आइसक्रीम, जेली, बियर, हारलिक्स, बोर्नविटा, चॉकलेट, आदिजब तक डॉक्टर न बोलें न खायें।

एक कप ताजा करेले के रस में एक चम्मच आंवले के रस को मिलाकर पीयें। इसका दो महीने तक लगातार सेवन करने से ब्लड शुगर कम हो जाता है।

साफ गेहूं के सौ ग्राम दाने को धोकर पानी में भिंगों दें। सुबह में पानी के साथ गेहूं को ठण्डई की तरह सेघोंटकर उसमें चीनी मिलकार ग्यारह दिनों तक लगातार सेवन करने से फायदा होता है।

उपवास न करें।

सूखे आंवले के चूर्ण में शहद मिलकार चाटना लाभदायक होता है।

रोग का पता चलने के बाद शुरुआती दौर में रोजाना जामुन के चार पत्ते सुबह एवं शाम चबाकर सेवन करने से मधुमेह के रोग में राहत मिलती है।

जामुन की गुठली का चूर्ण बना लें। इसे रोजाना सादे पानी के साथ पीने से मधुमेह में फायदा होता है।

गाय के दूध या घी में शहद मिलाकर पीने से मधुमेह के रोग में लाभ मिलता है।

सूखे हुए जामुन के फलों का चूर्ण बना लें। दो तोले रोजाना के हिसाब से पानी के साथ सेवन करने से मधुमेह के रोग में फायदा होता है।

करेले के बीज का चूर्ण बनाकर सेवन करना लाभदायक होता है।

छः ग्राम मेथी का दाना लेकर इसे कूट लें और शाम के समय ढाई सौ ग्राम पानी में भिंगों दें। सुबह के समय इसे अच्छी तरह से मिलाकर कपड़े से छान लें तथा इसमें बिना कुछ मीठा मिलाये इसे पी जायें। लगभग दो महीने तक यह प्रयोग करते रहें। ऐसा करने से मधुमेह रोग से मुक्ति मिल जाती है।

रक्त एवं पेशाब की जांच

करायें।

अमरुद की एक पत्ती साफ करके एक गिलास पानी में रात भर भिगों दें। सुबह में उस पानी को खाली पेट में पीयें। ऐसा एक महीने तक करें। इससे मधुमेह में फायदा होगा।

पानी ज्यादा-से-ज्यादा पियें।

मधुमेह रोग में लगने वाली प्यास को शांत करने के लिए आंवले के ताजे फल का रस चूसना बहुत ही फायदेमंद होता है।

हल्दी के चूर्ण में शहद या आंवला का रस मिलकार चाटने से मधुमेह में लाभ होता है।

ताजे आंवले का एक तोला रस निकाल लें। इसमें शहद मिलकार कुछ दिनों तक सेवन करें, इससे मधुमेह में फायदा होता है।

अंकुरित गेहूं का सेवन करें।

रोजाना सुबह खाली पेट नीम की 8-10 कोमल पत्तियों को चबाकर उसका रस पीयें तथा नास्ता उसके आधे घण्टे बाद करें।

सलाद एवं सूप पियें।

गाजर का रस पियें।

धूप का सेवन करें।

स्वच्छ वायु लें।

शराब न पियें।

उदर (पेट) से संबंधित विकार के कारण और विविध उपाय



उदर (पेट) से संबंधित विकार से संबंधित कुण्डली में उपस्थित योग

आपकी कुण्डली में राहु लग्न में और शनि आठवें भाव में अशुभ स्थिति में है, आप आंतों की बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में छठे भाव का स्वामी बलहीन है, लग्न पर पापग्रह की दृष्टि पड़ रही है एवं आठवें भाव में पापग्रह स्थित है या उस पापग्रह की दृष्टि पड़ रही है, आप किसी ऐसी बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं, जिसमें भोजन करने में परेशानी हो सकती है।

आपकी कुण्डली में राहु या अन्य कोई पाप ग्रह लग्न में स्थित है तथा शनि आठवें भाव में स्थित है, आप उदर रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में बुध सातवें भाव में स्थित है तथा बुध पर पाप ग्रह की दृष्टि पड़ रही है, आप वात-कफजनित बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में राहु या केतु सातवें भाव में स्थित है, आप उदर से संबंधित बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में पाप ग्रह छठे एवं आठवें भाव में स्थित हैं तथा छठे भाव का स्वामी पाप ग्रह के साथ सातवें भाव में स्थित है, आपको उदर से संबंधित किसी समस्या का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली में लग्न में पापग्रह स्थित है और आठवें भाव में शनि स्थित है, आप मन्दाग्नि से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में राहु लग्न में स्थित है और शनि आठवें भाव में स्थित है, आप मन्दाग्नि से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में शुक्र छठे भाव में स्थित है और छठे भाव का स्वामी पापग्रहों के साथ स्थित है या उनसेदृष्ट है, आप अतिसार से पीड़ित हो सकते हैं एवं कमजोरी महसूस कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली में सातवें भाव के स्वामी चंद्रमा या लग्न के स्वामी पर केवल क्रूर ग्रहों की दृष्टि पड़ रही है, आप जिगर से संबंधित किसी समस्या से पीड़ित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में आठवें भाव में शनि तथा लग्न में राहु स्थित है, आप पसलियों में दर्द या गांठ से पीड़ित हो सकते हैं।

उदर (पेट) से संबंधित विकार के लिए रत्न और उपरत्न का सुझाव

(1). अजीब वस्तुओं या विषयों से संबंधित सपने बार-बार आने पर आपको 14 या 16 रत्नी का लाल मूंगा और 9 या 10 रत्नी का मोती धारण करना चाहिए।

(2). यदि आप वातोन्माद/मूर्छा (हिस्टीरिया) रोग से पीड़ित हैं, तो आपको 7 या 9 रत्नी का मोती, 14 या 18 रत्नी का लाल मूंगा और 12 या 16 रत्नी का चंद्र रत्न धारण करना

चाहिए।

- (3). मिर्गी से पीड़ित होने पर आपको उपचार हेतु पन्ना, मोती और मूंगा एक साथ धारण करना चाहिए।
- (4). अत्यधिक तनावग्रस्त होने के कारण मानसिक असंतुलन की स्थिति उत्पन्न होने पर आपको 4 या 8 रत्ती का पन्ना और 16 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न धारण करना चाहिए।
- (5). यदि आप आनुवांशिक मानसिक असंतुलन से पीड़ित हैं, तो आपको 24 या 30 रत्ती का चंद्र रत्न और 12 या 14 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (6). मणिक्य, मोती तथा पन्ना पहनें।
- (7). अनिद्रा से छुटकारा पाने के लिए आपको पन्ना, पुखराज और मोती धारण करना चाहिए।
- (8). शिराप्रदाह से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (9). स्मरण शक्ति कमजोर होने पर आपको 5 या 7 रत्ती का पन्ना, 4 या 6 रत्ती का लहसुनिया और 12 या 18 रत्ती का चंद्र रत्न अथवा 7 या 9 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (10). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए पन्ना, चंद्ररत्न, लाल मूंगा और पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (11). अनिद्रा से निजात पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का चंद्ररत्न धारण करना चाहिए।
- (12). यदि आप शराब पीने के आदी हैं, तो आपको इससे छुटकारा पाने के लिए 14 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न और 9 या 14 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए।
- (13). सिरदर्द से बचने के लिए आपको 4 या 5 रत्ती का माणिक अथवा 20 या 24 का माणिक का उपरत्न धारण करना चाहिए।
- (14). मानसिक विकार से बचने के लिए आपको 16 या 24 रत्ती का चंद्र रत्न और 6 या 8 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (15). मिरगी/वातोन्माद से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा और मोती धारण करना चाहिए।
- (16). यदि आपको मिरगी का दौरा पड़ता है, तो आपको इससे बचने के लिए 18 या 14 रत्ती का चंद्र रत्न, 10 या 14 रत्ती का सफेद मोती और 1 या 2 रत्ती का हीरा अथवा 4 या 5 रत्ती का जरकन धारण करना चाहिए।
- (17). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का पीला पुखराज और 5 या 6 रत्ती का चंद्ररत्न धारण करना चाहिए।
- (18). अनिद्रा से निजात पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का पन्ना, अनामिका में 5 रत्ती का पीला

पुखराज और तर्जनी में 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(19). अनिद्रा से निजात पाने के लिए 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(20). आलस्य या उदासीनता से संबंधित रोग से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का मोती और 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(21). यदि आप पागलपन में बेहोशी (हिस्टीरीकल इन्सैनिटी) से पीड़ित हैं, तो आपको 20 या 25 रत्ती का चंद्र रत्न और 1 या 2 रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।

(22). मिरगी/लकवा से पीड़ित होने पर आपको साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(23). मिर्गी से बचने के लिए पन्ना, 6 रत्ती का चंद्ररत्न और 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(24). भूलने की बीमारी से निजात पाने के लिए आपको 5 रत्ती का लाल मूंगा और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(25). अनिद्रा से निजात पाने के लिए 10 या 12 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(26). नवरत्न का पेंडल गले में पहनना भी लाभदायक होगा।

(27). नीलम या पुखराज चांदी अथवा तांबे की अंगूठी में पहनें।

(28). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए पन्ना, नीलम, और सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(29). स्थायी सिरदर्द से छुटकारा पाने के लिए आप पन्ना और मोती धारण कर सकते/सकती हैं।

(30). श्लैष्मिक ज्वर से बचने के लिए 5 रत्ती का लाल मूंगा और 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(31). यदि आप विषाद रोग से ग्रसित हैं, तो आपको 5 या 8 रत्ती का नीलम और 5 या 7 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।

(32). मिर्गी से बचने के लिए 5 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का नीलम और 5 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(33). मिर्गी से बचने के लिए पन्ना और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(1). मस्तिष्क विकार – मूनस्टोन, पीला पुखराज तथा पन्ना धारण करने से मानसिक शांति मिलती है। लालमूंगा धारण करना भी लाभदायक होता है।

(2). स्मृति दोष – मोती या माणिक्य गले में धारण करें। एक हाथ में 6 रत्ती का पन्ना तथा दूसरे में 9 रत्ती का मूंगा चांदी की अंगूठी में पहनें। चांदी, सोना, तांबा मिश्रित धातु का कड़ा पहनना भी लाभदायक

होगा।

(3). मस्तिष्क के ट्यूमर से निजात पाने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 6 रत्ती का सफेद मोती और 4 रत्ती का नीलम या लाजावर्द धारण करना चाहिए, अथवा पन्ना, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 6 रत्ती का चंद्ररत्न या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(4). परागज-ज्वर (हे-फीवर) से बचने के लिए आपको 9 या 16 रत्ती का गोमेद और 5 या 7 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(5). यदि आप रोगभ्रम/चिन्तोन्माद (हॉइपोकांड्रिया) से ग्रसित हैं, तो आपको 7 या 8 रत्ती का नीलम और 5 या 7 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(6). मिरगी – 1 – 6 रत्ती मोती या 5 रत्ती पन्ना या 12 रत्ती सफेद मोती धारण करें।
2 – पन्ना और मूनस्टोन धारण करें। लग्न के स्वामी का रत्न धारण करना शुभ फलदायक होगा।

(7). प्रमस्तिष्कीय रक्तस्राव – 1 – लग्न के स्वामी का रत्न धारण करें।
2 – 7-8 रत्ती का लाल मूंगा तथा मूनस्टोन या सफेद मोती चांदी में धारण करें।
3 – एक त्रिकोण पेण्डेण्ट में लग्न के स्वामी का रत्न, मूंगा तथा पुखराज जड़वायें, जिसमें माणिक्य बीच में हो, इस प्रकार का पेण्डेण्ट धारण करने से इस रोग का प्रभाव कम हो सकता है।

(8). मस्तिष्कावरण शोथ से बचने के लिए आपको लाल मूंगा, पुखराज, पन्ना और माणिक धारण करना चाहिए।

(9). मस्तिष्क में तंत्रिकाओं के गड़बड़ी से सिरदर्द होने पर आपको 5 या 6 रत्ती का पीला पुखराज और 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(10). पागलपन या विकृष्टता से ग्रसित होने पर इसके उपचार हेतु आपको पन्ना, लाल मूंगा, मोती धारण करना चाहिए। इससे रोग का प्रभाव कम होगा।

(11). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए आपको 10 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(12). मस्तिष्क में गांठ, सूजन और फोड़ा होने पर आपको उसके उपचार हेतु पन्ना, पुखराज और मूंगा धारण करना चाहिए।

(13). यदि आप प्रमस्तिष्क घनास्त्रता रोग से पीड़ित हैं, तो आपको 3 रत्ती का माणिक अथवा 18 या 24 रत्ती का माणिक का उपरत्न, 10 या 12 रत्ती का मोती तथा 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(14). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 3 रत्ती का माणिक और 4 रत्ती नीलम धारण करना चाहिए। गर्मी के महीनों में रात के समय लाल मूंगा और माणिक धारण नहीं करना चाहिए।

(15). पागलपन – 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का पीला पुखराज एवं 4 रत्ती का मोती धारण करें।

(16). कमजोर स्मरण शक्ति या भूलने की बीमारी से बचने के लिए आपको 7 या 9 रत्ती का लाल मूंगा

और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(17). मस्तिष्क ज्वर – लाल मूंगा, पीला पुखराज तथा पन्ना धारण करना लाभदायक साबित होगा।

(18). मस्तिष्क संबंधित रोग – 1 – लग्न के स्वामी, सूर्य एवं चन्द्रमा को उनसे संबंधित रत्न धारण करा कर बलशाली बनायें।

2 – लग्न के स्वामी, सूर्य एवं चंद्रमा का कवच पाठ करें तथा इनसे संबंधित यंत्र धारण करें।

3 – एक ही अंगूठी अथवा पेण्डेंट में लाल मूंगा तथा पन्ना धारण करें।

4 – लाल मूंगा एवं पीला पुखराज या पन्ना एवं चन्द्रकान्त एक साथ मिलाकर धारण करें।

5 – पन्ना एवं चन्द्रकान्त एक साथ धारण करें।

6 – मूंगा एवं मोती धारण करें, लाभदायक फल प्राप्त होगा।

7 – लाल मूंगा एवं पन्ना एक साथ धारण करना लाभदायक सिद्ध होता है।

(19). मस्तिष्कीय रक्तस्राव होने पर आपको मंगल के लिए लाल मूंगा, बुध के लिए पन्ना, और चंद्रमा के लिए मोती धारण करना चाहिए। साथ ही उचित औषधि लेने पर आपको शीघ्र उत्तम परिणाम प्राप्त होगा।

(20). मस्तिष्क संबंधी रोगों से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का पन्ना, 14 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न तथा 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(21). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(22). मूर्च्छा – 5 रत्ती पन्ना, 4 रत्ती नीलम एवं 5 रत्ती मोती धारण करें।

(23). अनिद्रा – फिरोजा, जिरकॉन, श्वेत ओपल तथा मोती धारण करना लाभदायक होता है। बारहवें भाव के स्वामी का रत्न धारण करना भी शुभ फलदायक होगा। पीला पुखराज भी धारण किया जा सकता है।

(1). मोतियाबिंद से छुटकारा पाने के लिए 3 या 4 रत्ती का माणिक और 5 या 6 रत्ती का पन्ना और 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती एक साथ धारण करना चाहिए। यदि संभव हो तो आधा रत्ती का हीरा बाएं हाथ में धारण करना चाहिए।

(2). 10 या 12 रत्ती का माणिक्य अनामिका अंगुली में शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन धारण करें।

(3). दूर दृष्टि दोष को दूर करने के लिए पन्ना, माणिक और सफेद मोती धारण करना चाहिए। यदि संभव हो तो आधा रत्ती का हीरा बाएं हाथ में धारण किया जा सकता है। माणिक के स्थान पर लाल मूंगा धारण किया जा सकता है।

(4). यदि जन्म के बाद नेत्र हानि होती है अथवा दृष्टिहीनता का उपचार संभव है, तो दृष्टिहीनता अथवा कमजोर दृष्टि से बचने के लिए आप माणिक और मोती धारण कर सकते हैं।

(5). मोतियाबिन्द – पन्ना को आंखों की ज्योति में वृद्धि करने में सहायक माना जाता है और मोती को खोई नेत्र ज्योति प्राप्त करने में सहायक। रोग के उपचार के दौरान माणिक्य धारण करें। गर्मियों में माणिक्य के स्थान पर लाल मूंगा पहनें। मूंगा, मोती तथा पन्ना 3–3 रत्ती प्रत्येक के हिसाब से एक साथ अंगूठी में जड़वाकर या पेण्डेंट में धारण करें, लाभ

होगा।

(6). निकट दृष्टि से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का माणिक और 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए। माणिक के स्थान पर लाल मूंगा धारण किया जा सकता है।

(7). आंख आने से मुक्ति पाने के लिए मध्यमिका उंगली में 4 या 5 रत्ती का चंद्ररत्न अथवा कनिष्ठा में 3 या 4 रत्ती का नीलम धारण करना चाहिए।

(8). यदि आप आंखों की बीमारी से पीड़ित हैं, तो आपको एक्वामेरीन एवं पैरीडौट रत्न धारण करना चाहिए। इससे आपको जल्द स्वस्थ होने में मदद मिलेगी।

(9). नेत्र संबंधी रोगों से बचने के लिए आपको 3 या 5 रत्ती का माणिक और 7 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।

(10). नेत्रशोथ – इस रोग के प्रभाव को कम करने के लिए पन्ना धारण करें। इसके अलावा मूनस्टोन, ओपल, जिरकॉन धारण करने से भी नेत्र रोगों में काफी लाभ होता है।

(11). आंख आना/नेत्रश्लेष्मलाशोथ से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा एवं लाल वस्त्र धारण चाहिए।

(12). अंधापन – सफेद मोती, मूनस्टोन तथा मूंगा धारण करना लाभदायक होगा।

(13). वर्णाधता – लाल माणिक्य अथवा मूंगे के साथ मोती धारण करना वर्णाधता में बहुत लाभदायक होता है।

(14). कमजोर दृष्टि अथवा नेत्र से संबंधित रोगों से बचाव के लिए आपको 10 अथवा 14 रत्ती का मूंगा और 9 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।

(15). वृद्धावस्था का दूर दृष्टि दोष से निजात पाने के लिए पन्ना, माणिक, सफेद मोती और लाल मूंगा संयुक्त रूप से धारण करना चाहिए। लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना सर्वाधिक उपयोगी होगा।

(16). रतौंधी से छुटकारा पाने के लिए लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(17). वर्णान्धता से निजात पाने के लिए पन्ना, लाल मूंगा, सफेद मोती व हीरा धारण करना चाहिए।

(18). दृष्टिवैषम्यता को दूर करने के लिए लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना उपयोगी होगा।

(1). बहरापन से बचने के लिए आपको 9 रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पन्ना, नीलम, पुखराज धारण करना चाहिए।

(1). स्फटिक, मोती तथा मूनस्टोन धारण करें। लाल कपड़ा या लाल धागा अवश्य पहनें। तांबे की अंगूठी में मूंगा पहनने से मुख (मुँह) से संबंधित विकार का प्रभाव कम हो जाता है।

(2). मुंहासे/फुंसी से छुटकारा पाने के लिए आपको 7 या 9 रत्ती का सफेद मूंगा मध्यमिका में धारण करना

चाहिए।

(3). चांदी की अंगूठी में 8 या 10 रत्ती का सफेद मूंगा अथवा 4 से 10 रत्ती का मोती मध्यमा अंगुली में पहनें, साथ ही छोटी अंगुली में लाजवर्त पहनें। यदि मूंगा अनुकूल न आये तो केवल चांदी की अंगूठी ही धारण करें। इससे मुख (मुँह) से संबंधित विकार का प्रभाव कम हो जाता है।

(4). दांतों में कीड़े या दर्द होने पर – सफेद या लाल मूंगा पहनना लाभदायक होगा।

(5). यदि आप मुँहासे से ग्रसित हैं, तो आपको ऐमेथीस्ट रत्न धारण करना चाहिए। इससे आपको जल्द स्वस्थ होने में मदद मिलेगी।

(6). मूनस्टोन तथा पीला गोमेद धारण करना लाभकारी होगा। पुखराज तथा मोती पहनना भी शुभ फलदायक है। इससे मुख (मुँह) से संबंधित विकार का प्रभाव कम हो जाता है।

(1). मूनस्टोन तथा पीला गोमेद धारण करना लाभकारी होगा। पुखराज तथा मोती पहनना भी दांतों के रोगमें शुभ फलदायक है।

(2). दांतों से संबंधित रोगों से बचने के लिए आपको 4 या 7 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(3). लाल या सफेद मूंगा, पुखराज पहनना भी दांतों के दर्द में लाभकारी साबित होता है।

(1). सोने या चांदी की अंगूठी में पुखराज या सुनैला धारण करें। शुद्ध मूंगा 5 रत्ती का चांदी में मढ़वाकर अनामिका में धारण करें। मूंगा या पुखराज का पैंडल जंजीर में डालकर गले में पहन सकते हैं।

(2). स्वराघात से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(3). कण्ठशालक रोग से बचने के लिए आपको 5 रत्ती का लाल मूंगा अनामिका में और 5 रत्ती का पीला पुखराज तर्जनी में धारण करना चाहिए।

(4). गले/कण्ठ से संबंधित विकार से मुक्ति के लिए आभूषण दान करना चाहिए।

(5). वाणी में अत्यधिक कर्कशता होने पर इससे बचने के लिए आपको 9 या 10 रत्ती का मोती और 3 या 5 रत्ती का माणिक धारण करना चाहिए।

(6). कंठ में सूजन होने पर आपको 5 रत्ती का लाल मूंगा अनामिका में धारण करना चाहिए।

(7). यदि आप डिप्थिरिया (कंठ का एक संक्रामक रोग) से पीड़ित हैं, तो आपको 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा और 7 या 12 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए।

(8). गर्दन में असहनीय दर्द से बचने के लिए आपको 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा और 1 या 2 रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।

(9). गले से संबंधित रोगों से बचाव के लिए आपको 12 अथवा 16 रत्ती का चंद्ररत्न और आधा रत्ती का

हीरा धारण करना चाहिए।

(10). गंडमाला रोग से बचने के लिए आपको साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराजधारण करना चाहिए।

(11). गले से संबंधित रोग से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(1). कुकर खांसी – मरकत अथवा पेरीडॉट पहनना लाभदायक होगा।

(2). महिला – अस्थमा रोग से मुक्ति पाने के लिए 10 या 12 रत्ती का सफेद मोती बायें हाथ के दो उंगलियों अनामिका और कनिष्ठा में धारण करना चाहिए।

(3). दमा – नवधातु में काला अथवा लाल अकीक धारण करें। सोने या चांदी में 8–9 रत्ती का लाल मूंगा तथा 3 से 5 रत्ती का गोमेद अष्टधातु में धारण करना लाभदायक होगा।

(4). अस्थमा से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 5 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए। 4 रत्ती का लाल मूंगा दिन के समय में धारण किया जा सकता है, किन्तु इसे सोने जाने से पहले निकाल देना चाहिए। लाल मूंगा को रात के समय निकालने के बाद घोड़े की नाल की अंगूठी मध्यमिका में धारण करना बहुत उपयोगी रहेगा। इससे रात में अच्छी नींद आयेगी।

(5). श्वसन प्रणाली से संबंधित रोगों से बचने के लिए आपको 8 या 9 रत्ती का पीला मोती और 7 या 8 रत्ती का नीलम अथवा 18 या 24 रत्ती का जमुनिया धारण करना चाहिए।

(6). फुफ्फुसआवरणशोथ से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पन्ना और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(7). पुरुष – अस्थमा रोग से मुक्ति पाने के लिए 4 या 5 रत्ती का पन्ना और सफेद मोती तथा 4 रत्ती का नीलम कनिष्ठा में धारण करना चाहिए। नीलम के स्थान पर लाजावर्द धारण किया जा सकता है। सर्दी के मौसम में 4 रत्ती का लाल मूंगा अतिरिक्त रत्न के रूप में धारण किया जा सकता है।

(8). महिला – शीतज्वर से बचने के लिए आपको 4 या 6 रत्ती का नीलम, 4 या 7 रत्ती का पन्ना और 10 या 16 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए।

(9). अस्थमा रोग से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का पीला पुखराज, 14 या 16 रत्ती का चंद्र रत्न और 7 या 9 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।

(10). पुरुष – अस्थमा रोग से मुक्ति पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का पन्ना व 5 रत्ती का चंद्र रत्न और अनामिका में 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(11). इनफ्लूएंजा – लाल मूंगा और पीला पुखराज धारण करना लाभदायक होता है। यदि बार–बार रोग हो रहा है तो काला हकीक, माणिक्य तथा सूर्यकान्त मणि एक साथ लॉकेट में डाल कर गले में धारण करें।

(12). न्यूमोनिया से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला

पुखराज धारण करना चाहिए।

(13). महिला – हिचकी से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा अनामिका में और 5 रत्ती का गोमेद मध्यमिका में धारण करना चाहिए।

(14). अस्थमा से पीड़ित होने पर आपको 6 रत्ती का लाल पन्ना, 5 रत्ती का पुखराज और 6 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए। 7 वर्ष की आयु तक के बच्चे चांदी में जड़ित चंद्र रत्न धारण कर सकते हैं।

(15). शीतला रोग से बचने के लिए आपको लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(16). निमोनिया – इस रोग में लाल मूंगा तथा पीला पुखराज धारण करना शुभ फलदायक होता है।

(1). शीत ज्वर – 7-8 रत्ती का माणिक्य चांदी की अंगूठी में धारण करें। मंगल की शान्ति के लिये तांबे का कड़ा, अंगूठी या कोई अन्य आभूषण धारण करें।

(2). क्षय रोग से पीड़ित होने पर आपको 7 या 9 रत्ती का लाल मूंगा तथा 5 रत्ती का पुखराज धारण करना चाहिए।

(3). पीला पुखराज, सफेद मोती या लाल मूंगा धारण कर रोग का प्रभाव कम किया जा सकता है।

(4). तपेदिक से बचने के लिए 5 रत्ती का पन्ना, साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(5). तपेदिक रोग से बचने के लिए आपको 7 या 8 रत्ती का नीलम और 10 या 16 रत्ती का चंद्र रत्न अथवा 7 या 9 रत्ती का सफेद मोती और 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा तथा 4 या 7 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(6). पार्श्वशूल/फुस्फुस के आवरण में शोथ से बचाव के लिए आपको 3 अथवा 4 रत्ती का माणिक और 5 या 7 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(7). फेफड़े से संबंधित रोग से बचने के लिए आपको 10 या 16 रत्ती का मोती और 5 या 7 रत्ती का पीलापुखराज धारण करना चाहिए।

(8). तपेदिक/क्षय रोग से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा, गोमेद और मोती धारण करना चाहिए।

(9). क्षय रोग से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(10). क्षय रोग से बचने के लिए आपको कनिष्ठा में 4 रत्ती का नीलम धारण करना चाहिए।

(11). लाल मूंगा साढ़े सात रत्ती, पीला पुखराज पांच रत्ती, पन्ना पांच रत्ती का धारण करें।

(1). तांबे की अंगूठी या माणिक्य रविवार को पुष्य नक्षत्र में सूर्योदय के समय अनामिका अंगुली में धारण

करें।

(2). हृदय से संबंधित रोगों से बचने के लिए आपको 9 या 12 रत्ती का मोती और 12 या 14 रत्ती का लालमूंगा धारण करना चाहिए।

(3). हृदय रोग का कारक ग्रह राहु है, उसकी शांति के लिए दान, जप, व्रत एवं तांत्रिक टोटके का सहारा लें।

(4). मूंगा एवं पुखराज धारण करें। यदि फायदा न हो तो मोती और पन्ना धारण करें, निश्चित रूप से लाभहोगा।

(5). हृदय विकार से पीड़ित होने पर उपचार हेतु आपको पन्ना, मोती, पुखराज और लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(6). पांचवें भाव के स्वामी या चौथे भाव के स्वामी जो भी कारक ग्रह हैं, उन्हें एवं सूर्य को उनका रत्न धारण करके शक्तिशाली बनायें।

(7). लग्न के स्वामी का रत्न धारण करके स्वामी को शक्तिशाली बनायें।

(8). यदि आप हृदय की बीमारी से ग्रसित हैं, तो आपको बेरील, हेमेटाईट एवं ओनेक्स रत्न धारण करना चाहिए। इससे आपको स्वस्थ हाने में जल्द मदद मिलेगी।

(1). गैंगरीन – लाल धागा, लाल कपड़ा या लाल मूंगा के साथ तांबे या लोहे का छल्ला धारण करें। तांबे के साथ माणिक्य धारण करना भी लाभदायक होगा।

(2). उच्चरक्तचाप के उपचार हेतु आपको 6 रत्ती का पन्ना मध्यमिका में, 4 रत्ती का पुखराज अनामिका में और 3 रत्ती का नीलम कनिष्ठा में धारण करना चाहिए। गंभीर परिस्थिति में 4 रत्ती का सफेद मोती दाहिने हाथ की तर्जनी में धारण करना चाहिए।
इन चारों रत्नों को संयुक्त रूप से उंगलियों में धारण करना चाहिए।

(3). शरीर में खून की कमी से ग्रसित होने पर आपको 14 या 18 रत्ती का चंद्र रत्न, 1 या 2 रत्ती का हीरा और 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(4). यदि आपको अचानक रक्तस्राव होने लगता है, तो इससे बचने के लिए आपको 9 या 12 रत्ती का मोती और 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(5). महिला – उच्चरक्तचाप के उपचार हेतु आपको 10 या 12 रत्ती का सफेद मोती बायें हाथ के दो उंगलियों अनामिका और कनिष्ठा में धारण करना चाहिए।

(6). रक्ताल्पता – कलाई में लोहे का कड़ा पहनें, 5 रत्ती मूंगा तथा 5 से 7 रत्ती का पुखराज सोने या चांदी की अंगूठी में दायें हाथ में धारण करें।

(7). उच्चरक्तचाप के उपचार हेतु आपको माणिक, पन्ना, रक्तमणि धारण करना

चाहिए।

(8). रक्तचाप की समस्या से छुटकारा पाने के लिए आपको 10 या 16 रत्ती का लाल मूंगा, 4 या 5 रत्ती का पीताम्बरी नीला अथवा जमुनिया धारण करना चाहिए।

(9). उच्च रक्तचाप – इस रोग से बचाव के लिए लग्नेश का रत्न धारण करें। 8–9 रत्ती का लाल रंग का शुद्ध मूंगा भी धारण कर सकते हैं। मूंगा के अभाव में पन्ना, मोती, मूनस्टोन आदि अलग-अलग अंगूठियांपहनना भी लाभकारी होगा।

(10). महिलाएं पुखराज और नीलम आदि धारण नहीं कर सकती हैं। अतः केवल सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(11). रक्त विकार से बचने के लिए आपको लाल मूंगा, पुखराज, मोती एक साथ धारण करना चाहिए।

(12). खून की कमी में साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(1). ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मधुमेह रोग का कारक बृहस्पति एवं शुक्र होता है। कुण्डली में इन दोनों मेंसे जो ग्रह शुभ हो उसका रत्न धारण करना चाहिए। यदि कुण्डली में बृहस्पति शुभ स्थिति में स्थित है, तो सोने की अंगूठी में पुखराज धारण करें। पुखराज शुक्ल पक्ष के पहले गुरुवार को तर्जनी अंगुली में धारण करना चाहिए। पुखराज का वजन सवा पांच रत्ती से उपर होना चाहिए। यदि कुण्डली में शुक्र ग्रह शुभ है, तो कम से कम 30 से 100 सेंट का हीरा चांदी में अनामिका उंगली में धारण करना चाहिए। कोई भी रत्न धारण करने से पहले रत्न के स्वामी के मंत्र से रत्न को अभिमंत्रित जरूर करना चाहिए। यदि आपहीरा लेने में असमर्थ हैं, तो शुक्र के मंत्र 'ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः' का तीन माला जप करें। एक साल बाद इसके दसवें हिस्से के बराबर मंत्र से हवन करना चाहिए तथा यथाशक्ति ब्राह्मणों को भोजन कराकर दान-दक्षिणा देना चाहिए।

(2). लग्न के स्वामी का रत्न धारण करें। लाल मूंगा तथा पीला पुखराज धारण करना भी शुभ फलदायक होता है।

(3). मधुमेह रोग से छुटकारा पाने के लिए आपको 14 या 16 रत्ती का चंद्र रत्न और 7 या 9 रत्ती का मोती तथा 1 या 2 रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।

(4). मधुमेह से मुक्ति पाने के लिए 7 रत्ती का सफेद मूंगा मध्यमिका में तथा 5 रत्ती का पीला पुखराज अनामिका में धारण करना चाहिए।

(5). मधुमेह से ग्रसित होने पर आपको मध्यमिका में लाल मूंगा और अनामिका में पुखराज चांदी की अंगूठी में धारण करना चाहिए।

(6). एक रत्ती हीरा या सफेद मूंगा तथा पुखराज धारण करें। पीताम्बरी, नीला एवं सफेद मूंगे से लाभ होगा।

(7). मधुमेह से मुक्ति पाने के लिए 1 रत्ती का हीरा मध्यमिका में धारण करना चाहिए।

(8). मधुमेह से मुक्ति पाने के लिए 4 रत्ती का पीताम्बरी नीला कनिष्ठा में तथा 9 रत्ती का सफेद मूंगा

मध्यमिका में धारण करना चाहिए।

- (1). अतिसार – लग्न के स्वामी तथा आठवें भाव के स्वामी का संयुक्त रत्न अंगूठी में धारण करें। पन्ना, मोती तथा मूनस्टोन धारण करना भी शुभ फलदायक होगा।
- (2). यदि आप अपच या बदहजमी से पीड़ित हैं, तो इससे बचने के लिए आपको 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा और 7 या 9 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए, अथवा 4 या 6 रत्ती का पन्ना, 12 या 18 रत्ती का चंद्र रत्न तथा 10 या 14 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए।
- (3). आंत से संबंधित रोगों से बचने के लिए आपको 9 या 12 रत्ती का गोमेद और 4 या 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।
- (4). कब्ज – लाल मूंगा तथा लाल कपड़ा धारण करें। सोने की अंगूठी में पुखराज पहनना लाभदायक होगा।
- (5). पेट्टिक अल्सर –पन्ना मध्यमा में तथा पीला नीलम अनामिका में धारण करें। रोग गंभीर होने की स्थिति में माणिक्य या मूंगे की भस्म का सेवन करना लाभदायक होगा। 8 से 10 रत्ती का गोमेद, स्फटिक या लाजवंत मध्यमा अंगुली में धारण करना भी फायदेमंद होगा।
- (6). पथरी – नीला पुखराज, लाल मूंगा तथा मूनस्टोन धारण करें, यदि कष्ट कम न हो तो माणिक्य या मोती धारण करें, निश्चित रूप से लाभ प्राप्त होगा।
- (7). जठरीय और पाचन के लिए मध्यमिका उंगली में 4 रत्ती पीताम्बरी नीला ही इस रोग को पूर्णतः समाप्त करने में बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। किन्तु यदि नीलम धारण करने से डरते हैं, तो ऐसी स्थिति में दाहिने हाथ में, 6 रत्ती का पन्ना मध्यमिका में और 4 रत्ती का पीला पुखराज अनामिका में धारण करना चाहिए।
- (8). एपेंडिसाइटिस / उंडुकशोथ से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (9). टायफॉयड रोग से बचने के लिए आपको 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा और 7 या 12 रत्ती का गोमेदधारण करना चाहिए।
- (10). पेट-रोग – पेट की बीमारी को दूर करने के लिए डानसेन हर्व, चेरी, हिंक्वष्टक, मूंगा लाल, लाल रंग के कपड़े धारण करना लाभदायक है।
- (11). अपेण्डिसाइटिस – अनामिका में पुखराज धारण करें। लाल मूंगा गले में धारण करें। हीरा तथा माणिक्य भी अलग-अलग हाथों की अंगुलियों में धारण करें।
- (12). टाइफॉयड ज्वर 6 रत्ती का पन्ना और 4 रत्ती का पीताम्बरी नीला धारण करना चाहिए। यदि आपको नीलम धारण करने से डर लगता है, तो आप 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त सर्दी के मौसम में सफेद मूंगा धारण करना उपयोगी हो सकता है।
- (13). आन्त्रशोथ – पन्ना सोने की अंगूठी में तथा मूनस्टोन चांदी की अंगूठी में अलग-अलग पहनना

लाभकारी होगा।

(14). आंत्रशोथ/अपेन्डिक्स से पीड़ित होने पर आपको 7 या 9 रत्ती का लाल मूंगा तथा 5 रत्ती का पुखराज धारण करना चाहिए।

(15). टायफाइड – मूनस्टोन, पन्ना तथा पीला पुखराज धारण करना शुभ फलदायक होगा।

(16). पेचिश से बचने के लिए 4 रत्ती का पीताम्बरी नीला इस रोग को पूर्णतः समाप्त करने में बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। किन्तु यदि नीलम धारण करने से डरते हैं, तो ऐसी स्थिति में 6 रत्ती का पन्ना और 4 या 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(17). उदर शूल से ग्रसित होने पर आपको मध्यमिका में लाल मूंगा और अनामिका में पुखराज धारण करना चाहिए। आप मोती भी धारण कर सकते/सकती हैं।

(18). यदि आप जठरशोथ से पीड़ित हैं, तो इससे बचने के लिए आपको 12 या 14 रत्ती का लाल मूंगा, 9 या 12 रत्ती का गोमेद और 4 या 7 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(19). अतिसार से बचने के लिए कनिष्ठा उंगली में 4 रत्ती का पीताम्बरी नीला इस रोग को शांत करने में बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। किन्तु यदि नीलम धारण करने से डरते हैं, तो ऐसी स्थिति में 6 रत्ती का पन्ना मध्यमिका में और 4 रत्ती का पीला पुखराज अनामिका में धारण करना चाहिए।

(20). हैजा से बचने के लिए 5 रत्ती का पन्ना और 4 रत्ती का पीताम्बरी नीला धारण करना चाहिए।

(21). जलोदर रोग से बचने के लिए आपको 7 या 9 रत्ती का मोती, 12 या 16 रत्ती का चंद्र रत्न और 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

उदर (पेट) से संबंधित विकार के लिए लाल किताब के उपाय

पेट की बीमारी के प्रभाव को कम करने के लिए वरुण एवं रुद्रसूक्त का पाठ कराना चाहिए।

पेट में गैस होने पर हरा एवं नारंगी रंग का पानी दिन में दो या तीन बार लें।

यदि आपको पेट संबंधित कोई परेशानी है, तो आप सर्वांग आसन करें।

यदि पेट के रोग हो तो बड़ के वृक्ष की जड़ में मीठा दूध डालकर गीली मिट्टी से 43 दिन तक नाभि के चारों ओर तिलक लगायें।

उदर (पेट) से संबंधित विकार के लिए रुद्राक्ष का सुझाव

8 आठ मुखी रुद्राक्ष राहु द्वारा शासित होता है तथा यह पेट-दर्द, तनाव, चर्मरोग एवं व्याकुलता को दूर करने में मददगार होता है।

उदर (पेट) से संबंधित विकार के लिए आर्युवेदिक उपचार

खाना खाने के बाद रोजाना सुबह-शाम एक चम्मच काला नमक पानी के साथ लेना पेट संबंधित रोगों के लिए लाभदायक होता है।

छाछ के साथ 5-10 ग्राम आंवले का चूर्ण दिन में दो बार देने से पतला दस्त रुक जाता है।

छोटे बच्चे की माता टमाटर खाये और शिशु को भी टमाटर का रस नित्य पिलाये। इससे शिशुओं का शारीरिक विकास अच्छा होता है और उनकी पाचन-शक्ति बढ़ती है।

पुराने नज़ले-जुकाम से, पेट खराब होने से, या किसी अन्य कारण से बलगम काफी आने लगता है, जिससे व्यक्ति को काफी परेशानी होती है। ऐसी स्थिति में सूखा आंवला तथा मुलहठी, बराबर मात्रा में लेकर, चूर्ण बना लें, या बना हुआ चूर्ण ले आएं। इस मिश्रण को 1 चम्मच सुबह तथा 1 चम्मच शाम, गर्म पानी के साथ, कुछ दिन लें, तो बलगम की परेशानी से निजात पाएंगे।

बताशे या खांड में तीन-चार बूंद अमृतधारा डालकर सेवन करने से पेट दर्द ठीक हो जाता है।

अदरक का रस दिन में दो बार एक-एक चम्मच के हिसाब से देने पर कृमि रोग में लाभ मिलता है।

लहसुन की आठ-दस कलियां आधे गिलास पानी में उबाल लें। उसके बाद लहसुन की कलियों को खाकर उस पानी को पी जायें। इससे पेट-दर्द में लाभ होता है।

लहसुन की छः कली रोज खायें तथा साथ में मुनक्के का भी रोजाना सेवन करें। इससे दो महीने में पेट के सारे कीड़े खत्म हो जाते हैं।

सात दिनों तक बच्चे को सेब खिलाते रहने से छोटे-छोटे कृमि मर कर मलद्वार से बाहर निकलने लगते हैं। यह पेट के कीड़े मारने में बहुत उपयोगी सिद्ध होता है।

हल्के गरम पानी में थोड़ा सा पोदीने का रस तथा उतनी ही मात्रा में तुलसी के पत्ते का रस मिलाकर सेवन करने से पेट के गैस में आराम मिलता है।

पका केला थोड़े से नमक के साथ मसल लें और बच्चे को दिन में दो या तीन बार खिलायें। पतला दस्त आना बंद हो जायेगा।

भोजन करने के बाद नींबू के रस में भीगी सौंफ चबाने से पेट का भारीपन ठीक होता है।

अदरक के छोटे-छोटे तथा पतले-पतले टुकड़े काट लें। नींबू के रस में अदरक के इन टुकड़ों को नमक के साथ डालकर दो-तीन दिनों के लिए धूप में छोड़ दें। खाना खाने के पहले इन टुकड़ों को चबाकर खानेसे भूख न लगने की परेशानी ठीक हो जाती है।

पिसी हुई सेंधा नमक के साथ थोड़ा-सा खाने वाला सोडा गरम पानी के साथ सेवन करने से पेट-दर्द में राहत महसूस होती है।

दो लौंग को कूटकर इसे आधा गिलास पानी में उबाल लें। जब पानी आधा रह जाये तो छानकर मिश्री

मिलाकर इसका सेवन करने से उल्टियां ठीक होती हैं।

तांबे के बर्तन में रात का रखा हुआ जल सुबह में पीने से बड़ी आसानी से पेट साफ हो जाता है, पुरानी कब्ज मिटती है। लेकिन पानी पौन गिलास से ज्यादा न हो, इसका विशेष ध्यान रखें। नहीं तो उल्टा सख्तकब्ज हो जाता है।

बिना छिलके वाली उड़द की दाल एक मुट्ठी रात में भिंगो दें। सुबह में इसे पीसकर स्वाद के हिसाब से इसमें शहद मिला लें। इसे खाकर दूध पीयें। इससे भूख लगने लगती है।

अदरक को छीलकर उसके छोटे-छोटे टुकड़े कर लें तथा इस पर चुटकी भर नमक छिड़क कर चूसें। इससे पेट दर्द में राहत महसूस होती है।

जरा सी हींग बारीक पीसकर बच्चे की नाभि के चारों तरफ गोलाई में लगा दें। पेट दर्द में शीघ्र लाभ होता है।

चार अंजीर रात में पानी में भिंगो दें। पानी की मात्रा इतना ही डालें जितना कि अंजीर सोख ले। सुबह में अंजीर खाकर दूध पीयें। इससे भूख तेजी से लगती है।

200 ग्राम साफ सौंफ को दो बराबर-बराबर हिस्सों में बांट लें। एक भाग को तवे पर भून लें और उसे कच्ची बची हुई दूसरे भाग के साथ मिलाकर पीस लें। फिर उसमें दो सौ ग्राम मिश्री पीसकर मिलाकर रखलें। यह चूर्ण रोजाना सुबह-शाम एक या दो चम्मच सेवन करें। इससे आंव जल्दी ठीक हो जाता है।

रोजाना रात को एक सेब खाने से पेट के कीड़े बाहर निकल आते हैं।

भोजन के साथ मट्ठे का सेवन करना पेट के कीड़ों के लिए फायदेमंद होता है।

नींबू के रस में सफेद जीरा, भूनी हींग एवं पीसी हुई काली मिर्च चुटकी-चुटकी भर मिलकार पानी के साथ पीने से उल्टी ठीक हो जाती है।

आंवले की पत्तियों को छाछ के साथ सेवन करने से अजीर्ण तथा दस्त में फायदा होता है।

एक गिलास गरम पानी में कागजी नींबू का रस निचोड़ कर सुबह-सुबह खाली पेट में पीने से कब्ज ठीक होता है।

अड़हुल की कलियां चबाकर खाने से पतले दस्त तथा आंव में राहत मिलती है।

अजवायन का चूर्ण छः भाग लेकर उसमें काला नमक का पावडर एक भाग मिला लें। इस चूर्ण को आधा चम्मच गर्म पानी के साथ सेवन करने से पेट दर्द में बहुत जल्दी आराम मिलता है। अगर बच्चों को पेट दर्द हो, तो यह चूर्ण उसे आधी मात्रा में दें। इस चूर्ण को लेने से अफारा, वायु गोला तथा पेट के गैस में भी आराम मिलता है।

रोजाना 5-6 ग्राम सौंफ का चूर्ण रात को सोते समय गरम पानी या दूध के साथ कुछ दिन तक सेवन करने से कब्ज दूर होता

है।

एक मुट्ठी जामुन के कोमल पत्ते को सुबह-शाम चबाकर खाने से अतिसार में फायदा होता है।

एक गिलास पानी में एक चुटकी काला नमक तथा एक चम्मच नींबू का रस मिलकार पीने से सुबह में दस्तसाफ आता है तथा गैस की शिकायत भी नहीं रहती है।

दो चाय वाले चम्मच से सूखे आंवले के चूर्ण को फांककर पानी पी लें। इससे पाचन संबंधित शिकायतें दूर होती हैं।

मूली पत्तों के साथ काटकर उस पर सेंधा नमक एवं नींबू डालकर रोजाना खाने से पाचन क्रिया ठीक हो जाती है।

कब्ज होने पर दस-बारह मुनक्के अच्छी तरह से साफ करके रात में सोते समय दूध में उबालकर खायें एवंफिर वो दूध पी जायें। ऐसा करने से अगले दिन शौच साफ होता है। अधिक कब्ज होने पर लगातार तीन दिन यह प्रयोग करें एवं बाद में जरूरत के हिसाब से करें।

करीब दस ग्राम इसबगोल की भूसी को लगभग छः घंटे पानी में भिंगोकर छोड़ दें। फिर उसमें करीब दस ग्राम मिश्री मिलाकर रात में सोते समय पानी के साथ सेवन करें। ऐसा करने से कब्ज दूर होता है। इसबगोल की भूसी का पानी के साथ बिना भिंगोये भी सेवन करने से लाभदायक फल प्राप्त होता है।

खाने के साथ दो केले रोजाना खाना लाभदयक होता है।

पका हुआ केला खाने से अतिसार तथा पेचिश में लाभ प्राप्त होता है।

एक ग्राम से तीन ग्राम तक अदरक को लेकर छिलकर उसका बारीक टुकड़ा कर लें। फिर उसमें सेंधा नमक लगाकर खाना खाने के आधे घंटे पहले दिन में एक बार आठ दिनों तक सेवन करें। इससे हाजमा ठीक होगा, भूख लगेगी और पेट की हवा भी साफ होगी।

लगभग तीन सौ ग्राम साफ सौंफ एवं तीन सौ ग्राम मिश्री लें। सौंफ को दो बराबर हिस्सों में बांट लें तथा एक हिस्से को तवे पर भून लें। फिर भूनी हुई सौंफ एवं बची हुई सौंफ को मिलाकर बारीक पीस लें एवं उतनी ही पीसी हुई मिश्री मिलायें। फिर इस चूर्ण का दो-दो चम्मच के हिसाब से दिन में चार बार सेवन करें एवं थोड़ा सा पानी पी लें। ऐसा करने से हर तरह की आंवयुक्त पेचिश ठीक हो जाती है।

पके हुए अनानास को छीलकर उसके टुकड़ों पर काली मिर्च और सेंधा नमक लगाकर खाने से खाया हुआबाल, कांटा या कांच पेट में गल जाता है।

जब वमन होने पर कोई दवा असर न कर रहा हो तो एक चम्मच चूने का पानी 125 ग्राम दूध में मिलाकर दो बार सेवन करें। ऐसा करने से बुखार की वमन एवं पीले बुखार की वमन बंद हो जाती है।

बराबर -बराबर वजन में सेब और गाजर लें। इसे छिलके के साथ कद्दूकस कर लें। इन लच्छों को दोपहर के खाना खाने के बाद खायें। अगर आपका वजन कम हो रहा हो या आपको शरीर में कमजोरी का अहसास हो रहा हो, तो इसका सेवन करने से बहुत ही लाभ

होगा।

आधे ग्राम अजवायन के चूर्ण में चुटकी भर काला नमक मिलाकर रात में रोजाना गर्म पानी के साथ बच्चों को देने से बच्चों के पेट के कृमि खत्म हो जाते हैं।

खाना खाने के बाद तुलसी के पत्तों को पीसकर पानी के साथ पीने से अजीर्ण ठीक होता है।

एक चम्मच त्रिफला चूर्ण लगभग दो सौ ग्राम हल्का गर्म दूध या पानी के साथ रात में सोते समय लेना कब्ज की स्थिति में बहुत लाभदायक होता है।

एक कागजी नींबू के दो भाग करके उस पर पीसा हुआ सेंधा नमक और काली मिर्च लगा लें और धीरे-धीरे उसे चूसें। ऐसा करने से जी मिचलाना, उल्टी होना एवं उल्टी के बाद चक्कर आना बंद हो जाता है।

अजवायन का चूर्ण आधा ग्राम लेकर उसमें उससे बराबर भाग में गुड़ मिलाकर गोली बनाकर दिन में दो-तीन बार खिलाने से पेट के सभी प्रकार के कीड़े मर जाते हैं।

दूध के साथ लहसुन का रस 10 से 20 बूंद तक की मात्रा में खाली पेट पिलाने से आंतों की गड़बड़ी दूर होती है।

करीब दस ग्राम इसबगोल की भूसी दो सौ ग्राम दूध में भिगों दें। फिर उसमें चीनी मिलाकर खायें एवं उपरसे थोड़ा सा दूध पी लें। ऐसा करने से सुबह साफ शौच आयेगा।

आधे कप उबले हुए पानी में एक चम्मच अदरक का रस मिलायें एवं तुरंत गरमा-गरम पी जायें। ऐसा हर एक घंटे पर करें। इस तरह सेवन करने से पतला दस्त तुरंत बंद हो जाता है।

अच्छे सेब और गाजर को बराबर वजन में लेकर छिलके सहित कद्दूकस कर लें। इन लच्छों को सुबह में खाली पेट जितना खा सकते हैं खायें या दो सौ ग्राम की मात्रा में खा लें। इसे खाने के दो घंटे बाद तक किसी और चीज को न खायें। इसका सेवन करने से शरीर में शक्ति और स्फूर्ति आती है तथा शरीर पर अगर ज्यादा चर्बी हो तो वह कम होती है। इससे खून साफ होता है और रंग में निखार आता है एवं सुन्दरता बढ़ती है।

मेथी के पत्ते देशी घी में तल कर खाने से लाभ प्राप्त होता है।

रोजाना दो अंजीर खाने से कब्ज की शिकायत दूर होती है तथा मल साफ होता है।

बराबर-बराबर जीरा एवं सौंफ लेकर तवे पर भून लें तथा उसे बारीक पीस लें, उसके बाद हर तीन घंटे परतीन-तीन ग्राम भुना हुआ चूर्ण पानी के साथ सेवन करें। इससे दस्त बंद हो जाता है।

दो पका हुआ केला 125 ग्राम दही के साथ कुछ दिनों तक सेवन करने से आंतों की समस्या दूर हो जाती है तथा दस्त, पेचिश एवं अतिसार में लाभदायक फल प्राप्त होता है।

पाचन-शक्ति को ठीक रखने के लिए करेले की सब्जी या रस का सेवन करना लाभदायक होता

है।

बरगद या गूलर का दूध एक-एक छोटी चम्मच की मात्रा में तीन बार बताशे में भरकर लेने से पतला दस्त में फायदा होता है।

इसबगोल की भूसी का शर्बत बनाकर पीने से रक्त-अतिसार में फायदा होता है।

बबूल की कोमल पत्तियां एक-एक मुट्ठी दिन में दो-तीन बार चबा-चबा कर खाने से आंव के दस्त ठीक हो जाते हैं।

एक चुटकी सूखी चाय एवं एक चुटकी चीनी मिलाकर दिन में तीन बार एक घूंट पानी के साथ निगलने से कैसी भी पेचिश ठीक हो जाती है।

एक कप ठंडे पानी में एक चुटकी नमक तथा एक चम्मच नींबू का रस मिलाकर पीने से भी पतले दस्त रुकजाते हैं।

आयु के हिसाब से 1 से 5 चम्मच एरण्ड का तेल एक कप गर्म पानी या दूध में मिलाकर रात में सोते समयसेवन करें। ऐसा करने से दस्त साफ होता है।

दो लौंग कूटकर सौ ग्राम पानी में डालकर उबालें। जब पानी आधा हो जाये तो उसे छानकर स्वाद के अनुसार मिश्री मिलाकर पी जायें एवं करवट लेकर सो जायें। दिन में चार-पांच खुराक लेने पर उल्टी आनीबंद हो जाती है।

सुबह खाली पेट में सेब खाने से कब्ज की शिकायत दूर होती है।

बदहजमी होने पर ठंडा पानी पीना चाहिए तथा खाना नहीं खाना चाहिए।

इलायची के छिलके को जलाकर उसकी राख चाटने से या फिर पानी के साथ पीने से उल्टी ठीक हो जाती है।

दो पके हुए केले के गुदे में गुड़, नमक या दही मिलाकर सेवन करने से पेचिश ठीक होता है।

25 ग्राम बिना छिलके वाली उड़द की दाल, 50 ग्राम चीनी तथा 500 ग्राम दूध की खीर बनाकर सेवन करें। इससे भूख न लगने की शिकायत दूर होती है।

दस ग्राम अजवायन के चूर्ण को गुड़ में मिलाकर दिन में तीन बार सेवन करने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

एक छोटा चम्मच शुद्ध घी के साथ चुटकी भर हींग मिलाकर हल्के गरम पानी के साथ सेवन करने से पेट दर्द में राहत मिलती है।

तुलसी के पत्ते का रस और पान का रस, बराबर मात्रा में निकाल कर मिला लें। 10-10 बूंद तीन बार देनेसे गैस की बीमारी भाग खड़ी होती

है।

यदि बच्चे के पेट में नीली नसें हो तो उसके पेट में कीड़े हैं। बड़ों के पेट में भी अक्सर कीड़े पाये जाते हैं। 5-6 ग्राम पोदीने का रस लेकर, उसका चौथाई भाग चीनी मिलाकर, सुबह शाम सात दिन तक खाये तो पेड़ के कीड़े मर जाते हैं।

चार ग्राम सादा नमक, 4 नग काली मिर्च का चूर्ण एवं चार नग लौंग के चूर्ण को 50 ग्राम पानी में उबालकर सेवन करने से पेट का गैस ठीक होता है।

तुलसी की चार-पांच पत्तियों का रोजाना सेवन करने से पेट की परेशानियों से बचाव होता है।

दो-तीन ग्राम मेथी का दाना पानी के साथ दिन में दो-तीन बार निगलने से आंव के दस्त ठीक हो जाते हैं।

रात में सोने से पहले गरम दूध में घी डालकर पीने से पेट साफ हो जाता है।

इसबगोल की भूसी को एक या दो चम्मच की मात्रा में पानी या दूध के साथ लेने से कब्ज ठीक होता है।

खाना खाने के बाद कॉफी पीने से पेट में होने वाली गड़बड़ियां ठीक होती हैं।

एक भाग काले तिल के साथ उसका पांचवा भाग मिश्री मिलाकर पीस लें। इसे बकरी के दूध के साथ सेवन करने से आंव के दस्त ठीक होते हैं।

लहसुन की कलियों को कुचलकर आधा चम्मच रस निकाल लें। इसे थोड़ी सी छाछ में मिलाकर पीने से पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

पांच ग्राम हल्दी का चूर्ण एवं दो ग्राम काला नमक हल्का गरम पानी के साथ सेवन करने से पेट के गैस में आराम मिलता है।

पेट के कीड़ों के लिए सब्जियों में हरी लौकी एवं टिण्डे का प्रयोग करना फायदेमंद रहता है।

काले नमक के साथ जीरा का चूर्ण सेवन करना लाभदायक होता है।

पूरी, परांठे कोई भी खाने की चीज में अजवायन मिलाकर बनाये। इससे खाना पचने में आसानी होती है।

जामुन की छाल की राख शहद के साथ मिलाकर चटाने से उल्टियों में फायदा होता है।

पोदीने या हरी धनिया की चटनी रोगी को दिन में तीन-चार बार देने से उल्टियां आनी बंद हो जाती हैं।

भोजन के साथ लहसुन एवं पोदीने का चटनी खाना गैस में बहुत ही फायदेमंद साबित होता है।

एक चम्मच नींबू का रस, एक चम्मच अदरक का रस तथा दो चम्मच शहद मिलाकर पीने से पेट दर्द ठीक हो जाता

है।

ठंड के दिनों में बथुए की सब्जी का रोजाना सेवन करना पेट के गैस से आराम दिलाता है।

लौंग को आंच पर थोड़ा भूनकर मुंह में रखकर चूसने से उल्टी आनी बंद हो जाती है।

अजवायन और सेंधा नमक मिलाकर खाने से पेट साफ हो जाता है।

सेंधा नमक और काली मिर्च को पीसकर भूनी हुई अदरक के छोटे-छोटे टुकड़ों के साथ मिलाकर खाने से पाचन शक्ति सही रहती है।

अजवायन के चूर्ण को मट्ठे के साथ मिलाकर पीने से पेट के कीड़े नष्ट होते हैं।

नाभि में बड़ का दूध भर दें। दस्त ठीक हो जायेगा।

नींबू के रस में सफेद जीरा, भूनी हींग तथा पीसी हुई काली मिर्च चुटकी-चुटकी भर मिला दें। फिर जल में घोलकर पिलावें, उल्टी में लाभ होगा।

बच्चे के पेट में दर्द हो तो अदरक के रस को दूध में मिलाकर पिलाने से अफारा या गैस की शिकायतों से राहत मिलती है।

अदरक के रस में नींबू और शहद मिलाकर देने से उल्टी रुक जाती है।

दो चम्मच पानी में जरा सी हींग घोलकर नाभि के आस-पास लेप करने से बच्चे का पेट फूलना बंद हो जाता है।

एक कप बिना चीनी की काली चाय देने से भी दस्त रुक जाता है।

पीलिया (किडनी) से संबंधित विकार के कारण और विविध उपाय



पीलिया (किडनी) से संबंधित विकार से संबंधित कुण्डली में उपस्थित योग

आपकी कुण्डली में छठे भाव का स्वामी और चन्द्रमा या चन्द्र-राशि का स्वामी अशुभ स्थिति में है, आप पीलिया रोग के शिकार हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में अशुभ ग्रह छठे, सातवें तथा आठवें भाव में स्थित हैं, आप गुर्दे की बीमारी के शिकार हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में मंगल तथा शुक या बुध छठे या सातवें भाव में अशुभ स्थिति में हैं, आप गुर्दे के रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में छठे भाव के स्वामी या सातवें भाव के स्वामी, आठवें भाव के स्वामी या व्यय भाव के स्वामी के साथ अशुभ स्थिति में हैं, आप गुर्दे की बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में सातवें भाव में अशुभ ग्रह स्थित है तथा सातवें भाव का स्वामी छठे या आठवें भाव में स्थित है, आप गुर्दे से संबंधित रोग के शिकार हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में छठे, सातवें तथा आठवें भाव में पापी ग्रह स्थित है, आपको किडनी से संबंधित बीमारी से ग्रसित होने की संभावना हो सकती है।

पीलिया (किडनी) से संबंधित विकार के लिए रत्न और उपरत्न का सुझाव

- (1). अजीब वस्तुओं या विषयों से संबंधित सपने बार-बार आने पर आपको 14 या 16 रत्नी का लाल मूंगा और 9 या 10 रत्नी का मोती धारण करना चाहिए।
- (2). यदि आप वातोन्माद/मूर्छा (हिस्टीरिया) रोग से पीड़ित हैं, तो आपको 7 या 9 रत्नी का मोती, 14 या 18 रत्नी का लाल मूंगा और 12 या 16 रत्नी का चंद्र रत्न धारण करना चाहिए।
- (3). मिर्गी से पीड़ित होने पर आपको उपचार हेतु पन्ना, मोती और मूंगा एक साथ धारण करना चाहिए।
- (4). अत्यधिक तनावग्रस्त होने के कारण मानसिक असंतुलन की स्थिति उत्पन्न होने पर आपको 4 या 8 रत्नी का पन्ना और 16 या 20 रत्नी का चंद्र रत्न धारण करना चाहिए।
- (5). यदि आप आनुवांशिक मानसिक असंतुलन से पीड़ित हैं, तो आपको 24 या 30 रत्नी का चंद्र रत्न और 12 या 14 रत्नी का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (6). मणिक्य, मोती तथा पन्ना पहनें।
- (7). अनिद्रा से छुटकारा पाने के लिए आपको पन्ना, पुखराज और मोती धारण करना चाहिए।
- (8). शिराप्रदाह से बचने के लिए साढ़े सात रत्नी का लाल मूंगा और 5 रत्नी का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (9). स्मरण शक्ति कमजोर होने पर आपको 5 या 7 रत्नी का पन्ना, 4 या 6 रत्नी का लहसुनिया और 12 या 18 रत्नी का चंद्र रत्न अथवा 7 या 9 रत्नी का मोती धारण करना चाहिए।

चाहिए।

(10). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए पन्ना, चंद्ररत्न, लाल मूंगा और पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(11). अनिद्रा से निजात पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का चंद्ररत्न धारण करना चाहिए।

(12). यदि आप शराब पीने के आदी हैं, तो आपको इससे छुटकारा पाने के लिए 14 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न और 9 या 14 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए।

(13). सिरदर्द से बचने के लिए आपको 4 या 5 रत्ती का माणिक अथवा 20 या 24 का माणिक का उपरत्न धारण करना चाहिए।

(14). मानसिक विकार से बचने के लिए आपको 16 या 24 रत्ती का चंद्र रत्न और 6 या 8 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(15). मिरगी/वातोन्माद से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा और मोती धारण करना चाहिए।

(16). यदि आपको मिरगी का दौरा पड़ता है, तो आपको इससे बचने के लिए 18 या 14 रत्ती का चंद्र रत्न, 10 या 14 रत्ती का सफेद मोती और 1 या 2 रत्ती का हीरा अथवा 4 या 5 रत्ती का जरकन धारण करना चाहिए।

(17). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का पीला पुखराज और 5 या 6 रत्ती का चंद्ररत्न धारण करना चाहिए।

(18). अनिद्रा से निजात पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का पन्ना, अनामिका में 5 रत्ती का पीला पुखराज और तर्जनी में 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(19). अनिद्रा से निजात पाने के लिए 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(20). आलस्य या उदासीनता से संबंधित रोग से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का मोती और 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(21). यदि आप पागलपन में बेहोशी (हिस्ट्रीकल इन्सैनिटी) से पीड़ित हैं, तो आपको 20 या 25 रत्ती का चंद्र रत्न और 1 या 2 रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।

(22). मिरगी/लकवा से पीड़ित होने पर आपको साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(23). मिर्गी से बचने के लिए पन्ना, 6 रत्ती का चंद्ररत्न और 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(24). भूलने की बीमारी से निजात पाने के लिए आपको 5 रत्ती का लाल मूंगा और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना

चाहिए।

- (25). अनिद्रा से निजात पाने के लिए 10 या 12 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (26). नवरत्न का पेंडल गले में पहनना भी लाभदायक होगा।
- (27). नीलम या पुखराज चांदी अथवा तांबे की अंगूठी में पहनें।
- (28). उन्माद/विक्षिप्तता के निदान के लिए पन्ना, नीलम, और सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (29). स्थायी सिरदर्द से छुटकारा पाने के लिए आप पन्ना और मोती धारण कर सकते/सकती हैं।
- (30). श्लैष्मिक ज्वर से बचने के लिए 5 रत्ती का लाल मूंगा और 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (31). यदि आप विषाद रोग से ग्रसित हैं, तो आपको 5 या 8 रत्ती का नीलम और 5 या 7 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (32). मिर्गी से बचने के लिए 5 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का नीलम और 5 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (33). मिर्गी से बचने के लिए पन्ना और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (1). मस्तिष्क विकार – मूनस्टोन, पीला पुखराज तथा पन्ना धारण करने से मानसिक शांति मिलती है। लालमूंगा धारण करना भी लाभदायक होता है।
- (2). स्मृति दोष – मोती या माणिक्य गले में धारण करें। एक हाथ में 6 रत्ती का पन्ना तथा दूसरे में 9 रत्ती का मूंगा चांदी की अंगूठी में पहनें। चांदी, सोना, तांबा मिश्रित धातु का कड़ा पहनना भी लाभदायक होगा।
- (3). मस्तिष्क के ट्यूमर से निजात पाने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 6 रत्ती का सफेद मोती और 4 रत्ती का नीलम या लाजावर्द धारण करना चाहिए, अथवा पन्ना, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 6 रत्ती का चंद्ररत्न या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए।
- (4). परागज-ज्वर (हे-फीवर) से बचने के लिए आपको 9 या 16 रत्ती का गोमेद और 5 या 7 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।
- (5). यदि आप रोगभ्रम/चिन्तोन्माद (हॉइपोकांड्रिया) से ग्रसित हैं, तो आपको 7 या 8 रत्ती का नीलम और 5 या 7 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (6). मिरगी – 1 – 6 रत्ती मोती या 5 रत्ती पन्ना या 12 रत्ती सफेद मोती धारण करें।
2 – पन्ना और मूनस्टोन धारण करें। लग्न के स्वामी का रत्न धारण करना शुभ फलदायक होगा।
- (7). प्रमस्तिष्कीय रक्तस्राव – 1 – लग्न के स्वामी का रत्न धारण

करें।

2 – 7-8 रत्ती का लाल मूंगा तथा मूनस्टोन या सफेद मोती चांदी में धारण करें।

3 – एक त्रिकोण पेण्डेण्ट में लग्न के स्वामी का रत्न, मूंगा तथा पुखराज जड़वायें, जिसमें माणिक्य बीच में हो, इस प्रकार का पेण्डेण्ट धारण करने से इस रोग का प्रभाव कम हो सकता है।

(8). मस्तिष्कावरण शोथ से बचने के लिए आपको लाल मूंगा, पुखराज, पन्ना और माणिक धारण करना चाहिए।

(9). मस्तिष्क में तंत्रिकाओं के गड़बड़ी से सिरदर्द होने पर आपको 5 या 6 रत्ती का पीला पुखराज और 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(10). पागलपन या विक्षिप्तता से ग्रसित होने पर इसके उपचार हेतु आपको पन्ना, लाल मूंगा, मोती धारण करना चाहिए। इससे रोग का प्रभाव कम होगा।

(11). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए आपको 10 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(12). मस्तिष्क में गांठ, सूजन और फोड़ा होने पर आपको उसके उपचार हेतु पन्ना, पुखराज और मूंगा धारण करना चाहिए।

(13). यदि आप प्रमस्तिष्क घनास्त्रता रोग से पीड़ित हैं, तो आपको 3 रत्ती का माणिक अथवा 18 या 24 रत्ती का माणिक का उपरत्न, 10 या 12 रत्ती का मोती तथा 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(14). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 3 रत्ती का माणिक और 4 रत्ती नीलम धारण करना चाहिए। गर्मी के महीनों में रात के समय लाल मूंगा और माणिक धारण नहीं करना चाहिए।

(15). पागलपन – 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का पीला पुखराज एवं 4 रत्ती का मोती धारण करें।

(16). कमजोर स्मरण शक्ति या भूलने की बीमारी से बचने के लिए आपको 7 या 9 रत्ती का लाल मूंगा और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(17). मस्तिष्क ज्वर – लाल मूंगा, पीला पुखराज तथा पन्ना धारण करना लाभदायक साबित होगा।

(18). मस्तिष्क संबंधित रोग – 1 – लग्न के स्वामी, सूर्य एवं चंद्रमा को उनसे संबंधित रत्न धारण करा कर बलशाली बनायें।

2 – लग्न के स्वामी, सूर्य एवं चंद्रमा का कवच पाठ करें तथा इनसे संबंधित यंत्र धारण करें।

3 – एक ही अंगूठी अथवा पेण्डेंट में लाल मूंगा तथा पन्ना धारण करें।

4 – लाल मूंगा एवं पीला पुखराज या पन्ना एवं चन्द्रकान्त एक साथ मिलाकर धारण करें।

5 – पन्ना एवं चन्द्रकान्त एक साथ धारण करें।

6 – मूंगा एवं मोती धारण करें, लाभदायक फल प्राप्त होगा।

7 – लाल मूंगा एवं पन्ना एक साथ धारण करना लाभदायक सिद्ध होता है।

(19). मस्तिष्कीय रक्तस्राव होने पर आपको मंगल के लिए लाल मूंगा, बुध के लिए पन्ना, और चंद्रमा के लिए मोती धारण करना चाहिए। साथ ही उचित औषधि लेने पर आपको शीघ्र उत्तम परिणाम प्राप्त

होगा।

(20). मस्तिष्क संबंधी रोगों से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का पन्ना, 14 या 20 रत्ती का चंद्र रत्न तथा 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(21). मस्तिष्क ज्वर से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 6 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(22). मूर्च्छा – 5 रत्ती पन्ना, 4 रत्ती नीलम एवं 5 रत्ती मोती धारण करें।

(23). अनिद्रा – फिरोजा, जिरकॉन, श्वेत ओपल तथा मोती धारण करना लाभदायक होता है। बारहवें भाव के स्वामी का रत्न धारण करना भी शुभ फलदायक होगा। पीला पुखराज भी धारण किया जा सकता है।

(1). मोतियाबिंद से छुटकारा पाने के लिए 3 या 4 रत्ती का माणिक और 5 या 6 रत्ती का पन्ना और 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती एक साथ धारण करना चाहिए। यदि संभव हो तो आधा रत्ती का हीरा बाएं हाथ में धारण करना चाहिए।

(2). 10 या 12 रत्ती का माणिक्य अनामिका अंगुली में शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन धारण करें।

(3). दूर दृष्टि दोष को दूर करने के लिए पन्ना, माणिक और सफेद मोती धारण करना चाहिए। यदि संभव हो तो आधा रत्ती का हीरा बाएं हाथ में धारण किया जा सकता है। माणिक के स्थान पर लाल मूंगा धारण किया जा सकता है।

(4). यदि जन्म के बाद नेत्र हानि होती है अथवा दृष्टिहीनता का उपचार संभव है, तो दृष्टिहीनता अथवा कमजोर दृष्टि से बचने के लिए आप माणिक और मोती धारण कर सकते हैं।

(5). मोतियाबिन्द – पन्ना को आंखों की ज्योति में वृद्धि करने में सहायक माना जाता है और मोती को खोई नेत्र ज्योति प्राप्त करने में सहायक। रोग के उपचार के दौरान माणिक्य धारण करें। गर्मियों में माणिक्य के स्थान पर लाल मूंगा पहनें। मूंगा, मोती तथा पन्ना 3–3 रत्ती प्रत्येक के हिसाब से एक साथ अंगुठी में जड़वाकर या पेण्डेण्ट में धारण करें, लाभ होगा।

(6). निकट दृष्टि से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 4 रत्ती का माणिक और 5 या 6 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए। माणिक के स्थान पर लाल मूंगा धारण किया जा सकता है।

(7). आंख आने से मुक्ति पाने के लिए मध्यमिका उंगली में 4 या 5 रत्ती का चंद्ररत्न अथवा कनिष्ठा में 3 या 4 रत्ती का नीलम धारण करना चाहिए।

(8). यदि आप आंखों की बीमारी से पीड़ित हैं, तो आपको एक्वामेरीन एवं पैरीडोट रत्न धारण करना चाहिए। इससे आपको जल्द स्वस्थ होने में मदद मिलेगी।

(9). नेत्र संबंधी रोगों से बचने के लिए आपको 3 या 5 रत्ती का माणिक और 7 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।

(10). नेत्रशोथ – इस रोग के प्रभाव को कम करने के लिए पन्ना धारण करें। इसके अलावा मूनस्टोन,

ओपल, जिरकॉन धारण करने से भी नेत्र रोगों में काफी लाभ होता है।

(11). आंख आना/नेत्रश्लेष्मलाशोथ से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा एवं लाल वस्त्र धारण चाहिए।

(12). अंधापन – सफेद मोती, मूनस्टोन तथा मूंगा धारण करना लाभदायक होगा।

(13). वर्णाधता – लाल माणिक्य अथवा मूंगे के साथ मोती धारण करना वर्णाधता में बहुत लाभदायक होता है।

(14). कमजोर दृष्टि अथवा नेत्र से संबंधित रोगों से बचाव के लिए आपको 10 अथवा 14 रत्ती का मूंगा और 9 या 10 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।

(15). वृद्धावस्था का दूर दृष्टि दोष से निजात पाने के लिए पन्ना, माणिक, सफेद मोती और लाल मूंगा संयुक्त रूप से धारण करना चाहिए। लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना सर्वाधिक उपयोगी होगा।

(16). रतौंधी से छुटकारा पाने के लिए लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(17). वर्णान्धता से निजात पाने के लिए पन्ना, लाल मूंगा, सफेद मोती व हीरा धारण करना चाहिए।

(18). दृष्टिवैषम्यता को दूर करने के लिए लाल मूंगा और सफेद मोती धारण करना उपयोगी होगा।

(1). बहरापन से बचने के लिए आपको 9 रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पन्ना, नीलम, पुखराज धारण करना चाहिए।

(1). स्फटिक, मोती तथा मूनस्टोन धारण करें। लाल कपड़ा या लाल धागा अवश्य पहनें। तांबे की अंगूठी में मूंगा पहनने से मुख (मुँह) से संबंधित विकार का प्रभाव कम हो जाता है।

(2). मुंहासे/फुंसी से छुटकारा पाने के लिए आपको 7 या 9 रत्ती का सफेद मूंगा मध्यमिका में धारण करना चाहिए।

(3). चांदी की अंगूठी में 8 या 10 रत्ती का सफेद मूंगा अथवा 4 से 10 रत्ती का मोती मध्यमा अंगुली में पहनें, साथ ही छोटी अंगुली में लाजवर्त पहनें। यदि मूंगा अनुकूल न आये तो केवल चांदी की अंगूठी ही धारण करें। इससे मुख (मुँह) से संबंधित विकार का प्रभाव कम हो जाता है।

(4). दांतों में कीड़े या दर्द होने पर – सफेद या लाल मूंगा पहनना लाभदायक होगा।

(5). यदि आप मुंहासे से ग्रसित हैं, तो आपको ऐमेथीस्ट रत्न धारण करना चाहिए। इससे आपको जल्द स्वस्थ होने में मदद मिलेगी।

(6). मूनस्टोन तथा पीला गोमेद धारण करना लाभकारी होगा। पुखराज तथा मोती पहनना भी शुभ फलदायक है। इससे मुख (मुँह) से संबंधित विकार का प्रभाव कम हो जाता है।

(1). मूनस्टोन तथा पीला गोमेद धारण करना लाभकारी होगा। पुखराज तथा मोती पहनना भी दांतों के रोग में शुभ फलदायक

है।

- (2). दांतों से संबंधित रोगों से बचने के लिए आपको 4 या 7 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।
- (3). लाल या सफेद मूंगा, पुखराज पहनना भी दांतों के दर्द में लाभकारी साबित होता है।
- (1). सोने या चांदी की अंगूठी में पुखराज या सुनैला धारण करें। शुद्ध मूंगा 5 रत्ती का चांदी में मढ़वाकर अनामिका में धारण करें। मूंगा या पुखराज का पैंडल जंजीर में डालकर गले में पहन सकते हैं।
- (2). स्वराघात से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (3). कण्ठशालक रोग से बचने के लिए आपको 5 रत्ती का लाल मूंगा अनामिका में और 5 रत्ती का पीला पुखराज तर्जनी में धारण करना चाहिए।
- (4). गले/कण्ठ से संबंधित विकार से मुक्ति के लिए आभूषण दान करना चाहिए।
- (5). वाणी में अत्यधिक कर्कशता होने पर इससे बचने के लिए आपको 9 या 10 रत्ती का मोती और 3 या 5 रत्ती का माणिक धारण करना चाहिए।
- (6). कंठ में सूजन होने पर आपको 5 रत्ती का लाल मूंगा अनामिका में धारण करना चाहिए।
- (7). यदि आप डिप्थिरिया (कंठ का एक संक्रामक रोग) से पीड़ित हैं, तो आपको 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा और 7 या 12 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए।
- (8). गर्दन में असहनीय दर्द से बचने के लिए आपको 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा और 1 या 2 रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।
- (9). गले से संबंधित रोगों से बचाव के लिए आपको 12 अथवा 16 रत्ती का चंद्ररत्न और आधा रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।
- (10). गंडमाला रोग से बचने के लिए आपको साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (11). गले से संबंधित रोग से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (1). कुकर खांसी – मरकत अथवा पेरीडॉट पहनना लाभदायक होगा।
- (2). महिला – अस्थमा रोग से मुक्ति पाने के लिए 10 या 12 रत्ती का सफेद मोती बायें हाथ के दो उंगलियों अनामिका और कनिष्ठा में धारण करना चाहिए।
- (3). दमा – नवधातु में काला अथवा लाल अकीक धारण करें। सोने या चांदी में 8–9 रत्ती का लाल मूंगा तथा 3 से 5 रत्ती का गोमेद अष्टधातु में धारण करना लाभदायक

होगा।

- (4). अस्थमा से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, 5 रत्ती का पीला पुखराज और 5 रत्ती का सफेद मोती धारण करना चाहिए। 4 रत्ती का लाल मूंगा दिन के समय में धारण किया जा सकता है, किन्तु इसे सोने जाने से पहले निकाल देना चाहिए। लाल मूंगा को रात के समय निकालने के बाद घोड़े की नाल की अंगूठी मध्यमिका में धारण करना बहुत उपयोगी रहेगा। इससे रात में अच्छी नींद आयेगी।
- (5). श्वसन प्रणाली से संबंधित रोगों से बचने के लिए आपको 8 या 9 रत्ती का पीला मोती और 7 या 8 रत्ती का नीलम अथवा 18 या 24 रत्ती का जमुनिया धारण करना चाहिए।
- (6). फुफ्फुस आवरणशोथ से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पन्ना और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (7). पुरुष – अस्थमा रोग से मुक्ति पाने के लिए 4 या 5 रत्ती का पन्ना और सफेद मोती तथा 4 रत्ती का नीलम कनिष्ठा में धारण करना चाहिए। नीलम के स्थान पर लाजावर्द धारण किया जा सकता है। सर्दी के मौसम में 4 रत्ती का लाल मूंगा अतिरिक्त रत्न के रूप में धारण किया जा सकता है।
- (8). महिला – शीतज्वर से बचने के लिए आपको 4 या 6 रत्ती का नीलम, 4 या 7 रत्ती का पन्ना और 10 या 16 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए।
- (9). अस्थमा रोग से बचने के लिए आपको 5 या 7 रत्ती का पीला पुखराज, 14 या 16 रत्ती का चंद्र रत्न और 7 या 9 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए।
- (10). पुरुष – अस्थमा रोग से मुक्ति पाने के लिए मध्यमिका में 6 रत्ती का पन्ना व 5 रत्ती का चंद्र रत्न और अनामिका में 4 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (11). इनफ्लूएंजा – लाल मूंगा और पीला पुखराज धारण करना लाभदायक होता है। यदि बार-बार रोग हो रहा है तो काला हकीक, माणिक्य तथा सूर्यकान्त मणि एक साथ लॉकेट में डाल कर गले में धारण करें।
- (12). न्यूमोनिया से बचने के लिए 6 रत्ती का पन्ना, साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (13). महिला – हिचकी से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा अनामिका में और 5 रत्ती का गोमेद मध्यमिका में धारण करना चाहिए।
- (14). अस्थमा से पीड़ित होने पर आपको 6 रत्ती का लाल पन्ना, 5 रत्ती का पुखराज और 6 रत्ती का मोती धारण करना चाहिए। 7 वर्ष की आयु तक के बच्चे चांदी में जड़ित चंद्र रत्न धारण कर सकते हैं।
- (15). शीतला रोग से बचने के लिए आपको लाल मूंगा धारण करना चाहिए।
- (16). निमोनिया – इस रोग में लाल मूंगा तथा पीला पुखराज धारण करना शुभ फलदायक होता है।
- (1). शीत ज्वर – 7-8 रत्ती का माणिक्य चांदी की अंगूठी में धारण करें। मंगल की शान्ति के लिये तांबे

का कड़ा, अंगूठी या कोई अन्य आभूषण धारण करें।

(2). क्षय रोग से पीड़ित होने पर आपको 7 या 9 रत्ती का लाल मूंगा तथा 5 रत्ती का पुखराज धारण करना चाहिए।

(3). पीला पुखराज, सफेद मोती या लाल मूंगा धारण कर रोग का प्रभाव कम किया जा सकता है।

(4). तपेदिक से बचने के लिए 5 रत्ती का पन्ना, साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(5). तपेदिक रोग से बचने के लिए आपको 7 या 8 रत्ती का नीलम और 10 या 16 रत्ती का चंद्र रत्न अथवा 7 या 9 रत्ती का सफेद मोती और 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा तथा 4 या 7 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(6). पार्श्वशूल/फुस्फुस के आवरण में शोथ से बचाव के लिए आपको 3 अथवा 4 रत्ती का माणिक और 5 या 7 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(7). फेफड़े से संबंधित रोग से बचने के लिए आपको 10 या 16 रत्ती का मोती और 5 या 7 रत्ती का पीलापुखराज धारण करना चाहिए।

(8). तपेदिक/क्षय रोग से पीड़ित होने पर आपको लाल मूंगा, गोमेद और मोती धारण करना चाहिए।

(9). क्षय रोग से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(10). क्षय रोग से बचने के लिए आपको कनिष्ठा में 4 रत्ती का नीलम धारण करना चाहिए।

(11). लाल मूंगा साढ़े सात रत्ती, पीला पुखराज पांच रत्ती, पन्ना पांच रत्ती का धारण करें।

(1). तांबे की अंगूठी या माणिक्य रविवार को पुष्य नक्षत्र में सूर्योदय के समय अनामिका अंगुली में धारण करें।

(2). हृदय से संबंधित रोगों से बचने के लिए आपको 9 या 12 रत्ती का मोती और 12 या 14 रत्ती का लालमूंगा धारण करना चाहिए।

(3). हृदय रोग का कारक ग्रह राहु है, उसकी शांति के लिए दान, जप, व्रत एवं तांत्रिक टोटके का सहारा लें।

(4). मूंगा एवं पुखराज धारण करें। यदि फायदा न हो तो मोती और पन्ना धारण करें, निश्चित रूप से लाभ होगा।

(5). हृदय विकार से पीड़ित होने पर उपचार हेतु आपको पन्ना, मोती, पुखराज और लाल मूंगा धारण करना

चाहिए।

(6). पांचवें भाव के स्वामी या चौथे भाव के स्वामी जो भी कारक ग्रह हैं, उन्हें एवं सूर्य को उनका रत्न धारण करके शक्तिशाली बनायें।

(7). लग्न के स्वामी का रत्न धारण करके स्वामी को शक्तिशाली बनायें।

(8). यदि आप हृदय की बीमारी से ग्रसित हैं, तो आपको बेरील, हेमेटाईट एवं ओनेक्स रत्न धारण करना चाहिए। इससे आपको स्वस्थ हाने में जल्द मदद मिलेगी।

(1). गैंगरीन – लाल धागा, लाल कपड़ा या लाल मूंगा के साथ तांबे या लोहे का छल्ला धारण करें। तांबे के साथ माणिक्य धारण करना भी लाभदायक होगा।

(2). उच्चरक्तचाप के उपचार हेतु आपको 6 रत्ती का पन्ना मध्यमिका में, 4 रत्ती का पुखराज अनामिका में और 3 रत्ती का नीलम कनिष्ठा में धारण करना चाहिए। गंभीर परिस्थिति में 4 रत्ती का सफेद मोती दाहिने हाथ की तर्जनी में धारण करना चाहिए।

इन चारों रत्नों को संयुक्त रूप से उंगलियों में धारण करना चाहिए।

(3). शरीर में खून की कमी से ग्रसित होने पर आपको 14 या 18 रत्ती का चंद्र रत्न, 1 या 2 रत्ती का हीरा और 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(4). यदि आपको अचानक रक्तस्राव होने लगता है, तो इससे बचने के लिए आपको 9 या 12 रत्ती का मोती और 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(5). महिला – उच्चरक्तचाप के उपचार हेतु आपको 10 या 12 रत्ती का सफेद मोती बायें हाथ के दो उंगलियों अनामिका और कनिष्ठा में धारण करना चाहिए।

(6). रक्ताल्पता – कलाई में लोहे का कड़ा पहनें, 5 रत्ती मूंगा तथा 5 से 7 रत्ती का पुखराज सोने या चांदी की अंगूठी में दायें हाथ में धारण करें।

(7). उच्चरक्तचाप के उपचार हेतु आपको माणिक, पन्ना, रक्तमणि धारण करना चाहिए।

(8). रक्तचाप की समस्या से छुटकारा पाने के लिए आपको 10 या 16 रत्ती का लाल मूंगा, 4 या 5 रत्ती का पीताम्बरी नीला अथवा जमुनिया धारण करना चाहिए।

(9). उच्च रक्तचाप – इस रोग से बचाव के लिए लग्नेश का रत्न धारण करें। 8–9 रत्ती का लाल रंग का शुद्ध मूंगा भी धारण कर सकते हैं। मूंगा के अभाव में पन्ना, मोती, मूनस्टोन आदि अलग-अलग अंगूठियां पहनना भी लाभकारी होगा।

(10). महिलाएं पुखराज और नीलम आदि धारण नहीं कर सकती हैं। अतः केवल सफेद मोती धारण करना चाहिए।

(11). रक्त विकार से बचने के लिए आपको लाल मूंगा, पुखराज, मोती एक साथ धारण करना

चाहिए।

(12). खून की कमी में साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(1). ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मधुमेह रोग का कारक बृहस्पति एवं शुक्र होता है। कुण्डली में इन दोनों मेंसे जो ग्रह शुभ हो उसका रत्न धारण करना चाहिए। यदि कुण्डली में बृहस्पति शुभ स्थिति में स्थित है, तो सोने की अंगूठी में पुखराज धारण करें। पुखराज शुक्ल पक्ष के पहले गुरुवार को तर्जनी अंगुली में धारण करना चाहिए। पुखराज का वजन सवा पांच रत्ती से उपर होना चाहिए। यदि कुण्डली में शुक्र ग्रह शुभ है, तो कम से कम 30 से 100 सेंट का हीरा चांदी में अनामिका उंगली में धारण करना चाहिए। कोई भी रत्न धारण करने से पहले रत्न के स्वामी के मंत्र से रत्न को अभिमंत्रित जरूर करना चाहिए। यदि आपहीरा लेने में असमर्थ हैं, तो शुक्र के मंत्र 'ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः' का तीन माला जप करें। एक साल बाद इसके दसवें हिस्से के बराबर मंत्र से हवन करना चाहिए तथा यथाशक्ति ब्राह्मणों को भोजन कराकर दान-दक्षिणा देना चाहिए।

(2). लग्न के स्वामी का रत्न धारण करें। लाल मूंगा तथा पीला पुखराज धारण करना भी शुभ फलदायक होता है।

(3). मधुमेह रोग से छुटकारा पाने के लिए आपको 14 या 16 रत्ती का चंद्र रत्न और 7 या 9 रत्ती का मोतीतथा 1 या 2 रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।

(4). मधुमेह से मुक्ति पाने के लिए 7 रत्ती का सफेद मूंगा मध्यमिका में तथा 5 रत्ती का पीला पुखराज अनामिका में धारण करना चाहिए।

(5). मधुमेह से ग्रसित होने पर आपको मध्यमिका में लाल मूंगा और अनामिका में पुखराज चांदी की अंगूठी में धारण करना चाहिए।

(6). एक रत्ती हीरा या सफेद मूंगा तथा पुखराज धारण करें। पीताम्बरी, नीला एवं सफेद मूंगे से लाभ होगा।

(7). मधुमेह से मुक्ति पाने के लिए 1 रत्ती का हीरा मध्यमिका में धारण करना चाहिए।

(8). मधुमेह से मुक्ति पाने के लिए 4 रत्ती का पीताम्बरी नीला कनिष्ठा में तथा 9 रत्ती का सफेद मूंगा मध्यमिका में धारण करना चाहिए।

(1). अतिसार – लग्न के स्वामी तथा आठवें भाव के स्वामी का संयुक्त रत्न अंगूठी में धारण करें। पन्ना, मोती तथा मूनस्टोन धारण करना भी शुभ फलदायक होगा।

(2). यदि आप अपच या बदहजमी से पीड़ित हैं, तो इससे बचने के लिए आपको 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा और 7 या 9 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए, अथवा 4 या 6 रत्ती का पन्ना, 12 या 18 रत्ती का चंद्र रत्न तथा 10 या 14 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए।

(3). आंत से संबंधित रोगों से बचने के लिए आपको 9 या 12 रत्ती का गोमेद और 4 या 6 रत्ती का पन्ना धारण करना

चाहिए।

- (4). कब्ज – लाल मूंगा तथा लाल कपड़ा धारण करें। सोने की अंगूठी में पुखराज पहनना लाभदायक होगा।
- (5). पेट्टिक अल्सर –पन्ना मध्यमा में तथा पीला नीलम अनामिका में धारण करें। रोग गंभीर होने की स्थिति में माणिक्य या मूंगे की भस्म का सेवन करना लाभदायक होगा। 8 से 10 रत्ती का गोमेद, स्फटिक या लाजवंत मध्यमा अंगुली में धारण करना भी फायदेमंद होगा।
- (6). पथरी – नीला पुखराज, लाल मूंगा तथा मूनस्टोन धारण करें, यदि कष्ट कम न हो तो माणिक्य या मोती धारण करें, निश्चित रूप से लाभ प्राप्त होगा।
- (7). जठरीय और पाचन के लिए मध्यमिका उंगली में 4 रत्ती पीताम्बरी नीला ही इस रोग को पूर्णतः समाप्त करने में बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। किन्तु यदि नीलम धारण करने से डरते हैं, तो ऐसी स्थिति में दाहिने हाथ में, 6 रत्ती का पन्ना मध्यमिका में और 4 रत्ती का पीला पुखराज अनामिका में धारण करना चाहिए।
- (8). एपेंडिसाइटिस/ उंडुकशोथ से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।
- (9). टायफॉयड रोग से बचने के लिए आपको 12 या 16 रत्ती का लाल मूंगा और 7 या 12 रत्ती का गोमेदधारण करना चाहिए।
- (10). पेट-रोग – पेट की बीमारी को दूर करने के लिए डानसेन हर्व, चेरी, हिंक्वष्टक, मूंगा लाल, लाल रंग के कपड़े धारण करना लाभदायक है।
- (11). अपेण्डिसाइटिस – अनामिका में पुखराज धारण करें। लाल मूंगा गले में धारण करें। हीरा तथा माणिक्य भी अलग-अलग हाथों की अंगुलियों में धारण करें।
- (12). टाइफॉयड ज्वर 6 रत्ती का पन्ना और 4 रत्ती का पीताम्बरी नीला धारण करना चाहिए। यदि आपको नीलम धारण करने से डर लगता है, तो आप 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त सर्दी के मौसम में सफेद मूंगा धारण करना उपयोगी हो सकता है।
- (13). आन्त्रशोथ – पन्ना सोने की अंगूठी में तथा मूनस्टोन चांदी की अंगूठी में अलग-अलग पहनना लाभकारी होगा।
- (14). आंत्रशोथ/अपेण्डिक्स से पीड़ित होने पर आपको 7 या 9 रत्ती का लाल मूंगा तथा 5 रत्ती का पुखराज धारण करना चाहिए।
- (15). टायफाइड – मूनस्टोन, पन्ना तथा पीला पुखराज धारण करना शुभ फलदायक होगा।
- (16). पेचिश से बचने के लिए 4 रत्ती का पीताम्बरी नीला इस रोग को पूर्णतः समाप्त करने में बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। किन्तु यदि नीलम धारण करने से डरते हैं, तो ऐसी स्थिति में 6 रत्ती का पन्ना और 4 या 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना

चाहिए।

(17). उदर शूल से ग्रसित होने पर आपको मध्यमिका में लाल मूंगा और अनामिका में पुखराज धारण करना चाहिए। आप मोती भी धारण कर सकते/सकती हैं।

(18). यदि आप जठरशोथ से पीड़ित हैं, तो इससे बचने के लिए आपको 12 या 14 रत्ती का लाल मूंगा, 9 या 12 रत्ती का गोमेद और 4 या 7 रत्ती का पन्ना धारण करना चाहिए।

(19). अतिसार से बचने के लिए कनिष्ठा उंगली में 4 रत्ती का पीताम्बरी नीला इस रोग को शांत करने में बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। किन्तु यदि नीलम धारण करने से डरते हैं, तो ऐसी स्थिति में 6 रत्ती का पन्ना मध्यमिका में और 4 रत्ती का पीला पुखराज अनामिका में धारण करना चाहिए।

(20). हैजा से बचने के लिए 5 रत्ती का पन्ना और 4 रत्ती का पीताम्बरी नीला धारण करना चाहिए।

(21). जलोदर रोग से बचने के लिए आपको 7 या 9 रत्ती का मोती, 12 या 16 रत्ती का चंद्र रत्न और 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(1). हेपेटाइटिस – पुखराज तथा माणिक्य धारण करें। सहायक रत्न के रूप में मूनस्टोन भी धारण कर सकते हैं। रत्नों की भस्म का सेवन करने से भी रोग में लाभ प्राप्त होगा।

(2). मूत्र पथ में अवरोध उत्पन्न होने पर आपको 5 या 6 रत्ती का इंद्रनील/नीलम और 3 या 4 रत्ती का माणिक्य धारण करना चाहिए।

(3). पीलिया – पन्ना – 6 रत्ती, गहरा लाल मूंगा – 8 रत्ती, पीला पुखराज – 5 रत्ती, एक चांदी की अंगूठी तथा तांबे का कड़ा धारण करें, काफी लाभदायक फल प्राप्त होंगे। यदि पीलिया हो जाये तो पुखराज उतार दें।

(4). गुर्दे में जलन से बचने के लिए आपको 14 या 16 रत्ती का लाल मूंगा और 1 या 2/ आधा रत्ती का हीरा धारण करना चाहिए।

(5). यदि आप पित्ताशय से संबंधित रोग से पीड़ित हैं, तो आपको 7 या 9 रत्ती का पन्ना, 5 या 7 रत्ती का पीला पुखराज अथवा 10 या 12 रत्ती का पीला मुक्ता धारण करना चाहिए।

(6). यकृत से संबंधित रोगों से बचने के लिए आपको 7 या 9 रत्ती का मोती अथवा 4 या 8 रत्ती का पीला पुखराज और 9 या 12 रत्ती का गोमेद धारण करना चाहिए।

(7). मूत्र विकार से बचने के लिए आपको साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज अथवा 9 रत्ती का सफेद मूंगा मौहयाना धारण करना चाहिए।

(8). गुर्दे, मूत्र प्रणाली के रोग से बचने के लिए साढ़े सात रत्ती का लाल मूंगा और 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(9). यदि आप पीलिया रोग से पीड़ित हैं, तो आपको 4 या 7 रत्ती का पन्ना, 7 या 9 रत्ती का मोती और 7 या 8 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना

चाहिए।

(10). पित्त पथरी से बचने के लिए 5 रत्ती का पन्ना और 4 रत्ती का पीताम्बरी नीला धारण करना चाहिए। इसके अतिरिक्त गंभीर परिस्थिति में 5 रत्ती का पीला पुखराज धारण किया जा सकता है।

(11). गुर्दे में पथरी होने पर आपको 16 या 18 रत्ती का चंद्र रत्न, 10 या 12 रत्ती का मोती तथा 10 या 14 रत्ती का लाल मूंगा धारण करना चाहिए।

(12). यकृत के सिरोसिस रोग से बचने के लिए आपको पन्ना और पुखराज 6 रत्ती का धारण करना चाहिए। आवश्यक होने पर मोती भी धारण कर सकते/सकती हैं।

(13). गुर्दे से संबंधित रोगों से बचने के लिए आपको 20 या 24 रत्ती का चंद्र रत्न, 9 या 12 रत्ती का गोमेद, 1 या 3 रत्ती का हीरा और 5 या 7 रत्ती का पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

(14). मूत्र विकार से पीड़ित होने पर आपको 7 या 9 रत्ती का लाल मूंगा, 5 रत्ती का पुखराज तथा 9 रत्ती का सफेद मूंगा धारण करना चाहिए।

(15). पुखराज एवं पन्ना धारण करना हितकर होगा। मूंगा भी लाभकारी सिद्ध होगा।

पीलिया (किडनी) से संबंधित विकार के लिए टोटके

पुनर्नवा की जड़, गुरुवार के दिन, प्रातः सूर्योदय, या सायं सूर्यास्त के समय, धागे में बांध कर गले में धारण करने से पीलिया रोग में आराम मिलता है।

योग करें। यह 10 मिनट तक करें तथा अग्निसार क्रिया 5 मिनट, प्रातः कुन्जल एवं सुपाच्य भोजन के कुलचार कार्य करने से रोग समाप्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त चक्रासन, गर्भासन, मयूरासन, उष्ट्रासन, हलासन एवं शवासन करें।

पीलिया (किडनी) से संबंधित विकार के लिए लाल किताब के उपाय

चांदी एवं तांबे का कड़ा पहनें।

पीलिया रोग के प्रभाव को कम करने के लिए स्वर्ण दान करना चाहिए एवं कुष्माण्ड हवन कराना चाहिए।

किसी मंदिर से भगवान का धन चुराने या ब्राह्मण का धन चुराने या अस्वस्थकर खाना खाने के कारण व्यक्ति पीलिया रोग से ग्रसित होता है। उपाय के तौर पर कुष्माण्ड हवन करना चाहिए तथा सोना दान करना चाहिए।

पीलिया (किडनी) से संबंधित विकार के लिए रुद्राक्ष का सुझाव

जो व्यक्ति मानसिक विकार, लकवा, पीलिया, रक्त-संचार से संबंधित समस्या, बुखार एवं खांसी से ग्रसित होते हैं, उनके लिए चार मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभदायक साबित होता है।

पीलिया (किडनी) से संबंधित विकार के लिए आर्युवेदिक उपचार

आंवले का 25 ग्राम रस या सूखे आंवले का चार ग्राम चूर्ण दिन में तीन बार सेवन करने से यकृत की सारीपरेशानियां ठीक हो जाती हैं।

दूषित पानी का सेवन करने से बच्चों के पेट में कीड़े होने से बचने के लिए चार भाग अजवायन और एक भाग काला नमक का चूर्ण बनाकर आधा ग्राम से डेढ़ ग्राम तक गर्म पानी के साथ जरूरत के हिसाब से बच्चे को पिलाना चाहिए।

नीबू के दो हिस्से करके अर्थात् बीचोबीच से काटकर उसके बीज निकाल दें। फिटकरी को भून कर उसकाचूरा बना लें। चूर्ण को नीबू के दोनो टुकड़ों पर तब तक डालते रहें जब तक नीबूओं का रस उस चूर्ण को सोखता है। जब नीबू का रस चूर्ण को सोखना बंदकर दें। तब नीबू का पूरा टुकड़ा मुँह में रखकरचूसते रहें। सुबह शाम तीन दिन तक लगातार इस प्रकार करने से खून में अगर पीलिया आ गया हो तो दूर हो जाता है।

पीलिया की बीमारी में सफाई से निकाला हुआ गन्ने के रस का सेवन करना बहुत फायदेमंद होता है। सुबह में गन्ने का या नारंगी का रस लेना अच्छा होता है।

कच्चे पपीते का रस एक बताशे पर 10 बूंद डालें तथा इसका लगातार 10-15 दिनों तक सेवन करें। इससेपीलिया बीमारी ठीक हो जाती है।

एक अच्छी तरह से पका हुआ कागजी नीबू लेकर उसके दो टुकड़े कर लें। फिर बीज निकालकर नीबू के चार टुकड़े इस तरह से करें, जिससे की टुकड़े अलग-अलग न हों। फिर एक भाग में काली मिर्च का चूर्ण, दूसरे भाग में काला नमक या सेंधा नमक, तीसरे में सौंठ का चूर्ण तथा चौथे में चीनी भर लें। इसे रातमें प्लेट में रखकर ढक दें। सुबह में खाना खाने से एक घंटे पहले इस नीबू की फांक को धीमी आंच पर तवे पर रखकर गर्म करके नीबू को चूसें।

पीड़ित व्यक्ति की त्वचा एवं आंखें पीली पड़ जाना इस रोग की सबसे बड़ी पहचान है। व्यक्ति का मूत्र भी पीले रंग का हो जाता है। आमतौर पर यह रोग किसी को भी हो जाता है, लेकिन नवजात शिशु इससे अधिक पीड़ित होते हैं। यह रोग पित्ताशय तथा यकृत की कमजोरी से होता है। रोग की शुरुआत में ज्वर,पेट में दर्द आदि लक्षण उभर कर सामने आते हैं। पीलिया से ग्रसित होने के बाद शरीर में लाल रक्त कणों की मात्रा कम हो जाती है।

पीपल के तीन-चार कोपलों को पानी से साफ करके मिश्री या चीनी के साथ सिल पर बारीक पीस लें। इसे एक गिलास पानी में मिलाकर साफ कपड़े से छान लें। इस शर्बत को पीलिया से ग्रस्त रोगी को दिन में दो बार पिलायें। जरूरत के हिसाब से तीन से सात दिनों तक इसका प्रयोग कर सकते हैं। इससे पीलिया की बीमारी ठीक हो जाती है।

कड़वी लौकी के पत्तों का काढ़ा बनाकर सेवन करना लाभदायक होता है।

ताजे करेले को पीसकर उसको महीन कपड़े में रखकर अच्छी तरह से निचोड़ लें। इस रस को दो चम्मच सुबह-सुबह शौचादि से निवृत्त होकर खानी पेट में सेवन करने से पीलिया रोग में राहत मिलती है।

ढाई सौ ग्राम नीम के पत्ते के रस में मिश्री मिलाकर गरम करें। ठंढा होने के बाद इसका सेवन करें।

सौ ग्राम पानी में एक नींबू का रस निचोड़कर उसमें नमक डालकर इसे दिन में दो-तीन बार पीने से सात से इक्कीस दिनों में जिगर की खराबी ठीक हो जाती है।

पांच मिनट तक पानी को उबालकर उसे ठंडा करके पीने से पीलिया की बीमारी से बचा जा सकता है।

जामुन के मौसम में 200-300 ग्राम पके हुआ जामुन रोजाना सुबह खाली पेट में खाने से जिगर की खराबी ठीक हो जाती है।

प्रतिदिन सुबह में गन्ने का रस चूसें या गन्ने का रस पीयें। दिन में भोजन में जौ के सत्तू का प्रयोग करें। इससे पाण्डु रोग में राहत मिलती है।

डेढ़ ग्राम पुराना गुड़ और डेढ़ ग्राम बड़ी हरड़ के छिलके का चूर्ण दोनों को मिलाकर एक गोली बना लें। ऐसी गोली दिन दो बार सुबह-शाम गर्म पानी के साथ एक महीने तक लें। यकृत और प्लीहा अगर दोनों बड़े हुए हैं, तो भी ठीक हो जाते हैं।

त्रिफला का काढ़ा बनाकर, उसमें घी एवं चीनी मिलकर पीने से वातज पाण्डु रोग में लाभ प्राप्त होता है।

दो ग्राम अजवायन के चूर्ण में आधा ग्राम सेंधा नमक मिलाकर या केवल अजवायन का चूर्ण दोनों समय खाना खाने के बाद गर्म पानी के साथ लेने से प्लीहा की विकृति ठीक हो जाती है। इस प्रयोग को करने से उदर-शूल बन्द होता है तथा पाचन क्रिया भी ठीक हो जाती है।

मूली के पत्तों और टहनियों से 50 ग्राम रस निकाल लें। उसमें 10 ग्राम मिश्री मिलाकर सुबह में खाली पेटमें इस रस का सेवन करने से एक सप्ताह के अंदर पीलिया की बीमारी ठीक हो जाती है।

चार लीटर दूषित पानी में तुलसी की 25-30 हरी और साफ पत्तियां डालने से पानी शुद्ध और पवित्र हो जाता है। इसके लिए पानी को कपड़े से छानते समय तुलसी की पत्तियों को कपड़े में रखकर पानी को छान लेना चाहिए।

मातृका दोष

मातृका दोष 1 से 12 वर्ष की उम्र तक के बच्चों के लिए होता है। आप इस उम्र को पार कर चुके हैं।